Faizane Ramazan (Hindi)

तख़रीज शुदा

फ़ैज़ाने र-मज़ान

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

مکتبۃ المدینہ
(دعوت اسلامی)



لا الٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ



فیضان غوث اعظم لائبریری

المدد

یاغوث

محمد عباس قادری

ایڈمن +91 76 86 902408

آپ حضرات سے دعاؤں کی
درخواست ہے مجھ غریب
کو دعاؤں میں یاد رکھنا

محمد عباس قادری

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

"मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है" के बाईस[22] हुरूफ़ की निस्बत से दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत के 22 म-दनी फूल"

मदीना : 1 फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहोंचाए ताकि उस से सुन्नत क़ाइम की जाए या उस से बद मज़्हबी दूर की जाए तो वोह जन्नती है।

(हिल्यतुल औलियाअ जिल्द:10, सफ़्हा : 45, हदीस नंबर :14466, मत्बूआ दारुल कुतुबुल इल्मिय्या, बैरूत)

मदीना : 2 सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया: "अल्लाह तआला उस को तरो ताज़ा रखे जो मेरी हदीस को सुने, याद रखे और दूसरों तक पहोंचाए।"

(जामए तिरमिज़ी जिल्द : 4, सफ़्हा : 298, हदीस नंबर : 366, मत्बूआ दारुल फ़िक्र, बैरूत)

मदीना : 3 हज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ के नामे मुबारक की एक हिक्मत येह भी है कि आप عَلَيْهِ السَّلَام अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अता कर्दह सहीफ़े लोगों को कसरत से सुनाया करते थे। लिहाज़ा आप عَلَيْهِ السَّلَام का नाम ही इदरीस (या'नी दर्स देनेवाला) हो गया"

(तफ़सीरे बग़्वी जिल्द : 3, सफ़्हा : 199 मत्बूआ मुल्तान, तफ़सीरे जमल जिल्द : 5, सफ़्हा : 30, मत्बूआ क़दीमी कुतुबख़ाना, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान सफ़्हा : 556, ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़)

मदीना : 4 हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं, دَرَسْتُ الْعِلْمَ حَتّٰى صِرْتُ قُطْباً (या'नी मैं इल्म का दर्स देता रहा यहां तक कि मक़ामे क़ुत्बिय्यत पर फ़ाइज़ हो गया।) (क़सी-दए ग़ौसिय्या)

मदीना : 5 फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देना भी दा'वते इस्लामी का एक म-दनी काम है। घर, मस्जिद, दुकान, स्कूल, कालिज, चौक वग़ैरा में वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना दर्स के ज़रीए ख़ूब ख़ूब सुन्नतों के म-दनी फूल लुटाइये और ढेरों सवाब कमाइये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह़ और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

मदीना : 6 फ़ैज़ाने सुन्नत से रोज़ाना कम अज़ कम दो२ दर्स देने या सुनने की सआ़दत ह़ासि़ल कीजिये।

मदीना : 7 पारह : २८ सू-रतुत तह़रीम की छटी आयत में इर्शाद होता है :-

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِیْكُمْ نَارًا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : (ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घरवालों को उस आग से बचाओ।) अपने आप को और अपने घरवालों को दोज़ख़ की आग से बचाने का एक ज़रीआ़ फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स भी है। (दर्स के इलावा सुन्नतों भरे बयान या म-दनी मुज़ाकरे का रोज़ाना एक केसेट भी घरवालों को सुनाइये)

मदीना : 8 ज़िम्मेदार घड़ी का वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना चौक दर्स का एहतिमाम करें। म-स़-लन : रात-9 बजे मदीना चौक (साढ़े नव बजे) बग़दादी चौक में वग़ैरा। छुट्टी वाले दिन एक से ज़ियादा मक़ामात पर चौक दर्स का एहतिमाम कीजिये। (मगर हुक़ूक़े आ़म्मा तलफ़ न हों।) (म-स़-लन : किसी मुसल्मान या जानवर वग़ैरा का रास्ता न रुके वरना गुनाहगार होंगे)

मदीना : 9 दर्स के लिये वोह नमाज़ मुन्तख़ब कीजिये जिसमें ज़ियादह से ज़ियादह इस्लामी भाई शरीक हो सकें।

मदीना : 10 दर्सवाली नमाज़ उसी मस्जिद की पहली स़फ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा फ़रमाइये।

मदीना : 11 महेराब से हट कर (सेहन वग़ैरा में) कोई ऐसी जगह दर्स के लिये मख़्सूस़ कर लीजिये जहां दीगर नमाज़ियों और तिलावत करने वालों को दुश्वारी न हो।

मदीना : 12 ज़ैली निगरान को चाहिये कि अपनी मस्जिद में दो2 ख़ैर ख़्वाह मुक़र्रर करे जो दर्स (बयान) के मौक़े' पर जानेवालों को नरमी से रोकें और सब को क़रीब क़रीब बिठाएं।

मदीना : 13 पर्दे में पर्दा किये दो ज़ानू बैठ कर दर्स दीजिये। अगर सुनने वाले ज़ियादा हों तो खड़े हो कर माइक पर देने में भी ह़रज नहीं जब कि नमाज़ियों वग़ैरा को तश्वीश न हो।

मदीना : 14 आवाज़ ज़ियादा बुलन्द हो और न ही बिल्कुल आहिस्ता, ह़त्तल इम्कान इतनी आवाज़ से दर्स दीजिये कि सिर्फ़ ह़ाज़िरीन सुन सकें बहर सूरत नमाज़ियों को तकलीफ़ नहीं होनी चाहिये।

मदीना : 15 दर्स हमेशा ठहर ठहर कर और धीमे अंदाज़ में दीजिये।

मदीना : 16 जो कुछ दर्स देना है पहले उस का कम अज़ कम एक बार मुता-लआ कर लीजिये। ताकि ग़-लतियां न हों।

मदीना : 17 फ़ैज़ाने सुन्नत के मु-अर्रब अल्फ़ाज़ आ'राब के मुताबिक़ ही अदा कीजिये इस तरह اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ त-लफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी की आदत बनेगी।

मदीना : 18 हम्दो सलात, दुरूदो सलाम के चारों सीग़े, आयते दुरूद और इख़्तितामी आयात वग़ैरा किसी सुन्नी आलिम या क़ारी को ज़रूर सुना दीजिये। इसी तरह अ-रबी दुआएं वग़ैरा जब तक उ-लमाए अहले सुन्नत को न सुना लें अकेले में अपने तौर पर भी न पढ़ा करें।

मदीना : 19 फ़ैज़ाने सुन्नत के इलावा मक्त-बतुल मदीना से शाए' होनेवाले म-दनी रसाइल से भी दर्स दे सक्ते हैं।[1]

मदीना : 20 दर्स ब-मअ इख़्तितामी दुआ सात[7] मिनट के अंदर अंदर मुकम्मल कर लीजिये।

मदीना : 21 हर मुबल्लिग़ को चाहिये कि वोह दर्स का तरीक़ा, बा'द की तरग़ीब, और इख़्तितामी दुआ ज़बानी याद कर ले।

मदीना : 22 दर्स के तरीक़े में इस्लामी बेहनें हस्बे ज़रूरत तरमीम कर लें।

फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देने का तरीक़ा

तीन[3] बार इस तरह ए'लान फ़रमाइये : क़रीब क़रीब तशरीफ़ लाइये।

पर्दे में पर्दा किये दो ज़ानू बैठ कर इस तरह इब्तिदा कीजिये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ؕ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِالْمُرْسَلِیْنَ ؕ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

इस के बा'द इस तरह दुरूदो सलाम पढ़ाइये।

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا حَبِیْبَ اللہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ اللہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا نُوْرَ اللہ

1. अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के रसाइल के इलावा किसी और किताब से दर्स की इजाज़त नहीं।
- मर्कज़ी मजलिसे शूरा

अगर मस्जिद में है तो इस तरह ए'तिकाफ़ की निय्यत करवाइये।

نَوَيْتُ سُنَّةَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैंने सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत की।)

फिर इस तरह कहिये :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़रीब क़रीब आ कर दर्स की ता'ज़ीम की निय्यत से हो सके तो दो ज़ानू बैठ जाइये। अगर थक जाएं तो जिस त़रह़ आप को आसानी हो उसी त़रह़ बैठ कर निगाहें नीची किये त-वज्जोह के साथ फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स सुनिये कि ला परवाही के साथ इधर उधर देखते हुए, ज़मीन पर उंगली से खेलते हुए, लिबास, बदन या बालों वग़ैरा को सेहलाते हुए सुनने से इसकी ब-र-कतें ज़ाइल होने का अन्देशा है। (बयान के आग़ाज़ में भी इसी अंदाज़ में तरग़ीब दिलाइये।) येह केहने के बा'द फ़ैज़ाने सुन्नत से देख कर दुरूद शरीफ़ की एक फ़ज़ीलत बयान कीजिये फिर कहिये :

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْبِ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जो कुछ लिखा हुवा है वोही पढ़ कर सुनाइये। आयत व अ़-रबी इ़बारात का सिर्फ़ तर्जमा पढ़िये। किसी भी आयत या ह़दीस़ का अपनी राय से हरगिज़ ख़ुलासा मत कीजिये। कि ऐसा करना ह़राम है।

दर्स के आख़िर में इस तरह तरग़ीब दिलाइये

(हर मु-बल्लिग़ को चाहिये कि ज़बानी याद कर ले और दर्सो बयान के आख़िर में बिला कमी व बेशी इसी तरह तरग़ीब दिलाया करे।)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ***दा'वते इस्लामी*** के महके महके म-दनी माहौल में ब-कस़रत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं। (अपने यहां के हफ़्तावार इज्तिमाअ़ का ए'लान इस तरह कीजिये। म-स़-लन : म-दनी मर्कज़ अह़मदाबादवाले कहें) हर जुमे'रात को म-दनी मर्कज़, शाही मस्जिद में, शाहे आ़लम दरवाज़ा के पास मग़रिब की नमाज़ के बा'द होनेवाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के ***म-दनी क़ाफ़िलों*** में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना ***फ़िक्रे मदीना*** के ज़रीए ***म-दनी इन्आ़मात*** का कार्ड पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस10 दिन के अंदर अंदर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जमा' करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ***ईमान की ह़िफ़ाज़त*** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा। हर इस्लामी भाई अपना येह म-दनी ज़ेहन बनाए कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये[1] म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी ! तेरी धूम मची हो

आख़िर में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ (ख़ुशूअ़ या'नी बदन की आ़जिज़ी और ख़ुज़ूअ़ या'नी दिल-व-दिमाग़ की ह़ाज़िरी) के साथ दुआ़ में हाथ उठाने के आदाब बजा लाते हुए बिला कमी व बेशी इस तरह दुआ़ मांगिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط

या रब्बे मुस्त़फ़ा ! عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ब-तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारी, हमारे मां-बाप की और सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ दर्स की ग़-लतियां और तमाम गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा। अ़मल का जज़्बा दे, हमें परहेज़गार और मां-बाप का फ़रमां बर्दार बना। ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हमें अपना और अपने म-दनी ह़बीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुख़्लिस़ आ़शिक़ बना। हमें गुनाहों की बीमारियों से शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा। ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हमें म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करने, म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने और इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ दूसरों को भी म-दनी कामों की तरग़ीब दिलवाने का जज़्बा अ़त़ा फ़रमा। ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हर मुसल्मान को बीमारी, क़र्ज़दारी, बेरोज़गारी, बे औलादी, बेजा मुक़द्दमेबाज़ी और हर तरह की परेशानी से नजात अ़त़ा फ़रमा। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस्लाम का बोल बाला कर और दुश्मनाने इस्लाम का मुंह काला कर। ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ौल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हमें ज़ेरे गुंबदे ख़ज़रा जल्वए महबूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में

---

1. यहां इस्लामी बहन कहे, "घर के मर्दों को म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करवाना है।"

शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने म-दनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ौस नसीब फ़रमा। ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ मदीने की ख़ुश्बूदार ठंडी ठंडी हवाओं का वासित़ा हमारी तमाम जाइज़ दुआ़एं क़बूल फ़रमा।

जिस किसी ने भी दुआ़ के वासित़े या रब عزوجل *कहा*
कर दे पूरी आरज़ू हर बेकसो मज्बूर की

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

शे'र के बाद येह आयते दुरूद और दुआ़ की इख़्तितामी आयात पढ़िये:

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓىِٕكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِیِّ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ﴿۵۶﴾

सब दुरूद शरीफ़ पढ़ लें फिर पढ़िये : سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا یَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۸۲﴾

दर्स की कमाई पाने के लिये (खड़े खड़े नहीं बल्कि) ***बैठ*** कर ख़न्दा पेशानी के साथ लोगों से मुलाक़ात कीजिये, चन्द नये इस्लामी भाइयों को अपने क़रीब बिठा लीजिये। और ***इन्फ़िरादी कोशिश*** के ज़रीए उन्हें ***म-दनी इन्आ़मात*** और ***म-दनी क़ाफ़िलों*** की ब-र-कतें समझाइये।

तुम्हें ऐ मुबल्लिग़ ! येह मेरी दुआ़ है
किये जाओ तै तुम तरक़्क़ी का ज़ीना

<u>दुआ़ए अ़त्तार :</u> ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ मुझे और पाबन्दी के साथ ***फ़ैज़ाने सुन्नत*** से रोज़ाना कम अज़ कम ***दो ^{2} दर्स*** मस्जिद, घर, चौक, स्कूल वग़ैरा में देने और सुनने वाले की मग़्फ़िरत फ़रमा। और हमें हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर बना।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मुझे दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत की तौफ़ीक़
मिले दिन में दो ^{2} मर्तबा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रह़मतें भेजता है ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़ज़ाइले र-मज़ान शरीफ़

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए मगर आप हिम्मत कर के येह बाब (हर साल) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ *इस की ब-र-कतें ख़ुद ही देख लेंगे ।*

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने त़क़र्रुब निशान है, "बेशक बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जो मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद भेजे ।"

(तिरमिज़ी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:27, ह़दीस़:484)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का करोड़ हा करोड़ एह़सान कि उस ने हमें ***माहे र-मज़ान*** जैसी अ़ज़ीमुश्शान ने'मत से सर-फ़राज़ फ़रमाया । माहे र-मज़ान के फ़ैज़ान के क्या केहने ! इस की तो हर घड़ी रह़मत भरी है । इस महीने

में अज्रो स़वाब बहुत ही बढ़ जाता है। नफ़्ल का स़वाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का स़वाब सत्तर गुना कर दिया जाता है। बल्कि इस महीने में तो रोज़ादार का सोना भी इबादत में शुमार किया जाता है। अ़र्श उठाने वाले फ़िरिश्ते रोज़ादारों की दुआ़ पर आमीन केहते हैं और एक ह़दीसे़ पाक के मुत़ाबिक़ ***"र-मज़ान के रोज़ादार के लिये दरया की मछलियां इफ़्त़ार तक दुआ़ए मग़्फ़िरत करती रहती हैं।"***

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:55, ह़दीस़:6)

इबादत का दरवाज़ा : ***रोज़ा*** बात़िनी इबादत है, क्यूंकि हमारे बताए बिग़ैर किसी को येह इ़ल्म नहीं हो सकता है कि हमारा रोज़ा है और ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ बात़िनी इबादत को ज़ियादा पसन्द फ़रमाता है। एक ह़दीसे़ पाक के मुत़ाबिक़, ***"रोज़ा इबादत का दरवाज़ा है।"***

(अल जामिउ़स्सग़ीर, स़-फ़ह़ा:146, ह़दीस़:2415)

नुज़ूले कुरआन : ***इस*** माहे मुबारक की एक ख़ुसूसि़य्यत येह भी है कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने इस में कुरआने पाक नाज़िल फ़रमाया है। चुनान्चे मुक़द्दस कुरआन में ख़ुदाए ***रह़मान*** عَزَّوَجَلَّ का नुज़ूले कुरआन और माहे र-मज़ान के बारे में फ़रमाने आ़लीशान है :

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْٓ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَیِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْیَصُمْهُ ؕ وَمَنْ كَانَ مَرِیْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَیَّامٍ اُخَرَ ؕ یُرِیْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْیُسْرَ وَلَا یُرِیْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ٘ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۸۵﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : र-मज़ान का महीना, जिस में कुरआन उतरा, लोगों के लिये हिदायत और रहनुमाई और फ़ैसले की रौशन बातें, तो तुम में जो कोई येह महीना पाए ज़रूर इस के रोज़े रखे और जो बीमार या सफ़र में हो, तो उतने रोज़े और दिनों में । अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) तुम पर आसानी चाहता है और तुम पर दुश्वारी नहीं चाहता और इस लिये कि तुम गिनती पूरी करो और अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की बड़ाई बोलो इस पर कि उस ने तुम्हें हिदायत की और कहीं तुम ह़क़ गुज़ार हो ।

(पारह:2, अल ब-क़रह:185)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

र-मज़ान की ता 'रीफ़ : ***इस*** आयते मुक़द्दसा के इब्तिदाई हिस्से شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْٓ के तह़त ***मुफ़स्सिरे*** शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ***तफ़्सीरे नई़मी*** में फ़रमाते हैं : ''र-मज़ान'' या तो ''रह़मान عَزَّوَجَلَّ'' की त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम है, चूंकि इस महीने में दिन रात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत होती है । लिहाज़ा इसे शहरे र-मज़ान या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का महीना कहा जाता है । जैसे मस्जिद व का'बा को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का

घर केहते हैं कि वहां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ही काम होते हैं। ऐसे ही र-मज़ान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का महीना है कि इस महीने में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ही काम होते हैं। रोज़ा तरावीह़ वग़ैरा तो हैं ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के। मगर ब ह़ालते रोज़ा जो जाइज़ नौकरी और जाइज़ तिजारत वग़ैरा की जाती है वोह भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के काम क़रार पाते हैं। इस लिये इस माह का नाम र-मज़ान या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का महीना है। या येह "رَمْضَاءٌ" से मुश्तक़ है। رَمْضَاءٌ मौसिमे ख़रीफ़ की बारिश को केहते हैं, जिस से ज़मीन धुल जाती है और "रबीअ़" की फ़स्ल ख़ूब होती है। चूंकि येह महीना भी दिल के गर्दो ग़ुबार धो देता है और इस से आ'माल की खेती हरी भरी रहती है इस लिये इसे ***र-मज़ान*** केहते हैं। "सावन" में रोज़ाना बारिशें चाहियें और "भादों" में चार। फिर "असाड़" में एक। इस एक से खेतियां पक जाती हैं। तो इसी त़रह़ ग्यारह महीने बराबर नेकियां की जाती रहीं। फिर ***र-मज़ान*** के रोज़ों ने इन नेकियों की खेती को पका दिया। या येह "रम्ज़" से बना जिस के मा'ना हैं "गरमी या जलना।" चूंकि इस में मुसल्मान भूक प्यास की तपश बरदाश्त करते हैं या येह गुनाहों को जला डालता है, इस लिये इसे ***र-मज़ान*** कहा जाता है। (कन्ज़ुल उ़म्माल की आठवीं जिल्द के स़-फ़ह़ा नम्बर दो सौ सत्तरह पर ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत नक़्ल की गई है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "इस महीने का नाम र-मज़ान रखा गया है क्यूंकि येह गुनाहों को जला देता है।")

महीनों के नाम की वजह : ***हज़रते*** मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं: बा'ज़ मुफ़स्सिरीन رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने फ़रमाया कि जब महीनों के नाम रखे गए तो जिस मौसिम में जो महीना था उसी से उस का नाम हुवा । जो महीना गरमी में था उसे ***र-मज़ान*** केह दिया गया और जो मौसिमे बहार में था उसे ***रबीउ़ल अव्वल*** और जो सर्दी में था जब पानी जम रहा था उसे ***जुमादिल ऊला*** कहा गया । इस्लाम में हर नाम की कोई न कोई वजह होती है और नाम काम के मुताबिक़ रखा जाता है । दूसरी इस्तिलाहात में येह बात नहीं । हमारे यहां बड़े जाहिल का नाम "मुहम्मद फ़ाज़िल" और बुज़्दिल का नाम "शेर बहादुर" होता है और बद सूरत को "यूसुफ़ ख़ान" केहते हैं ! इस्लाम में येह ऐब नहीं । ***र-मज़ान*** बहुत ख़ूबियों का जामेअ़ था इसी लिये उस का नाम र-मज़ान हुवा ।

(तफ़्सीरे नईमी, जिल्द:2, स-फ़हा:205)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सोने के दरवाज़े वाला महल : ***सय्यिदुना*** अबू सईद ख़ुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, मक्की म-दनी सुल्तान, रहमते आ़-लमियान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रहमत निशान है : "जब माहे र-मज़ान की पहली रात आती है तो आस्मानों और जन्नत के दरवाज़े खोल दिये

जाते हैं और आख़िर रात तक बन्द नहीं होते । जो कोई बन्दा इस माहे मुबारक की किसी भी रात में नमाज़ पढ़ता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के हर सज्दे के इ़वज़ (या'नी बदले में) उस के लिये पन्दरह सौ1500 नेकियां लिखता है और उस के लिये जन्नत में ***सुर्ख़ याक़ूत का घर*** बनाता है । जिस में साठ हजार 60000 दरवाज़े होंगे । और हर दरवाज़े के पट सोने के बने होंगे जिन में याक़ूते सुर्ख़ जड़े होंगे । पस जो कोई माहे र-मज़ान का ***पहला रोज़ा*** रखता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ महीने के आख़िर दिन तक उस के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देता है, और उस के लिये सुब्ह़ से शाम तक ***सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते*** दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहते हैं । रात और दिन में जब भी वोह ***सज्दा*** करता है उस के हर सज्दे के इ़वज़ (या'नी बदले) उसे (जन्नत में) एक एक ऐसा दरख़्त अ़ता किया जाता है कि उस के साए में घौड़े सुवार ***पांच सौ बरस*** तक चलता रहे ।"

(शुउ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:314, ह़दीस़:3635)

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** ख़ुदाए ह़न्नानो मन्नान عَزَّوَجَلَّ का किस क़-दर अ़ज़ीम एह़सान है कि उस ने हमें अपने ह़बीबे ज़ी शान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल ऐसा माहे र-मज़ान अ़ता फ़रमाया कि इस माहे मुकर्रम में जन्नत के तमाम दरवाज़े खुल जाते हैं । और नेकियों का अज्र ख़ूब ख़ूब बढ़ जाता है ।

बयान कर्दा ह़दीस़ के मुत़ाबिक़ र-मज़ानुल मुबारक की रातों में नमाज़ अदा करने वाले को हर एक सज्दे के बदले में ***पन्दरह सौ नेकियां*** अ़त़ा की जाती हैं नीज़ जन्नत का ***अ़ज़ीमुश्शान मह़ल*** मज़ीद बर आं । इस ह़दीसे़ मुबारक में रोज़ादारों के लिये येह बिशारते उ़ज़्मा भी मौजूद है कि सुब्ह़ ता शाम ***सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते*** उन के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहते हैं ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माह़ौल से वाबस्ता ***आ़शिक़ाने रसूल*** की सो़ह़बत ह़ासि़ल होने की सूरत में माहे र-मज़ानुल मुबारक की ब-र-कतें लूटने का बहुत जे़ह्न बनता है वरना बुरी सो़ह़बतों में रह कर इस मुबारक महीने में भी अक्सर लोग गुनाहों में पड़े रहते हैं । आइये ! गुनाहों के दलदल में धंसे हुए एक ***फ़नकार*** का वाके़आ़ पढ़िये जिसे दा'वते इस्लामी के ***म-दनी माह़ौल*** ने म-दनी रंग चढ़ा दिया । चुनान्चे

मैं फ़नकार था : ***ओरंगी*** टाऊन (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : अफ़्सोस

स़द करोड़ अफ़्सोस ! मैं एक ***फ़नकार*** था, म्यूज़ीकल प्रोग्राम्ज़ और फ़ंक्शन्ज़ करते हुए ज़िन्दगी के अनमोल अवक़ात बरबाद हुए जा रहे थे, क़ल्बो दिमाग़ पर ग़फ़्लत के कुछ ऐसे पर्दे पड़े हुए थे कि न नमाज़ की तौफ़ीक़ थी न ही गुनाहों का एह़सास । स़ह़राए मदीना टोल प्लाज़ा सुपर हाई वे बाबुल मदीना कराची में बाबुल इस्लाम सत़्ह़ पर होने वाले ***तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़*** (सिने 1424 हिजरी, सिने 2003 इस्वी) में हाज़िरी के लिये एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई ने ***इन्फ़िरादी कोशिश*** कर के तरग़ीब दिलाई । ज़हे नस़ीब ! उस में शिर्कत की सआ़दत मिल गई । तीन रोज़ा इज्तिमाअ़ के इख़्तिताम पर ***रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़*** में मुझे अपने गुनाहों पर बहुत ज़ियादा नदामत हुई, मैं अपने जज़्बात पर क़ाबू न पा सका, फूट फूट कर रोया, बस रोने ने काम दिखा दिया ! اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे ***दा'वते इस्लामी*** का म-दनी माह़ौल मिल गया । और मैं ने रक़्सो सुरूद की मह़फ़िलों से ***तौबा*** कर ली और ***म-दनी क़ाफ़िलों*** में सफ़र को अपना मा'मूल बना लिया । 25 दिसम्बर सिने 2004 इस्वी को मैं जब ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र पर रवाना हो रहा था कि छोटी हमशीरा का फ़ोन आया, भर्राई हुई आवाज़ में उन्हों ने अपने यहां होने वाली ***नाबीना बच्ची*** की विलादत की ख़बर सुनाई और साथ ही कहा, डॉक्टरों ने केह दिया है कि इस की आंखें रौशन नहीं हो सकतीं । इतना केहने के बा'द बन्द टूटा और छोटी बहन स़दमे

से बिलक बिलक कर रोने लगी । मैं ने येह केह कर ढारस बंधाई कि اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ ***म-दनी क़ाफ़िले*** में दुआ़ करूंगा । मैं ने म-दनी क़ाफ़िले में ख़ुद भी बहुत दुआ़एं कीं और म-दनी क़ाफ़िले वाले ***आ़शिक़ाने रसूल*** से भी दुआ़एं करवाईं । जब म-दनी क़ाफ़िले से पलटा तो दूसरे ही दिन छोटी बहन का मुस्कराता हुवा फ़ोन आया और उन्हों ने ख़ुशी ख़ुशी येह ख़बरे फ़रह़त असर सुनाई कि اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ***मेरी नाबीना बेटी महक की आंखें रौशन हो गई हैं और डॉक्टर्ज़ तअ़ज्जुब कर रहे हैं कि येह कैसे हो गया ! क्यूं कि हमारी डॉक्टरी में इस का कोई इलाज ही नहीं था ।*** येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे बाबुल मदीना कराची में अ़लाक़ाई मुशा-वरत के एक रुक्न की हैसिय्यत से दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के लिये कोशिशें करने की सआ़दतें ह़ासिल हैं ।

आफ़तों से न डर, रख करम पर नज़र रौशन आंखें मिलें, क़ाफ़िले में चलो
आप को डॉक्टर, ने गो मायूस कर भी दिया मत डरें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! दा'वते इस्लामी का म-दनी माहौल कितना प्यारा प्यारा है । इस के दामन में आ कर मुआ़शरे के न जाने कितने ही बिगड़े हुए अफ़राद

बा किरदार बन कर सुन्नतों भरी बा इ़ज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़ारने लगे नीज़ म-दनी क़ाफ़िलों की बहारें भी आप के सामने हैं । जिस त़रह़ म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की ब-र-कत से बा'ज़ों की दुन्यवी मुसीबत रुख़्स़त हो जाती है । اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ इसी त़रह़ ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, सरापा रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से आख़िरत की आफ़त भी राह़त में ढल जाएगी ।

टूट जाएंगे गुनहगारों के फ़ौरन क़ैदो बन्द
ह़श्र को खुल जाएगी त़ाक़त रसूलुल्लाह की

पांच[5] ख़ुसूसी करम : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि रह़मते आ़-लमियान, सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, ह़बीबे रह़मान عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ी शान है : "मेरी उम्मत को माहे र-मज़ान में ***पांच चीज़ें*** ऐसी अ़त़ा की गई जो मुझ से पहले किसी नबी عَلَيْهِ السَّلَام को न मिलीं : (1) जब ***र-मज़ानुल मुबारक*** की पहली रात होती है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की त़रफ़ रह़मत की नज़र फ़रमाता है और जिस की त़रफ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नज़रे रह़मत फ़रमाए उसे कभी भी अ़ज़ाब न देगा (2) शाम के वक़्त उन के मुंह की बू (जो भूक की वजह से होती है) अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक मुश्क की ख़ुश्बू से

भी बेहतर है (3) फ़िरिश्ते हर रात और दिन उन के लिये मग़्फ़िरत की दुआएं करते रहते हैं (4) अल्लाह तआ़ला जन्नत को हुक्म फ़रमाता है, "मेरे (नेक) बन्दों के लिये मुज़य्यन (या'नी आरास्ता) हो जा अ़न क़रीब वोह दुन्या की मशक़्क़त से मेरे घर और करम में राह़त पाएंगे (5) जब माहे र-मज़ान की आख़िरी रात आती है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है। क़ौम में से एक शख़्स ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की, ***या रसूलल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या येह ***लैलतुल क़द्र*** है ? इर्शाद फ़रमाया: "नहीं क्या तुम नहीं देखते कि मज़्दूर जब अपने कामों से फ़ारिग़ हो जाते हैं तो उन्हें उजरत दी जाती है।"

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:56, ह़दीस़:7)

स़ग़ीरा गुनाहों का कफ़्फ़ारा : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर सुरूर है, "पांचों नमाज़ें, और जुमुआ़ अगले जुमुआ़ तक और माहे र-मज़ान अगले माहे र-मज़ान तक गुनाहों का कफ़्फ़ारा हैं जब तक कि कबीरा गुनाहों से बचा जाए।"

(स़ह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:144, ह़दीस़:233)

तौबा का त़रीक़ा : سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ र-मज़ानुल मुबारक में रह़मतों की छमाछम बारिशें और ***गुनाहे स़ग़ीरा*** के कफ़्फ़ारे का

सामान हो जाता है। ***गुनाहे कबीरा*** तौबा से मुआ़फ़ होते हैं। ***तौबा करने का त़रीक़ा*** येह है कि जो गुनाह हुवा ख़ास़ उस गुनाह का ज़िक्र कर के दिल की बेज़ारी और आइन्दा उस से बचने का अ़ह्द कर के तौबा करे। म-स़लन झूट बोला, तो बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ करे, या अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ मैं ने जो येह झूट बोला इस से ***तौबा*** करता हूं और आइन्दा नहीं बोलूंगा। ***तौबा*** के दौरान दिल में झूट से नफ़रत हो और "आइन्दा नहीं बोलूंगा" केहते वक़्त दिल में येह इरादा भी हो कि जो कुछ केह रहा हूं ऐसा ही करूंगा जभी ***तौबा*** है। अगर बन्दे की ह़क़ त-लफ़ी की है तो ***तौबा*** के साथ साथ उस बन्दे से मुआ़फ़ करवाना भी ज़रूरी है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوْبُوْا إِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माहे र-मज़ान के फ़ज़ाइल से कुतुबे अह़ादीस़ मालामाल हैं। ***र-मज़ानुल मुबारक*** में इस क़-दर ब-र-कतें और रह़मतें हैं कि हमारे प्यार प्यारे आक़ा, मक्के मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यहां तक इर्शाद फ़रमाया, "अगर बन्दों को मा'लूम होता कि र-मज़ान क्या है तो मेरी उम्मत तमन्ना करती कि

काश ! पूरा साल र-मज़ान ही हो ।''

(स़ही़ह़ इब्ने खु़जै़मा, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:190, ह़दीस़:1886)

आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बयाने जन्नत निशान :

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि ''मह़बूबे रह़मान, सर-वरे ज़ीशान, रह़मते आ़-लमियान, मक्की म-दनी सुल्त़ान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने माहे शा'बान के आख़िरी दिन बयान फ़रमाया : ''ऐ लोगो ! तुम्हारे पास अ़-ज़मत वाला ब-र-कत वाला महीना आया, वोह महीना जिस में एक रात (ऐसी भी है जो) हज़ार महीनों से बेहतर है, इस (माहे मुबारक) के रोज़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़र्ज़ किये और इस की रात में क़ियाम[1] ततव्वुअ़ (या'नी सुन्नत) है, जो इस में नेकी का काम करे तो ऐसा है जैसे और किसी महीने में ***फ़र्ज़*** अदा किया और इस में जिस ने फ़र्ज़ अदा किया तो ऐसा है जैसे और दिनों में ***सत्तर फ़र्ज़*** अदा किये । येह महीना ***स़ब्र*** का है और ***स़ब्र*** का स़वाब जन्नत है और येह महीना मुआसात (या'नी ग़म ख़्वारी और भलाई) का है और इस महीने में मोमिन का ***रिज़्क़*** बढ़ाया जाता है । जो इस में रोज़ादार को ***इफ़्त़ार*** कराए उस के गुनाहों के लिये ***मग़्फ़िरत*** है और उस की गरदन आग से आज़ाद कर दी जाएगी । और इस इफ़्त़ार कराने वाले को वैसा ही स़वाब मिलेगा जैसा रोज़ा रखने वाले को मिलेगा । बिग़ैर इस के कि उस के अज्र

1. यहां क़ियाम से मुराद तरावीह़ है ।

में कुछ कमी हो।" हम ने अ़र्ज़ की, ***या रसूलल्लाह*** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम में से हर शख़्स़ वोह चीज़ नहीं पाता जिस से रोज़ा इफ़्त़ार करवाए। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया: अल्लाह तआ़ला येह स़वाब (तो) उस (शख़्स़) को देगा जो एक घूंट दूध या एक खजूर या एक घूंट पानी से रोज़ा इफ़्त़ार करवाए और जिस ने रोज़ादार को पेट भर कर खिलाया, उस को अल्लाह तआ़ला मेरे ह़ौज़ से पिलाएगा कि कभी प्यासा न होगा। यहां तक कि जन्नत में दाख़िल हो जाए। येह वोह महीना है कि इस का ***अव्वल*** (या'नी इब्तिदाई दस दिन) ***रह़मत*** है और इस का ***औसत*** (या'नी दरमियानी दस दिन) ***मग़्फ़िरत*** है और ***आख़िर*** (या'नी आख़िरी दस दिन) ***जहन्नम से आज़ादी*** है। जो अपने गुलाम पर इस महीने में तख़्फ़ीफ़ करे (या'नी काम कम ले) अल्लाह तआ़ला उसे बख़्श देगा और जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा इस महीने में चार बातों की कस़रत करो। इन में से दो[2] ऐसी हैं जिन के ज़रीए़ तुम अपने रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करोगे और बक़िय्या दो से तुम्हें बे नियाज़ी नहीं। पस वोह दो बातें जिन के ज़रीए़ तुम अपने रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करोगे वोह येह हैं: (1) لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ की गवाही देना (2) इस्तिग़फ़ार करना। जब कि वोह दो बातें जिन से तुम्हें ग़ना (बे नियाज़ी) नहीं वोह येह हैं: (1) अल्लाह तआ़ला से जन्नत त़लब करना (2) जहन्नम से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करना।"

(स़ह़ीह़ इब्ने ख़ुज़ैमा, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:1887)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी जो ह़दीसे़ पाक बयान की गई इस में माहे र-मज़ानुल मुबारक की रह़मतों, ब-र-कतों और अ़-ज़मतों का ख़ूब तज़्किरा है। इस माहे मुबारक में ***कलिमा*** शरीफ़ ज़ियादा ता'दाद में पढ़ कर और बार बार ***इस्तिग़फ़ार*** या'नी ख़ूब तौबा के ज़रीए अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने की सअ़्य करनी है। और इन दो बातों से तो किसी सूरत में भी ला परवाही नहीं होनी चाहिये या'नी अल्लाह तआ़ला से जन्नत में दाख़िला और जहन्नम से पनाह की बहुत ज़ियादा इल्तिजाएं करनी हैं।

र-मज़ानुल मुबारक के चार नाम : अल्लाहु अक्बर عَزَّوَجَلَّ ! माहे र-मज़ान का भी क्या ख़ूब फ़ैज़ान है ! ***मुफ़स्सिरे*** शहीर ***ह़कीमुल*** उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ***तफ़्सीरे नईमी*** में फ़रमाते हैं: ''इस माहे मुबारक के कुल चार नाम हैं (1) ***माहे र-मज़ान*** (2) ***माहे स़ब्र*** (3) ***माहे मुआसात*** और (4) ***माहे वुस्अ़ते रिज़्क़ ।''***

मज़ीद फ़रमाते हैं, रोज़ा स़ब्र है जिस की जज़ा रब عَزَّوَجَلَّ है और वोह इसी महीने में रखा जाता है । इस लिये इसे माहे स़ब्र केहते हैं । ***मुआसात*** के मा'ना हैं भलाई करना । चूंकि इस महीने में सारे मुसल्मानों से ख़ास़ कर अहले क़राबत से भलाई करना ज़ियादा स़वाब है इस लिये इसे ***माहे मुआसात*** केहते हैं इस

में रिज़्क़ की फ़राख़ी भी होती है कि ग़रीब भी ने'मतें खा लेते हैं, इसी लिये इस का नाम ***माहे वुस्अ़ते रिज़्क़*** भी है।" (तफ़्सीरे नईमी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:208)

"माहे र-मज़ानल मुबारक" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से 13 म-दनी फूल

(येह तमाम म-दनी फूल तफ़्सीरे नईमी जि:2 से लिये गए हैं)

मदीना 1 ***का'बए*** मुअ़ज़्ज़मा मुसल्मानों को बुला कर देता है और येह आ कर ***रह़मतें*** बांटता है। गोया वोह (या'नी का'बा) कुंवां है और येह (या'नी र-मज़ान शरीफ़) दरया, या वोह (या'नी का'बा) दरया है और येह (या'नी र-मज़ान) बारिश।

मदीना 2 ***हर*** महीने में ख़ास़ तारीख़ें और तारीख़ों में भी ख़ास़ वक़्त में इ़बादत होती है। म-स़लन बक़र ईद की चन्द (मख़्सूस़) तारीख़ों में ***ह़ज,*** मुह़र्रम की दस्वीं तारीख़ अफ़्ज़ल, मगर ***माहे र-मज़ान*** में हर दिन और हर वक़्त इ़बादत होती है। रोज़ा इ़बादत, इफ़्त़ार इ़बादत, इफ़्त़ार के बा'द तरावीह़ का इन्तिज़ार इ़बादत, तरावीह़ पढ़ कर स-ह़री के इन्तिज़ार में सोना इ़बादत, फिर स-ह़री खाना भी इ़बादत अल ग़-रज़ हर आन में ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की शान नज़र आती है।

मदीना 3 ***र-मज़ान*** एक भट्टी है जैसे कि भट्टी गन्दे लोहे को स़ाफ़ और स़ाफ़ लोहे को मशीन का पुर्ज़ा बना कर क़ीमती कर देती है और सोने को ज़ेवर बना कर इस्ते'माल

के लाइक़ कर देती है। ऐसे ही ***माहे र-मज़ान*** गुनहगारों को पाक करता और नेक लोगों के द-रजे बढ़ाता है।

मदीना 4 ***र-मज़ान*** में नफ़्ल का स़वाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का स़वाब सत्तर गुना मिलता है।

मदीना 5 ***बा'ज़*** उ-लमा फ़रमाते हैं कि जो र-मज़ान में मर जाए उस से सुवालाते क़ब्र भी नहीं होते।

मदीना 6 ***इस*** महीने में शबे क़द्र है। गुज़श्ता आयत से मा'लूम हुवा कि कुरआन र-मज़ान में आया और दूसरी जगह फ़रमाया:-

إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ﴿١﴾ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान:*** बेशक हम ने इसे शबे क़द्र में उतारा।

(पारह 30, अल क़द्र:1)

दोनों आयतों के मिलाने से मा'लूम हुवा कि शबे क़द्र र-मज़ान में ही है और वोह ग़ालिबन सत्ताईस्वीं शब है। क्यूंकि ***लैलतुल क़द्र*** में नौ हुरूफ़ है और येह लफ़्ज़ सूरए क़द्र में तीन बार आया। जिस से सत्ताईस ह़ासिल हुए मा'लूम हुवा कि वोह सत्ताईस्वीं शब है।

मदीना 7 ***र-मज़ान*** में इब्लीस क़ैद कर लिया जाता है और दोज़ख़ के

दरवाज़े बन्द हो जाते हैं जन्नत आरास्ता की जाती है इस के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। इसी लिये इन दिनों में नेकियों की ज़ियादती और गुनाहों की कमी होती है जो लोग गुनाह करते भी हैं वोह नफ़्से अम्मारा या अपने साथी शैत़ान (क़रीन) के बहकाने से करते हैं।

मदीना 8 ***र-मज़ान*** के खाने पीने का ह़िसाब नहीं।

मदीना 9 ***क़ियामत*** में र-मज़ान व क़ुरआन रोज़ादार की शफ़ाअ़त करेंगे कि ***र-मज़ान*** तो कहेगा, मौला عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने इसे दिन में खाने पीने से रोका था और ***क़ुरआन*** अ़र्ज़ करेगा कि या रब ! عَزَّوَجَلَّ मैं ने इसे रात में तिलावत व तरावीह़ के ज़रीए़ सोने से रोका।

मदीना 10 ***हु़ज़ूरे*** पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ***र-मज़ानुल मुबारक*** में हर क़ैदी को छोड़ देते थे और हर साइल को अ़त़ा फ़रमाते थे। रब عَزَّوَجَلَّ भी र-मज़ान में जहन्नमियों को छोड़ता है। लिहाज़ा चाहिये कि र-मज़ान में नेक काम किये जाएं और गुनाहों से बचा जाए।

मदीना 11 ***क़ुरआने*** करीम में सिर्फ़ **र-मज़ान शरीफ़** ही का नाम लिया गया और इसी के फ़ज़ाइल बयान हुए। किसी दूसरे महीने का न स़रा-ह़तन नाम है न ऐसे फ़ज़ाइल।

महीनों में सिर्फ़ माहे र-मज़ान का नाम कुरआन शरीफ़ में लिया गया। औरतों में सिर्फ़ ***बीबी मरयम*** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम कुरआन में आया । सहाबा में सिर्फ़ हज़रते सय्यिदुना ***ज़ैद इब्ने हारिसा*** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का नाम कुरआन में लिया गया जिस से इन तीनों की अ-ज़मत मा'लूम हुई ।

मदीना 12 र-मज़ान में इफ़्तार और स-हरी के वक़्त दुआ क़बूल होती है । या'नी इफ़्तार करते वक़्त और स-हरी खा कर। येह मरतबा किसी और महीने को हासिल नहीं।

मदीना 13 र-मज़ान में पांच हुरूफ़ हैं ر،م،ض،ا،ن۔ **ر** से मुराद "रहमते इलाही عَزَّوَجَلَّ, **میم** से मुराद महब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ, **ض** से मुराद ज़माने इलाही عَزَّوَجَلَّ, **اَلِف** से अमाने इलाही عَزَّوَجَلَّ, **ن** से नूरे इलाही عَزَّوَجَلَّ । और ***र-मज़ान*** में ***पांच इबादात*** खुसूसी होती हैं । रोज़ा, तरावीह, तिलावते कुरआन, ए'तिकाफ़, शबे क़द्र में इबादात । तो जो कोई सिद्क़े दिल से येह ***पांच इबादात*** करे वोह उन ***पांच इन्आमों*** का मुस्तहक़ है ।"

(तफ़्सीरे नईमी, जिल्द:2, स-फ़हा:208)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जन्नत सजाई जाती है : *मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !* र-मज़ानुल मुबारक के इस्तिक़्बाल के लिये सारा साल जन्नत को सजाया जाता है । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि ताजदारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, स़ाह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, ''बेशक ***जन्नत*** इब्तिदाई साल से आइन्दा साल तक र-मज़ानुल मुबारक के लिये सजाई जाती है और फ़रमाया र-मज़ान शरीफ़ के पहले दिन जन्नत के दरख़्तों के नीचे से बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरों पर हवा चलती है और वोह अ़र्ज़ करती हैं, ''ऐ परवर्द गार ! عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों में से ऐसे बन्दों को हमारा शौहर बना जिन को देख कर हमारी आंखें ठन्डी हों और जब वोह हमें देखें तो उन की आंखें भी ठन्डी हों ।'' (शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:312, ह़दीस़:3633)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ जन्नत की अ़-ज़मत की तो क्या ही बात है ! काश ! हमें बे ह़िसाब बख़्श दिया जाए और जन्नतुल फ़िरदौस में मदीने वाले आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ौस नस़ीब हो जाए । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** अहले ह़क़ की म-दनी तह़रीक है, दा'वते इस्लामी वालों पर कैसी कैसी करम नवाज़ियां होती हैं इस की एक म-दनी झलक मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये:

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहोंचता है ।

जन्नत में आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **के पड़ौस की बिशारत :** ***इस्लामी*** भाइयों और इस्लामी बहनों को मुफ़्त दर्से निज़ामी (या'नी आ़लिम कोर्स) करवाने के लिये اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम मु-तअ़द्दद जामिआ़त बनाम जामिअ़तुल मदीना क़ाइम हैं। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सिने 1427 हिजरी में दा'वते इस्लामी के इन जामिआ़तुल मदीना (बाबुल मदीना कराची) के तक़रीबन 160 त़-लबा ने हाथों हाथ 12 माह के लिये ***राहे ख़ुदा*** عَزَّوَجَلَّ में सफ़र इख़्तियार किया । इब्तिदाअन ***म-दनी क़ाफ़िला कोर्स*** करवाने की तरकीब बनी, इस दौरान त़-लबा के जज़्बए ख़िदमते इस्लाम को मज़ीद ***मदीने के 12 चांद*** लग गए और उन में से तक़रीबन 77 त़-लबा ने उ़म्र भर के लिये अपने आप को म-दनी क़ाफ़िलों के लिये पेश कर दिया ! इस अ़ज़ीम कुरबानी पर हौस़ला अफ़्ज़ाई की बड़ी ज़बरदस्त सूरत बनी और वोह येह कि ख़्वाब में ***सरकारे नामदार,*** मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर्द गार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार से एक ***आ़शिक़े रसूल*** की आंखें ठन्डी हुई, लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई, रह़मत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : ***जिस जिस ने अपने आप को उ़म्र भर के लिये पेश कर दिया है मैं उन को जन्नत के अन्दर अपने साथ रखूंगा ।*** ख़्वाब देखने वाले आ़शिक़े

रसूल के दिल में ह़सरत हुई कि काश ! स़द करोड़ काश ! मुझे भी इन खु़श नसी़बों में शामिल कर लिया जाता। अल्लाह के मह़बूब, दानाए गु़यूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे दिल की बात जान ली और फ़रमाया, "अगर तुम भी उन में शामिल होना चाहते हो तो अपने आप को उ़म्र भर के लिये पेश कर दो।"

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र, दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
म-लकूतो मुल्क में कोई शय नहीं वोह जो तुझ पे इ़यां नहीं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

खु़श नसी़ब आ़शिक़ाने रसूल को बिशारते उ़ज़्मा मुबारक हो ! ***अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त*** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर नज़र रखते हुए क़वी उम्मीद है कि जिन बख़्त वरों के लिये येह ***म-दनी ख़्वाब*** देखा गया है اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ उन का ख़ातिमा ईमान पर होगा और वोह म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तु़फै़ल जन्नतुल फ़िरदौस में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ौस पाएंगे। ताहम येह याद रहे ! कि उम्मती जो ख़्वाब देखे वोह शर-अ़न ***हुज्जत*** नहीं होता, ख़्वाब की बिशारत की बुन्याद पर किसी को क़त़्ई जन्नती नहीं कहा जा सकता।

इज़्न से तेरे सरे ह़श्र कहें काश ! हु़ज़ूर
साथ अ़त्तार को जन्नत में रखूंगा या रब

हर शब साठ हज़ार की बख़्शिश : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ज़ीशान, मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान, मह़बूबे रह़मान عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है, "***र-मज़ान शरीफ़*** की हर शब आस्मानों में सुब्ह़े स़ादिक़ तक एक मुनादी येह निदा करता है, "***ऐ अच्छाई मांगने वाले !*** मुकम्मल कर (या'नी अल्लाह तआ़ला की इत़ाअ़त की त़रफ़ आगे बढ़) और ख़ुश हो जा । और ***ऐ शरीर !*** शर से बाज़ आ जा और इ़ब्रत ह़ासिल कर । है ***कोई मग़्फ़िरत का त़ालिब !*** कि उस की त़लब पूरी की जाए । है ***कोई तौबा करने वाला !*** कि उस की तौबा क़बूल की जाए । है ***कोई दुआ़ मांगने वाला !*** कि उस की दुआ़ क़बूल की जाए । है ***कोई साइल !*** कि उस का सुवाल पूरा किया जाए । ***अल्लाह तआ़ला र-मज़ानुल मुबारक की हर शब में इफ़्त़ार के वक़्त साठ हज़ार गुनाहगारों को दोज़ख़ से आज़ाद फ़रमा देता है । और ई़द के दिन सारे महीने के बराबर गुनाहगारों की बख़्शिश की जाती है ।"***

(अद्दुर्रुल मन्सूर, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:146)

मदीने के दीवानो ! र-मज़ानुल मुबारक की जल्वा गरी तो क्या होती है, हम ग़रीबों के वारे न्यारे हो जाते हैं । ***अल्लाह*** तआ़ला के फ़ज़्लो करम से ***रह़मत*** के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और ख़ूब

मग़्फ़िरत के परवाने तक़्सीम होते हैं । काश ! हम गुनहगारों को ब तुफ़ैले **माहे र-मज़ान** सर-वरे कौनो मकान, मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान, मह़बूबे रह़मान عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمْ के रह़मत भरे हाथों जहन्नम से रिहाई का परवाना मिल जाए । इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ करते हैं:

तमन्ना है फ़रमाइये रोज़े महशर
येह तेरी रिहाई की चिठ्ठी मिली है

रोज़ाना दस लाख गुनहगारों की दोज़ख़ से रिहाई :

अल्लाह तआ़ला की इनायतों, रह़मतों और बख़्शिशों का तज़्किरा करते हुए एक मौक़अ़ पर सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार, बि इज़्ने परवर्द गार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब र-मज़ान की पहली रात होती है तो अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ की त़रफ़ नज़र फ़रमाता है और जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे की त़रफ़ नज़र फ़रमाए तो उसे कभी अ़ज़ाब न देगा । और ***हर रोज़ दस लाख*** (गुनहगारों) ***को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है और जब उन्तीसवीं रात***

होती है तो महीने भर में जितने आज़ाद किये उन के मज्मूए के बराबर उस एक रात में आज़ाद फ़रमाता है । फिर जब ईदुल फ़ित्र की रात आती है। मलाइका खुशी करते हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने नूर की ख़ास् तजल्ली फ़रमाता है और फ़िरिश्तों से फ़रमाता है, ***"ऐ गुरोहे मलाइका !*** उस मज़्दूर का क्या बदला है जिस ने काम पूरा कर लिया ?" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, "उस को पूरा पूरा अज्र दिया जाए।" अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है, "मैं तुम्हें गवाह करता हूं कि मैं ने उन सब को बख़्श दिया।"

(कन्जुल उ़म्माल, जिल्दः8, स़-फ़ह़ाः219, ह़दीस़ः23702)

जुमुआ़ की हर हर घड़ी में दस लाख की मग़्फ़िरत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि महबूबे रब्बुल आ़-लमीन, सय्यिदुल अम्बियाए वल मुर्सलीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है, "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ माहे र-मज़ान में रोज़ाना इफ़्तार के वक़्त दस लाख ऐसे गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है जिन पर गुनाहों की वजह से जहन्नम वाजिब हो चुका था, नीज़ ***शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़*** (या'नी जुमा'रात को गुरूबे आफ़्ताब से ले कर जुमुआ़ को गुरूबे आफ़्ताब तक) ***की हर हर घड़ी में ऐसे दस दस लाख गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद किया जाता है जो अ़ज़ाब के ह़क़दार***

क़रार दिये जा चुके होते हैं ।"

(कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:223, ह़दीस़:23716)

इ़स्यां से कभी हम ने कनारा न किया पर तूने दिल आज़ुर्दा हमारा न किया
हम ने तो जहन्नम की बहुत की तज्वीज़ लेकिन तेरी रह़मत ने गवारा न किया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! बयान कर्दा अह़ादीसे़ मुबारका में **रब्बुल अनाम** عَزَّوَجَلَّ के किस क़-दर अ़ज़ीमुश्शान इन्आ़म व इकराम का ज़िक्र है। سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ! ***र-मज़ानुल मुबारक*** में रोज़ाना दस लाख ऐसे गुनहगारों की बख़्शिश हो जाया करती है जो अपने गुनाहों के सबब जहन्नम के ह़क़दार क़रार पा चुके होते हैं। नीज़ शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ की तो हर हर घड़ी में दस दस लाख गुनहगार अ़ज़ाबे नार से आज़ाद क़रार दिये जाते हैं। और फिर ***र-मज़ानुल मुबारक*** की आख़िरी शब की तो क्या खूब बहार है कि सारे माहे र-मज़ान में जितने बख़्शे गए थे उस के शुमार के बराबर गुनहगार उस एक रात में अ़ज़ाबे नार से नजात पाते हैं। ऐ काश ! अल्लाह तआ़ला हम गुनहगारों और बदकारों को भी इन मग़्फ़िरत याफ़्तगान में शामिल कर ले। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

जब कहा इ़स्यां से मैं ने सख़्त लाचारों में हूं
जिन के पल्ले कुछ नहीं है उन ख़रीदारों में हूं
तेरी रह़मत के लिये शामिल गुनहगारों में हूं
बोल उठी रह़मत न घबरा मैं मददगारों में हूं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

भलाई ही भलाई : ***अमीरुल मुअ्मिनीन*** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते: "उस महीने को खुश आमदीद है जो हमें पाक करने वाला है। पूरा ***र-मज़ान*** खै़र ही खै़र है दिन का रोज़ा हो या रात का क़ियाम। इस महीने में ख़र्च करना जिहाद में ख़र्च करने का द-रजा रखता है।"

(तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन, स़-फ़ह़ा:176)

ख़र्च में कुशादगी करो : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना ज़मुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबियों के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, रह़मते आ़-लमियान, सरदारे दो[2] जहान, मह़बूबे रह़मान عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है: "माहे र-मज़ान में घर वालों के ख़र्च में कुशादगी करो क्यूंकि माहे ***र-मज़ान*** में ख़र्च करना अल्लाह तआ़ला की राह में ख़र्च करने की त़रह़ है।" (अल जामिउ़स्स़ग़ीर, स़-फ़ह़ा:162, ह़दीस़:2716)

बड़ी बड़ी आंख वाली हूरें : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, ह़बीबे अकरम, नबिय्ये मोह़तरम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है: "जब र-मज़ान शरीफ़ की पहली तारीख़ आती है तो अ़र्शे अ़ज़ीम के नीचे से मस़ीरा नामी हवा चलती है जो जन्नत के

दरख़्तों के पत्तों को हिलाती है । इस हवा के चलने से ऐसी दिलकश आवाज़ बुलन्द होती है कि इस से बेहतर आवाज़ आज तक किसी ने नहीं सुनी । इस आवाज़ को सुन कर ***बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें*** ज़ाहिर होती हैं यहां तक कि जन्नत के बुलन्द मह़ल्लों पर खड़ी हो जाती हैं और केहती हैं: ''है कोई जो हम को अल्लाह तआ़ला से मांग ले कि हमारा निकाह़ उस से हो ?'' फिर वोह हूरें दारोग़ए जन्नत (ह़ज़रते) रिज़्वान (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) से पूछती हैं: ''आज येह कैसी रात है ?'' (ह़ज़रते) रिज़्वान (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) जवाबन तल्बियह (या'नी लब्बैक) केहते हैं, फिर केहते हैं: ''येह माहे र-मज़ान की पहली रात है, जन्नत के दरवाज़े ***उम्मते मुह़म्मदिय्या*** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के रोज़ेदारों के लिये खोल दिये गए हैं ।''

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:60, ह़दीस़:23)

दो² अंधेरे दूर : ***मन्क़ूल*** है कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ से फ़रमाया कि मैं ने ***उम्मते मुह़म्मदिय्या*** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को ***दो² नूर*** अ़त़ा किये हैं ताकि वोह ***दो² अंधेरों*** के ज़रर (या'नी नुक़्स़ान) से मह़फ़ूज़ रहें । सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ ने अ़र्ज़ की ***या अल्लाह !*** عَزَّوَجَلَّ वोह ***दो²***

नूर कौन कौन से हैं ? इर्शाद हुवा, "***नूरे र-मज़ान*** और ***नूरे क़ुरआन***"। सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ ने अ़र्ज़ की: ***दो² अंधेरे*** कौन कौन से हैं ? फ़रमाया, "***एक क़ब्र का और दूसरा क़ियामत का।***"

(दुर्रतुन्नासिह़ीन, स़-फ़ह़ा:9)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ? ख़ुदाए ह़न्नानो मन्नान عَزَّوَجَلَّ ***माहे र-मज़ान*** के क़द्रदान पर किस द-रजा मेहरबान है। पेशकर्दा दोनों रिवायतों में ***माहे र-मज़ान*** की किस क़-दर अ़ज़ीम रह़मतों और ब-र-कतों का ज़िक्र किया गया है। **माहे र-मज़ान** का क़द्रदान रोज़े रख कर ***ख़ुदाए रह़मान*** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल कर के जन्नतों की अ-बदी और सर-मदी ने'मतें ह़ासिल करता है। नीज़ दूसरी ह़िकायत में दो² नूर और दो² अंधेरों का ज़िक्र किया गया है। अंधेरों को दूर करने के लिये रौशनी का वुजूद ना गुज़ीर है। ***ख़ुदाए रह़मान*** عَزَّوَجَلَّ के इस अ़ज़ीम एह़सान पर क़ुरबान ! कि इस ने हमें ***क़ुरआन व र-मज़ान*** के दो² नूर अ़ता कर दिये ताकि ***क़ब्रो*** क़ियामत के हौलनाक अंधेरे दूर हों और नूर ही नूर हो जाए।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم जो मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं कि़यामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा।

रोज़ा व कु़रआन शफ़ाअ़त करेंगे : ***रोज़ा*** और कु़रआन रोजे़ मह़शर मुसल्मान के लिये शफ़ाअ़त का सामान भी फ़राहम करेंगे। चुनान्चे मदीने के सुल्त़ान, सरदारे दो[2] जहान, रह़मते आ़-लमियान, सर-वरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمْ फ़रमाते हैं, "***रोज़ा*** और कु़रआन बन्दे के लिये कि़यामत के दिन शफ़ाअ़त करेंगे। ***रोज़ा*** अ़र्ज़ करेगा, ***ऐ रब्बे करीम*** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने खाने और ख़्वाहिशों से दिन में इसे रोक दिया, मेरी शफ़ाअ़त इस के ह़क़ में क़बूल फ़रमा। ***कु़रआन*** कहेगा, मैं ने इसे रात में सोने से बाज़ रखा, मेरी शफ़ाअ़त इस के लिये क़बूल कर। पस दोनों[2] की शफ़ाअ़तें क़बूल होंगी।"

(मुस्नदे इमाम अह़मद, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:586, ह़दीस़:6637)

बख़्शिश का बहाना : ***अमीरुल मुअ्मिनीन*** ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं, "अगर ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ को ***उम्मते मुह़म्मदी*** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर अ़ज़ाब करना मक़्सूद होता तो उन को र-मज़ान और सूरए قُلْ ھُوَاللہ शरीफ़ हरगिज़ इनायत न फ़रमाता।"

(नुज़्हतुल मजालिस, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:216)

डर था कि इ़स्यां की सज़ा अब होगी या रोजे़ जज़ा

दी उन की रह़मत ने स़दा येह भी नहीं, वोह भी नहीं

(ह़दाइके़ बख़्शिश)

लाख र-मज़ान का स़वाब : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर्द गार दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, "जिस ने मक्कए मुकर्रमा में माहे र-मज़ान पाया और रोज़ा रखा और रात में जितना मुयस्सर आया क़ियाम किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***उस के लिये और जगह के एक लाख र-मज़ान का स़वाब लिखेगा*** और हर दिन एक गुलाम आज़ाद करने का स़वाब और हर रात एक गुलाम आज़ाद करने का स़वाब और हर रोज़ जिहाद में घौड़े पर सुवार कर देने का स़वाब और हर दिन में नेकी और हर रात में नेकी लिखेगा।"

(इब्ने माजह, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:523, ह़दीस़:3117)

काश ! ईद मदीने में हो ! : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** अल्लाह के ह़बीब, ह़बीबे लबीब, हम गुनाहों के मरीज़ों के त़बीब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दियारे विलादत मक्कए मुकर्रमा زَادَهَااللهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً है । अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीबे मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के स़दक़े में किस क़-दर लुत़्फ़ो करम फ़रमाया है कि शाहे अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कोई गुलाम अगर ***माहे र-मज़ान*** मक्कए मुकर्रमा زَادَهَااللهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً में गुज़ार ले और वहीं रोज़े रखे और रात को ह़स्बे तौफ़ीक़ नवाफ़िल वगै़रा अदा करे तो

उसे दूसरे मक़ामात के ***एक लाख रमज़ान*** के बराबर स़वाब अ़ता किया जाएगा और हर रोज़ो शब एक एक गुलाम आज़ाद करने का स़वाब और एक एक अ़ज़ीमुश्शान नेकी मज़ीद बर आं। ए काश ! हमें भी मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً में ***माहे र-मज़ान*** गुज़ारने की अ़ज़ीम सआ़दत नस़ीब हो जाए और उस में ख़ूब इ़बादत करने की भी तौफ़ीक़ मिले और फिर ***माहे र-मज़ान*** गुज़ार कर फ़ौरन ही ***ई़द*** मनाने के लिये अपने मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए ज़ियाबार पर ह़ाज़िर हो जाएं और वहां पर रो रो कर "ईदी" की भीक मांगें और सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के मकीन, ***रह़मतुल्लिल आ़-लमीन*** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रह़मत जोश पर आ जाए और ऐ काश ! सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते पुर अन्वार से हम गुनहगार "ईदी" पाएं और येह सब कुछ उन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के करम ही से मुम्किन है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इ़बादत पर कमर बस्ता हो जाते : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** माहे र-मज़ान में हमें ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की ख़ूब ख़ूब इ़बादत करनी चाहिये और हर वोह काम करना चाहिये जिस में ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा हो। अगर इस पाकीज़ा महीने में भी कोई अपनी बख़्शिश न करवा सका तो फिर कब

करवाएगा ? हमारे प्यारे प्यारे और मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस मुबारक महीने की आमद के साथ ही इ़बादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में बहुत ज़ियादा मगन हो जाया करते थे । चुनान्चे उम्मुल मुअ्मिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं, "जब ***माहे र-मज़ान*** आता तो मेरे सरताज, स़ाहि़बे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत के लिये कमर बस्ता हो जाते और सारा महीना अपने ***बिस्तरे मुनव्वर*** पर तशरीफ़ न लाते ।"

(अद्दुर्रुल मन्सूर, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:449)

आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم र-मज़ान में ख़ूब दुआ़एं मांगते थे : मज़ीद फ़रमाती हैं कि जब माहे र-मज़ान तशरीफ़ लाता तो हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोहूतशम, शाफ़ेए़ उमम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रंग मुबारक ***मु-तग़य्यर*** हो जाता और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ***नमाज़*** की कस़रत फ़रमाते और ***ख़ूब गिड़गिड़ा कर दुआ़एं मांगते*** और ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर त़ारी रहता ।

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:310, ह़दीस़:3625)

आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم र-मज़ान में ख़ूब ख़ैरात करते :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस माहे मुबारक में ख़ूब स़-दक़ा व ख़ैरात करना भी सुन्नत है । चुनान्चे सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं, "जब

माहे र-मज़ान आता तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर क़ैदी को रिहा कर देते और ***हर साइल को अ़ता फ़रमाते***।"

(अद्दुर्रुल मन्सूर, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:449)

सब से बढ़ कर सख़ी : ***सय्यिदुना*** अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं: "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों में ***सब से बढ़ कर सख़ी हैं*** और सख़ावत का दरया सब से ज़ियादा उस वक़्त जोश पर होता जब ***र-मज़ान*** में आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जिब्रईले अमीन عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर होते, जिब्रईले अमीन عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام (र-मज़ानुल मुबारक की) हर रात में मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर होते और रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسلیم उन के साथ क़ुरआने अ़ज़ीम का दौर फ़रमाते ।" पस ***रसूलुल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तेज़ चलने वाली हवा से भी ज़ियादा ख़ैर के मुआ़-मले में ***सख़ावत*** फ़रमाते ।

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:9, ह़दीस़:6)

हाथ उठा कर एक टुकड़ा ऐ करीम
हैं सख़ी के माल में ह़क़दार हम

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !　　صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उसने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की।

हज़ार गुना स़वाब : *मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !* *माहे र-मज़ानुल मुबारक* में नेकियों का *अज्र* बहुत बढ़ जाता है लिहाज़ा कोशिश कर के ज़ियादा से ज़ियादा नेकियां इस माह में जम्अ़ कर लेनी चाहियें। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं: *माहे र-मज़ान* में एक दिन का *रोज़ा* रखना एक हज़ार दिन के रोज़ों से अफ़्ज़ल है और *माहे र-मज़ान* में एक मरतबा तस्बीह़ करना (या'नी سُبْحٰنَ الله केहना) इस माह के इ़लावा एक हज़ार मरतबा तस्बीह़ करने (या'नी سُبْحٰنَ الله) केहने से अफ़्ज़ल है और माहे र-मज़ान में एक *रक्अ़त* पढ़ना ग़ैरे र-मज़ान की एक हज़ार *रक्अ़तों* से अफ़्ज़ल है।

(अद्दुर्रुल मन्सूर, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:454)

र-मज़ान में ज़िक्र की फ़ज़ीलत : *अमीरुल मुअ्मिनीन* ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूले अनवर, मदीने के ताजवर, नबियों के सरवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर, सय्यिदा आमिना के दिलबर عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ وَرَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का फ़रमाने रह़मत निशान है:

"ذَاكِرُ اللّٰهِ فِىْ رَمَضَانَ يُغْفَرُلَهُ وَسَائِلُ اللّٰهِ فِيْهِ لَايَخِيْبُ."

(तर्जमा) "र-मज़ान में ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करने वाले को बख़्श दिया जाता है और इस महीने में अल्लाह तआ़ला से मांगने वाला मह़रूम नहीं रहता।" (शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:311, ह़दीस़:3627)

सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ और ज़िक्रुल्लाह : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** वोह लोग कितने ख़ुश नसीब हैं जो इस माहे मुबारक में ख़ुसूसिय्यत के साथ ***सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त*** में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करते और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपनी दुन्या व आख़िरत की भलाई का सुवाल करते हैं اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी का सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़*** अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही पर मुश्तमिल होता है । क्यूंकि तिलावत, ना'त शरीफ़, सुन्नतों भरा बयान, दुआ़ और स़लातो सलाम वग़ैरा सब ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ में दाख़िल हैं । दा'वते इस्लामी के इज्तिमाअ़ की ब-रकात की एक झलक मुला-ह़ज़ा हो चुनान्चे

छे बेटियों के बा'द औलादे नरीना : ***मर्कज़ुल औलिया*** (लाहौर) के एक इस्लामी भाई का बयान बित्तसर्रुफ़ अ़र्ज़ करता हूं: ग़ालिबन सिने 2003 इस्वी की बात है, एक इस्लामी भाई ने मुझे तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ***दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़*** (स़ह़राए मदीना, मदी-नतुल औलिया मुल्तान) में शिर्कत की दा'वत इनायत फ़रमाई । मैं ने अ़र्ज़ की, मैं छे बेटियों का बाप हूं, मेरे घर

में फिर विलादत मु-तवक़्क़अ़ है, दुआ़ फ़रमाइये कि अब की बार ***नरीना औलाद*** हो। वोह इस्लामी भाई ***इन्फ़िरादी कोशिश*** का अछूता अन्दाज़ इख़्तियार करते हुए फ़रमाने लगे: سُبْحٰنَ الله अब तो आप को तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी की ज़ियादा ज़रूरत है, ह़ज के बा'द ता'दाद के लिहाज़ से ***आ़शिक़ाने रसूल*** के सब से बड़े इज्तिमाअ़ (मुल्तान शरीफ़) में आ कर दुआ़ मांगिये न जाने किस के स़दक़े में बेड़ा पार हो जाए। उस की बात मेरे दिल को लग गई और मैं ***सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़*** (मुल्तान शरीफ़) में ह़ाज़िर हो गया। वहां के रूह़ परवर मनाज़िर का बयान करने के लिये मेरे पास अल्फ़ाज़ नहीं, मुझे ज़िन्दगी में पहली बार इस क़-दर ज़बरदस्त रूह़ानी सुकून नस़ीब हुवा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाअ़ के चन्द ही रोज़ के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे ***चांद सा म-दनी मुन्ना*** अ़त़ा फ़रमाया। घर वालों की ख़ुशी बयान से बाहर है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माह़ौल से वाबस्ता हो गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे मज़ीद एक और ***म-दनी मुन्ने*** से भी नवाज़ दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह बयान देते वक़्त मुझ गुनहगार को दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ौल में ***क़ाफ़िला ज़िम्मादार*** की हैसिय्यत से ख़िदमत की सआ़दत मिली हुई है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के ***म-दनी माह़ौल*** और सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में में रह़मतें क्यूं नाज़िल न होंगी कि इन ***आ़शिक़ाने रसूल*** में न जाने कितने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی होते होंगे । मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं, "जमाअ़त में ब-र-कत है और दुआ़ए मज्मए मुस्लिमीन अक़रब ब क़बूल । (या'नी मुसल्मानों के मज्मअ़ में दुआ़ मांगना क़बूलिय्यत के क़रीबतर है) उ़-लमा फ़रमाते हैं: ***जहां चालीस मुसल्मान स़ालेह़ (या'नी नेक मुसल्मान) जम्अ़ होते हैं उन में से एक वलिय्युल्लाह ज़रूर होता है ।"***

(फ़तावा र-ज़विय्या जदीद, जिल्द:24, स़-फ़ह़ा:184, तैसीर शरह़े जामेए स़ग़ीर, तह़तुल ह़दीस़:714, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:312, दारुल ह़दीस़, मिस्र) बिल्फ़र्ज़ दुआ़ की क़बूलिय्यत का अस़र ज़ाहिर न हो तब भी ह़र्फ़े शिकायत ज़बान पर नहीं लाना चाहिये । हमारी भलाई किस बात में है इस को यक़ीनन ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हम से ज़ियादा बेहतर जानता है । हमें हर ह़ाल में पाक परवर्द गार का शुक्र गुज़ार बन्दा बन कर रहना चाहिये । वोह बेटा दे तब भी उस का शुक्र, बेटी दे तब भी शुक्र, दोनों दे तब भी शुक्र और न दे तब भी शुक्र, हर ह़ाल में शुक्र शुक्र और शुक्र ही अदा करना चाहिये । पारह 25 सू-रतुश्शूरा की आयत नम्बर, 49 और 50 में इर्शादे बारी तआ़ला है:

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿۴۹﴾ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًاۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًاؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿۵۰﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: अल्लाह ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत पैदा करता है जो चाहे, जिसे चाहे बेटियां अ़ता फ़रमाए और जिसे चाहे बेटे दे या दोनों मिला दे बेटे और बेटियां और जिसे चाहे बांझ कर दे बेशक वोह इ़ल्म व क़ुदरत वाला है ।

(पारह:25, अश्शूरा:49,50)

सद्रुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عليه رحمة الله الهادى फ़रमाते हैं, वोह मालिक है अपनी ने'मत को जिस त़रह़ चाहे तक़्सीम करे जिसे जो चाहे दे । अम्बिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام में भी येह सब सूरतें पाई जाती हैं । ह़ज़रते सय्यिदुना ***लूत़*** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ व ह़ज़रते सय्यिदुना ***शुऐ़ब*** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ के सिर्फ़ बेटियां थीं कोई बेटा न था और ह़ज़रते सय्यिदुना ***इब्राहीम*** ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ के सिर्फ़ फ़रज़न्द थे कोई दुख़्तर हुई ही नहीं और सय्यिदुल अम्बिया ह़बीबे ख़ुदा ***मुह़म्मद मुस्त़फ़ा*** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अल्लाह तआ़ला ने चार फ़रज़न्द अ़ता फ़रमाए और चार स़ाहि़ब ज़ादियां और ह़ज़रते सय्यिदुना ***यह़्या*** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ और ह़ज़रते सय्यिदुना ***ई़सा*** रूहु़ल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ के कोई औलाद ही नहीं । (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स़-फ़ह़ा:277)

र-मज़ान का दीवाना : ***मुह़म्मद*** नामी एक आदमी सारा साल नमाज़ न पढ़ता था। जब ***र-मज़ान शरीफ़*** का मु-तबर्रिक महीना आता तो वोह पाक साफ़ कपड़े पहनता और पांचों वक़्त पाबन्दी के साथ नमाज़ पढ़ता और साले गुज़श्ता की क़ज़ा नमाज़ें भी अदा कर्ता। लोगों ने उस से पूछा, तू ऐसा क्यूं करता है? उस ने जवाब दिया येह महीना रह़मत, ब-र-कत, तौबा और मग़्फ़िरत का है, शायद ***अल्लाह*** तआ़ला मुझे मेरे इसी अ़मल के सबब बख़्श दे। जब उस का इन्तिक़ाल हो गया तो किसी ने उसे ख़्वाब में देखा तो पूछा, مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी ***अल्लाह*** तआ़ला ने तेरे साथ क्या मुआ़-मला किया? उसने जवाब दिया, ***"मेरे अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***ने मुझे एह़तिरामे र-मज़ान शरीफ़ बजा लाने के सबब बख़्श दिया।"*** (दुर्रतुन्नासिह़ीन, स़-फ़ह़ा:8) ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **बे नियाज़ है :** ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो!*** देखा आपने? ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ ***माहे र-मज़ान*** के क़द्रदान पर किस द-रजा मेहरबान है कि साल के बाक़ी महीने छोड़ कर

सिर्फ़ ***माहे र-मज़ान*** में इबादत करने वाले की मग़्फ़िरत फ़रमा दी । इस ह़िकायत से कहीं कोई येह न समझ बैठे कि अब तो (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) सारा साल नमाज़ों की छुट्टी हो गई ! सिर्फ़ र-मज़ानुल मुबारक में रोज़ा नमाज़ कर लिया करेंगे और सीधे जन्नत में चले जाएंगे। ***प्यारे इस्लामी भाइयो !*** दर अस्ल बख़्शना या अ़ज़ाब करना येह सब कुछ ***अल्लाह*** तआला की मशिय्यत पर मौकूफ़ है। वोह बे नियाज़ है। अगर चाहे तो किसी मुसल्मान को ब ज़ाहिर छोटे से नेक अ़मल पर ही अपने फ़ज़्ल से बख़्श दे और अगर चाहे तो बड़ी बड़ी नेकियों के बा वुजूद किसी को मह़ूज़ एक छोटे से गुनाह पर अपने अ़द्ल से पकड़ ले। पारह 3 सू-रतुल ब-क़रह की आयत नम्बर 284 में इर्शादे रब्बे बे नियाज़ है:

فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: तो जिसे चाहेगा (अपने फ़ज़्ल से अहले ईमान को) बख़्शेगा और जिसे चाहेगा (अपने अ़द्ल से) सज़ा देगा ।

(पारह:3, अल ब-क़रह:284)

तू बे ह़िसाब बख़्श कि हैं बे शुमार जुर्म
देता हूं वासित़ा तुझे शाहे ह़िजाज़ ﷺ का

तीन³ के अन्दर तीन³ पोशीदा :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कोई नेकी छोड़नी नहीं चाहिये न जाने ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ को कौन सी नेकी पसन्द आ जाए और कोई छोटे से छोटा गुनाह भी नहीं

करना चाहिये कि न जाने किस गुनाह पर ***अल्लाह*** तआ़ला नाराज़ हो जाए और उस का दर्दनाक अ़ज़ाब आ कर घेर ले । ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, फ़क़ीहे आ'ज़म सय्यिदुना ***अबू यूसुफ़ मुह़म्मद शरीफ़*** मुह़द्दिस कोटल्वी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं: ''***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने तीन चीज़ों को तीन चीज़ों में मख़्फ़ी (या'नी पोशीदा) रखा है, (1) अपनी रिज़ा को अपनी इत़ाअ़त में और (2) अपनी नाराज़गी को अपनी ना फ़रमानी में और (3) अपने औलिया को अपने बन्दों में ।'' येह क़ौल नक़्ल करने के बा'द फ़क़ीहे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं: ''लिहाज़ा हर त़ाअ़त और हर नेकी को अ़मल में लाना चाहिये कि मा'लूम नहीं किस नेकी पर वोह राज़ी हो जाए और हर बदी से बचना चाहिये क्यूंकि मा'लूम नहीं किस बदी पर वोह नाराज़ हो जाए । ख़्वाह वोह बदी कैसी ही स़ग़ीर (या'नी छोटी) हो ।'' म-स़लन (बिला इजाज़त) किसी के तिन्के का ख़िलाल करना ब ज़ाहिर एक मा'मूली सी बात है । या किसी हमसाया की मिट्टी से उस की इजाज़त के बिग़ैर हाथ धोना गोया एक छोटी सी बात है । मगर मुम्किन है कि इस बुराई में ही ह़क़ तआ़ला की नाराज़गी ***मख़्फ़ी*** (या'नी छुपी हुई) हो । तो ऐसी छोटी छोटी बातों से भी बचना चाहिये । (अख़्लाक़ुस्स़ालिह़ीन, स़-फ़ह़ा:56)

कुत्ते को पानी पिलाने वाली बख़्शी गई :

रह़मत के त़लबगारो ! जब ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ बख़्शने पर आता है तो ब ज़ाहिर नेकी कितनी ही छोटी हो वोह उसी के सबब करम फ़रमा देता है । चुनान्चे इस

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है ।

ज़िम्न में कसीर अहादीस वारिद हैं । म-सलन ***एक औरत को सिर्फ़ इस लिये बख़्श दिया गया कि उस ने एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाया था ।*** (सहीह बुख़ारी, जिल्द:2, स-फ़हा:409, हदीस:3321) एक हदीस में सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने आलीशान भी मिलता है कि एक शख़्स ने रास्ते में से एक ***दरख़्त*** को इस लिये हटा दिया ताकि लोगों को इस से ईज़ा न पहुंचे । अल्लाह तआला عَزَّوَجَلَّ ने खुश हो कर उस की ***मग़्फ़िरत*** फ़रमा दी । (सहीह मुस्लिम, स-फ़हा:1410, हदीस:1914) एक सहीह हदीस में ***तक़ाज़े में नरमी*** (या'नी क़र्ज़ की वुसूली में आसानी) करने वाले एक शख़्स की ***नजात*** हो जाने का वाक़िआ भी आया है । (सहीह बुख़ारी, जिल्द:2, स-फ़हा:12, हदीस:2078) ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की ***रहमत*** के वाक़िआत जम्अ करने जाएं तो इतने हैं कि हम जम्अ ही न कर सकें ।

मुज्दा बाद ऐ आसियो ! ज़ाते खुदा ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ ***है***
तहनियत ऐ मुजरिमो ! शाफ़ेअ शहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ***है***

(हदाइक़े बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوبُوا إِلَى الله ! أَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अज़ाब से छुटकारे के अस्बाब : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** जब ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ रह़मत करने पर आता है तो यूं भी सबब बनाता है कि किसी एक अ़मल को अपनी बारगाह में श-रफ़े क़बूलिय्यत अ़त़ा फ़रमा देता है और फिर इसी के बाइस़ उस पर रह़मतों की बारिश कर देता है। लिहाज़ा अब एक ह़दीसे़ मुबारक पेश की जाती है जिस में मु-तअ़द्दद ऐसे लोगों का बयान किया गया है कि वोह किसी न किसी नेकी के सबब ***अल्लाह*** तआ़ला की गरिफ़्त से बच गए और रह़मते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपनी आग़ोश में ले लिया। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन समूरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, एक बार ह़ुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, नबिय्ये मोह़्तरम, रसूले मोह़्तशम, शाफ़ेए़ उमम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया, ‘‘आज रात मैं ने एक अ़जीब ख़्वाब देखा कि

मदीना 1: ***एक*** शख़्स़ की रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये म-लकुल मौत عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तशरीफ़ लाए लेकिन उस का मां बाप की ***इत़ाअ़त*** करना सामने आ गया और वोह बच गया।

मदीना 2: ***एक*** शख़्स़ पर अ़ज़ाबे क़ब्र छा गया लेकिन उस के ***वुज़ू*** (की नेकी) ने उसे बचा लिया।

मदीना 3: ***एक*** शख़्स़ को शयात़ीन ने घेर लिया लेकिन ***ज़िक्रुल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ (करने की नेकी ने) उसे बचा लिया।

मदीना 4: ***एक*** शख़्स़ को अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों ने घेर लिया लेकिन उसे (उस की) ***नमाज़ ने*** बचा लिया।

मदीना 5: ***एक*** शख़्स़ को देखा कि प्यास की शिद्दत से ज़बान निकाले हुए था और एक ह़ौज़ पर पानी पीने जाता था मगर लौटा दिया जाता था कि इतने में उस के ***रोज़े*** आ गए (और इस नेकी ने) उस को सैराब कर दिया।

मदीना 6: ***एक*** शख़्स़ को देखा कि जहां अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام)ह़ल्क़े बनाए हुए तशरीफ़ फ़रमा थे, वहां उन के पास जाना चाहता था लेकिन धुत्कार दिया जाता था कि इतने में उस का ***ग़ुस्ले जनाबत*** आया और (उस नेकी ने) उस को मेरे पास बिठा दिया।

मदीना 7: ***एक*** शख़्स़ को देखा कि उस के आगे पीछे, दाएं बाएं, ऊपर नीचे अंधेरा ही अंधेरा है और वोह उस अंधेरे में ह़ैरान व परेशान है तो उस के ***ह़ज व उ़म्रह*** आ गए और (इन नेकियों ने) उस को अंधेरे से निकाल कर रौशनी में पहुंचा दिया।

मदीना 8: ***एक*** शख़्स़ को देखा कि वोह मुसल्मानों से गुफ़्तुगू करना चाहता है लेकिन कोई उस को मुंह नहीं लगाता तो ***सि़-लए रेह़मी*** (या'नी रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक करने की नेकी) ने मुअ्मिनीन से कहा कि तुम इस से बातचीत करो । तो मुसल्मानों ने उस से बात करना शुरूअ़ की ।

मदीना 9 : ***एक*** शख़्स़ के जिस्म और चेहरे की त़रफ़ आग बढ़ रही है और वोह अपने हाथ से बचा रहा है तो उस का ***स़-दक़ा*** आ गया और उस के आगे ढाल बन गया और उस के सर पर साया फ़िगन हो गया ।

मदीना 10: ***एक*** शख़्स़ को ज़बानिया (या'नी अ़ज़ाब के मख़्सूस फ़िरिश्तों) ने चारों त़रफ़ से घेर लिया लेकिन उस का اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَھْیٌ عَنِ الْمُنْکَرِ आया (या'नी नेकी का हुक्म करने और बुराई से मन्अ़ करने की नेकी आई) और उस ने उसे बचा लिया और रह़मत के फ़िरिश्तों के ह़वाले कर दिया ।

मदीना 11: ***एक*** शख़्स़ को देखा जो घुटनों के बल बैठा है लेकिन उस के और अल्लाह तआ़ला के दरमियान ह़िजाब (या'नी पर्दा) है मगर उस का ***हुस्ने अख़्लाक़*** आया इस (नेकी) ने उस को बचा लिया और अल्लाह तआ़ला से मिला दिया ।

मदीना 12: ***एक*** शख़्स़ को उस का आ'माल नामा उल्टे हाथ में

दिया जाने लगा तो उस का ***ख़ौफ़ेख़ुदा*** عَزَّوَجَلَّ आ गया और (इस अ़ज़ीम नेकी की ब-र-कत से) उस का नामए आ'माल सीधे हाथ में दे दिया गया।

मदीना 13: ***एक*** शख़्स़ की नेकियों का वज़्न हल्का रहा मगर उस की ***सख़ावत*** आ गई और नेकियों का वज़्न बढ़ गया।

मदीना 14: ***एक*** शख़्स़ जहन्नम के कनारे पर खड़ा था मगर उस का ***ख़ौफ़ेख़ुदा*** عَزَّوَجَلَّ आ गया और वोह बच गया।

मदीना 15: ***एक*** शख़्स़ जहन्नम में गिर गया लेकिन उस के ***ख़ौफ़े ख़ुदा*** عَزَّوَجَلَّ में बहाए हुए ***आंसू*** आ गए और (इन आंसूओं की ब-र-कत से) वोह बच गया।

मदीना 16: ***एक*** शख़्स़ पुल सिरात पर खड़ा था और टेहनी की त़रह़ लरज़ रहा था लेकिन उस का ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के साथ ह़ुस्ने ज़न (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अच्छा गुमान कि वोह रह़मत ही करेगा) आया और (इस नेकी ने) उसे बचा लिया और वोह पुल सिरात से गुज़र गया।

मदीना 17: ***एक*** शख़्स़ पुल सिरात पर घिसट घिसट कर चल रहा था कि उस का मुझ पर ***दुरूदे*** पाक पढ़ना आ गया और (इस नेकी ने) उस को खड़ा कर के पुल सिरात पार करवा दिया।

मदीना 18: ***मेरी*** उम्मत का एक शख़्स जन्नत के दरवाज़ों के पास पहुंचा तो वोह सब इस पर बन्द थे कि इस का لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ की गवाही देना आया और उस के लिया जन्नती दरवाज़े खुल गए और वोह जन्नत में दाख़िल हो गया।

चुग़ली का दर्दनाक अ़ज़ाब

मदीना 19: ***कुछ*** लोगों के होंट काटे जा रहे थे मैं ने जिब्रईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से दरयाफ़्त किया, येह कौन हैं ? तो उन्हों ने बताया कि येह लोगों के दरमियान ***चुग़ुल ख़ोरी*** करने वाले हैं।

इल्ज़ामे गुनाह की ख़ौफ़नाक सज़ा

मदीना 20: ***कुछ*** लोगों को ज़बानों से लटका दिया गया था। मैं ने जिब्रईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से उन के बारे में पूछा तो उन्हों ने बताया कि येह लोगों पर बिला वजह ***इल्ज़ामे गुनाह*** लगाने वाले हैं। (शरहुस्सुदूर, स़-फ़हा:182)

कोई भी नेकी नहीं छोड़नी चाहिये :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया, इत़ाअ़ते वालिदैन, वुज़ू, नमाज़, रोज़ा, ***ज़िक्रुल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ, ह़ज व उ़म्रह, सि़लए रेह़मी, اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهْىٌ عَنِ الْمُنْكَرِ, स़-दक़ा, ह़ुस्ने अख़्लाक़, सख़ावत, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में रोना, नीज़ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के साथ ह़ुस्ने ज़न वग़ैरा वग़ैरा नेकियों के सबब ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने

मुअ़ज़्ज़बीन (या'नी जो लोग अ़ज़ाब में मुब्तला थे उन) पर करम फ़रमा दिया और उन्हें इ़ताब व अ़ज़ाब से रिहाई मिल गई। बहर ह़ाल येह उस के फ़ज़्लो करम के मुआ़-मलात हैं। वोह मालिको मुख़्तार عَزَّوَجَلَّ है। जिसे चाहे बख़्श दे, जिसे चाहे अ़ज़ाब करे, येह सब उस का अ़द्ल ही अ़द्ल है। जहां वोह किसी एक नेकी से ख़ुश हो कर अपनी रह़मत से बख़्श देता है वहीं किसी एक गुनाह पर जब वोह नाराज़ हो जाता है तो उस का क़हरो ग़ज़ब जोश पर आ जाता है और फिर उस की गरिफ़्त निहायत ही सख़्त होती है। जैसा कि अभी गुज़श्ता त़वील ह़दीस़ के आख़िर में ***चुग़ुल ख़ोरों*** और दूसरों पर ***गुनाह की तोहमत*** बांधने वालों का अन्जाम भी हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुला-ह़ज़ा फ़रमा कर हमें बता कर मु-तनब्बेह (या'नी ख़बरदार) किया लिहाज़ा अ़क़्लमन्द वोही है कि ब ज़ाहिर कोई छोटी सी भी नेकी हो उसे तर्क न करे कि हो सकता है येही नेकी नजात का ज़रीआ़ बन जाए और ब ज़ाहिर गुनाह कितना ही मा'मूली नज़र आता हो हरगिज़ हरगिज़ न करे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"क़ह्हार" के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से गुनाहगारों की 4 ह़िकायात

(1) क़ब्र में आग भड़क उठी !

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुरह़बील رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते

हैं कि एक ऐसा शख़्स़ इन्तिक़ाल कर गया जिस को लोग मुत्तक़ी समझते थे । जब उसे दफ़्न कर दिया गया तो उस की क़ब्र में अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते आ पहुंचे और केहने लगे, हम तुझ को ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के ***अ़ज़ाब के सौ100 कोड़े*** मारेंगे । उस ने ख़ौफ़ज़दा हो कर कहा कि मुझे क्यूं मारोगे ? मैं तो परहेज़गार आदमी था । तो उन्हों ने कहा, अच्छा चलो पचास50 ही मारते हैं मगर वोह बराबर बह़स़ करता रहा ह़त्ता की फ़िरिश्ते एक पर आ गए और उन्हों ने एक कोड़ा मार ही दिया । जिस से तमाम ***क़ब्र में आग भड़क उठी*** और वोह शख़्स़ जल कर ख़ाकिस्तर (या'नी राख) हो गया । फिर उस को ज़िन्दा किया गया तो उस ने दर्द से तिलमिलाते और रोते हुए फ़रयाद की, आख़िर मुझे येह कोड़ा क्यूं मारा गया ? तो उन्हों ने जवाब दिया, ***एक रोज़ तू ने बे वुज़ू नमाज़ पढ़ ली थी । और एक रोज़ एक मज़्लूम तेरे पास फ़रयाद ले कर आया मगर तूने फ़रयाद रसी न की ।***

(शरहुस्सुदूर, स़-फ़ह़ा:165)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हुवा तो उस ने नेक और परहेज़गार शख़्स़ की भी गरिफ़्त फ़रमाई और वोह अ़ज़ाबे क़ब्र में घिर गया । ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हमारे ह़ाले ज़ार पर रह़्म फ़रमाए । और हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमाए ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

(2) मापने में बे एह़तियात़ी के सबब इ़ताब

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिस़ मुह़ासिबी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं के एक कय्याल (या'नी ग़ल्ला मापने वाले) ने इस काम को छोड़ दिया और इ़बादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल हुवा। जब वोह मर गया। तो उस के बा'ज़ अह़बाब ने उस को ख़्वाब में देखा तो पूछा, مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ ؟ या'नी ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआ़-मला किया ? उसने कहा, "मेरा वोह पैमाना जिस में ग़ल्ला वग़ैरा मापा करता था, उस में मेरी बे एह़तियात़ी की वजह से कुछ मिट्टी सी बैठ गई थी जिस को मैं ने ला परवाही के सबब स़ाफ़ न किया तो हर मरतबा मापने के वक़्त ब क़दर उस मिट्टी के कम हो जाता था। मैं इस क़ुसूर के सबब ***इ़ताब*** में गरिफ़्तार हूं।" (अख़्लाक़ुस़्स़ालिह़ीन, स़-फ़ह़ा:56)

(3) क़ब्र से चिल्लाने की आवाज़

इसी त़रह़ एक और शख़्स़ भी अपनी तराज़ू को मिट्टी वग़ैरा से स़ाफ़ नहीं करता था और इसी त़रह़ चीज़ तोल देता था। जब वोह मर गया तो उस को भी क़ब्र में अ़ज़ाब शुरूअ़ हो गया। यहां तक कि ***लोगों ने उस की क़ब्र से चीख़ने चिल्लाने की आवाज़ सुनी। बा'ज़*** स़ालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن (या'नी नेक लोगों) को क़ब्र से चिल्लाने की आवाज़ सुन कर रह़्म आ गया और उन्हों ने उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत की तो इस की ब-र-कत से ***अल्लाह*** तआ़ला ने उस के अ़ज़ाब को दफ़्अ़ किया। (ऐज़न)

ह़राम की कमाई कहां जाती है ? ***मज़्कूरा*** दोनों लर्ज़ा ख़ैज़ ह़िकायात से वोह लोग ज़रूर दर्से इब्रत ह़ासिल करें जो डन्डी मारते और कम माप तोल करते हैं । मुसल्मानो ! डन्डी मार कर कम माप कर बा'ज़ अवक़ात ब ज़ाहिर माल में कुछ ज़ियादती नज़र आ भी जाती है मगर ऐसी आमदनी किस काम की ! बसा अवक़ात दुन्या में भी इस क़िस्म का माल वबाल बन जाता है । हो सकता है कि डॉक्टरों की फ़ीसों, बीमारियों की दवाओं, जेब कतरों, चोरों या रिश्वत ख़ोरों के हाथों में येह माल चला जाए । और फिर مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ आख़िरत का अ़ज़ाबे शदीद भी भुगतना पड़ जाए ।

कर ले तौबा रब* عَزَّوَجَلَّ *की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ ! اَسْتَغْفِرُاللّٰہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आग के दो[2] पहाड़ : ***रूह़ुल बयान*** में है, "जो शख़्स नाप तोल में ख़ियानत करता है, क़ियामत के रोज़ उसे दोज़ख़ की गहराइयों में डाला जाएगा और ***आग के दो[2] पहाड़ों*** के दरमियान

बिठा कर हुक्म दिया जाएगा, इन पहाड़ों को नापो और तोलो ! जब तोलने लगेगा तो आग उसे जला डालेगी ।"

(तफ़्सीरे रूहुल बयान, जिल्द:10, स़-फ़ह़ा:364)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! खूब गौ़र फ़रमाइये ! मुख़्तसर सी ज़िन्दगी में चन्द फ़ानी सिक्के ह़ासिल करने के लिये अगर डन्डी मार ली तो किस क़-दर शदीद अ़ज़ाब की वई़द है । आज मा'मूली गरमी बरदाश्त नहीं होती तो जहन्नम में आग के पहाड़ों की तपश किस त़रह़ बरदाश्त होगी ! खुदारा ! अपने ह़ाल पर रह़्म करते हुए माल की हवस से दूर रहिये । वरना माले गै़रे ह़लाल दोनों[2] जहां में वबाल ही वबाल स़ाबित होगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) तिन्के का बोझ

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, "बनी इस्राईल के एक नौ जवान ने हर क़िस्म के गुनाहों से तौबा की । फिर सत्तर[70] साल तक मुसल्सल इबादत करता रहा । दिन को रोज़ा रखता, रात को जागता । ***उस के तक़्वा का येह आ़लम था कि न किसी साए के नीचे आराम करता और न ही कोई उ़म्दा गि़ज़ा खाता ।*** जब उस का इन्तिक़ाल हो गया तो उस के बा'ज़ दोस्तों ने उसे ख़्वाब में देख कर पूछा, مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ ؟ या'नी ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआ़मला

किया ? उस ने बताया कि, ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने मेरा ह़िसाब लिया, फिर सब गुनाहों को बख़्श दिया मगर आह ! एक ***तिन्का,*** जिसे मैं ने उस के मालिक की मरज़ी के बिग़ैर ले लिया था और उस से दांतों में ख़िलाल किया था वोह ***तिन्का*** उस के मालिक से मुआ़फ़ करवाना रह गया था। ***अफ़्सोस स़द अफ़्सोस ! इसी सबब से अभी तक मुझे जन्नत से रोका हुवा है।"***

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, स़-फ़ह़ा:51)

गुनाह आख़िर गुनाह है : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** लरज़ जाओ ! थर्रा उठो !! कि जब ग़-ज़बे जब्बार और क़हरे क़ह्हार عَزَّوَجَلَّ जोश पर आता हो तो ऐसे गुनाह पर भी गरिफ़्त हो जाती है जिसे दुन्या वालों के नज़्दीक बहुत ही मा'मूली तस़व्वुर किया जाता है। जैसा कि अभी ह़िकायत में गुज़रा कि एक आ़बिद व ज़ाहिद और नेक बन्दा सिर्फ़ और सिर्फ़ इस वजह से जन्नत से रोक दिया गया कि उस ने एक ***ह़क़ीर तिन्का*** उस के मालिक की इजाज़त के बिग़ैर ले कर उस से दांतों में ख़िलाल कर लिया और फिर बे मुआ़फ़ करवाए इन्तिक़ाल कर गया तो फंस गया। ज़रा सोचिये ! ग़ौर कीजिये ! एक ***तिन्का*** तो क्या शय है ? आजकल तो लोग न जाने कैसी कैसी क़ीमती अमानतें हड़प कर जाते हैं और डकार तक नहीं लेते।

تُوبُوا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُالله

अदाए क़र्ज़ में बिला मोहलत लिये ताख़ीर गुनाह है :

मुसल्मानो ! डर जाओ !! हुक़ूक़ुल इबाद का मुआ-मला निहायत ही सख़्त है । अगर हम ने किसी बन्दे का ह़क़ दबा लिया । या उस को गाली दे दी, आंखें दिखा कर डराया, धमकाया, ग़ुस्सा और डांट डपट की जिस से उस का दिल दुखा । अल ग़-रज़ किसी त़रह़ भी बे इजाज़ते शर-ई उस की दिल आज़ारी की या क़र्ज़ा दबा लिया बल्कि बिग़ैर स़ह़ीह़ मजबूरी के क़र्ज़ की अदाएगी में ताख़ीर ही की । येह सब बन्दों की ह़क़ त-लफ़ियां हैं । ***याद रखिये !*** अगर आप ने किसी से क़र्ज़ लिया और अदाएगी के लिये रक़म पास नहीं है मगर घर के अस्बाब, फ़र्नीचर वग़ैरा बेच कर क़र्ज़ अदा किया जा सकता है तो येह भी करना पड़ेगा । क़र्ज़ अदा करने की मुम्किन सूरत होने के बा वुजूद क़र्ज़दार से मोहलत लिये बिग़ैर आप क़र्ज़ की अदाएगी में जब तक ताख़ीर करते रहेंगे गुनहगार होते रहेंगे । अब ख़्वाह आप जाग रहे हों या सो रहे हों एक एक लम्ह़े का गुनाह लिखा जाता रहेगा । गोया अदाएगिये क़र्ज़ तक मुसल्सल आप के गुनाहों का मीटर चलता रहेगा । ***अल अमान वल ह़फ़ीज़*** जब क़र्ज़ की अदाएगी में ताख़ीर का येह वबाल है तो जो कोई पूरा क़र्ज़ा ही दबा ले उस का क्या ह़ाल होगा !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तीन पैसे का वबाल : मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत,*** इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से क़र्ज़े की अदाएगी में सुस्ती और झूटे ह़ियल व हु़ज्जत करनेवाले शख़्स़ ज़ैद के बारे में इस्तिफ़्सार हुवा तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया: "ज़ैद फ़ासिक़ व फ़ाजिर, मुर्तकिबे कबाइर, ज़ालिम, कज़्ज़ाब, मुस्तहि़क़े अ़ज़ाब है इस से ज़ियादा और क्या अल्क़ाब अपने लिये चाहता है ! अगर इस ह़ालत में मर गया और दैन (क़र्ज़) लोगों का इस पर बाक़ी रहा, इस की नेकियां उन (क़र्ज़ख़्वाहों) के मुत़ा-लबे में दी जाएंगी । क्यूं कर दी जाएंगी (या'नी किस त़रह़ दी जाएंगी । येह भी सुन लीजिये) तक़्रीबन तीन पैसा दैन (क़र्ज़) के इ़वज़ (या'नी बदले) ***सात सौ नमाज़ें बा जमाअ़त*** (देनी पड़ेंगी) । जब इस (क़र्ज़ दबा लेने वाले) के पास नेकियां न रहेंगी उन (क़र्ज़ख़्वाहों) के गुनाह इस (मक़्रूज़) के सर पर रखे जाएंगे और आग में फेंक दिया जाएगा ।" (मुलख़्ख़स़न फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:25, स़-फ़ह़ा:69)

मत दबा क़र्ज़ा किसी का ना-बकार
रोएगा दोज़ख़ में वरना ज़ार ज़ार

تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه ! اَسْتَغْفِرُاللّٰه

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या में किसी पर ज़र्रा बराबर ज़ुल्म करने वाला भी जब तक मज़्लूम को राज़ी नहीं कर लेगा उस वक़्त तक उस की ख़लासी (या'नी छुटकारा) ना मुम्किन है । हां, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर चाहेगा तो अपने फ़ज़्लो करम से क़ियामत के रोज़ ज़ालिम व मज़्लूम में सुल्ह़ करवा देगा । ब सूरते दीगर उस मज़्लूम को ज़ालिम की नेकियां दे दी जाएंगी । अगर इस से भी मज़्लूम या मज़्लूमीन के हुक़ूक़ अदा न हुए तो मज़्लूमीन के गुनाह ज़ालिम के सर पर डाल दिये जाएंगे और इस त़रह़ वोह ज़ालिम अगर्चे दुन्या में नेक व परहेज़गार रह कर बड़ी बड़ी नेकियां ले कर क़ियामत में आया होगा । मगर बन्दों के हुक़ूक़ ज़ाएअ़ करने के सबब बिल्कुल मुफ़्लिस व क़ल्लाश हो जाएगा और इसी वजह से जहन्नम रसीद कर दिया जाएगा । وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ تعالٰی عَزَّوَجَلَّ

क़ियामत में मुफ़्लिस कौन ? ***ताजदारे*** मदीनए मुनव्वरा, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इस्तिफ़्सार फ़रमाया, "क्या तुम जानते हो कि ***मुफ़्लिस*** कौन है ?" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की, ***या रसूलल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम में से ***मुफ़्लिस*** तो वोह है

जिस के पास दिरहम व दुन्यावी साज़ो सामान न हो । तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया: "मेरी उम्मत का ***मुफ़्लिस तरीन*** शख़्स वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा, ज़कात तो ले कर आएगा मगर साथ ही किसी को गाली भी दी होगी, किसी को तोहमत लगाई होगी, उस का माल ना हक़ खाया होगा, उस का ख़ून बहाया होगा, इस को मारा होगा, पस इन सब गुनाहों के बदले में उस की नेकियां ली जाएंगी। पस अगर उस की नेकियां ख़त्म हो जाएं और मज़ीद हक़दार बाक़ी हों तो उन (या'नी मज़्लूमों) के गुनाह ले कर बदले में इस (या'नी ज़ालिम) पर डाले जाएंगे फिर इस (ज़ालिम) शख़्स को जहन्नम में डाल दिया जाएगा।"

(सह़ीह़ मुस्लिम, स-फ़ह़ा:1394, ह़दीस़:2581)

ज़ालिम से मुराद कौन है ? ***याद रहे !*** यहां ज़ालिम से मुराद सिर्फ़ क़ातिल, डाकू या मार धाड़ करने वाला ही नहीं । बल्कि जिस ने ब ज़ाहिर किसी की थोड़ी सी भी ह़क़ त-लफ़ी की म-स़लन एक आध रूपिया ही दबा लिया हो, बिला इजाज़ते शर-ई डांट डपट की हो या गुस्से में घूरा हो, मज़ाक़ उड़ाया हो वग़ैरा तब भी येह ज़ालिम है और वोह मज़्लूम । अब येह जुदा बात है कि इस "मज़्लूम" ने भी "उस ज़ालिम" की बा'ज़ ह़क़ त-लफ़ियां की हों। इस सूरते ह़ाल में दोनों एक दूसरे के ह़क़ में मख़्सूस़ मुआ-मलात में "ज़ालिम" भी हैं और "मज़्लूम"

भी । इसी त़रह़ कई लोग होंगे जो बा'ज़ों के ह़क़ में "ज़ालिम" और बा'ज़ों के ह़क़ में "मज़्लूम" होंगे ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह अनीस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन इर्शाद फ़रमाएगा, "कोई दोज़ख़ी दोज़ख़ में और कोई जन्नती जन्नत में दाख़िल न हो, जब तक वोह ***हुक़ूक़ुल इ़बाद*** का बदला न अदा करे । या'नी जिस किसी का ह़क़ जिस किसी ने दबाया हो उस का फ़ैस़ला होने तक दोज़ख़ या जन्नत में दाख़िल न होगा ।" (अख़्लाक़ुस्स़ालिह़ीन, स़-फ़ह़ा:55)

हुक़ूक़ुल इ़बाद की तफ़्स़ीली मा'लूमात के लिये मक्त-बतुल मदीना का मत़्बूआ़ तह़रीरी बयान ***ज़ुल्म का अन्जाम*** ज़रूर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये । ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हम सब मुसल्मानों को एक दूसरे की ह़क़ त-लफ़ी करने से बचा और जो कुछ इस सिल्सिले में कोताहियां हो चुकी हैं इन्हें आपस में मुआ़फ़ करवा लेने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

माहे र-मज़ान में मरने की फ़ज़ीलत : ***जो*** ख़ुश नस़ीब मुसल्मान ***माहे र-मज़ान*** में इन्तिक़ाल करता है उस को सुवालाते क़ब्र से अमान मिल जाती, अ़ज़ाबे क़ब्र से बच जाता और जन्नत का ह़क़दार क़रार पाता है । चुनान्चे ह़ज़राते मुह़द्दिस़ीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِین का क़ौल है,

''जो मो'मिन इस महीने में मरता है वोह सीधा जन्नत में जाता है, गोया उस के लिये दोज़ख़ का दरवाज़ा बन्द है ।''

(अनीसुल वाइज़ीन, स़-फ़ह़ा:25)

तीन[3] अफ़राद के लिये जन्नत की बिशारत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबियों के सरदार, दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार, बि इज़्नि परवर्द गार हम बे कसों के मदद गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : ''जिस को ***र-मज़ान के इख़्तिताम*** के वक़्त मौत आई वोह ***जन्नत*** में दाख़िल होगा और जिस की मौत ***अ़-रफ़ा*** के दिन (या'नी 9 ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम) के ख़त्म होते वक़्त आई वोह भी ***जन्नत*** में दाख़िल होगा और जिस की मौत ***स़-दक़ा*** देने की ह़ालत में आई वोह भी दाख़िले ***जन्नत*** होगा ।''

(ह़िल्यतुल औलिया, जिल्द:5, स़-फ़ह़ा:26, ह़दीस़:6187)

क़ियामत तक के रोज़ों का स़वाब : *उम्मुल मुअ्मिनीन*

सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, मेरे सरताज, स़ाह़िबे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे बिशारत बुन्याद है: ''जिस का रोज़े की ह़ालत में इन्तिक़ाल हुवा, ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उस को क़ियामत तक के रोज़ों का स़वाब अ़ता फ़रमाता है ।''

(अल फ़िरदौस बिमअूसरिल ख़ित़ाब, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:504, ह़दीस़:5557)

سُبْحٰنَ الله عَزَّوَجَلَّ ! रोज़ादार किस क़-दर नसीबदार है कि अगर रोज़े की ह़ालत में मौत से हम-कनार हुवा तो क़ियामत तक के रोज़ों के स़वाब का ह़क़दार क़रार पाएगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूले अकरम, रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़्तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "येह र-मज़ान तुम्हारे पास आ गया है, इस में जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शयात़ीन को क़ैद कर दिया जाता है, मह़रूम है वोह शख़्स़ जिस ने ***र-मज़ान*** को पाया और उस की ***मग्फ़िरत*** न हुई कि ***जब इस की र-मज़ान में मग्फ़िरत न हुई तो फिर कब होगी ?"***

(मज्मउ़ज़्ज़वाइद, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:345, ह़दीस़:4788)

जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** माहे र-मज़ान तो क्या आता है रह़मत व जन्नत के दरवाज़े खुल जाते, दोज़ख़ को ताले पड़ जाते और शयात़ीन क़ैद कर लिये जाते हैं । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम, रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़्तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

अपने सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم اَجْمَعِيْن को खुश ख़बरी सुनाते हुए इर्शाद फ़रमाया करते थे कि "***र-मज़ान*** का महीना आ गया है जो कि बहुत ही बा ब-र-कत है। ***अल्लाह*** तआला ने इस के रोज़े तुम पर फ़र्ज़ किये हैं, इस में आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। और ***जहन्नम*** के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं। ***सरकश शैतानो*** को क़ैद कर लिया जाता है। इस में अल्लाह तआला की एक रात ***शबे क़द्र*** है, जो ***हज़ार महीनों*** से बढ़ कर है जो इस की भलाई से महरूम हुवा वोही महरूम है।"

(सु-नने नसाई, जिल्द:4, स-फ़हा:129)

शयातीन ज़न्जीरों में जकड़ दिये जाते हैं : *हज़रते* सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं: हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह्तशम, शाफ़ेए उमम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया: जब र-मज़ान आता है तो आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। (सहीहुल बुख़ारी, जिल्द अव्वल, स-फ़हा:626, हदीस:1899) और एक रिवायत में है कि जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं शयातीन जन्ज़ीरों में जकड़ दिये जाते हैं। एक रिवायत में है कि रहमत के दरवाज़े खोले जाते हैं।

(सहीह मुस्लिम, स-फ़हा:543, हदीस:1079)

शैत़ान क़ैद में होने के बा वुजूद गुनाह क्यूं होते हैं ? :

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं: ह़क़ येह है कि ***माहे र-मज़ान*** में आस्मानों के दरवाज़े भी खुलते हैं जिन से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ास़ रह़मतें ज़मीन पर उतरती हैं और जन्नतों के दरवाज़े भी जिस की वजह से जन्नत वाले ह़ूरो ग़िल्मान को ख़बर हो जाती है कि दुन्या में ***र-मज़ान*** आ गया और वोह रोज़ा दारों के लिये दुआ़ओं में मश्ग़ूल हो जाते हैं । ***माहे र-मज़ान*** में वाक़ेई दोज़ख़ के दरवाज़े ही बन्द हो जाते हैं जिस की वजह से इस महीने में गुनहगारों बल्कि काफ़िरों की क़ब्रों पर भी दोज़ख़ की गरमी नहीं पहुंचती । वोह जो मुसल्मानों में मश्हूर है कि ***र-मज़ान*** में अ़ज़ाबे क़ब्र नहीं होता इस का येही मत़लब है और ह़क़ीक़त में इब्लीस मअ़ अपनी ज़ुर्रिय्यतों (या'नी औलाद) के क़ैद कर दिया जाता है । ***इस महीने में जो कोई भी गुनाह करता है वोह अपने नफ़्से अम्मारा की शरारत से करता है न शैत़ान के बहकाने से ।***

(मिर्आतुल मनाजीह़, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:133)

गुनाहों में कमी तो आ ही जाती है :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बहर कैफ़ आ़म मुशा-हदा येही है कि र-मज़ानुल मुबारक में हमारी मसाजिद ग़ैरे र-मज़ान के मुक़ाबले

में ज़ियादा आबाद हो जाती हैं । नेकियां करने में आसानियां रहती हैं और इतना ज़रूर है कि माहे र-मज़ान में गुनाहों का सिल्सिला कुछ न कुछ कम हो जाता है ।

जूं ही शैत़ान आज़ाद होता है ! ***र-मज़ानुल मुबारक*** के रुख़्सत होते ही, ***शैत़ान*** आज़ाद हो जाता और गुनाहों का ज़ोर ख़ूब बढ़ जाता है । और ईद के दिन तो इस क़-दर गुनाहों की कस्रत हो जाती है कि वोह सिनेमा घर जो शायद सारे साल में कभी न भरते हों उन पर भी ''हाउस फुल'' का बोर्ड लग जाता है, पूरे साल में जिन तमाशों के मेले नहीं लगते वोह भी ईद के रोज़ ज़रूर लग जाते हैं, गोया ऐसा मा'लूम होता है कि एक महीने की क़ैद के सबब शैत़ान बे ह़द बिफर चुका है और माहे र-मज़ानुल मुबारक की सारी कसर वोह ईद के रोज़ ही निकाल देना चाहता है । तमाम तफ़रीह़ गाहें बे पर्दा औ़रतों और मर्दों से भर जाती हैं, तमाम डिरामा गाहों में इज़्दिहाम होता है, बल्कि ईद के लिये नई नई फ़िल्में और जदीद डिरामे लगा दिये जाते हैं । आह ! ***शैत़ान*** के हाथों बे शुमार मुसल्मान खिलौना बन कर रह जाते हैं । मगर ऐसे ख़ुश नसीब मुसल्मान भी होते हैं जो ***अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त*** عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़फ़्लत नहीं करते और ***शैत़ान*** के बहकाने से मह़फ़ूज़ रहते हैं ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब तुम मुर्सलीन عَلَيْهِمُ السَّلَام पर दुरूदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं।

आतश परस्त पर रह़मत : ***बुख़ारा*** में एक मजूसी (आतश परस्त) रहता था एक मरतबा ***र-मज़ान शरीफ़*** में वोह अपने बेटे के साथ मुसल्मानों के बाज़ार से गुज़र रहा था। उस के बेटे ने कोई चीज़ अ़लानिया तौ़र पर खानी शुरूअ़ कर दी। मजूसी ने जब येह देखा तो अपने बेटे को एक ***तमांचा*** रसीद कर दिया और ख़ूब डांट कर कहा, तुझे र-मज़ानुल मुबारक के महीने में मुसल्मानों के बाज़ार में खाते हुए शर्म नहीं आती ? लड़के ने जवाब दिया, अब्बा जान ! आप भी तो र-मज़ान शरीफ़ में खाते हैं। वालिद ने कहा, मैं मुसल्मानों के सामने नहीं अपने घर के अन्दर छुप कर खाता हूं, इस माहे मुबारक की बे हुर्मती नहीं करता। कुछ अ़रसे बा'द उस शख़्स़ का इन्तिक़ाल हो गया। किसी ने ख़्वाब में उस को जन्नत में टहलते हुए देखा तो है़रत से पूछा, तू तो मजूसी था, जन्नत में कैसे आ गया ? केहने लगा, "वाक़ेई मैं मजूसी था, लेकिन जब मौत का वक़्त क़रीब आया तो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने ***एह़तिरामे र-मज़ान की ब-र-कत से मुझे ईमान की दौलत से और मरने के बा'द जन्नत से सरफ़राज़ फ़रमाया।"*** (नुज़्हतुल मजालिस, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:217) ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

र-मज़ान में अ़लल ए'लान खाने की दुन्यवी सज़ा :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ? र-मज़ानुल मुबारक की ता'ज़ीम के सबब एक आतश परस्त को ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने न सिर्फ़ दौलते ईमान से नवाज़ दिया बल्कि उस को जन्नत की ला ज़वाल ने'मतों से भी मालामाल फ़रमा दिया। इस वाक़िए से ख़ुसूसन हमारे उन ग़ाफ़िल इस्लामी भाइयों को दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करना चाहिये जो मुसल्मान होने के बा वुजूद र-मज़ानुल मुबारक का बिल्कुल एह़तिराम नहीं करते। अव्वल तो वोह रोज़ा नहीं रखते, फिर चोरी और सीना ज़ोरी यूं कि रोज़ादारों के सामने ही सिगरेट के कश लगाते, पान चबाते, ह़त्ता कि बा'ज़ तो इतने बेबाक व बे मुरव्वत कि सरे आ़म पानी पीते बल्कि खाना खाते भी नहीं शरमाते। याद रखिये ! फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى फ़रमाते हैं, "जो शख़्स़ र-मज़ानुल मुबारक में दिन के वक़्त बिग़ैर किसी मजबूरी के अ़लल ए'लान जान बूझ कर खाए पिये उस को (बादशाहे इस्लाम की त़रफ़ से) क़त्ल कर दिया जाए।"

(दुर्रे मुख़्तार मअ़ रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:392)

क्या आप को मरना नहीं ? ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** ग़ौर कीजिये ! ख़ूब सोचिये !! जब रोज़ाख़ोरों की दुन्या में इस क़-दर सख़्त सज़ा तज्वीज़ की गई है (येह सज़ा सिर्फ़ ह़ाकिमे इस्लाम ही दे सकता है) तो आख़िरत की

सज़ा किस क़-दर हौलनाक और तबाहकुन होगी ? मुसल्मानो ! होश में आइये ! कब तक इस दुन्या में ***गुल्छर्रे*** उड़ाएंगे ? क्या आप को मरना नहीं ? क्या इस दुन्या में हमेशा इसी त़रह़ दन्दनाते फिरेंगे ? याद रखिये ! एक न एक दिन मौत ज़रूर आएगी और आप का रिश्तए ह़यात मुन्क़तेअ़ कर के (या'नी काट कर) नर्म व आराम देह गदेलों से उठा कर मिट्टी पर सुला देगी। हर त़रह़ के सामाने त़रब से आरास्ता व पैरास्ता कमरों से निकाल कर अंधेरी क़ब्रों में पहुंचा देगी, फिर पछताने से कुछ हाथ न आएगा। अभी मौक़अ़ है, गुनाहों से सच्ची तौबा कर लीजिये और रोज़ा व नमाज़ की पाबन्दी इख़्तियार कीजिये ।

कर ले तौबा रब عَزَّوَجَلَّ ***की रह़मत है बड़ी***
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों भरी ज़िन्दगी से छुटकारा पाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माह़ौल से हर दम वाबस्ता रहिये । اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत दोनों में सुर्ख़ रूई नस़ीब होगी। आप की तरग़ीब के लिये एक निहायत ही खुश गवार व खुश्बूदार ***म-दनी बहार*** आप के गोश गुज़ार की जाती है चुनान्चे

सुन्नतों भरे बयानात की ब-रकात : ***पाकिस्तान*** के एक इस्लामी भाई के ह़-लफ़िय्या बयान का लुब्बे लुबाब है: मैं 1987 ता 1990 तक एक सियासी पार्टी से वाबस्ता रहा। आए दिन के फ़सादात से बेज़ार हो कर घरवालों ने मुझे बैरूने पाकिस्तान भेजने की ठानी। चुनान्चे 3-11-90 को मैं सल्त़नत ओ़मान के दारुल अमारात ***मस्क़त़*** की एक गारमेन्ट फ़ेक्ट्री में मुलाज़िम हो गया। 1992 में ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माह़ौल से वाबस्ता एक इस्लामी भाई काम के सिल्सिले में हमारी फ़ेक्ट्री में भरती हुए। उन की ***इन्फ़िरादी कोशिश*** से اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं नमाज़ी बना। फ़ेक्ट्री का माह़ौल बहुत ही ख़राब था, सिर्फ़ हमारे शो'बे ही को ले लीजिये उस में आठ या नौ टेप रीकार्डर थे जिन के ज़रीए़ मुख़्तलिफ़ ज़बानों, म-स़लन उर्दू, पन्जाबी, पुश्तो, हिन्दी और बंगाली वग़ैरा में ऊंची आवाज़ के साथ गाने चलाने का सिल्सिला रहता। दा'वते इस्लामी वाले ***आ़शिक़े रसूल*** की सोह़बत की ब-र-कत से اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं गाने बाजों से मु-तनफ़्फ़िर हो गया। बाहमी मश्वरे से हम दोनों ने मक्त-बतुल मदीना से जारी होने वाली सुन्नतों भरे बयानात की केसेटें चलानी शुरूअ़ कर दीं। इब्तिदाअन बा'ज़ लोगों ने हमारी मुख़ा-ल-फ़त भी की मगर हम ने हिम्मत नहीं हारी। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरे बयानात चलाने की ब-र-कात का खुद मुझ पर भी ज़ुहूर होने लगा। बिल्ख़ुसूस़, ***क़ब्र की***

पहली रात, नैरंगिये दुन्या, बद नसीब दूल्हा, क़ब्र की पुकार और तीन क़ब्रें नामी बयानात ने मुझे हिला कर रख दिया, (येह तमाम बयानात अपने अपने मुल्क के मक्त-बतुल मदीना के बस्ते से हदिय्यतन त़लब किये जा सकते हैं) आख़िरत की तैयारी की ***म-दनी सोच*** मिली और मेरा दिल गुनाहों से नफ़रत करने लगा। इस दौरान चन्द और अफ़राद भी सुन्नतों भरे बयानात से मुतअस्सिर हो कर क़रीब आ गए। जिन्हों ने हमारे दिलों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा किया था वोह ***आ़शिक़े रसूल*** मुला-ज़मत छोड़ कर पाकिस्तान लौट गए। हम ने पाकिस्तान से सुन्नतों भरे बयानात की 90 केसेटें मंगवा लीं । ***पहले हमारी फ़ेक्ट्री में सिर्फ़ 50 या 60 नमाज़ी थे बयानात सुन सुन कर नमाज़ियों की ता'दाद बढ़ते बढ़ते اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ 200 से 250 हो गई ।*** हम ने मिल कर 400 वोट का क़ीमती इस्पीकर ख़रीद कर अपनी मन्ज़िल की दीवार पर नस्ब कर लिया और धूमधाम से केसेटें चलाने लगे रोज़ाना सुब्ह 7 से 8 तिलावते कलामे पाक की केसेट, 8 ता 9 ना'त शरीफ़ और 9 ता 10 सुन्नतों भरे बयान की केसेट चलाने का मा'मूल बना लिया। रफ़्ता रफ़्ता हमारे पास 500 केसेटें जम्अ़ हो गईं। मुझ समेत ***पांच इस्लामी भाइयों*** ने अपने आप को दा'वते इस्लामी के म-दनी रंग में रंग लिया। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मस्जिद दर्स का आग़ाज़ हो गया। फिर रफ़्ता

रफ़्ता हमारी फ़ेक्ट्री में ***हफ़्ता वार सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़*** शुरूअ़ हो गया, इज्तिमाअ़ में कमो बेश 250 इस्लामी भाई शिर्कत करते थे, ***मद्र-सतुल मदीना*** (बराए बालिग़ान) भी क़ाइम हो गया । सुन्नतों की बहारें आने लगीं, मु-तअ़द्दद इस्लामी भाइयों ने अपने चेहरे पर ***म-दनी आक़ा*** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की निशानी मुबारक दाढ़ी सजा ली । 20 से 25 इस्लामी भाइयों के सरों पर ***इ़मामे*** के ताज जगमगाने लगे । हमारी फ़ेक्ट्री के मेनेजर इब्तिदाअन केसेटें चलाने वग़ैरा से मन्अ़ करते रहे मगर बयानात की केसेटों की आवाज़ उन के कानों में भी रस घोलती रही और اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बिल आख़िर वोह भी मु-तअस्सि़र हो ही गए न सिर्फ़ मु-तअस्सि़र हुए बल्कि नमाज़ी भी बन गए और एक मुठ्ठी दाढ़ी भी सजा ली ।

इस्लामी भाई का मज़ीद बयान है, अब मैं वापस पाकिस्तान आ चुका हूं और येह वाक़िआ बयान करते वक़्त बाबुल मदीना कराची के एक डिवीज़न की मुशा-वरत के ***ख़ादिम*** (निगरान) की हैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत का साई हूं । चूंकि ***मक्त-बतुल मदीना*** से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयानात की केसेटों ने मेरी तक़्दीर में म-दनी इन्क़िलाब बरपा किया है लिहाज़ा मेरी ख़्वाहिश है कि हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन रोज़ाना कम अज़ कम एक सुन्नतों भरे बयान की या ***म-दनी मुज़ाकरा*** की केसेट सुनने का मा'मूल बना ले, اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ वोह ब-र-कतें मिलेंगी कि दोनों जहां में बेड़ा पार हो

जाएगा ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! मक्त-बतुल मदीना से जारी कर्दा बयानात की केसेटें सुनने की भी कैसी ब-रकात हैं ! येह सब मुक़द्दर वालों के सौदे हैं, वरना बे शुमार अफ़राद ऐसे भी देखे जाते हैं कि वोह बरस हा बरस से सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िर होते हैं मगर उन पर म-दनी रंग नहीं चढ़ पाता । शायद इस की एक बड़ी वजह येह भी है कि वोह बैठ कर तवज्जोह के साथ बयान नहीं सुनते । ला परवाही के साथ इधर उधर देखते हुए या बातें करते हुए सुनने से बयानात की ब-रकात कहां से मिलेंगी ! ग़फ़्लत के साथ नस़ीह़त सुनना कुफ़्फ़ार की सिफ़त है मुसल्मानों को इस ह़-र-कत से बचना ज़रूरी है चुनान्चे पारह 17 सू-रतुल अम्बिया की आयत नम्बर 2 और 3 में इर्शादे रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُہٗ है:

مَا يَأْتِيهِم مِّن ذِكْرٍ مِّن رَّبِّهِم مُّحْدَثٍ إِلَّا اسْتَمَعُوهُ وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿٢﴾ لَاهِيَةً قُلُوبُهُمْ ط

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: जब उन के रब के पास से उन्हें कोई नई नस़ीह़त आती है तो उसे नहीं सुनते मगर खेलते हुए, इन के दिल खेल में पड़े हैं ।

(पारह:17, अल अम्बिया:2,3)

लिहाज़ा यक्सूई के साथ ***सुन्नतों भरे बयानात की केसेटें*** सुनने की तरकीब बना ले । اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ आप को वोह वोह ब-र-कतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उसने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया।

नसीब होंगी कि आप हैरान रह जाएंगे।[1]

साल भर की नेकियां बरबाद : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान, सरदारे दो[2] जहान, मह़बूबे रह़मान عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, "बेशक जन्नत माहे र-मज़ान के लिये एक साल से दूसरे साल तक सजाई जाती है, पस जब माहे र-मज़ान आता है तो जन्नत केहती है, "ऐ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे इस महीने में अपने बन्दों में से (मेरे अन्दर) रहने वाले अ़त़ा फ़रमा दे।" और हूरेईन केहती हैं, "ऐ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ! इस महीने में हमें अपने बन्दों में से शौहर अ़त़ा फ़रमा" फिर सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "जिस ने इस माह में अपने नफ़्स की ह़िफ़ाज़त की कि न तो कोई नशा आवर शय पी और न ही किसी मो'मिन पर ***बोहतान*** लगाया और न ही इस माह में कोई ***गुनाह*** किया तो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हर रात के बदले इस का ***सौ हूरों*** से निकाह़ फ़रमाएगा और उस के लिये ***जन्नत*** में सोने, चांदी, याक़ूत और ज़बरजद का ऐसा मह़ल बनाएगा कि अगर सारी दुन्या जम्अ़ हो जाए और इस मह़ल में आ जाए तो इस मह़ल की उतनी ही जगह घेरेगी

1. सुन्नतों भरे बयानात की केसेटों की ब-रकात की तफ़्सीलात जानने के लिये "बयानात की केसेटों के करिश्मात" नामी रिसाला (54 स़-फ़ह़ात) मक्त-बतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये। ***-मजलिसे मक्त-बतुल मदीना***

जितना बकरियों का एक बाड़ा दुन्या की जगह घेरता है और ***जिस ने इस माह में कोई नशा आवर शय पी या किसी मो'मिन पर बोहतान बांधा या इस माह में कोई गुनाह किया तो अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***उस के एक साल के आ'माल बरबाद फ़रमा देगा।*** पस तुम माहे र-मज़ान (के ह़क़) में कोताही करने से डरो क्यूंकि येह ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का महीना है। अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिये ग्यारह महीने कर दिये कि इन में ने'मतों से लुत्फ़ अन्दोज़ हो और तलज़्ज़ुज़ (लज़्ज़त) ह़ासिल करो और अपने लिये एक महीना ख़ास़ कर लिया है। पस तुम माहे र-मज़ान के मु-आ़मले में डरो।"

(अल मु'जमुल अवसत़, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:141, ह़दीस़:3688)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा जहां माहे र-मज़ानुल मुबारक की ता'ज़ीम करने वालों के लिये उख़्रवी इन्आ़मात व करामात की बिशारात हैं वहां इस मुबारक महीने की ना क़द्री करते हुए इस में गुनाह करने वालों के लिये वई़दात भी हैं। इस ह़दीसे़ पाक में नशा आवर चीज़ पीने और मो'मिन पर बोहतान बांधने का ख़ुसूसि़य्यत के साथ तज़्किरा है याद रखिये ! शराब ***उम्मुल ख़बाइस़*** (या'नी बुराइयों की मां है) इस का पीना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया,

"जो चीज़ ज़ियादा मिक्दार में नशा लाए तो उस की थोड़ी सी मिक्दार भी ह़राम है ।"

(सु-नने अबू दावूद, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:459, अल ह़दीस़:3681)

दोज़ख़ियों का ख़ून और पीप : ***मो'मिन*** पर बोहतान बांधना भी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, ह़दीसे़ पाक में है: "जो किसी मो'मिन के बारे में ऐसी चीज़ कहे जो इस में न हो तो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उस (बोहतान तराश) को उस वक़्त तक ***रद्ग़तुल ख़बाल*** में रखेगा यहां तक कि वोह अपनी कही हुई बात से निकल जाए ।"

(सु-नने अबू दावूद, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:427, ह़दीस़:3597)

रद्ग़तुल ख़बाल जहन्नम में वोह मक़ाम है जहां दोज़ख़ियों का ख़ून और पीप जम्अ़ होता है । (मिर्आतुल मनाजीह़, जिल्द:5, स़-फ़ह़ा:313) इस के तह़्त ***मुह़क़्क़िक़ अ़लल इ़त्लाक़*** ह़ज़रते शाह अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस़ देहल्वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं: "यहां तक कि वोह अपनी कही हुई बात से निकल जाए" मुराद येह है कि "इस गुनाह से तौबा के ज़रीए़ या जिस अ़ज़ाब का वोह मुस्तह़क़ हो चुका है उसे भुगतने के बा'द पाक हो जाए ।"

(अशिअ़्अ़तुल्लम्आ़त, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:290)

र-मज़ान में गुनाह करने वाला : ***सय्यि-दतुना***

उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत है दो[२] जहां के सुल्तान, शहन्शाहे कौनो मकान, सरवरे ज़ीशान, महबूबे रहमान عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है, "मेरी उम्मत ज़लील व रुस्वा न होगी जब तक वोह माहे र-मज़ान का हक़ अदा करती रहेगी ।" अर्ज़ की गई, ***या रसूलल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ र-मज़ान के हक़ को ज़ाएअ़ करने में उन का ज़लील व रुस्वा होना क्या है ? फ़रमाया, "इस माह में उन का ह़राम कामों का करना । फिर फ़रमाया, ***जिस ने इस माह में ज़िना किया या शराब पी तो अगले र-मज़ान तक अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***और जितने आस्मानी फ़िरिश्ते हैं सब उस पर ला'नत करते हैं । पस अगर येह शख़्स़ अगले माहे र-मज़ान को पाने से पहले ही मर गया तो उस के पास कोई ऐसी नेकी न होगी जो उसे जहन्नम की आग से बचा सके । पस तुम माहे र-मज़ान के मुआ़-मले में डरो क्यूंकि जिस त़रह़ इस माह में और महीनों के मुक़ाबले में नेकियां बढ़ा दी जाती हैं इसी त़रह़ गुनाहों का भी मुआ़-मला है ।"***

(अल मु'जमुस्स़ग़ीर लित्त़बरानी, जिल्द:9, स़-फ़ह़ा:60, ह़दीस़:1488)

تُوۡبُوۡا اِلَی اللّٰہ ! اَسۡتَغۡفِرُ اللّٰہ

ना क़द्रो ख़बरदार ! ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** ल-रज़

उठिये ! माहे ***र-मज़ान*** की ना क़द्री से बचने का ख़ुसूसिय्यत के साथ सामान कीजिये। इस माहे मुबारक में दूसरे महीनों के मुकाबले मे जिस तरह नेकियां बढा दी जाती है इसी त़रह़ दीगर महीनों के मुक़ाबले में गुनाहों की हलाकत खेज़ियां भी बढ़ जाती हैं। ***माहे र-मज़ान*** में शराब पीने वाला और ज़िना करने वाला तो ऐसा बद नस़ीब है कि आइन्दा ***र-मज़ान*** से पहले पहले मर गया तो अब इस के पास कोई नेकी ऐसी न होगी जो उसे जहन्नम की आग से बचा सके। ***याद रहे !*** आंखों का ज़िना बद निगाही, हाथों का ज़िना अज्नबिय्या को (या शह्वत के साथ अम्रद को) छूना है लिहाज़ा ख़बरदार ! ख़बरदार ! ख़बरदार ! ***माहे र-मज़ान*** में बिल ख़ुसूस़ अपने आप को बदनिगाही और अम्रद बीनी से बचाइये। ह़त्तल इम्कान "आंखों का कुफ़्ले मदीना" लगा लीजिये या'नी निगाहें नीची रखने की भरपूर सअ़्य कीजिये। आह ! स़द हज़ार आह ! बसा अवक़ात नमाज़ी और रोज़ादार भी ***माहे र-मज़ान*** की बे हुर्मती कर के क़हरे क़ह्हार और ग़-ज़बे जब्बार का शिकार हो कर अ़ज़ाबे नार में गरिफ़्तार हो जाते हैं।

दिल पर सियाह नुक्त़ा : ***ह़दीस़े*** मुबारक में आता है, "जब कोई इन्सान गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक्त़ा बन जाता है, जब दूसरी बार गुनाह करता है तो दूसरा सियाह नुक्त़ा बनता है यहां तक कि उस का दिल सियाह हो जाता है। नतीजतन भलाई की बात उस के दिल पर असर अन्दाज़

नहीं होती।"

(अद्दुर्रुल मन्सूर, जिल्द:8, स-फ़हा:446)

अब ज़ाहिर है कि जिस का दिल ही ज़ंग आलूद और सियाह हो चुका हो उस पर भलाई की बात और नसीहत कहां अस़र करेगी? माहे र-मज़ान हो या ग़ैरे र-मज़ान ऐसे इन्सान का गुनाहों से बाज़ व बेज़ार रहना निहायत ही दुश्वार हो जाता है। उस का दिल नेकी की त़रफ़ माइल ही नहीं होता। अगर वोह नेकी की त़रफ़ आ भी गया तो बसा अवक़ात उस का जी इसी सियाही के सबब नेकी में नहीं लगता और वोह सुन्नतों भरे म-दनी माह़ौल से भागने ही की तदबीरें सोचता है। उस का नफ़्स उसे लम्बी उम्मीदें दिलाता, ग़फ़्लत उसे घेर लेती और वोह बद नसीब सुन्नतों भरे म-दनी माह़ौल से दूर जा पड़ता है। ***माहे र-मज़ान*** की मुबारक साअ़तें बल्कि बसा अवक़ात पूरी पूरी रातें ऐसा शख़्स़, खेलकूद, गाने बाजे, ताश व शतरंज, गपशप वग़ैरा में बरबाद करता है।

दिल की सियाही का इलाज : ***इस*** सियाह क़ल्बी का इलाज ज़रूरी है और इस के इलाज का एक मुअस्सिर ज़रीआ पीरे कामिल भी है या'नी किसी ऐसे बुज़ुर्ग के हाथ में हाथ दे दिया जाए जो परहेज़गार और मुत्तबेए सुन्नत हो, जिस की ज़ियारत खुदा व मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद दिलाए, जिस की बातें स़लातो सुन्नत का शौक़ उभारने वाली हों, जिस की

सोहबत मौतो आख़िरत की तैयारी का जज़्बा बढ़ाती हो। अगर ख़ुश क़िस्मती से ऐसा पीरे कामिल मुयस्सर आ गया तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दिल की सियाही का ज़रूर इलाज हो जाएगा। लेकिन किसी मुअय्यन गुनहगार मुसल्मान के बारे में येह केहने की इजाज़त नहीं कि इस के दिल पर मुहर लग गई या उस का दिल सियाह हो गया जभी नेकी की दा'वत इस पर असर नहीं करती। यक़ीनन ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ इस बात पर क़ादिर है कि उसे तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे जिस से वोह राहे रास्त पर आ जाए। ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हमारे दिल की सियाही को दूर फ़रमाए।

اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

एक इब्रत अंगेज़ हिकायत पेश करता हूं इस को पढ़िये और ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ से लरज़िये! ख़ास कर वोह लोग इस हिकायत से दर्से इब्रत हासिल करें जो रोज़ा रखने के बा वुजूद ताश, शतरंज, लुडू, विडियो गेम्ज़, फ़िल्में डिरामे, गाने बाजे वग़ैरा वग़ैरा बुराइयों से बाज़ नहीं रहते। चुनान्चे मन्कूल है,

क़ब्र का भयानक मन्ज़र ! ***एक*** बार अमीरुल मुअ्मिनीन हज़रते मौलाए काइनात, अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ज़ियारते क़ुबूर के लिये कूफ़ा के क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए।

वहां एक ताज़ा क़ब्र पर नज़र पड़ी । आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم को उस के ह़ालात मा'लूम करने की ख़्वाहिश हुई । चुनान्चे बारगाहे खुदान्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ गुज़ार हुए, "***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ! इस मय्यित के ह़ालात मुझ पर मुन्कशिफ़ (या'नी ज़ाहिर) फ़रमा ।" ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आप की इल्तिजा फ़ौरन मस्मूअ़ हुई (या'नी सुनी गई) और देखते ही देखते आप के और उस मुर्दे के दरमियान जितने पर्दे ह़ाइल थे तमाम उठा दिये गए । अब एक क़ब्र का भयानक मन्ज़र आप के सामने था । क्या देखते हैं कि मुर्दा आग की लपेट में है और रो रो कर आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से इस त़रह़ फ़रयाद कर रहा है:

يَاعَلِيُّ! اَنَا غَرِيْقٌ فِى النَّارِ وَحَرِيْقٌ فِى النَّارِ۔

या'नी या अ़ली ! كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم मैं आग में डूबा हुवा हूं और आग में जल रहा हूं । क़ब्र के दह्शत नाक मन्ज़र और मुर्दे की दर्द नाक पुकारने हैदरे कर्रार كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم को बे क़रार कर दिया । आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपने रह़मत वाले परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में हाथ उठा दिये और निहायत ही आ़जिज़ी के साथ उस मय्यित की बख़्शिश के लिये दरख़्वास्त पेश की । ग़ैब से आवाज़ आई, "ऐ अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ! आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم इस की

सिफ़ारिश न ही फ़रमाएं क्यूं कि रोज़े रखने के बा वुजूद येह शख़्स़ र-मज़ानुल मुबारक की बे हुर्मती करता, र-मज़ानुल मुबारक में भी गुनाहों से बाज़ न आता था। दिन को रोज़े तो रख लेता मगर रातों को गुनाहों में मुब्तला रहता था। मौलाए काइनात अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم येह सुन कर और भी रन्जीदा हो गए और सज्दे में गिर कर रो रो कर अ़र्ज़ करने लगे, ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी लाज तेरे हाथ में है, इस बन्दे ने बड़ी उम्मीद के साथ मुझे पुकारा है, मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! तू मुझे इस के आगे रुस्वा न फ़रमा, इस की बे बसी पर रह़्म फ़रमा दे और इस बेचारे को बख़्श दे। ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم रो रो कर मुनाजात कर रहे थे। ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत का दरया जोश में आ गया और निदा आई, ऐ अ़ली ! كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم हम ने तुम्हारी शिकस्ता दिली के सबब इसे बख़्श दिया। चुनान्चे उस मुर्दे पर से अ़ज़ाब उठा लिया गया।

(अनीसुल वाइज़ीन, स़-फ़ह़ा:25)

क्यूं न मुश्किल कुशा कहूं तुम को ! तुम ने बिगड़ी मेरी बनाई है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुर्दों से गुफ़्तुगू : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** अमीरुल मुअ्मिनीन ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की अ़ज़्मतो शान के क्या केहने ! ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की

अ़ता से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अहले कु़बूर से गुफ़्तुगू फ़रमा लिया करते थे । एक और ***ह़िकायत*** पेशे ख़िदमत है । चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन अस्सुयूति अश्शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, "हम अमीरुल मुअ्मिनीन ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खु़दा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के हमराह क़ब्रिस्तान से गुज़रे । ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खु़दा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने इर्शाद फ़रमाया, اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ یَا اَھْلَ الْقُبُوْرِ وَ رَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ तुम हम को अपनी ख़बरें सुनाते हो या हम तुम को अपनी ख़बरें सुनाएं ? रावी केहते हैं कि हम ने एक क़ब्र के अन्दर से आवाज़ सुनी وَ عَلَیْکَ السَّلَامُ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ या अमीरल मुअ्मिनीन کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ! आप کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم हमें बताइये हमारे बा'द दुन्या में क्या हुवा ? तो आप کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया, "तुम्हारी बीवियां नई शादियां कर चुकीं, तुम्हारे माल बट चुके, और औलाद यतीमों के जुम्रे में शामिल है, वोह घर जो तुम ने पुख़्ता बनाए थे, उन में तुम्हारे दुश्मन आबाद हो गए । अब तुम अपना ह़ाल सुनाओ ।" तो एक क़ब्र से आवाज़ आई, कफ़न फट चुके, बाल बिखर गए, खालें टुकड़े टुकड़े हो गईं और आंखें रुख़्सारों पर बेह गईं और नथनों का पीप बन गया, जैसा किया वैसा पाया, जो छोड़ कर आए इस में नुक़्सान

उठाया और अब आ'माल के बदले रहन हैं ।" (या'नी जिस के अच्छे आ'माल होंगे आख़िरत में आसाइश पाएगा और बुरे आ'माल वाला अपनी करनी का फल भुगतेगा) (शरहुस्सुदूर, स-फ़ह़ा:209)

र-मज़ान की रातों में खेलकूद : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** गुज़श्ता दोनों ह़िकायात में हमारे लिये इब्रत के बे शुमार ***म-दनी फूल*** हैं । ज़िन्दा इन्सान ख़ूब फुदकता है मगर जब मौत का शिकार हो कर क़ब्र में उतार दिया जाता है, उस वक़्त आंखें बन्द होने के बजाए ह़क़ीक़त में खुल चुकी होती हैं । अच्छे आ'माल और राहे खुदाए ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ में दिया हुवा माल तो काम आता है मगर जो कुछ धन दौलत पीछे छोड़ आता है उस में भलाई का इम्कान न होने के बराबर होता है । वु-रसा से येह उम्मीद कम ही होती है कि वोह अपने मर्हूम अ़ज़ीज़ की आख़िरत की बेह्तरी के लिये माले कसीर ख़र्च करें । बल्कि मरने वाला अगर ह़राम व ना जाइज़ माल म-सलन गुनाहों के अस्बाब जैसा कि आलाते मूसीक़ी, विडियो गेम्ज़ की दुकान, म्यूज़िक सेन्टर, सिनेमा घर, शराब ख़ाना, जुआ का अड्डा मिलावट वाले माल का कारोबार वग़ैरा पीछे छोड़े तो उस के लिये मरने के बा'द सख़्त तरीन और ना क़ाबिले तसव्वुर नुक़्सान है । ***क़ब्र का भयानक मन्ज़र*** नामी ह़िकायत में र-मज़ानुल मुबारक की बे हुर्मती करने वाले का ख़ौफ़नाक अन्जाम पेश किया गया है । इस से दर्से इब्रत ह़ासिल कीजिये । आह ! सद आह !

र-मज़ानुल मुबारक की पाकीज़ा रातों में कई नौ जवान महल्ले में क्रिकेट, फुटबॉल वगै़रा खेल खेलते, खूब शोर मचाते हैं और इस त़रह़ येह बद नसी़ब खु़द तो इ़बादत से मह़रूम रहते ही हैं, दूसरों के लिये भी बेह़द परेशानी का बाइ़स़ बनते हैं । न तो खु़द इ़बादत करते हैं न दूसरों को करने देते हैं । इस कि़स्म के खेल ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की याद से गा़फ़िल करने वाले हैं । नेक लोग तो इन खेलों से स़दा दूर ही रहते हैं । खु़द खेलना तो दर कनार ऐसे खेल तमाशे देखते भी नहीं बल्कि इस कि़स्म के खेलों का आंखों देखा ह़ाल (COMMENTARY) भी नहीं सुनते । लिहाज़ा इन ह़-रकात से हमेशा बचना चाहिये और खु़सूस़न र-मज़ानुल मुबारक के बा ब-र-कत लम्ह़ात तो हरगिज़ हरगिज़ इस त़रह़ बरबाद नहीं करने चाहियें ।

रोज़े में वक्त "पास" करने के लिये..... :

काफ़ी नादान ऐसे भी देखे जाते हैं जो अगर्चे रोज़ा तो रख लेते हैं मगर फिर उन बेचारों का वक़्त "पास" नहीं होता । लिहाज़ा वोह भी एह़तिरामे ***र-मज़ान शरीफ़*** को एक त़रफ़ रख कर ह़राम व ना जाइज़ कामों का सहारा ले कर वक़्त "पास" करते हैं और यूं ***र-मज़ान शरीफ़*** में शतरंज, ताश, लुडू, गाने बाजे, वगै़रा में मश्गू़ल हो जाते हैं । ***याद रखिये !*** शतरंज और ताश

वगै़रा पर किसी क़िस्म की बाज़ी या शर्त़ न भी लगाई जाए तब भी येह खेल ना जाइज़ हैं । बल्कि ताश में चूंकि जानदारों की तस्वीरें भी होती हैं इस लिये मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ताश खेलने को मुत़लक़न ह़राम लिखा है । चुनान्चे फ़रमाते हैं, गन्जिफ़ा (पत्तों के ज़रीए खेले जाने वाले एक खेल का नाम और) ताश ह़रामे मुत़लक़ हैं कि इन में इलावा लह्वो लइब के तस्वीरों की ता'ज़ीम है ।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:24, स-फ़ह़ा:141)

अफ़्ज़ल इबादत कौन सी ?

ऐ जन्नत के त़लबगार रोज़ादार इस्लामी भाइयो ! र-मज़ानुल मुबारक के मुक़द्दस लम्ह़ात को फ़ुज़ूलियात व ख़ुराफ़ात में बरबाद होने से बचाइये ! ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर है इस को ग़नीमत जानिये, ताश की गड्डियों और फ़िल्मी गानों के ज़रीए वक़्त "पास" (बल्कि बरबाद) करने के बजाए तिलावते क़ुरआन और ज़िक्रो दुरूद में वक़्त गुज़ारने की कोशिश फ़रमाइये । भूक प्यास की शिद्दत जिस क़दर ज़ियादा मह़सूस होगी स़ब्र करने पर اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ स़वाब भी उसी क़दर ज़ाइद मिलेगा । जैसा कि मन्क़ूल है, **اَفْضَلُ الْعِبَادَاتِ اَحْمَزُهَا** "या'नी अफ़्ज़ल इबादत वोह है जिस में ज़ह़मत (तकलीफ़) ज़ियादा है ।" (कश्फ़ुल ख़िफ़ा व मुज़ीलुल इल्बास, जिल्द:1, स-फ़ह़ा:141, ह़दीस़:459) इमाम शरफ़ुद्दीन नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِى फ़रमाते हैं, "या'नी इबादात में

मशक़्क़त और ख़र्च ज़ियादा होने से स़वाब और फ़ज़ीलत ज़ियादा हो जाती है । (शरहे स़ह़ीह़ मुस्लिम लिन्न-ववी, जिल्दः1, स़-फ़ह़ाः390) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अद्ह़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है, "दुन्या में जो नेक अ़मल जितना दुश्वार होगा क़ियामत के रोज़ नेकियों के पलड़े में उतना ही ज़ियादा वज़्नदार होगा ।" (तज़्कि-रतुल औलिया, स़-फ़ह़ाः95) इन रिवायात से स़ाफ़ ज़ाहिर हुवा कि हमारे लिये रोज़ा रखना जितना दुश्वार और नफ़्से बदकार के लिये जिस क़दर ना गवार होगा । اِنْ شَآءَاللّٰہُ الْغَفَّار عَزَّوَجَلَّ बरोज़े शुमार मीज़ाने अ़मल में उतना ही ज़ियादा वज़्न-दार होगा ।

रोज़े में ज़ियादा सोना : ***हुज्जतुल इस्लाम*** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْوَالِی कीमियाए सआ़दत में फ़रमाते हैं, "रोज़ादार के लिये सुन्नत येह है कि दिन के वक़्त ज़ियादा देर न सोए बल्कि जागता रहे ताकि भूक और ज़ो'फ़ (या'नी कमज़ोरी) का अस़र मह़सूस हो ।" (कीमियाए सआ़दत, स़-फ़ह़ाः185) (अगर्चे अफ़्ज़ल कम सोना ही है फिर भी अगर ज़रूरी इ़बादात के इ़लावा कोई शख़्स़ सोया रहे तो गुनहगार न होगा)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! स़ाफ़ ज़ाहिर है कि जो दिन भर ***रोज़े*** में सो कर वक़्त गुज़ार दे उस को रोज़े का पता ही क्या चलेगा ? ज़रा सोचो तो सही ! ***हुज्जतुल इस्लाम*** ह़ज़रते

सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْوَالِى तो ज़ियादा सोने से भी मन्अ़ फ़रमाते हैं कि इस त़रह़ भी वक़्त फालतू ''पास'' हो जाएगा । तो जो लोग खेल तमाशों में और ह़राम कामों में वक़्त बरबाद करते हैं वोह किस क़दर मह़रूम व बद नसीब हैं । इस मुबारक महीने की क़द्र कीजिये, इस का एह़तिराम बजा लाइये, इस में ख़ुशदिली के साथ रोज़े रखिये और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल कीजिये ।

ऐ हमारे प्यारे प्यारे ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ फ़ैज़ाने र-मज़ान से हर मुसल्मान को मालामाल फ़रमा । इस माहे मुबारक की हमें क़द्र व मन्ज़िलत नसीब कर और इस की बे अ-दबी से बचा ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! एह़तिरामे माहे ***र-मज़ानुल मुबारक*** का दिल में जज़्बा बढ़ाने, इस की ख़ूब ब-र-कतें पाने ढेरों ढेर नेकियां कमाने और ख़ुद को गुनाहों से बचाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माह़ौल को अपनाने और ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ सुन्नतों की तरबिय्यत के ***म-दनी क़ाफ़िलों*** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र फ़रमाने की सआ़दत ह़ासिल कीजिये । اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ वोह फ़वाइद ह़ासिल होंगे कि आप की अ़क़्ल ह़ैरान रह जाएगी । एक आ़शिक़े रसूल का रूह़ परवर वाक़ेआ़ सुनिये और झूमिये । चुनान्चे

रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का इन्आ़म : *एक* इस्लामी भाई की तह़रीर का ख़ुलासा है: اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे ***म-दनी इन्आ़मात*** से प्यार है और रोज़ाना ***फ़िक्रे मदीना*** करने का मेरा मा'मूल है। एक बार मैं तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले में ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ सूबए बलूचिस्तान (पाकिस्तान) के सफ़र पर था। इसी दौरान मुझ गुनहगार पर बाबे करम खुल गया। हुवा यूं कि रात को जब सोया तो क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, ***जनाबे रिसालत मआब*** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए, अभी जल्वों में गुम था कि लबहाए मु-बारका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए: "जो म-दनी क़ाफ़िले में **रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हैं मैं उन्हें अपने साथ जन्नत में ले जाऊंगा ।"**

शुक्रिया क्यूं कर अदा हो आप का या मुस्तफ़ा ﷺ
कि पड़ौसी ख़ुल्द में अपना बनाया शुक्रिया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़िक्रे मदीना क्या है ? ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** मुसल्मानों की दुन्या व आख़िरत बेहतर बनाने के लिये सुवालनामे की सूरत में इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63, दीनी त़-लबा के लिये

92 और दीनी त़ालिबात के लिये 83 जब कि म-दनी मुन्नियों के लिये 40 ***म-दनी इन्आ़मात*** पेश किये गए हैं । ***म-दनी इन्आ़मात*** का कार्ड मक्त-बतुल मदीना से मिल सकता है । रोज़ाना ***फ़िक्रे मदीना*** के ज़रीए़ उस को पुर कर के म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के ***दा'वते इस्लामी*** के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाना होता है । अपने गुनाहों का एह़तिसाब करने, क़ब्रो ह़श्र के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करने और अपने अच्छे बुरे कामों का जाइज़ा लेते हुए ***म-दनी इन्आ़मात*** का कार्ड पुर करने को ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माह़ौल में ***फ़िक्रे मदीना*** करना केहते हैं । आप भी कार्ड ह़ासिल कर लीजिये अगर फ़िल्ह़ाल पुर नहीं करना चाहते तो न सही, इतना तो कीजिये कि वलिय्ये कामिल, आ़शिक़े रसूल, ***आ'ला ह़ज़रत*** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की पच्चीस्वीं शरीफ़ की निस्बत से रोज़ाना कम अज़् कम 25 सेकन्ड के लिये उस को देख लीजिये । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ देखने से पढ़ने और पढ़ते रहने से ***फ़िक्रे मदीना*** करने और इस कार्ड को भरने का ज़ेह्न बनेगा और अगर भरने का मा'मूल बन गया तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कतें आप ख़ुद ही देख लेंगे ।

म-दनी इन्आ़मात पर करता है जो कोई अ़मल
मग़्फ़िरत कर बे ह़िसाब उस की ख़ुदाए लम यज़ल عَزَّوَجَلَّ

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ط وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِالْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अह़कामे रोज़ा[1] (ह़-नफ़ी)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अह़मद बिन मन्सूर عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْغَفُوْر जब फ़ौत हुए तो अहले शीराज़ में से किसी ने ख़्वाब में देखा कि वोह शीराज़ की जामेअ़ मस्जिद की मेह़राब में खड़े हैं और उन्हों ने बेह्तरीन हुल्ला (जन्नती लिबास) ज़ैबे तन किया हुवा है और सर पर मोतियों वाला ताज सजा हुवा है। ख़्वाब देखने वाले ने ह़ाल दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : ''***अल्लाह*** तआ़ला ने मुझे बख़्शा, करम फ़रमाया और ताज पहना कर जन्नत में दाख़िल किया।'' पूछा, किस सबब से ? फ़रमाया: ''मैं ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कस़रत से दुरूदे पाक पढ़ा करता था येही अ़मल काम आ गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۔

(अल क़ौलुल बदीअ़, स़-फ़ह़ा:254)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1. फ़ैज़ाने सुन्नत में हर जगह मसाइल फ़िक़्हे ह़-नफ़ी के मुत़ाबिक़ दिये गए हैं। लिहाज़ा शाफ़ेई, मालिकी, और ह़म्बली इस्लामी भाई फ़िक़्ही मसाइल के मुआ़-मले में अपने अपने उ़-लमाए किराम से रुजूअ़ करें।

अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला का कितना बड़ा करम है कि उस ने हम पर माहे ***र-मज़ानुल मुबारक*** के रोज़े फ़र्ज़ कर के हमारे लिये तक़्वा और अपनी रिज़ा जूई का सामान फ़राहम किया। ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ पारह 2 सू-रतुल ब-क़रह की आयत नम्बर 183 ता 184 में इर्शाद फ़रमाता है:-

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَیْكُمُ الصِّیَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَۙ﴿۱۸۳﴾ اَیَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِیْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَیَّامٍ اُخَرَؕ وَ عَلَى الَّذِیْنَ یُطِیْقُوْنَهٗ فِدْیَةٌ طَعَامُ مِسْكِیْنٍؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَیْرًا فَهُوَ خَیْرٌ لَّهٗؕ وَ اَنْ تَصُوْمُوْا خَیْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ﴿۱۸۴﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुए थे कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले, गिनती के दिन हैं तो तुम में जो कोई बीमार या सफ़र में हो तो इतने रोज़े और दिनों में और जिन्हें इस की त़ाक़त न हो वोह बदले में एक मिस्कीन का खाना फिर जो अपनी त़रफ़ से नेकी ज़ियादा करे तो वोह उस के लिये बेहतर है और रोज़ा रखना तुम्हारे लिये ज़ियादा भला है अगर तुम जानो।

(पारह:2, अल ब-क़रह:183 ता 184)

रोज़ा किस पर फ़र्ज़ है ? : ***तौह़ीद*** व रिसालत का इक़रार करने और तमाम ज़रूरियाते दीन पर ईमान लाने के बा'द जिस त़रह़ हर मुसल्मान पर नमाज़ फ़र्ज़ क़रार दी गई है इसी त़रह़ ***र-मज़ान शरीफ़*** के ***रोज़े*** भी हर मुसल्मान (मर्दो औरत) आ़क़िल व बालिग़ पर ***फ़र्ज़*** हैं । दुर्रे मुख़्तार में है, रोज़े 10 ***शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म*** सिने 2 हिजरी को फ़र्ज़ हुए ।

(दुर्रे मुख़्तार मअ़ रद्दुल मुह्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:330)

रोज़ा फ़र्ज़ होने की वजह : ***इस्लाम*** में अक्स़र आ'माल किसी न किसी रूह़ परवर वाक़िए की याद ताज़ा करने के लिये मुक़र्रर किये गए हैं । म-स़लन ***स़फ़ा*** और ***मर्वह*** के दरमियान ह़ाजियों की सअ़्य ह़ज़रते सय्यि-दतुना ***हाजिरा*** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की यादगार है । आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا अपने लख़्ते जिगर ह़ज़रते सय्यिदुना ***इस्माईल*** ज़बीहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام के लिये पानी तलाश करने के लिये इन दोनों[2] पहाड़ों के दरमियान ***सात बार*** चली और दौड़ी थीं । ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ को ह़ज़रते सय्यि-दतुना हाजिरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की येह अदा पसन्द आ गई, लिहाज़ा इसी ***सुन्नते हाजिरा*** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا को ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने बाक़ी रखते हुए ***ह़ाजियों*** और ***ड़म्रा*** करने वालों के लिये ***स़फ़ा, व मर्वह*** की सअ़्य को वाजिब कर दिया । इसी त़रह़

माहे र-मज़ानुल मुबारक में से कुछ दिन हमारे प्यारे सरकार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ***ग़ारे हिरा*** में गुज़ारे थे । इस दौरान आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दिन को खाने से परहेज़ करते और रात को ***ज़िक्रुल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ में मशगूल रहते थे । तो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने उन दिनों की याद ताज़ा करने के लिये रोज़े फ़र्ज़ किये ताकि उस के महबूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत क़ाइम रहे ।

अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام **के रोज़े :** ***रोज़ा*** गुज़श्ता उम्मतों में भी था मगर उस की सूरत हमारे रोज़ों से मुख़्तलिफ़ थी । रिवायात से पता चलता है कि "ह़ज़रते सय्यिदुना ***आदम*** स़फ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام ने **13,14,15** तारीख़ को रोज़ा रखा ।"

(कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:258, ह़दीस़:24188)

"ह़ज़रते सय्यिदुना ***नूह़*** नजिय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام हमेशा रोज़ादार रहते ।" (इब्ने माजह, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:333, ह़दीस़:1714)

"ह़ज़रते सय्यिदुना ***ईसा*** रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام हमेशा रोज़ा रखते थे कभी न छोड़ते थे ।"

(कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:304, ह़दीस़:24624)

"ह़ज़रते सय्यिदुना ***दावूद*** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام एक दिन छोड़

कर एक दिन रोज़ा रखते।" (स़ह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:584, ह़दीस़:1189)

ह़ज़रते सय्यिदुना ***सुलैमान*** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ तीन3 दिन महीने के शुरूअ़ में, तीन3 दिन दरमियान में और तीन3 दिन आख़िर में (या'नी महीने में 9 दिन) ***रोज़ा*** रखा करते।

(कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:304, ह़दीस़:24624)

रोज़ादार का ईमान कितना पुख़्ता है ! : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** सख़्त गरमी है, प्यास से ह़ल्क़ सूख रहा है, होंट खुश्क हो रहे हैं, पानी मौजूद है मगर रोज़ादार उस की त़रफ़ देखता तक नहीं, खाना मौजूद है भूक की शिद्दत से ह़ालत दिगर गूं है मगर वोह खाने की त़रफ़ हाथ तक नहीं बढ़ाता। आप अन्दाज़ा फ़रमाइये इस शख़्स़ का खुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ पर कितना ***पुख़्ता ईमान*** है क्यूं कि वोह जानता है कि इस की ह़-र-कत सारी दुन्या से तो छुप सकती है मगर ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ से पोशीदा नहीं रह सकती। ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ पर इस का येह यक़ीने कामिल रोज़े का अ़-मली नतीजा है। क्यूं कि दूसरी इ़बादतें किसी न किसी ज़ाहिरी ह़-र-कत से अदा की जाती हैं मगर रोज़े का तअ़ल्लुक़ बात़िन से है। इस का ह़ाल ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता अगर वोह छुप कर खा पी ले तब भी लोग तो येही समझते रहेंगे कि येह रोज़ादार है। मगर वोह मह़ज़ ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ के बाइ़स़ खाने पीने से अपने आप को बचा रहा है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सके तो अपने बच्चों को भी जल्दी जल्दी ***रोज़ा*** रखने की आ़दत डलवाइये ताकि जब वोह बालिग़ हो जाएं तो उन्हें ***रोज़ा*** रखने में दुश्वारी न हो। चुनान्चे फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं, "बच्चे की उ़म्र दस साल की हो जाए और उस में ***रोज़ा*** रखने की त़ाक़त हो तो उस से र-मज़ानुल मुबारक में ***रोज़ा*** रखवाया जाए। अगर पूरी त़ाक़त होने के बा वुजूद न रखे तो मार कर रखवाइये अगर रख कर तोड़ दिया तो क़ज़ा का हुक्म न देंगे। और नमाज़ तोड़ दे तो फिर पढ़वाइये।"

(रद्दुल मुह़तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः385)

क्या रोज़े से आदमी बीमार हो जाता है ? : ***बा'ज़*** लोगों में येह तअस्सुर पाया जाता है कि ***रोज़ा*** रखने से इन्सान कमज़ोर हो कर बीमार पड़ जाता है। ह़ालांकि ऐसा नहीं। ***अल मल्फ़ूज़*** हि़स्सा दुवुम स़-फ़ह़ाः143 पर है, मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं: "एक साल र-मज़ानुल मुबारक से थोड़ा अ़रसा क़ब्ल वालिदे मर्हूम ह़ज़रते रईसुल मु-तकल्लिमीन सय्यिदुना व मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और फ़रमायाः बेटा ! आइन्दा ***र-मज़ान शरीफ़*** में तुम सख़्त बीमार हो जाओगे, मगर ख़याल रखना कोई ***रोज़ा*** क़ज़ा न होने पाए। चुनान्चे वालिद

साह़िब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ह़स्बुल इर्शाद वाक़ेई र–मज़ानुल मुबारक में सख़्त बीमार हो गया । लेकिन कोई ***रोज़ा*** न छूटा । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! रोज़ों ही की ब–र–कत से ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे सिह़्ह़त अ़त़ा फ़रमाई । और सिह़्ह़त क्यूं न मिलती कि सय्यिदुल मह़बूबीन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे पाक भी तो है: **صُوْمُوْا تَصِحُّوا** या'नी ***रोज़ा*** रखो ***सिह़्ह़तयाब*** हो जाओगे ।"

(दुर्रे मन्सूर, जिल्द:1, स़–फ़ह़ा:440)

रोज़े से सिह़्ह़त मिलती है : ***अमीरुल मुअ्मिनीन*** ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खु़दा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है, अल्लाह के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदा आमिना के गुलशन के महक्ते फूल عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمْ وَ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا का फ़रमाने सिह़्ह़त निशान है, "बेशक ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने बनी इस्राईल के एक नबी عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि आप अपनी क़ौम को ख़बर दीजिये की जो भी बन्दा मेरी रिज़ा के लिये ***एक दिन का रोज़ा*** रखता है तो मैं उस के ***जिस्म को सिह़्ह़त*** भी अ़त़ा फ़रमाता हूं और उस को अ़ज़ीम अज्र भी दूंगा ।"

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़–फ़ह़ा:412, ह़दीस़:3923)

मे'दे का वरम : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अह़ादीसे मुबा–रका से मुस्तफ़ाद हुवा कि ***रोज़ा*** अज्रो स़वाब के साथ

साथ हुसूले ***सिह़्ह़त*** का भी ज़रीआ़ है । अब तो साइन्सदान भी अपनी तह़क़ीक़ात में इस ह़क़ीक़त को तस्लीम करने लगे हैं । जैसा कि ऑक्सफ़र्ड यूनिवर्सिटी का प्रोफ़ेसर मूर पालिड (MOORE PALID) केहता है, ''मैं इस्लामी उ़लूम पढ़ रहा था जब रोज़ों के बारे में पढ़ा तो उछल पड़ा कि इस्लाम ने अपने मानने वालों को कैसा अ़ज़ीमुश्शान नुस्ख़ा दिया है ! मुझे भी शौक़ हुवा, लिहाज़ा मैं ने मुसल्मानों की तर्ज़ पर रोज़े रखने शुरूअ़ कर दिये । अ़रसए दराज़ से मेरे ***मे'दे पर वरम*** था । कुछ ही दिनों के बा'द मुझे तक्लीफ़ में कमी मह़सूस हुई मैं रोज़े रखता रहा यहां तक कि एक महीने में मेरा मरज़ बिल्कुल ख़त्म हो गया ।''

हैरत अंगेज़ इन्किशाफ़ात : ***हॉलेन्ड*** का पादरी एल्फ गाल (ALF GAAL) केहता है, मैं ने ***शूगर, दिल*** और ***मे'दे*** के मरीज़ों को मुसल्सल ***30 दिन रोज़े*** रखवाए, नती-जतन ***शूगर*** वालों की शूगर कन्ट्रोल हो गई, ***दिल*** के मरीज़ों की घबराहट और सांस का फूलना कम हुवा और ***मे'दे*** के मरीज़ों को सब से ज़ियादा फ़ाइदा हुवा । एक इंग्रेज़ माहिरे नफ़्सियात सिगमन्ड फ़्राइड (SIGMEND FRIDE) का बयान है, रोज़े से जिस्मानी खिंचाव, ज़ेह्नी डिप्रेशन और नफ़्सियाती अम्राज़ का ख़ातिमा होता है ।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा ﷺ मुझ पर कस़रत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है ।

डॉक्टरों की तह़क़ीक़ाती टीम : ***एक*** अख़्बारि रपोर्ट के मुताबिक़ जर्मनी, इंग्लेन्ड और अमरीका के माहिर डॉक्टरों की तह़क़ीक़ाती टीम ***र-मज़ानुल मुबारक*** में पाकिस्तान आई और उन्हों ने बाबुल मदीना ***कराची,*** मर्कज़ुल औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ***लाहौर*** और दियारे मुह़द्दिसे आ'ज़म عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ***सरदारआबाद*** (फ़ैस़लआबाद) का इन्तिख़ाब किया । जाइज़ा (SURVEY) के बा'द उन्हों ने येह रिपोर्ट पेश की, चूंकि मुसल्मान नमाज़ पढ़ते और ***र-मज़ानुल मुबारक*** में उस की ज़ियादा पाबन्दी करते हैं इस लिये वुज़ू करने से E.N.T. या'नी नाक, कान और गले के अम्राज़ में कमी वाक़ेअ़ हो जाती है, नीज़ मुसल्मान रोज़े के बाइस़ कम खाते हैं लिहाज़ा मे'दे जिगर, दिल और आ'स़ाब (या'नी पठ्ठों) के अम्राज़ में कम मुब्तला होते हैं ।"

ख़ूब डट कर खाने से बीमारियां पैदा होती हैं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ी नफ़्सिही ***रोज़े*** से कोई बीमार नहीं होता बल्कि स-ह़री व इफ़्त़ारी में बे एह़तियातियों और बद परहेज़ियों के सबब नीज़ दोनों वक़्त ख़ूब ***मुरग़्ग़न*** (या'नी तेल, घी वाली) ग़िज़ाओं के इस्ते'माल और रात भर वक़्तन फ़ वक़्तन खाते पीते रहने से रोज़ादार बीमार हो जाता है । लिहाज़ा स-ह़री और इफ़्त़ारी के वक़्त खाने पीने में एह़तियात़ बरतनी चाहिये । रात के दौरान

पेट में ग़िज़ा का इतना ज़ियादा भी ज़ख़ीरा न कर लिया जाए कि दिन भर डकारें आती रहें और रोजे़ में भूक व प्यास का एह़सास ही न रहे। क्यूं कि अगर भूक व प्यास का एह़सास ही न रहा तो फिर ***रोज़े*** का लुत़्फ़ ही क्या है ? ***रोज़े*** का मज़ा ही इस बात में है कि सख़्त गरमी हो, शिद्दते प्यास से लब सूख गए हों और भूक से खू़ब निढाल हो चुके हों। ऐसे में काश ! ***मदीनए मुनव्वरा*** زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيْماً की मीठी मीठी गरमी और ठन्डी ठन्डी धूप की याद ताज़ा हो। और ऐ काश ! करबला के तपते हुए सह़रा और गुलिस्ताने नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के महक्ते हुए नौ शिगुफ़्ता फूलों, तीन³ दिन की भूक और प्यास से तड़पते बिलक्ते मदीने के "ह़क़ीक़ी म-दनी मुन्नों" और शहन्शाहे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के भूके प्यासे मज़्लूम शहज़ादों की याद तड़पाने लगे, और जिस वक़्त भूक और प्यास कुछ ज़ियादा ही सताए उस वक़्त तस्लीमो रिज़ा के पैकर, मदीने के ताजवर, नबियों के सरवर, मह़बूबे दावर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शि-कमे अत़्हर पर बंधे हुए बा मुक़द्दर पत्थर भी याद आ जाएं तो क्या केहने ! लिहाज़ा ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** वाक़ेई रोजे़ तो ऐसे होने चाहियें कि हम अपने आक़ाओं और सरकारों की ह़सीन यादों में गुम हो जाएं।

कैसे आक़ाओं का हूं बन्दा रज़ा
बोल बाले मेरी सरकारों के

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

बिग़ैर ऑप्रेशन के विलादत हो गई : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** रोज़े की नूराय्यित और रूह़ानिय्यत पाने और म-दनी ज़ेह्न बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माह़ौल से वाबस्ता हो जाइये और सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कीजिये । سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ौल, सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त और म-दनी क़ाफ़िलों की भी क्या ख़ूब बहारें और ब-र-कतें हैं । चुनान्चे ***ह़ैदरआबाद*** (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है: ग़ालिबन सिने 1998 इस्वी का वाक़ेआ़ है, मेरी अहलिय्या उम्मीद से थीं, दिन भी "पूरे" हो गए थे। डॉक्टर का केहना था कि शायद ***ऑप्रेशन*** करना पड़ेगा। तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** का बैनल अक़्वामी ***तीन रोज़ा सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़*** (स़ह़राए मदीना मुल्तान) क़रीब था। इज्तिमाअ़ के बा'द सुन्नतों की तरबिय्यत के 30 दिन के ***म-दनी क़ाफ़िले*** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सफ़र की मेरी निय्यत थी। इज्तिमाअ़ के लिये रवानगी के वक़्त, सामाने क़ाफ़िला साथ ले कर अस्पताल पहुंचा, चूंकि ख़ानदान के दीगर अफ़राद तआ़वुन के लिये मौजूद थे, अहलि-यए मोह़्तरमा ने अश्कबार आंखों से मुझे सुन्नतों भरे

इज्तिमाअ़ (मुल्तान) के लिये अल वदाअ़ किया। मेरा ज़ेह्न येह बना हुवा था कि अब तो मुझे बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ और फिर वहां से 30 दिन के ***म-दनी क़ाफ़िले*** में ज़रूर सफ़र करना है कि काश ! इस की ब-र-कत से आ़फ़िय्यत के साथ विलादत हो जाए। मुझ ग़रीब के पास तो ***ऑप्रेशन*** के अख़ाजात भी नहीं थे ! बहर हाल मैं मदी-नतुल औलिया ***मुल्तान शरीफ़*** ह़ाज़िर हो गया। सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ख़ूब दुआ़एं मांगीं। इज्तिमाअ़ की इख़्तितामी ***रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़*** के बा'द मैं ने घर पर फ़ोन किया तो मेरी अम्मी जान ने फ़रमाया, ***मुबारक हो ! गुज़श्ता रात रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ ने बिग़ैर ऑप्रेशन के तुम्हें चांद सी म-दनी मुन्नी अ़ता फ़रमाई है।*** मैं ने ख़ुशी से झूमते हुए अ़र्ज़ की, अम्मी जान ! मेरे लिये क्या हुक्म है ? आ जाऊं या 30 दिन के लिये ***म-दनी क़ाफ़िले*** का मुसाफ़िर बनूं ? अम्मी जान ने फ़रमाया, "बेटा ! बे फ़िक्र हो कर म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करो !" अपनी ***म-दनी मुन्नी*** की ज़ियारत की ह़सरत दिल में दबाए اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं 30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ रवाना हो गया। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की ब-र-कत से मेरी मुश्किल आसान हो गई थी ***म-दनी क़ाफ़िलों की बहारों*** की ब-र-कत के सबब घर वालों का बहुत ज़बरदस्त म-दनी ज़ेह्न बन गया, ह़त्ता कि मेरे बच्चों की अम्मी का केहना है, जब आप ***म-दनी क़ाफ़िले***

के मुसाफ़िर होते हैं मैं बच्चों समेत अपने आप को मह़फ़ूज़ तस़व्वुर करती हूं।

ऑपरेशन न हो, कोई उल्झन न हो ग़म के साए ढलें, क़ाफ़िले में चलो

बीवी बच्चे सभी, ख़ूब पाएं ख़ुशी ख़ैरिय्यत से रहें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

साबिक़ा गुनाहों का कफ़्फ़ारा : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू सईद ख़ुद्री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हमारे मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं: "जिसने र-मज़ान का ***रोज़ा*** रखा और उस की ह़ुदूद को पहचाना और जिस चीज़ से बचना चाहिये उस से बचा तो जो (कुछ गुनाह) पहले कर चुका है उस का कफ़्फ़ारा हो गया।"

(अल एहसान बि-तरतीब स़ह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान, जिल्द:5, स़-फ़ह़ा:183, ह़दीस़:3424)

रोज़े की जज़ा : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सुल्त़ाने दो[2] जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं: "आदमी के हर नेक काम का बदला दस से सात सौ गुना तक दिया जाता है। ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया: اِلَّاالصَّوْمَ فَاِنَّہٗ لِیْ وَاَنَا اَجْزِیْ بِہٖ सिवाए रोज़े के कि रोज़ा मेरे लिये है और इस की जज़ा मैं ख़ुद दूंगा। ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का मज़ीद इर्शाद है, बन्दा अपनी ख़्वाहिश और खाने को

सिर्फ़ मेरी वजह से तर्क करता है। रोज़ादार के लिये ***दो² ख़ुशियां*** हैं। एक ***इफ़्तार*** के वक़्त और एक अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात के वक़्त। रोज़ादार के मुंह की बू ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मुश्क से ज़ियादा पाकीज़ा है।" (स़ह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:580, ह़दीस़:1151)

मज़ीद इर्शाद है, "***रोज़ा*** सिपर (या'नी ढाल) है और जब किसी के ***रोज़ा*** का दिन हो तो न बे हूदा बके और न ही चीखे। फिर अगर कोई और शख़्स़ इस से गालम गलोच करे या लड़ने पर आमादा हो, तो केह दे, मैं रोज़ादार हूं।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:624, ह़दीस़:1894)

रोज़े का ख़ुसूस़ी इन्आ़म :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा अह़ादीसे़ मुबा-रका में रोज़े की कई ख़ुसूसि़य्यात इर्शाद फ़रमाई गई हैं। कितनी प्यारी बिशारत है उस रोज़ादार के लिये जिस ने इस त़रह़ ***रोज़ा*** रखा जिस त़रह़ ***रोज़ा*** रखने का ह़क़ है। या'नी खाने पीने और जिमाअ़ से बचने के साथ साथ अपने तमाम आ'ज़ा को भी गुनाहों से बाज़ रखा तो वोह रोज़ा ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से उस के लिये तमाम पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो गया। और ह़दीसे़ मुबारक का येह फ़रमाने आ़लीशान तो ख़ास़ त़ौर पर क़ाबिले तवज्जोह है जैसा कि सरकारे नामदार, बि इज़्नि परवर्द गार दो² आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ख़ुशगवार सुनाते हैं "فَاِنَّهٗ لِیْ وَاَنَا اَجْزِیْ بِهٖ"

या'नी ***रोज़ा*** मेरे लिये है और इस की जज़ा मैं खुद ही दूंगा । ह़दीसे क़ुदसी के इस इर्शादे पाक को बा'ज़ मुह़द्दिसीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने, ''اَنَا اُجْزٰى بِهٖ'' भी पढ़ा है जैसा कि ***तफ़्सीरे नई़मी*** वग़ैरा में है तो फिर मा'ना येह होंगे, ''***रोज़े*** की जज़ा मैं खुद ही हूं ।'' سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! या'नी ***रोज़ा*** रख कर रोज़ादार ब ज़ाते खुद ***अल्लाह*** तबा-र-क व तआ़ला ही को पा लेता है ।

नेक आ'माल की जज़ा जन्नत है : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** क़ुरआने करीम में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर बयान हुवा है कि जो अच्छे आ'माल करेगा उसे जन्नत मिलेगी । चुनान्चे ***अल्लाह*** तबा-र-क व तआ़ला पारह 30 सू-रतुल बय्यिनह की आयत नम्बर 7 और 8 में इर्शाद फ़रमाता है:

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ؕ جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ۠

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वोही तमाम मख़्लूक़ में बेहतर हैं । उन का सिला उन के रब (عَزَّوَجَلَّ) के पास बसने के बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बहें, उन में हमेशा हमेशा रहें । अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) उन से राज़ी और वोह उस से राज़ी । येह उस के लिये है जो अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) से डरे ।

(पारह 30, अल बय्यिनह,7,8)

ग़ैरे स़ह़ाबी के लिये ''رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ'' केहना कैसा ? :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह बात बिल्कुल ग़लत है कि رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ केहना लिखना सिर्फ़ ***स़ह़ाबी*** के नाम के साथ मख़्सूस़ है । पेश कर्दा आयात के इस आख़िरी ह़िस्से رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمْ وَرَضُوْا عَنْہُ ط ذٰلِکَ لِمَنْ خَشِیَ رَبَّہٗ ط (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उन से राज़ी और वोह उस से राज़ी । येह उस के लिये है जो अपने रब عَزَّوَجَلَّ से डरे) ने इस अ़वामी ग़लत़ फ़ह्मी को जड़ से उखाड़ दिया ! ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ रखने वाले हर मो'मिन के लिये येह बिशारते उ़ज़्मा इर्शाद फ़रमाई गई है कि जो भी ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाला है वोह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمْ وَرَضُوْا عَنْہُ के ज़ुमरह में दाख़िल है । इस में स़ह़ाबी व ग़ैरे स़ह़ाबी की कोई तख़्स़ीस़ नहीं, ***हर स़ह़ाबी और हर वली के लिये*** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ***लिखना और बोलना बिल्कुल दुरुस्त व जाइज़ है ।*** जिस ने ईमान के साथ सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की एक लम्ह़ा भर भी स़ोह़बत पाई या देखा और उस का ईमान पर ख़ातिमा हुवा वोह ***स़ह़ाबी*** है । बड़े से बड़ा वली, ***स़ह़ाबी*** के मरतबे को नहीं पा सकता, हर ***स़ह़ाबी*** आ़दिल और क़त़्ई जन्नती है । उन के साथ जब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ लिखा जाएगा तो मा'ना येह होंगे, ''***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उन से राज़ी हुवा ।'' और जब किसी ग़ैरे ***स़ह़ाबी*** के लिये लिखा या बोला जाएगा तो

दुआ़इया मा'ना मुराद लिये जाएंगे, या'नी "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन से राज़ी हो ।" رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बात तो ज़िम्नन आ गई दर अस्ल बताना येह मक़्सूद था कि नमाज़, ह़ज, ज़कात, गु-रबा की इम्दाद, बीमारों की इ़यादत, मसाकीन की ख़बरगीरी वग़ैरा तमाम आ'माले ख़ैर से जन्नत मिलती है । मगर ***रोज़ा*** वोह इ़बादत है, जिस से जन्नत वाला या'नी मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ ही मिल जाता है । केहते हैं, कि

मुझे मोतियों वाला चाहिये : ***एक*** मरतबा मह़मूद गज़्नवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْقَوِی ने कुछ क़ीमती मोती अपने अफ़्सरान के सामने फेंकते हुए फ़रमाया: "चुन लीजिये" और खु़द आगे चल दिये । थोड़ी दूर जाने के बा'द मुड़ कर देखा तो अयाज़ घोड़े पर सुवार पीछे चला आ रहा है । पूछा, अयाज़ ! क्या तुझे मोती नहीं चाहियें ? अयाज़ ने अ़र्ज़ की, "आ़लीजाह ! जो मोतियों के त़ालिब थे वोह मोती चुन रहे हैं, मुझे तो मोती नहीं बल्कि मोतियों वाला चाहिये ।"

हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के जन्नत रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की :

इस सिल्सिले में एक ह़दीसे़ मुबारक भी मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये । ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ बिन ***का'ब अस्लमी*** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, एक मरतबा मैं ने हुज़ूर, सरापा नूर, फै़ज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

को वुज़ू करवाया तो खुद ***रह़मतुल्लिल आ़-लमीन*** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खुश हो कर इर्शाद फ़रमाया: **سَلْ رَبِيعَةُ !** या'नी रबीआ़ ! मांग क्या मांगता है ? ह़ज़रते रबीआ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की, **اَسْئَلُكَ مُرَافَقَتَكَ فِى الْجَنَّة**, या'नी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जन्नत में आप की रफ़ाक़त (या'नी पड़ौस) चाहिये। (गोया अ़र्ज़ कर रहे हैं)

तुझ से तुझी को मांग लूं तो सब कुछ मिल जाए
सौ सुवालों से येही एक सुवाल अच्छा है

दरयाए रह़मत मज़ीद जोश में आया और फ़रमाया, "**اَوَ غَيْرَ ذٰلِكَ ؟** ! या'नी कुछ और मांगना है ?" मैं ने अ़र्ज़ की, "बस सिर्फ़ येही।" (या'नी या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ! जन्नतुल फ़िरदौस में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ौस मांगने के बा'द अब दुन्या व उ़क़्बा की और कौन सी ने'मत बाक़ी रह जाती है जिसे मांगा जाए !)

तुझ से तुझी को मांग कर मांग ली सारी काइनात
मुझ सा कोई गदा नहीं, तुझ सा कोई सख़ी नहीं

जब ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ बिन का'ब अस्लमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जन्नत की रफ़ाक़त (पड़ौस) त़लब कर चुके और मज़ीद किसी ह़ाजत के त़लब करने से इन्कार कर दिया तो इस पर सरकारे नामदार, बि इज़्ने परवर्द गार दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया:

"فَاَعِنِّیْ عَلٰی نَفْسِكَ بِكَثْرَةِ السُّجُوْد" या'नी अपने नफ़्स पर कस़रते ***सुजूद*** (या'नी ज़ियादा नवाफ़िल) से मेरी मदद कर।

(स़ह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:253, ह़दीस़:489)

(या'नी हमने तुम्हें जन्नत तो अता कर ही दी अब तुम भी बतौरे शुक्राना नवाफिल की कसरत करते रहो।)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जो चाहो मांग लो ! : سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! इस ह़दीस़े मुबारक ने तो ईमान ही ताज़ा कर दिया । ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस़ देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَةُ الْقَوِی फ़रमाते हैं, सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, स़ाह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बिला किसी ***तक़्यीद व तख़्स़ीस़ मुत़्लक़न*** फ़रमाना, سَلْ؟ या'नी मांग क्या मांगता है ? इस बात को ज़ाहिर करता है कि सारे ही मुआ़-मलात सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथ में हैं, जो चाहें जिस को चाहें अपने रब عَزَّوَجَلَّ हुक्म से अ़त़ा कर दें । अ़ल्लामा बूसै़री رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ***क़स़ीदए बुर्दा शरीफ़*** में फ़रमाते हैं

فَاِنَّ مِنْ جُوْدِكَ الدُّنْیَا وَضَرَّتَهَا وَمِنْ عُلُوْمِكَ عِلْمَ اللَّوْحِ وَالْقَلَمِ

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उसने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया।

या'नी, या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! दुन्या और आख़िरत आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही की सख़ावत का ह़िस्सा है और लौहो क़लम का इल्म तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के उ़लूमे मुबारका का एक ह़िस्सा है।

अगर ख़ैरिय्यते दुन्या व उक़्बा आरज़ू दारी
ब दरगाहश बयादे हर चे मन ख़्वाही तमन्ना कुन

या'नी दुन्या व आख़िरत की ख़ैर चाहते हो तो इस आस्ताने अ़र्श निशान पर आओ और जो चाहो मांग लो !

(अशिअ़्अ़तुल्लम्आ़त, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:424,425)

ख़ालिक़े कुल عَزَّوَجَلَّ ने आप को मालिके कुल صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَسَلَّم बना दिया
दोनों[2] जहान दे दिये क़ब्ज़े व इख़्तियार में

जन्नती दरवाज़ा : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना सहल बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, माहे नुबुव्वत, महरे रिसालत, मम्बए जूदो सख़ावत, क़ासिमे ने'मत, सरापा रह़मत, शाफ़ेए़ उम्मत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़्मत निशान है, "बेशक जन्नत में एक दरवाज़ा है जिस को ***रय्यान*** कहा जाता है इस से क़ियामत के दिन रोज़ादार दाख़िल होंगे इन के इलावा और दाख़िल न होगा। कहा जाएगा रोज़ेदार कहां हैं ? पस येह लोग खड़े होंगे इन के इलावा कोई और इस दरवाज़े से दाख़िल न होगा। जब येह

दाख़िल हो जाएंगे तो दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा पस फिर कोई इस दरवाज़े से दाख़िल न होगा ।''

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स-फ़ह़ा:625, ह़दीस़:1896)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! रोज़ादारों का भी ख़ूब मुक़द्दर है । बरोज़े क़ियामत उन का ख़ुसूस़ी ए'ज़ाज़ होगा । जाना जन्नत ही में है दीगर ख़ुश क़िस्मत भी जूक़ दर जूक़ दाख़िले जन्नत हो रहे होंगे मगर रोज़ादार ख़ुसूस़ी त़ौर पर ''बाबुर्रय्यान'' से दाख़िले जन्नत होंगे ।

एक रोज़े की फ़ज़ीलत : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना स-लमा बिन कैसर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार, दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार, शहन्शाहे अबरार عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है, जिस ने एक दिन का रोज़ा ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये रखा, ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना कि एक कव्वा जो अपने बचपन से उड़ना शुरूअ़ करे यहां तक कि बूढ़ा हो कर मर जाए ।

(मुस्नदे अबी या'ला, जिल्द:1, स-फ़ह़ा:383, ह़दीस़:917)

कव्वे की उ़म्र : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** कव्वा लम्बी उ़म्र पाने वाला परिन्दा है । ***ग़ुन्यतुत्त़ालिबीन*** में है,

कहा जाता है, "कव्वे की उ़म्र पांच सौ साल तक होती है।"

सुर्ख़ याक़ूत का मकान : *अमीरुल मुअ्मिनीन* ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسليم का फ़रमाने अ़ज़ीम है, "जिस ने माहे र-मज़ान का एक रोज़ा भी ख़ामोशी और सुकून से रखा उस के लिये जन्नत में एक घर सुर्ख़ याक़ूत या सब्ज़ ज़बरजद का बनाया जाएगा।"

(मज्मउ़ज़्ज़वाइद, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:346, ह़दीस़:4792)

जिस्म की ज़कात : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूरे पुरनूर, ***शाफ़ेए यौमुन्नुशूर*** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर सुरूर है, "हर शय के लिये ज़कात है और जिस्म की ज़कात ***रोज़ा*** है और ***रोज़ा*** आधा स़ब्र है।"

(सु-नने इब्ने माजह, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:347, ह़दीस़:1745)

सोना भी इ़बादत है : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, मदीने के ताजवर, दिलबरों के दिलबर, मह़बूबे रब्बे अक्बर عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुनव्वर है, ***रोज़ादार*** का सोना इ़बादत और उस की ख़ामोशी तस्बीह़ करना और उस की दुआ क़बूल और उस का अ़मल मक़्बूल होता है।"

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:415, ह़दीस़:3938)

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ! रोज़ादार किस क़-दर बख़्त-वर है कि उस का सोना बन्दगी, ख़ामोशी तस्बीहे़ ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ, दुआ़एं और आ'माले ह़-सना मक़्बूले बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ हैं।

तेरे करम से ऐ करीम ! कौन सी शय मिली नहीं
झोली हमारी तंग है, तेरे यहां कमी नहीं

आ'ज़ा का तस्बीह़ करना : *उम्मुल मुअ्मिनीन* ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं, मेरे सरताज, स़ाह़िबे मे'राज صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है: "जो बन्दा ***रोज़े*** की ह़ालत में सुब्ह़ करता है, उस के लिये आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और उस के आ'ज़ा ***तस्बीह़*** करते हैं और आस्माने दुन्या पर रहने वाले (फ़िरिश्ते) उस के लिये सूरज डूबने तक ***मग़्फ़िरत*** की दुआ़ करते रहते हैं। अगर वोह एक या दो[2] रक्अ़तें पढ़ता है तो येह आस्मानों में उस के लिये नूर बन जाती हैं और ***हूरे ई़न*** (या'नी बड़ी आंखों वाली हूरों) में से उस की बीवियां केहती हैं, ऐ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ तू उस को हमारे पास भेज दे हम उस के दीदार की बहुत ज़ियादा मुश्ताक़ हैं। ***और अगर वोह*** لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه ***या*** سُبْحٰنَ اللہ ***या*** اَللہُ اَکْبَرُ ***पढ़ता है तो सत्तर ह़ज़ार फ़िरिश्ते उस का स़वाब सूरज डूबने तक लिखते रहते हैं।"***

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:299, ह़दीस़:3591)

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! रोज़ादार के तो वारे ही न्यारे हैं कि उस के लिये आस्मान के दरवाज़े खुलें, उस के जिस्म के आ'ज़ा ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ करें, आस्माने दुन्या पर रहने वाले मलाइका ग़ुरूबे आफ़्ताब तक उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत मांगें, नमाज़ पढ़े तो उस के लिये आस्मान में रौशनी हो और हूरे ईन या'नी बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें जो उस के लिये मुक़र्रर हुई हैं वोह जन्नत में इस की आमद का इन्तिज़ार करें, لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ या سُبْحٰنَ الله या اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहे तो सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते ग़ुरूबे आफ़्ताब तक उस का सवाब लिखें ।

जन्नती फल : ***अमीरुल मुअ्मिनीन*** ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है, इमामुस्साबिरीन, सय्यिदुश्शाकिरीन, ***सुल्त़ानुल मु-तवक्किलीन, मुह़िब्बुल फ़ु-क़-राए वल मसाकीन*** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिलनशीन है:“जिस को रोज़े ने खाने या पीने से रोक दिया कि जिस की उसे ख़्वाहिश थी तो अल्लाह तआ़ला ***उसे जन्नती फलों*** में से खिलाएगा और जन्नती शराब से सैराब करेगा ।”

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स-फ़ह़ा:410, ह़दीस:3917)

सोने का दस्तरख़्वान : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने

अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है, मालिके जन्नत, साक़िए कौसर, मह़बूबे रब्बे दावर عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर असर है, "क़ियामत वाले दिन रोज़ादारों के लिये एक ***सोने का दस्तरख़्वान*** रखा जाएगा, ह़ालांकि लोग (ह़िसाब किताब के) मुन्तज़िर होंगे।" (कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:214, ह़दीस़:2364)

सात क़िस्म के आ'माल : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम, मह़बूबे रब्बे अ़ज़ीम عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं: "***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक आ'माल सात[7] क़िस्म पर हैं, दो[2] अ़मल वाजिब करने वाले, दो[2] अ़मलों की जज़ा (उन की) मिस्ल, एक अ़मल की जज़ा अपने से दस गुना, एक अ़मल की सात सौ गुना तक और एक अ़मल ऐसा है कि उस का स़वाब अल्लाह तआ़ला के इ़लावा कोई नहीं जानता। पस जो दो वाजिब करने वाले हैं (1) वोह शख़्स़ जो अल्लाह से इस ह़ाल में मिला कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत इख़्लास़ के साथ इस त़रह़ की कि किसी को उस का शरीक न ठहराया तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई (2) और जो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिला कि उस के साथ किसी को शरीक ठहराया तो उस के लिये दोज़ख़ वाजिब हो गई। और जिस ने एक गुनाह किया तो उस की मिस्ल (या'नी एक ही गुनाह की) जज़ा पाएगा और जिस ने सिर्फ़

नेकी का इरादा किया तो एक नेकी की जज़ा पाएगा। और जिस ने नेकी कर ली तो वोह दस (नेकियों का अज्र) पाएगा और जिस ने ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की राह में अपना माल ख़र्च किया तो उस के ख़र्च किये हुए एक दिरहम को सात सौ दिरहम और एक दीनार को सात सौ दीनार में बढ़ा दिया जाएगा और ***रोज़ा*** अल्लाह तआ़ला के लिये है उस के रखने वाले का स़वाब ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के इलावा कोई नहीं जानता।"

(कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:211, ह़दीस़:23616)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस का ईमान पर ख़ातिमा होगा वोह या तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से बे ह़िसाब या مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ गुनाहों का अ़ज़ाब हुवा तब भी बिल आख़िर यक़ीनन दाख़िले जन्नत होगा। और जिस का مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ ख़ातिमा कुफ़्र पर हुवा वोह हमेशा हमेशा दोज़ख़ में रहेगा। जिस ने एक गुनाह किया उस को एक ही गुनाह का बदला मिलेगा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के क़ुरबान ! सिर्फ़ ***नेकी की निय्यत*** करने पर एक नेकी का स़वाब और अगर नेकी कर ली तो स़वाब दस गुना, राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने वाले को सात सौ गुना और रोज़ादार की भी कितनी ज़बरदस्त अ़-ज़मत है कि उस के स़वाब को ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता।

बे ह़िसाब अज्र : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं, "बरोज़े क़ियामत एक मुनादी इस त़रह़ निदा करेगा, हर बोने वाले (या'नी अ़मल करने वाले) को उस की खेती

(या'नी अ़मल) के बराबर अज्र दिया जाएगा सिवाए कुरआन वालों (या'नी आ़लिमे कुरआन) और रोज़ादारों के कि उन्हें बेह़द व ***बे ह़िसाब अज्र*** दिया जाएगा।"

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:413, ह़दीस़:3928)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या में जैसा बोएंगे वैसा काटेंगे। उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی और रोज़ादार बहुत ही नस़ीब दार हैं कि बरोज़े क़ियामत उन को बे ह़िसाब स़वाब से नवाज़ा जाएगा।

यरक़ान से स़िह़्ह़त मिल गई : ***रोज़ों*** की ब-र-कतों को दोबाला करने और अपने बात़िन में इ़ल्मे दीन से उजाला करने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के ***म-दनी माह़ौल*** को अपना लीजिये। अपनी इस़्लाह़ की ख़ात़िर मक्त-बतुल मदीना से ***म-दनी इन्आ़मात*** का कार्ड ह़ासिल कर के इस को पुर कर के हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के ***दा'वते इस्लामी*** के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाइये और सुन्नतों की तरबिय्यत के ***म-दनी क़ाफ़िलों*** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरे सफ़र को अपना मा'मूल बनाइये, ***म-दनी क़ाफ़िले*** की भी क्या ख़ूब बहारें हैं चुनान्चे ह़ैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है। ग़ालिबन सिने 1994 इस्वी की बात है। मेरे बच्चों की अम्मी का ***यरक़ान*** काफ़ी बढ़ चुका था और वोह बाबुल मदीना

कराची के अन्दर अपने मयके में ज़ेरे इ़लाज थीं। मैं ने ***63 दिन के लिये म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र इख़्तियार किया और इस ज़िम्न में बाबुल मदीना कराची ह़ाज़िरी हुई, फ़ोन पर राबित़ा किया, त़बीअ़त काफ़ी तश्वीशनाक थी, ब्लोरबिन (BLORBIN) तश्वीशनाक ह़द तक बढ़ चुका था तक़रीबन 25 ग्लूकोज़ की ड्रीपें लगाने के बा वुजूद ख़ात़िर ख़्वाह फ़ाइदा न हुवा था। मैं ने उन को तसल्ली देते हुए कहा, اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ***म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर*** हूं, आ़शिक़ाने रसूल की स़ोह़बतें मुयस्सर हैं। اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत से सब बेहतर हो जाएगा। इस के बा'द भी मैं ने बराबर राबित़ा रखा। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ रोज़ बरोज़ सिह़्ह़त बेहतर होती जा रही थी। पांचवें दिन बाबुल मदीना से आगे सफ़र दरपेश था, मैं ने जब फ़ोन किया तो मुझे येह ख़बरे फ़रह़त अस़र सुनने को मिली, اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ***ब्लोरबिन की रिपोर्ट नॉर्मल आ गइ है और डॉक्टर ने इत़्मीनान का इज़्हार किया है।*** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते हुए मैं ख़ुशी ख़ुशी ***आ़शिक़ाने रसूल*** के हमराह म-दनी क़ाफ़िले में मज़ीद आगे सफ़र पर रवाना हो गया।

ज़ौजा बीमार है, क़र्ज़ का बार है — आओ सब ग़म मिटें, क़ाफ़िले में चलो
काला यरक़ान है, क्यूं परेशान है — पाएगा सिह़्ह़तें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जहन्नम से दूरी : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूलों के सालार, नबियों के सरदार, बि इज़्ने परवर्द गार, ग़ैबों पर ख़बरदार, عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है "जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में एक दिन का ***रोज़ा*** रखा ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***उस के चेहरे को जहन्नम से सत्तर साल की मसाफ़त दूर कर देगा ।"***

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:265, ह़दीस़:2840)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जहां रोज़ा रखने के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं वहीं बिग़ैर किसी स़ह़ीह़ मजबूरी के र-मज़ानुल मुबारक का ***रोज़ा*** तर्क करने पर सख़्त वईदें भी हैं । ***र-मज़ान शरीफ़*** का एक रोज़ा जो बिला किसी उ़ज़्रे शर-ई जान बूझ कर ज़ाएअ़ कर दे तो अब उ़म्र भर भी अगर रोज़े रखता रहे तब भी उस छोड़े हुए एक रोज़े की फ़ज़ीलत को नहीं पा सकता । चुनान्चे

एक रोज़ा छोड़ने का नुक़्स़ान : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरकारे वाला त़बार, बि इज़्ने परवर्द गार दो[2] जहां के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं: "जिस ने ***र-मज़ान*** के एक दिन का ***रोज़ा*** बिग़ैर रुख़्स़त व बिग़ैर म-रज़ इफ़्त़ार किया (या'नी न रखा) तो ज़माना भर का ***रोज़ा*** भी उस की क़ज़ा नहीं

हो सकता अगर्चे बा'द में रख भी ले ।"

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:638, ह़दीस़:1934)

या'नी वोह फ़ज़ीलत जो ***र-मज़ानुल मुबारक*** में रोज़ा रखने की थी अब किसी त़रह़ नहीं पा सकता । लिहाज़ा हमें हरगिज़ हरगिज़ ग़फ़्लत का शिकार हो कर ***रोज़ए र-मज़ान*** जैसी अ़ज़ीमुश्शान ने'मत नहीं छोड़नी चाहिये । जो लोग ***रोज़ा*** रख कर बिग़ैर स़ह़ीह़ मजबूरी के तोड़ डालते हैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़हरो ग़ज़ब से ख़ूब डरें । चुनान्चे

उल्टे लटके हुए लोग : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू उमामा बाहली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, मैं ने सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, स़ाह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना, "मैं सोया हुवा था तो ख़्वाब में दो शख़्स़ मेरे पास आए और मुझे एक दुश्वार गुज़ार पहाड़ पर ले गए । जब मैं पहाड़ के दरमियानी ह़िस़्स़े पर पहुंचा तो वहां बड़ी सख़्त आवाज़ें आ रही थीं, मैं ने कहा, "येह कैसी आवाज़ें हैं ?" तो मुझे बताया गया कि येह जहन्नमियों की आवाज़ें हैं । फिर मुझे और आगे ले जाया गया तो ***मैं कुछ ऐसे लोगों के पास से गुज़रा कि उन को उन के टख़्नों की रगों में बांध कर*** (उल्टा) ***लटकाया गया था और उन लोगों के जबड़े फाड़***

दिये गए थे जिन से खून बेह रहा था। तो मैं ने पूछा, "येह कौन लोग हैं ?" तो मुझे बताया गया कि येह लोग ***रोज़ा*** इफ़्त़ार करते थे क़ब्ल इस के कि ***रोज़ा*** इफ़्त़ार करना ह़लाल हो।"

(अल एह़सान बि तरतीब स़ह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान, जिल्द:9, स़-फ़ह़ा:286, ह़दीस़:7448)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! र-मज़ान का ***रोज़ा*** बिला इजाज़ते शर-ई तोड़ देना बहुत बड़ा गुनाह है। वक़्त से पहले इफ़्त़ार करने से मुराद येह है कि ***रोज़ा*** तो रख लिया मगर सूरज ग़ुरूब होने से पहले पहले जानबूझ कर किसी स़ह़ीह़ मजबूरी के बिग़ैर तोड़ डाला। इस ह़दीस़े पाक में जो अ़ज़ाब बयान किया गया है वोह ***रोज़ा*** रख कर तोड़ देने वाले के लिये है और जो बिला उ़ज़्रे शर-ई ***रोज़ए र-मज़ान*** तर्क कर देता है वोह भी सख़्त गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के त़ुफ़ैल हमें अपने क़हरो ग़ज़ब से बचाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

तीन बदबख़्त : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है, ताजदारे मदीनए मुनव्वरा, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है, "जिस ने ***माहे र-मज़ान*** को पाया और उस के रोज़े न रखे वोह शख़्स़ शक़ी (या'नी बदबख़्त) है। जिस ने अपने वालिदैन या

किसी एक को पाया और उन के साथ अच्छा सुलूक न किया वोह भी शक़ी (या'नी बदबख़्त) है और जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद न पढ़ा वोह भी शक़ी (या'नी बदबख़्त) है।"

(मज्मउ़ज़्ज़वाइद, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:340, ह़दीस़:4773)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नाक मिट्टी में मिल जाए : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: "उस शख़्स़ की नाक मिट्टी में मिल जाए कि जिस के पास मेरा ज़िक्र किया गया तो उस ने मेरे ऊपर दुरूद नहीं पढ़ा और उस शख़्स़ की नाक मिट्टी में मिल जाए जिस पर र-मज़ान का महीना दाख़िल हुवा फिर उस की मग़्फ़िरत होने से क़ब्ल गुज़र गया। और उस आदमी की नाक मिट्टी में मिल जाए कि जिस के पास उस के वालिदैन ने बुढ़ापे को पा लिया और उस के वालिदैन ने उस को जन्नत में दाख़िल नहीं किया।" (या'नी बूढ़े मां बाप की ख़िदमत कर के जन्नत ह़ासिल न कर सका)

(मुस्नदे अह़मद, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:61, ह़दीस़:7455)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रोज़े के तीन3 द-रजे : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** रोज़े की अगर्चे ज़ाहिरी शर्त़ येही है कि रोज़ादार क़स्दन खाने पीने और जिमाअ़ से बाज़ रहे। ता हम रोज़े के कुछ बात़िनी आदाब भी

हैं जिन का जानना जरूरी है ताकि ह़क़ीक़ी मा'नों में हम ***रोजे़*** की ब-र-कतें ह़ासिल कर सकें। चुनान्चे ***रोज़े के तीन³ द-रजे हैं।***

(1) ***अ़वाम का रोज़ा*** (2) ***ख़वास़ का रोज़ा*** (3) ***अख़स़्सुल ख़वास़ का रोज़ा।***

(1) अ़वाम का रोज़ा : ***रोज़ा*** के लुग़वी मा'ना हैं: ''रुकना'' लिहाज़ा शरीअ़त की इस्त़िलाह़ में सुब्ह़े स़ादिक़ से ले कर गुरूबे आफ़्ताब तक क़स्दन खाने पीने और जिमाअ़ से ''रुके रहने'' को ***रोज़ा*** केहते हैं और येही अ़वाम या'नी आ़म लोगों का ***रोज़ा*** है।

(2) ख़वास़ का रोज़ा : ***खाने*** पीने और जिमाअ़ से रुके रहने के साथ साथ जिस्म के तमाम आ'ज़ा को बुराइयों से ''रोकना'' ***ख़वास़*** या'नी ख़ास़ लोगों का ***रोज़ा*** है।

(3) अख़स़्सुल ख़वास़ का रोज़ा : अपने आप को तमाम तर उमूर से ''रोक'' कर सिर्फ़ और सिर्फ़ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मु-तवज्जेह होना, येह ***अख़स़्सुल ख़वास़*** या'नी ख़ासुल ख़ास़ लोगों का ***रोज़ा*** है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रूरत इस अम्र की है कि खाने पीने

वग़ैरा से "रुके रहने" के साथ साथ अपने तमाम तर आ'ज़ाए बदन को भी रोजे़ का पाबन्द बनाया जाए ।

दाता स़ाह़िब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इर्शाद : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना दाता गंजबख़्श अ़ली हिजवेरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं: "रोजे़ की ह़क़ीक़त "रुकना" है और रुके रहने की बहुत सी शराइत़ हैं म-स़लन ***मे'दे*** को खाने पीने से रोके रखना, ***आंख*** को शहवानी नज़्र से रोके रखना, ***कान*** को ग़ीबत सुनने, ज़बान को फ़ुज़ूल और फ़ित्ना अंगेज़ बातें करने और ***जिस्म*** को हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ की मुख़ा-लफ़त से रोके रखना ***रोज़ा*** है । जब बन्दा इन तमाम शराइत़ की पैरवी करेगा तब वोह ***ह़क़ी-क़तन रोज़ादार*** होगा ।

(कश्फ़ुल मह़जूब, स़-फ़ह़ा:353,354)

अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! हमारे अक्स़र इस्लामी भाई ***रोजे़*** के आदाब का बिल्कुल ही लिह़ाज़ नहीं करते, वोह सिर्फ़ "भूके प्यासे" रहने ही को बहुत बड़ी बहादुरी तस़व्वुर करते हैं । ***रोज़ा*** रख कर बे शुमार ऐसे अफ़आ़ल कर गुज़रते हैं जो ख़िलाफ़े शर-अ़ होते हैं । इस त़रह़ फ़िक़्ही ए'तेबार से ***रोज़ा*** हो तो जाएगा लेकिन ऐसा ***रोज़ा*** रखने से रूह़ानी कैफ़ो सुरूर ह़ासिल न हो सकेगा ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े।

रोज़ा रख कर भी गुनाह तौबा ! तौबा ! ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** ख़ुदारा ! عَزَّوَجَلَّ ! अपने ह़ाले ज़ार पर तरस खाइये और ग़ौर फ़रमाइये ! कि रोज़ादार माहे ***र-मज़ानुल मुबारक*** में दिन के वक़्त खाना पीना छोड़ देता है ह़ालांकि येह खाना पीना इस से पहले दिन में भी बिल्कुल जाइज़ था। फिर ख़ुद ही सोच लीजिये कि जो चीज़ें ***र-मज़ान शरीफ़*** से पहले ह़लाल थीं वोह भी जब इस मुबारक महीने के मुक़द्दस दिनों में मन्अ़ कर दी गईं। तो जो चीज़ें ***र-मज़ानुल मुबारक*** से पहले भी ह़राम थीं, म-स़लन झूट, ग़ीबत, चुग़ली, बद गुमानी, गालम गलोच, फ़िल्में डिरामे, गाने बाजे, बद निगाही, दाढ़ी मुंडाना या एक मुठ्ठी से घटाना, वालिदैन को सताना, बिला इजाज़ते शर-ई लोगों का दिल दुखाना वग़ैरा वोह र-मज़ानुल मुबारक में क्यूं न और भी ज़ियादा ह़राम हो जाएंगी ? रोज़ादार जब ***र-मज़ानुल मुबारक*** में ह़लाल व त़य्यिब खाना पीना छोड़ देता है, ह़राम काम क्यूं न छोड़े ? अब फ़रमाइये ! जो शख़्स़ पाक और ह़लाल खाना, पीना तो छोड़ दे लेकिन ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम ब दस्तूर जारी रखे। वोह किस क़िस्म का रोज़ादार है ?

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को कुछ ह़ाजत नहीं : ***याद रखिये !*** नबियों के सुल्त़ान, सर-वरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है, "जो बुरी बात केहना और उस पर अ़मल करना न छोड़े तो उस के भूका

प्यासा रहने की ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ को कुछ ह़ाजत नहीं ।''

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्दः1, स़-फ़ह़ाः628, ह़दीस़ः1903)

एक और मक़ाम पर फ़रमाया, ''सि़र्फ़ खाने और पीने से बाज़ रहने का नाम ***रोज़ा*** नहीं बल्कि ***रोज़ा*** तो येह है कि लग्व और बे हूदा बातों से बचा जाए ।''

(मुस्तदरक लिल ह़ाकिम, जिल्दः2, स़-फ़ह़ाः67, ह़दीस़ः1611)

मैं रोज़ादार हूं : ***मत़लब*** येह कि रोज़ादार को चाहिये कि वोह रोजे़ में जहां खाना पीना छोड़ देता है, वहां झूट, ग़ीबत, चुग़ली, बद गुमानी, इल्ज़ाम तराशी और बद ज़बानी वग़ैरा गुनाह भी छोड़ दे । एक मक़ाम पर हु़ज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमायाः तुम से अगर कोई लड़ाई करे, गाली दे तो तुम उस से केह दो कि ***मैं रोजे़ से हूं ।***

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्दः1, स़-फ़ह़ाः87, ह़दीस़ः1)

रोज़ा तुझ से खोलूंगा ! ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** आजकल तो मुआ़-मला ही उल्टा हो गया है या'नी अगर कोई किसी से लड़ भी पड़ता है तो गरज कर यूं गोया होता है, ''चुप हो जा ! वरना याद रखना मैं रोजे़ से हूं और ***रोज़ा तुझ ही से खोलूंगा !***'' या'नी तुझे खा जाऊंगा । (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) तौबा ! तौबा ! इस क़िस्म की बात हरगिज़ ज़बान से न निकलनी चाहिये बल्कि

आ़जिज़ी का मुज़ाहरा करना चाहिये। इन तमाम आफ़तों से हम सिर्फ़ इसी सूरत में बच सकते हैं कि अपने ***आ'ज़ा को रोज़े का पाबन्द*** करने की कोशिश करें।

आ'ज़ा के रोज़ों की ता'रीफ़ : ***आ'ज़ा का रोज़ा*** या'नी "जिस्म के तमाम हिस़्स़ों को गुनाहों से बचाना" येह सिर्फ़ ***रोज़ा*** ही के लिये मख़्सूस़ नहीं बल्कि पूरी जिन्दगी इन आ'ज़ा को गुनाहों से बचाना ज़रूरी है और येह जभी मुम्किन है कि हमारे दिलों में ***ख़ौफ़ेख़ुदा*** عَزَّوَجَلَّ रासिख़ हो जाए। आह ! क़ियामत के उस होशरुबा मन्ज़र को याद कीजिये जब हर त़रफ़ "नफ़्सी नफ़्सी" का आ़लम होगा। सूरज आग बरसा रहा होगा। ज़बानें शिद्दते प्यास के सबब मुंह से बाहर निकल पड़ी होंगी। बीवी शौहर से, मां अपने लख़्ते जिगर से और बाप अपने नूरे नज़र से नज़र बचा रहा होगा। मुजरिमों को पकड़ पकड़ कर लाया जा रहा होगा। उन के मुंह पर मोहर मार दी जाएगी और उन के आ'ज़ा उन के गुनाहों की दास्तान सुना रहे होंगे जिस का कुरआने पाक की "सू-रए यासीन" में यूं तज़किरा किया गया है:-

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰۤى اَفْوَاهِهِمْ وَ تُكَلِّمُنَاۤ اَيْدِيْهِمْ وَ تَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ۝۶۵

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: आज हम इन के मूंहों पर मोहर कर देंगे और उन के हाथ हम से बात करेंगे और उन के पांव उन के किये की गवाही देंगे।

(पारह:23, यासीन:65)

आह ! ऐ कमज़ोर व ना तुवां इस्लामी भाइयो ! क़ियामत के उस कड़े वक़्त से अपने दिल को डराइये और हर वक़्त अपने तमाम आ'ज़ाए बदन को मा'सिय्यत की मुसीबत से बाज़ रखने की कोशिश फ़रमाइये। अब आ'ज़ा के रोज़े की तफ़्सीलात पेश की जाती हैं।

आंख का रोज़ा : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** आंख का रोज़ा इस त़रह़ रखना चाहिये कि आंख जब भी उठे तो सिर्फ़ और सिर्फ़ जाइज़ उमूर ही की त़रफ़ उठे। आंख से मस्जिद देखिये, क़ुरआने मजीद देखिये, मज़ाराते औलिया رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی की ज़ियारत कीजिये, उ़-लमाए किराम, मशाइख़े इ़ज़्ज़ाम और ***अल्लाह*** तबारक व तआ़ला के नेक बन्दों का दीदार कीजिये, ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ दिखाए तो का'बए मुअ़ज़्ज़मा के अन्वार देखिये, मक्कए मुकर्रमा زَادَهَااللهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيْماً की महकी महकी गलियां और वहां के वादी व कोहसार देखिये, मदीनए मुनव्वरा زَادَهَااللهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيْماً के दरो दीवार देखिये, सब्ज़ सब्ज़ गुम्बदो मीनार देखिये, मीठे मीठे मदीने के स़ह़रा व गुलज़ार देखिये, सुनहरी जालियों के अन्वार देखिये, जन्नत की प्यारी प्यारी क्यारी की बहार देखिये। ताजदारे अहले सुन्नत हु़ज़ूर मुफ़्तीए आ'ज़मे हिन्द सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ख़ुदाए ह़न्नान व मन्नान عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे बेकस पनाह में अ़र्ज़ करते हैं,

कुछ ऐसा कर दे मेरे किर्दगार عزوجل *आंखों में* *हमेशा नक़्श रहे रूए यार* صلى الله عليه واله وسلم *आंखों में*

उन्हें न देखा तो किस काम की हैं येह आंखें *कि देखने की है सारी बहार आंखों में*

(सामाने बख़्शिश शरीफ़)

प्यारे रोज़ादारो ! आंख का रोज़ा रखिये और ज़रूर रखिये बल्कि ***आंख का रोज़ा*** तो डबल बारह घन्टे, तीसों दिन और बारह महीने होना चाहिये। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा कर्दा ***आंखों*** से हरगिज़ हरगिज़ ***फ़िल्म*** न देखिये, ***डिरामे*** न देखिये, ना महरम औ़रतों को न देखिये, शह्वत के साथ ***अम्रदों*** को न देखिये, किसी का खुला हुवा सित्र न देखिये, बल्कि बिला ज़रूरत अपना खुला हुवा सित्र भी न देखिये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल करने वाले ***खेल तमाशे*** म-स़लन रीछ और बन्दर का नाच वग़ैरा न देखिये (इन को नचाना और नाच देखना दोनों[2] ना जाइज़ हैं) क्रिकेट, कबड्डी, फुटबॉल, हॉकी, ताश, शतरंज, विडियो गेम्ज़, टेबल फुटबॉल वग़ैरा वग़ैरा खेल न देखिये। (जब देखने की इजाज़त नहीं तो खेलने की इजाज़त किस त़रह़ हो सकती है ? इन में बा'ज़ खेल तो ऐसे हैं जो नीकर या चड्डी पहन कर खेले जातें हैं जिस की वजह से घुटने बल्कि مَعَاذَاللهِ عَزَّوَجَلَّ रानें तक खुली रहती हैं और इस त़रह़ दूसरों के आगे रानें या घुटने खोले रहना गुनाह है और दूसरों को इस त़रफ़ नज़र करना भी गुनाह) किसी के ***घर*** में बे इजाज़त न झांकिये, किसी का ***ख़त़*** या चिठ्ठी (रुख़्स़ते शर-ई के बिग़ैर) न देखिये, किसी की ***डायरी*** की तह़रीर भी बे इजाज़ते शर-ई न देखिये। और ***याद रखिये !*** ह़दीसे

पाक में है, ''जो अपने भाई के ***ख़त*** को बिग़ैर इजाज़त देखता है गोया वोह आग में देखता है ।''

(मुस्तदरक लिल ह़ाकिम, जिल्द:5, स़-फ़ह़ा:384, ह़दीस़:7779)

उठे न आंख कभी भी गुनाह की जानिब　　अ़ता करम से हो ऐसी हमें ह़या या रब ! عَزَّوَجَلَّ

किसी की ख़ामियां देखें न मेरी आंखें और　　सुनें न कान भी ऐ़बों का तज़्किरा या रब عَزَّوَجَلَّ

दिखा दे एक झलक सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद की

बस उन के जल्वों में आ जाए फिर क़ज़ा या रब عَزَّوَجَلَّ

कान का रोज़ा : ***कानों का रोज़ा*** येह है कि सिर्फ़ और सिर्फ़ जाइज़ बातें सुनें । म-स़लन ***कानों*** से तिलावत व ना'त सुनिये, सुन्नतों भरे बयानात सुनिये, अच्छी बात, अज़ान व इक़ामत सुनिये, सुन कर जवाब दीजिये, हरगिज़ हरगिज़ ढोल, बाजे और मूसीक़ी न सुनिये, गाने और नग़मे और फ़ुज़ूल या फ़ोह़्श लत़ीफ़े न सुनिये, किसी की ग़ीबत न सुनिये, किसी की चुग़ली न सुनिये, किसी के ऐ़ब हरगिज़ हरगिज़ न सुनिये और जब दो[2] आदमी छुप कर बात करें तो कान लगा कर न सुनिये । ***फ़रमाने मुस्त़फ़ा*** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : ***जो शख़्स़ किसी क़ौम की बातें कान लगा कर सुने और वोह इस बात को ना पसन्द करते हों तो क़ियामत के रोज़ इस के कानों में पिघला हुवा सीसा डाला जाएगा ।***

(अल मो'जमुल कबीर, जिल्द:11, स़-फ़ह़ा:198)

सुनें न फ़ोह़श कलामी न ग़ीबतो चुग़ली   तेरी पसन्द की बातें फ़क़त सुना या रब عَزَّوَجَلَّ

अंधेरी क़ब्र का दिल से नहीं निकलता डर   करूंगा क्या जो तू नाराज़ हो गया या रब عَزَّوَجَلَّ

रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم *अगर मुस्कराते आ जाएं*

तो गोरे तीरह में हो जाए चांदना या रब عَزَّوَجَلَّ

ज़बान का रोज़ा : ***ज़बान*** का रोज़ा येह है कि ***ज़बान*** सिर्फ़ और सिर्फ़ नेक व जाइज़ बातों के लिये ही ह़-र-कत में आए। म-स़लन ***ज़बान*** से तिलावते क़ुरआन कीजिये, ज़िक्रो दुरूद का विर्द कीजिये। ना'त शरीफ़ पढ़िये, दर्स दीजिये, सुन्नतों भरा बयान कीजिये, नेकी की दा'वत दीजिये, अच्छी अच्छी और प्यारी प्यारी दीनदारी वाली बातें कीजिये। फ़ुज़ूल "बकबक" से बचते रहिये। ख़बरदार ! गाली गलोच, झूट, ग़ीबत, चुग़ली वग़ैरा से ***ज़बान*** ना पाक न होने पाए कि "चम्चा अगर नजासत में डाल दिया जाए तो दो[2] एक गिलास पानी से पाक हो जाएगा मगर ***ज़बान*** बे ह़याई की बातों से ना पाक हो गई तो इसे सात समुन्दर भी नहीं धो सकेंगे।"

ज़बान की बे एह़तियात़ी की तबाहकारियां :

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, सुल्त़ाने दो[2] जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमियान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने स़ह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان को एक दिन ***रोज़ा*** रखने का हुक्म दिया और इर्शाद फ़रमाया: "जब तक मैं

तुम्हें इजाज़त न दूं, तुम में से कोई भी इफ़्तार न करे।" लोगों ने ***रोज़ा*** रखा । जब शाम हुई तो तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان एक एक कर के हाज़िरे ख़िदमते बा ब-र-कत हो कर अ़र्ज़ करते रहे, "***या रसूलल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं रोज़े से रहा, अब मुझे इजाज़त दीजिये ताकि मैं ***रोज़ा*** खोल दूं ।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे इजाज़त मर-हमत फ़रमा देते । एक सहाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे घरवालों में से दो[2] नौ जवान लड़कियां भी हैं जिन्हों ने ***रोज़ा*** रखा और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में आने से शरमाती हैं । उन्हें इजाज़त दीजिये ताकि वोह भी ***रोज़ा*** खोल लें" ***अल्लाह*** के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से रुख़े अनवर फेर लिया, उन्हों ने दोबारा[2] अ़र्ज़ की । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर चेहरए अनवर फेर लिया । जब तीसरी[3] बार उन्हों ने बात दोहराई तो ***ग़ैबदान*** रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए) इर्शाद फ़रमाया: "उन लड़कियों ने ***रोज़ा*** नहीं रखा वोह कैसी रोज़ादार हैं ? वोह तो सारा दिन लोगों का गोश्त खाती रहीं ! जाओ, उन दोनों[2] को हुक्म दो कि वोह अगर रोज़ादार हैं तो क़ै कर दें ।" वोह सहाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ उन के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें ***फ़रमाने शाही*** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

सुनाया। उन दोनों[2] ने क़ै की, तो क़ै से ख़ून और ***छीछड़े*** निकले। उन सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में वापस ह़ाज़िर हो कर सूरते ह़ाल अ़र्ज़ की। ***म-दनी आक़ा*** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया: ‘‘उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, अगर येह उन के पेटों में बाक़ी रहता, तो उन दोनों[2] को आग खाती।’’ (क्यूं कि उन्हों ने ग़ीबत की थी।)

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:328, ह़दीस़:15)

एक और रिवायत में है कि जब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عنہ से मुंह फेरा तो वोह सामने आए और अ़र्ज़ की, ‘‘***या रसूलल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ ! वोह दोनों[2] फ़ौत हो चुकी हैं या कहा कि वोह दोनों[2] मरने के क़रीब हैं।’’ ***सरकारे मदीना*** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया: ‘‘उन दोनों[2] को मेरे पास लाओ। वोह दोनों[2] ह़ाज़िर हुईं। ***सरकारे आ़ली वक़ार*** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक पियाला मंगवाया और उन में से एक को हुक्म फ़रमाया, इस में क़ै करो ! उस ने ख़ून और पीप की क़ै की, ह़त्ता की पियाला भर गया। फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दूसरी को हुक्म दिया कि तुम भी इस में क़ै करो ! उस ने भी इसी त़रह़ की क़ै की। ***अल्लाह*** के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदा आमिना के गुलशन के महकते फूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ وَرَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इर्शाद

फ़रमाया: ''***इन दोनों ने अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***की ह़लाल कर्दा चीज़ों*** (या'नी खाना, पीना वग़ैरा) ***से तो रोज़ा रखा मगर जिन चीज़ों को अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***ने*** (इलावा रोज़े के भी) ***ह़राम रखा है इन*** (ह़राम चीज़ों) ***से रोज़ा इफ़्त़ार कर डाला ।*** हुवा यूं कि एक लड़की दूसरी लड़की के पास बैठ गई और दोनों[2] मिल कर लोगों का गोश्त खाने लगीं । (या'नी लोगों की ग़ीबत करने लगीं[1])

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:95, अल ह़दीस़:8)

इल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** इस ह़िकायत से रोज़े रौशन की त़रह़ वाज़ेह़ हुवा कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से हमारे मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ***इल्मे ग़ैब*** ह़ासिल है और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने ग़ुलामों के तमाम मुआ़-मलात मा'लूम हो जाते हैं । जभी तो उन लड़कियों के बारे में मस्जिद शरीफ़ में बैठे बैठे ***ग़ैब की ख़बर*** इर्शाद फ़रमा दी । इस ह़िकायत से येह भी पता चला कि ***ग़ीबत*** और दूसरे गुनाहों का इर्तिकाब करने से बराहे रास्त इस का अस़र रोज़े पर भी पड़ सकता है जिस की वजह से ***रोज़े*** की तकलीफ़ ना क़ाबिले बरदाश्त हो सकती है । बहर ह़ाल ***रोज़ा*** हो या

---

1. मक्त-बतुल मदीना की त़रफ़ से शाएअ़ कर्दा मुन्फ़रिद रिसाला ''ग़ीबत की तबाहकारियां (46 स़-फ़ह़ात) पढ़िये । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ग़ीबत जैसे गुनाहे कबीरा से मज़ीद बचने का ज़ेहन बनेगा ।

न हो, ***ज़बान*** क़ाबू ही में रखनी चाहिये वरना येह ऐसे गुल खिलाती है कि तौबा ! अगर इन ***तीन उसूलों*** को पेशे नज़र रख लिया जाए तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बड़ा नफ़्अ़ होगा: (1) बुरी बात केहना हर ह़ाल में बुरा है (2) फ़ुज़ूल बात से ख़ामोशी अफ़्ज़ल है (3) अच्छी बात करना ख़ामोशी से बेहतर है ।

मेरी ज़बान पे क़ुफ़्ले मदीना लग जाए — *फ़ुज़ूल गोई से बचता रहूं स़दा या रब !* عَزَّوَجَلَّ

करें न तंग ख़यालाते बद कभी कर दे — *शुऊ़र व फ़िक्र को पाकीज़गी अ़त़ा या रब !* عَزَّوَجَلَّ

ब वक़्ते नज़्अ़ सलामत रहे मेरा ईमां

मुझे नस़ीब हो कलिमा है इल्तिजा या रब ! عَزَّوَجَلَّ

हाथों का रोज़ा : ***हाथों*** का रोज़ा येह है कि जब भी हाथ उठें, सिर्फ़ नेक कामों के लिये उठें । म-स़लन बा त़हारत क़ुरआने मजीद को हाथ लगाइये, नेक लोगों से ***मुस़ा-फ़ह़ा*** कीजिये । फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم: ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और मुस़ा-फ़ह़ा करें और नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेजें तो इन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं । (मुस्नदे अबी या'ला, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:95, ह़दीस़:2951) हो सके तो किसी ***यतीम*** के सर पर शफ़्क़त से हाथ फेरिये कि हाथ के नीचे जितने बाल आएंगे हर बाल के इवज़ एक एक नेकी मिलेगी ।

(बच्चा या बच्ची उस वक़्त तक ही यतीम हैं जब तक ना बालिग़ हैं जूं ही बालिग़ हुए यतीम न रहे । लड़का बारह और पन्दरह साल के दरमियान बालिग़ और लड़की नौ और पन्दरह साल के दरमियान बालिग़ा होती है) ख़बरदार ! किसी पर ***ज़ुल्मन*** हाथ न उठें, ***रिश्वत*** लेने देने के लिये न उठें, न किसी का माल ***चुराएं***, न ***ताश*** खेलें न पतंग उड़ाएं, न किसी ***ना मह़रम*** औ़रत से मुस़ा-फ़ह़ा करें । (बल्कि शह्वत का अन्देशा हो तो ***अम्रद*** से भी हाथ न मिलाएं, उस की दिल आज़ारी न हो इस त़रह़ हिक्मते अ़-मली से कतरा जाएं)

हमेशा हाथ भलाई के वासित़े उठें
बचाना ज़ुल्मो व सितम से मुझे स़दा या रब ! عَزَّوَجَلَّ
कहीं का मुझ को गुनाहों ने अब नहीं छोड़ा
अ़ज़ाबे नार से बहरे नबी बचा या रब ! عَزَّوَجَلَّ

इलाही عَزَّوَجَلَّ एक भी नेकी नहीं है नामे में
फ़क़त़ है तेरी ही रह़मत का आसरा या रब عَزَّوَجَلَّ

पांव का रोज़ा : ***पांव*** का रोज़ा येह है कि पांव उठें तो सिर्फ़ नेक कामों के लिये उठें। म-स़लन पांव चलें तो मसाजिद की त़रफ़ चलें, मज़ाराते औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की त़रफ़ चलें, उ़-लमा व सु-लह़ा की ज़ियारत के लिये चलें, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की त़रफ़ चलें, नेकी की दा'वत देने के लिये चलें, सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र के लिये चलें, नेक ***स़ोह़बतों*** की

त़रफ़ चलें, किसी की मदद के लिये चलें, काश ! ***मक्कए मुकर्रमा*** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعظِیْمًا व ***मदीनए मुनव्वरा*** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعظِیْمًا की त़रफ़ चलें, सूए मिना व अ़-रफ़ात व मुज़्दलिफ़ा चलें, त़वाफ़ व सअ़्य में चलें । हरगिज़ हरगिज़ सिनेमा घर की त़रफ़ न चलें, डिरामा गाह की त़रफ़ न चलें, बुरे दोस्तों की मजलिसों की त़रफ़ न चलें, शतरंज, लुडू, ताश, क्रिकेट, फ़ुटबॉल, विडियो गेम्ज़, टेबल फ़ुटबॉल वग़ैरा वग़ैरा खेल खेलने या देखने की त़रफ़ न चलें, काश ! पांव कभी तो ऐसे भी चलें कि बस मदीना ही मदीना लब पर हो और सफ़र भी मदीने का हो ।

रहें भलाई की राहों में गामज़न हर दम   करें न रुख़ मेरे पांव गुनाह का या रब ! عَزَّوَجَلَّ
मदीने जाएं फिर आएं दोबारा फिर जाएं   इसी में उ़म्र गुज़र जाए या ख़ुदा या रब ! عَزَّوَجَلَّ

बक़ीए़ पाक में मदफ़न नसी़ब हो जाए
बराए ग़ौसो रज़ा मुर्शिदी ज़िया या रब ! عَزَّوَجَلَّ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाके़ई ह़क़ीक़ी मा'नों में रोज़े की ब-र-कतें तो उसी वक़्त नसी़ब होंगी, जब हम तमाम आ'ज़ा का भी ***रोज़ा*** रखेंगे । वरना भूक और प्यास के सिवा कुछ भी ह़ासिल न होगा जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शाद है, "बहुत से रोज़ादार ऐसे हैं कि उन को उन के रोज़े से भूक और प्यास के सिवा कुछ

ह़ासिल नहीं होता, और बहुत से क़ियाम करने वाले ऐसे हैं कि उन को उन के क़ियाम से सिवाए जागने के कुछ ह़ासिल नहीं होता ।"

(सुनने इब्ने माजह, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:320, ह़दीस़:1690)

या'नी बा'ज़ लोग ***रोज़ा*** तो रखते हैं मगर अपने आ'ज़ा को चूंकि बुराइयों से नहीं बचाते इस लिये उन को ***रोज़े*** की नूरानिय्यत और उस की अस्ल रूह़ से मह़रूमी ही रहती है । नीज़ जो लोग ख़्वाह मख़्वाह रात जाग कर गपशप लगाते हैं । उन्हें वक़्त, सिह़्ह़त और आख़िरत के नुक़्स़ान के सिवा कुछ हाथ नहीं आता ।

K.E.S.C. में नौकरी मिल गई : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** रोज़े की नूरानिय्यत और रूह़ानिय्यत पाने और म-दनी ज़ेह्न बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये और सुन्नतों की तरबिय्यत के ***म-दनी क़ाफ़िलों*** में ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कीजिये । سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ौल, सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त और म-दनी क़ाफ़िलों की भी क्या ख़ूब बहारें और ब-र-कतें हैं । चुनान्चे ओरंगी टाऊन (बाबुल मदीना कराची) के एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई ने अपने ***म-दनी माह़ौल*** में आने और सिल्सिलए रूज़गार पाने का वाक़ेआ़ कुछ यूं बयान फ़रमाया:

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब तुम मुर्सलीन عَلَيْهِمُ السَّلَام पर दुरूदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं।

19-6-2003 को एक इस्लामी भाई के दा'वत देने पर ***दा'वते इस्लामी*** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की त़रफ़ रुख़ हुवा मगर पाबन्दी नहीं थी। बे रूज़गारी के सबब परेशानी थी, एक इस्लामी भाई की ***इन्फ़िरादी कोशिश*** के नतीजे में ***म-दनी क़ाफ़िला कोर्स*** के लिये दा'वते इस्लामी के आ़लमी मर्कज़ ***फ़ैज़ाने मदीना*** में दाख़िला ले लिया। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ***आ़शिक़ाने रसूल*** की स़ोह़बतों और ब-र-कतों ने मुझ गुनहगार पर म-दनी रंग चढ़ा दिया, और जीने का ढंग सिखा दिया। ***म-दनी क़ाफ़िला कोर्स*** पूरा करने के दूसरे या तीसरे दिन बा'ज़ दोस्तों ने बताया कि K.E.S.C. को मुलाज़िमों की ज़रूरत है, हम ने भी दरख़्वास्तें जम्अ़ करवा दी हैं आप भी करवा दीजिये। मैं ने अ़र्ज़ की, आजकल सिर्फ़ दरख़्वास्तों पर कहां ! सिफ़ारिशों (बल्कि रिश्वतों) पर नौकरियों की तरकीब बनती है ! अपने पास तो कुछ भी नहीं। बिल आख़िर उन के इस़रार पर मैं ने "दरख़्वास्त" जम्अ़ करवा दी। इब्तिदाअन तह़रीरी टेस्ट हुए फिर इन्टरव्यू के बा'द मेडीकल टेस्ट की सूरत बनी। बे शुमार अस़रो रुसूख़ वाली दरख़्वास्तों के बा वुजूद मैं वाह़िद ऐसा था कि हर जगह कामियाब रहा ! फ़ाइनल इन्टरव्यू में घरवालों ने ज़ोर दिया कि पेन्ट शर्ट पहन कर जाओ मगर मैं तो ***आ़शिक़ाने रसूल*** की स़ोह़बतों की ब-र-कत से इंग्रेज़ी लिबास तर्क कर चुका था लिहाज़ा सफ़ेद शल्वार कमीस में ही पहुंच गया। अफ़्सर ने मेरा

मज़हबी हुल्या देख कर मुझ से बा'ज़ इस्लामी मा'लूमात के सुवालात किये। जिन के मैं ने ब आसानी जवाबात दे दिये क्यूं कि اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने येह सब ***म-दनी क़ाफ़िला कोर्स*** के अन्दर सीखे हुए थे। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बिगै़र किसी सिफ़ारिश व रिश्वत के मुझे ***मुला-ज़मत*** मिल गई। हमारे घरवाले ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी क़ाफ़िला कोर्स और म-दनी माहौल की ब-र-कत देख कर दंग रह गए और اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ***दा'वते इस्लामी*** के मुहि़ब्ब बन गए। येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं दा'वते इस्लामी की ***अ़लाक़ाई मुशा-वरत*** के ख़ादिम (निगरान) की हैसिय्यत से अपने अ़लाक़े में ***सुन्नतों*** के डंके बजा रहा हूं और ***म-दनी इन्आ़मात*** व म-दनी क़ाफ़िलों की धूमें मचा रहा हूं।

नौकरी चाहिये, आइये आइये क़ाफ़िले में चलें, क़ाफ़िले में चलो
तंगदस्ती मिटे, दूर आफ़त हटे लेने को ब-र-कतें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रोज़े की निय्यत : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** रोज़े के लिये भी उसी त़रह़ ***निय्यत*** शर्त़ है जिस त़रह़ कि नमाज़, ज़कात वगै़रा के लिये। लिहाज़ा "बे निय्यते रोज़ा अगर कोई इस्लामी भाई या इस्लामी बहन सुब्ह़े सा़दिक़ के बा'द से ले कर ग़ुरूबे आफ़्ताब तक बिल्कुल न खाए पिये तब भी उस का

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सौ बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे।

रोज़ा न होगा। (रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:331) र-मज़ान शरीफ़ का ***रोज़ा*** हो या नफ़्ल या ***नज़्रे मुअ़य्यन*** का रोज़ा या'नी ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के लिये किसी मख़्सूस़ दिन के रोज़े की मन्नत मानी हो म-स़लन खु़द सुन सके इतनी आवाज़ से यूं कहा हो कि "मुझ पर ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के लिये इस साल रबीउ़न्नूर शरीफ़ की हर पीर शरीफ़ का ***रोज़ा*** है। तो येह ***नज़्रे मुअ़य्यन*** है और इस मन्नत का पूरा करना वाजिब हो गया। इन तीनों क़िस्म के रोज़ों के लिये ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द से ले कर "निस़्फ़ुन्नहारे शर-ई" (इसे ज़ह्वए कुब्रा भी केहते हैं) से पहले पहले तक जब भी ***निय्यत*** कर लें ***रोज़ा*** हो जाएगा।

(रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:332)

निस़्फ़ुन्नहारे शर-ई का वक़्त मा'लूम करने का त़रीक़ा : ***शायद*** आप के ज़ेह्न में येह सुवाल उभर रहा होगा कि निस़्फ़ुन्नहारे शर-ई का वक़्त कौन सा है? इस का जवाब येह है कि जिस दिन का ***निस़्फ़ुन्नहारे*** शर-ई मा'लूम करना हो उस दिन के सुब्हे़ स़ादिक़ से ले कर ग़ुरूबे आफ़्ताब तक का वक़्त शुमार कर लीजिये और उस सारे वक़्त के दो[2] हि़स्से़ कर लीजिये पहला आधा हि़स्सा ख़त्म होते ही "निस़्फ़ुन्नहारे शर-ई" का वक़्त शुरूअ़ हो गया। म-स़लन आज सुब्हे़ स़ादिक़ ठीक पांच बजे है और ग़ुरूबे आफ़्ताब ठीक छे बजे। तो दोनों के दरमियान का वक़्त कुल तेरह[13] घन्टे हुवा। इन के दो[2] हि़स्से़ करें तो दोनों[2] में का हर एक

ह़िस़्स़ा साढ़े छे घन्टे का हुवा। अब सुब्ह़े स़ादिक़ के पांच बजे के बा'द वाले इब्तिदाई साढ़े छे घन्टे साथ मिला लीजिये। तो इस त़रह़ दिन के साढ़े ग्यारह बजे "निस़्फ़ुन्नहारे शर-ई" का वक़्त शुरूअ़ हो गया। तो अब इन तीन³ त़रह़ के रोज़ों की ***निय्यत*** नहीं हो सकती।

(रद्दुल मुह़्तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः341, मुलख़्ख़स़न)

बयान कर्दा तीन³ क़िस्म के रोज़ों के इ़लावा दीगर जितनी भी अक़्सामे रोज़ा हैं उन सब के लिये येह लाज़िमी है कि रातों रात या'नी ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द से ले कर सुब्ह़े स़ादिक़ तक ***निय्यत*** कर लें। अगर सुब्ह़े स़ादिक़ हो गई तो अब ***निय्यत*** नहीं हो सकेगी। म-स़लन क़ज़ाए रोज़ए र-मज़ान, कफ़्फ़ारे के रोज़े, क़ज़ाए रोज़ए नफ़्ल (रोज़ए नफ़्ल शुरूअ़ करने से वाजिब हो जाता है। अब बे उ़ज़्रे शर-ई तोड़ना गुनाह है। अगर किसी त़रह़ से भी टूट गया ख़्वाह उ़ज़्र से हो या बिला उ़ज़्र, इस की क़ज़ा बहर ह़ाल वाजिब है) "रोज़ए नज़्रे ग़ैरे मुअ़य्यन" (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये रोज़े की मन्नत तो मानी हो मगर दिन मख़्सूस़ न किया हो इस मन्नत का भी पूरा करना वाजिब है और ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के लिये मानी हुई हर जाइज़ मन्नत का पूरा करना वाजिब है। जब कि ज़बान से इस त़रह़ के अल्फ़ाज़ इतनी आवाज़ से कहे हों कि ख़ुद सुन सके, म-स़लन इस त़रह़ कहा, "मुझ पर ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के लिये एक ***रोज़ा*** है" अब चूंकि इस में दिन मख़्सूस़ नहीं किया कि कौन सा ***रोज़ा*** रखूंगा। लिहाज़ा ज़िन्दगी में जब भी मन्नत की निय्यत से ***रोज़ा*** रख लेंगे मन्नत अदा हो जाएगी।

मन्नत के लिये ज़बान से केहना शर्त़ है और येह भी शर्त़ है कि कम अज़ कम इतनी आवाज़ से कहें कि ख़ुद सुन लें । मन्नत के अल्फ़ाज़ इतनी आवाज से अदा तो किये कि ख़ुद सुन लेता मगर बहरापन या किसी क़िस्म के शोरो गुल वग़ैरा की वजह से सुन न पाया जब भी मन्नत हो गई इस का पूरा करना वाजिब है) वग़ैरा वग़ैरा इन सब रोज़ों की ***निय्यत*** रात में ही कर लेनी ज़रूरी है ।

(मुलख़्ख़स़न अज़ रद्दुल मुह़तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः344)

"मुझे माहे र-मज़ान से प्यार है" के बीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से रोज़े की निय्यत के 20 म-दनी फूल

मदीना 1: ***अदाए*** रोज़ए र-मज़ान और ***नज़्रे मुअ़य्यन*** और नफ़्ल के रोज़ों के लिये ***निय्यत*** का वक़्त ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द से ज़ह्वए कुब्रा या'नी निस्फ़ुन्नहारे शर-ई से पहले पहले तक है इस पूरे वक़्त के दौरान आप जब भी निय्यत कर लेंगे येह रोज़े हो जाएंगे ।

(रद्दलु मुह़तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः332)

मदीना 2: ***निय्यत*** दिल के इरादे का नाम है ज़बान से केहना शर्त़ नहीं, मगर ज़बान से केह लेना ***मुस्तह़ब*** है अगर रात में रोज़ए र-मज़ान की निय्यत करें तो यूं कहें:

نَوَیتُ اَنۡ اَصُوۡمَ غَدًا لِلّٰہِ تَعَالٰی مِنۡ فَرۡضِ رَمَضَان۔

तर्जमा: मैं ने निय्यत की कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये इस र-मज़ान का फ़र्ज़ रोज़ा कल रखूंगा ।

मदीना 3: अगर दिन में ***निय्यत*** करें तो यूं कहें:-

نَوَیتُ اَنۡ اَصُوۡمَ ھٰذَاالۡیَوۡمَ لِلّٰہِ تَعَالٰی مِنۡ فَرۡضِ رَمَضَان۔

तर्जमा: मैं ने निय्यत की कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये इस र-मज़ान का फ़र्ज़ रोज़ा रखूंगा । (रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:332)

मदीना 4: ***अ़-रबी*** में निय्यत के कलिमात अदा करने उसी वक़्त ***निय्यत*** शुमार किये जाएंगे जब कि उन के मा'ना भी आते हों । और येह भी याद रहे कि ज़बान से ***निय्यत*** करना ख़्वाह किसी भी ज़बान में हो उसी वक़्त कार आमद होगा जबकि उस वक़्त दिल में भी ***निय्यत*** मौजूद हो । (ऐज़न)

मदीना 5: ***निय्यत*** अपनी मादरी ज़बान में भी की जा सकती है । मगर शर्त़ येही है कि अ़-रबी में करें ख़्वाह किसी और ज़बान में । ***निय्यत*** करते वक़्त दिल में भी इरादा मौजूद हो, वरना बे ख़याली में सिर्फ़ ज़बान से रटे रटाए जुम्ले अदा कर लेने से ***निय्यत*** न होगी । हां अगर बिल्फ़र्ज़ ज़बान से रटी हुई ***निय्यत***

केह ली मगर बा'द में निय्यत के लिये मुक़र्ररा वक़्त के अन्दर दिल में भी ***निय्यत*** कर ली तो अब ***निय्यत*** स़ह़ीह़ है। (रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:332)

मदीना 6: ***अगर*** दिन में ***निय्यत*** करें तो ज़रूरी है कि येह ***निय्यत*** करें कि मैं सुब्ह़ से रोज़ादार हूं। अगर इस त़रह़ ***निय्यत*** की कि अब से रोज़ादार हूं सुब्ह़ से नहीं, तो रोज़ा न हुवा।

(अल जौ-ह-रतुन्नय्यरह, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:175)

मदीना 7: ***दिन*** में वोह ***निय्यत*** काम की है कि सुब्ह़े स़ादिक़ से ***निय्यत*** करते वक़्त तक रोज़े के ख़िलाफ़ कोई अम्र न पाया गया हो। अलबत्ता अगर सुब्ह़े स़ादिक़ के बा'द भूल कर खा पी लिया या जिमाअ़ कर लिया तब भी ***निय्यत*** स़ह़ीह़ हो जाएगी। क्यूंकि भूल कर अगर कोई डट कर भी खा पी ले तो इस से ***रोज़ा*** नहीं जाता।

(मुलख़्ख़स़ अज़ रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:367)

मदीना 8: ***आप*** ने अगर यूं ***निय्यत*** की कि "कल कहीं दा'वत हुई तो ***रोज़ा*** नहीं और न हुई तो ***रोज़ा*** है।" येह ***निय्यत*** स़ह़ीह़ नहीं। बहर ह़ाल आप रोज़ादार न हुए।

(आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:195)

मदीना 9: माहे र-मज़ान के दिन में न रोज़े की ***निय्यत*** की न ही येह कि "रोज़ा नहीं" अगर्चे मा'लूम है कि येह र-मज़ानुल मुबारक का महीना है तो ***रोज़ा*** न होगा। (आलमगीरी, जिल्द:2, स-फहा:195)

मदीना 10: ***ग़ुरूबे*** आफ़्ताब के बा'द से ले कर रात के किसी वक़्त में भी ***निय्यत*** की फिर इस के बा'द रात ही में खाया या पिया तो ***निय्यत*** न टूटी, वोही पहली ही काफ़ी है फिर से ***निय्यत*** करना ज़रूरी नहीं । (अल जौ-ह-रतुन्नय्यरह, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:175)

मदीना 11: ***आप*** ने अगर रात में रोज़े की ***निय्यत*** तो की मगर फिर रातों रात पक्का इरादा कर डाला कि "रोज़ा नहीं रखूंगा।" तो अब वोह आप की, की हुई निय्यत जाती रही । अगर नई ***निय्यत*** न की और दिन भर रोज़ादारों की त़रह़ भूके प्यासे रहे तब भी रोज़ा न हुवा ।

(दुर्रे मुख़्तार मअ़ रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:345)

मदीना 12: ***दौराने*** नमाज़ कलाम (बातचीत) की ***निय्यत*** तो की मगर बात नहीं की तो नमाज़ फ़ासिद न होगी । इसी त़रह़ रोज़े के दौरान तोड़ने की सिर्फ़ ***निय्यत*** कर लेने से ***रोज़ा*** नहीं टूटेगा जब तक तोड़ने वाली कोई चीज़ न करे। (अल जौ-ह-रतुन्नय्यरह, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:175) या'नी सिर्फ़ येह ***निय्यत*** कर ली बस अब मैं रोज़ा तोड़ डालता हूं तो इस त़रह़ उस वक़्त तक ***रोज़ा*** नहीं टूटेगा जब तक ह़ल्क़ के नीचे कोई चीज़ न उतारेंगे या कोई ऐसा फ़े'ल न कर गुज़रेंगे जिस से रोज़ा टूट जाता हो ।

मदीना 13 : ***स-ह़री*** खाना भी ***निय्यत*** ही है । ख़्वाह माहे र-मज़ान के रोज़े के लिये हो या किसी और रोज़े के लिये मगर जब ***सह़री*** खाते वक़्त येह इरादा है कि सुब्ह़ को

रोज़ा न रखूंगा तो येह सह़री खाना ***निय्यत*** नहीं।

(अल जौ-ह-रतुन्नय्यरह, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:176)

मदीना 14: ***र-मज़ानुल मुबारक*** के हर रोजे़ के लिये नई ***निय्यत*** ज़रूरी है। पहली तारीख़ या किसी भी और तारीख़ में अगर पूरे माहे र-मज़ान के रोजे़ की निय्यत कर भी ली तो येह निय्यत सि़र्फ़ उसी एक दिन के ह़क़ में है, बाक़ी दिनों के लिये नहीं। (ऐज़न, स़-फ़ह़ा:167)

मदीना 15: ***अदाए*** र-मज़ान और ***नज़्रे मुअ़य्यन*** और नफ़्ल के इलावा बाक़ी रोजे़ म-स़लन क़ज़ाए र-मज़ान और ***नज़्रे ग़ैर मुअ़य्यन*** और नफ़्ल की क़ज़ा (या'नी नफ़्ली रोज़ा रख कर तोड़ दिया था उस की क़ज़ा) और ***नज़्रे मुअ़य्यन*** की क़ज़ा और कफ़्फ़ारे का रोज़ा और तमत्तोअ़[1] का रोज़ा इन सब में ऐ़न सुब्ह़ चमकते वक़्त या रात में ***निय्यत*** करना ज़रूरी है और येह भी ज़रूरी है कि

---

1. ह़ज की तीन[3] क़िस्में हैं (1) क़िरान, (2) तमत्तोअ़ (3) इफ़राद। ***क़िरान*** और ***तमत्तोअ़*** वाले पर ह़ज अदा करने के बा'द बत़ौरे शुक्राना ह़ज की क़ुरबानी करना वाजिब है जब कि इफ़राद वाले के लिये मुस्तह़ब। अगर ***क़िरान*** और ***तमत्तोअ़*** वाले बहुत ज़ियादा मिस्कीन और मोह़ताज हैं मगर ***क़िरान*** और ***तमत्तोअ़*** की निय्यत कर ली है और अब इन के पास न कोई क़ुरबानी के लाइक़ जानवर है न रक़म न ही कोई ऐसा सामान वग़ैरा है जिसे फ़रोख़्त कर के क़ुरबानी का इन्तिज़ाम कर सकें तो अब क़ुरबानी के बदले इन पर दस[10] रोजे़ वाजिब होंगे। तीन[3] रोजे़ ह़ज के महीनों में या'नी यकुम शव्वालुल मुकर्रम से नवीं ज़िल ह़िज्जतुल ह़राम तक एह़राम बांधने के बा'द इस बीच में जब चाहें रख लें। तरतीब वार रखना ज़रूरी नहीं। नाग़ा कर के भी रख सकते हैं। बेहतर येह है कि सात, आठ और नवीं ज़िल ह़िज्जतुल ह़राम को रखें और फिर तेरह ज़िल ह़िज्जतुल ह़राम के बा'द बक़िय्या सात रोजे़ जब चाहें रख सकते हैं बेहतर येह है कि घर जा कर रखें।

जो ***रोज़ा*** रखना है ख़ास़ उसी मख़्सूस रोज़े की ***निय्यत*** करें । अगर इन रोज़ों की ***निय्यत*** दिन में (या'नी सुब्ह़े स़ादिक़ से ले कर ज़ह्वए कुब्रा से पहले पहले) की तो नफ़्ल हुए फिर भी इन का पूरा करना ज़रूरी है । तोड़ेंगे तो क़ज़ा वाजिब होगी । अगर्चे येह बात आप के इ़ल्म में हो कि मैं जो ***रोज़ा*** रखना चाहता था येह वोह ***रोज़ा*** नहीं है बल्कि नफ़्ल ही है ।

(दुर्रे मुख़्तार मअ़हू रद्दुल मुह़्तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः344)

मदीना 16: ***आप*** ने येह गुमान कर के ***रोज़ा*** रखा कि मेरे ज़िम्मे रोज़े की क़ज़ा है, अब रखने के बा'द मा'लूम हुवा कि गुमान ग़लत़ था । अगर फ़ौरन तोड़ दें तो कोई ह़रज नहीं । अलबत्ता बेहतर येही है कि पूरा कर लें । अगर मा'लूम होने के फ़ौरन बा'द न तोड़ा तो अब लाज़िम हो गया इसे नहीं तोड़ सकते अगर तोड़ेंगे तो क़ज़ा वाजिब है ।

(रद्दुल मुह़्तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः346)

मदीना 17: ***रात*** में आप ने क़ज़ा रोज़े की ***निय्यत*** की, अगर अब सुब्ह़ शुरूअ़ हो जाने के बा'द इसे नफ़्ल करना चाहते हैं तो नहीं कर सकते । (ऐज़न, स़-फ़ह़ाः345)

मदीना 18: ***दौराने*** नमाज़ भी अगर रोज़े की ***निय्यत*** की तो येह ***निय्यत*** स़ह़ीह़ है । (दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुह़्तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः345)

मदीना 19: ***कई*** रोज़े क़ज़ा हों तो ***निय्यत*** में येह होना चाहिये कि उस र-मज़ान के पहले रोज़े की क़ज़ा, दूसरे की क़ज़ा और अगर कुछ इस साल के क़ज़ा हो गए कुछ पिछले साल के बाक़ी हैं तो येह ***निय्यत*** होनी चाहिये कि इस ***र-मज़ान*** की क़ज़ा और उस ***र-मज़ान*** की क़ज़ा और अगर दिन को ***मुअ़य्यन*** न किया, जब भी हो जाएंगे।

(आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:196)

मदीना 20: مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ आप ने ***र-मज़ान*** का रोज़ा क़स्दन (या'नी जानबूझ कर) तोड़ डाला था तो आप पर इस ***रोज़े*** की क़ज़ा भी है और (अगर कफ़्फ़ारे की शराइत़ पाई गईं तो) साठ60 रोज़े कफ़्फ़ारे के भी। अब आप ने ***इक्सठ रोज़े*** रख लिये क़ज़ा का दिन ***मुअ़य्यन*** न किया तो इस में क़ज़ा और कफ़्फ़ारा दोनों[2] अदा हो गए।

(आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:196)

दाढ़ी वाली बच्ची ! ***रोज़ा*** और दीगर आ'माल की निय्यतें सीखने का जज़्बा बेदार करने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और दोनों[2] जहां की ब-र-कतें ह़ासिल कीजिये। आप की तरग़ीब के लिये म-दनी क़ाफ़िले की एक खुश गवार और खुश्बूदार

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह़ और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

म-दनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे रनछोड़ लाइन (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलास़ा है कि एक बार ***आ़शिक़ाने रसूल*** के तीन³ दिन के ***म-दनी क़ाफ़िले*** में तक़रीबन 26 साला एक इस्लामी भाई भी शरीके सफ़र थे, वोह दुआ़ में बहुत ज़ियादा गिर्या व ज़ारी करते थे। इस्तिफ़्सार पर बताया कि मेरी एक ही ***म-दनी मुन्नी*** है और उस के चेहरे पर दाढ़ी के बाल उगने शुरूअ़ हो गए हैं ! इस की वजह से मुझे सख़्त तश्वीश है, एक्स रे और टेस्ट वग़ैरा से सबब सामने नहीं आ रहा और कोई भी इलाज कारगर नहीं हो पा रहा। इन की दरख़्वास्त पर शु-रकाए म-दनी क़ाफ़िला ने इन की म-दनी मुन्नी के लिये दुआ़ की। सफ़र मुकम्मल हो जाने के बा'द जब दूसरे दिन उस दुखयारे इस्लामी भाई से मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने मुसर्रत से झूमते हुए येह खुश ख़बरी सुनाई कि बच्ची की अम्मी ने बताया कि आप के ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र पर रवाना होने के दूसरे ही दिन اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हैरत अंगेज़ त़ौर पर म-दनी मुन्नी के चेहरे से बाल ऐसे ग़ाइब हुए हैं जैसे कभी थे ही नहीं।

होगा लुत़्फ़े ख़ुदा, आओ भाई दुआ़ मिल के सारे करें, क़ाफ़िले में चलो
ग़म से रोते हुए, जान खोते हुए मरह़बा ! हंस पड़ें ! क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली अस्ग़र" के सोलह ह़ुरूफ़ की निस्बत से दूध पीते बच्चों के लिये 16 म-दनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! ***म-दनी क़ाफ़िले*** की ब-र-कतों की भी क्या ख़ूब बहारें हैं। बच्चों को अम्राज़ से बचाने के लिये शुरूअ़ में की जाने वाली एह़तियात़ी तदाबीर काफ़ी सूदमन्द हो सकती हैं इस ज़िम्न में ***16 म-दनी फूल*** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये: (1) बच्चा या बच्ची के पैदा होने के फ़ौरन बा'द **یَا بَرُّ** सात बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर अगर बच्चे को दम कर दिया जाए तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बालिग़ होने तक आफ़तों से ह़िफ़ाज़त में रहेगा (2) पैदाइश के बा'द बच्चे को पहले नमक मिले हुए नीम गर्म पानी से नहलाइये फिर सादा पानी से ग़ुस्ल दीजिये तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बच्चा फोड़े फुन्सी की बीमारियों से मह़फ़ूज़ रहेगा (3) नमक मिले हुए पानी से बच्चों को कुछ दिनों तक नहलाते रहिये कि येह बच्चों की तन्दुरुस्ती के लिये बेह़द मुफ़ीद है। और नीज़ (4) नहलाने के बा'द बदन पर सरसों के तेल की मालिश बच्चों की सिह़्ह़त के लिये इक्सीर है (5) बच्चों को दूध पिलाने से पहले रोज़ाना दो[2] तीन[3] मरतबा एक उंगली शहद चटा देना काफ़ी फ़ाइदामन्द है (6) ख़्वाह झूले में झुलाएं या बिछौने पर सुलाएं या गोद में खिलाएं हर ह़ाल में बच्चों का सर ऊंचा रखिये सर नीचा और

पांव ऊंचे न होने दीजिये कि नुक़्स़ान देह है (7) विलादत के बा'द बहुत तेज़ रौशनी वाली जगह में रखने से बच्चे की निगाह कमज़ोर हो जाती है (8) जब बच्चे के मसूढ़े सख़्त हो जाएं और दांत निकलते मा'लूम हों तो मसूढ़ों पर मुर्ग़ की चरबी मला करें और (9) रोज़ाना एक दो मरतबा मसूढ़ों पर शहद मला करें और बच्चे के सर और गरदन पर तेल की मालिश करना मुफ़ीद है (10) जब दूध छुड़ाने का वक़्त आए और बच्चा खाने लगे तो ख़बरदार ! ख़बरदार ! इस को कोई सख़्त चीज़ न चबाने दीजिये, बहुत ही नर्म और जल्द हज़्म होने वाली ग़िज़ाएं खिलाइये (11) गाय या बकरी का दूध भी पिलाते रहिये (12) ह़स्बे हैसिय्यत बच्चों को इस उ़म्र में अच्छी ख़ूराक दीजिये कि इस उ़म्र में जो कुछ त़ाक़त बदन में आ जाएगी वोह अगर बच्चा ज़िन्दा रहा तो اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ तमाम उ़म्र काम आएगी (13) बच्चों को बार बार ग़िज़ा नहीं देनी चाहिये । जब तक एक ग़िज़ा हज़्म न हो जाए दूसरी ग़िज़ा हरगिज़ मत दीजिये । (14) टॉफ़ियां, मिठाई और खटाई की आ़दत से बचाना बहुत बहुत बहुत ज़रूरी है कि येह चीज़ें बच्चों की सिह़्ह़त के लिये बहुत ही नुक़्स़ान देह हैं (15) बच्चों को सूखे मेवे और ताज़ा फल खिलाना बहुत ही अच्छा है (16) ख़त्ना जितनी छोटी उ़म्र में हो जाए बेहतर है तकलीफ़ भी कम होती और ज़ख़्म भी जल्दी भर जाता है ।

ज़च्चा व बच्चे की ह़िफ़ाज़त का रूह़ानी नुस्ख़ा :

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ किसी काग़ज़ पर 55 बार लिख कर (या लिखवा कर) ह़स्बे ज़रूरत ता'वीज़ की त़रह़ तेह कर के मोम जामा या प्लास्टिक कोटिंग करवा कर कपड़े या रेगज़ीन या चमड़े में सी कर ***ह़ामेला*** गले में पहन या बाज़ू में बांध ले اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ***ह़म्ल*** की भी ह़िफ़ाज़त और ***बच्चा*** भी बला व आफ़त से सलामत रहे। अगर لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ 55 बार (अव्वल व आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के रख लें और पैदा होते ही ***बच्चे के मुंह*** पर लगा दें तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बच्चा ज़हीन होगा और बच्चों को होने वाली बीमारियों से मह़फ़ूज़ रहेगा। अगर येही पढ़ कर ***ज़ैत*** (या'नी ज़ैतून शरीफ़ के तेल) पर दम कर के बच्चे के जिस्म पर नरमी के साथ मल दिया जाए तो बेह़द मुफ़ीद है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कीड़े मकोड़े और दीगर मूज़ी जानवर बच्चे से दूर रहेंगे। इस त़रह़ का पढ़ा हुवा ज़ैत बड़ों के जिस्मानी दर्दों में मालिश के लिये भी निहायत कारआमद है।

स-ह़री करना सुन्नत है : ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के करोड़ हा करोड़ एह़सान कि उस ने हमें ***रोज़े*** जैसी अ़ज़ीमुश्शान ने'मत अ़त़ा फ़रमाई और साथ ही कु़व्वत के लिये ***स-ह़री*** की न सिर्फ़ इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाई, बल्कि इस में हमारे लिये ढेरों स़वाब भी रख दिया।

हमारे प्यारे आक़ा, म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर्चे खाने, पीने के हमारी त़रह़ मोह़ताज नहीं । ता हम हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम गुलामों की ख़ात़िर ***स-ह़री*** फ़रमाया करते ताकि मह़ब्बत वाले गुलाम अपने मोह़सिन आक़ा, शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत समझ कर ***स-ह़री*** कर लिया करें । यूं उन्हें दिन के वक़्त रोजे़ में कुव्वत के साथ साथ ***सुन्नत*** पर अ़मल करने का स़वाब भी हाथ आए ।

बा'ज़ इस्लामी भाइयों को देखा गया है कि कभी ***स-ह़री*** करने से रह जाते हैं तो फ़ख्ऱिया बातें बनाते हैं और यूं केहते सुनाई देते हैं, हम ने तो ***स-ह़री*** के बिगै़र ही रोज़ा रख लिया है । ***मक्की म-दनी आक़ा*** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ***दीवानो ! स-ह़री*** के बिगै़र रोज़ा रखना कोई कमाल तो नहीं जिस पर फ़ख्ऱ किया जा रहा है । बल्कि ***स-ह़री की सुन्नत*** छूटने पर नदामत होनी चाहिये, अफ़्सोस करना चाहिये कि ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक अ़ज़ीम सुन्नत छूट गई ।

हज़ार साल की इबादत से बेहतर : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना शैख़ श-रफु़द्दीन अल मा'रूफ़ बाबा बुलबुल शाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला ने मुझे अपनी रह़मत से इतनी त़ाक़त बख़्शी है कि मैं बिगै़र खाए पिये और बिगै़र साज़ो सामान के अपनी ज़िन्दगी गुज़ार सकता हूं । मगर चूंकि येह उमूर मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमियान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत नहीं

हैं, इस लिये मैं इन से बचता हूं, ***मेरे नज़्दीक सुन्नत की पैरवी हज़ार साल की इ़बादत से बेहतर है।"***

बहर ह़ाल तमाम तर आ'माल का ह़ुस्नो जमाल इत्तिबाए़ सुन्नते मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही में पिन्हां है।

सोने के बा'द स-ह़री की इजाज़त न थी : *इब्तिदाअन* रात को उठ कर ***स-ह़री*** करने की इजाज़त नहीं थी। रोज़ा रखने वाले को ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द सिर्फ़ उस वक़्त तक खाने पीने की इजाज़त थी जब तक वोह सो न जाए। अगर सो गया तो अब बेदार हो कर खाना पीना मम्नूअ़ था। मगर ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे बन्दों पर एह़साने अ़ज़ीम फ़रमाते हुए ***स-ह़री*** की इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा दी और इस का सबब यूं हुवा जैसा कि की ***ख़ज़ाइनुल इरफ़ान*** में ***स़दरुल*** अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी علیہ رحمۃ اللہ الھادی नक़्ल करते हैं :

स-ह़री की इजाज़त की ह़िकायत : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना स़रमा बिन क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا मेह़नती शख़्स़ थे। एक दिन ब ह़ालते ***रोज़ा*** अपनी ज़मीन में दिन भर काम कर के शाम को घर आए। अपनी ज़ौजए मोह़्तरमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا से खाना त़लब किया, वोह

पकाने में मस्रूफ़ हुईं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थके हुए थे, आंख लग गई । खाना तैयार कर के जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जगाया गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने खाने से इन्कार कर दिया । क्यूं कि उन दिनों (गुरूबे आफ़्ताब के बा'द) सो जाने वाले के लिये खाना पीना मम्नूअ़ हो जाता था । चुनान्चे खाए पिये बिग़ैर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दूसरे दिन भी ***रोज़ा*** रख लिया । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कमज़ोरी के सबब ***बेहोश*** हो गए । (तफ़्सीरल ख़ाज़िन, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:126) तो इन के ह़क़ में येह आयते मुक़द्दसा नाज़िल हुई :-

وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ اِلَى الَّيْلِ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: और खाओ और पियो यहां तक कि तुम्हारे लिये ज़ाहिर हो जाए सपेदी का डोरा सियाही के डोरे से पो फट कर । फिर रात आने तक रोज़े पूरे करो ।

(पारह:2, अल ब-क़रह 187)

इस आयते मुक़द्दसा में रात को सियाह डोरे से और सुब्ह़े स़ादिक़ को सफ़ेद डोरे से ***तश्बीह*** दी गई । मा'ना येह हैं कि तुम्हारे लिये र-मज़ानुल मुबारक की रातों में खाना पीना मुबाह़ (या'नी जाइज़) क़रार दे दिया गया है ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से येह भी मा'लूम हुवा

कि रोज़े का अज़ाने ***फ़ज्र*** से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं या'नी फ़ज्र की अज़ान के दौरान खाने पीने का कोई जवाज़ ही नहीं। अज़ान हो या न हो, आप तक आवाज़ पहुंचे या न पहुंचे सुब्हे स़ादिक़ होते ही आप को खाना पीना बिल्कुल ही बन्द करना होगा।

"स-ह़री सुन्नत है" के नौ ह़ुरूफ़ की निस्बत से स-ह़री के मु-तअ़ल्लिक़ 9 फ़रामीने मुस्त़फ़ा ﷺ

मदीना 1: ***स-ह़री*** खाया करो क्यूं कि स-ह़री में ब-र-कत है।

(स़ह़ीह़ मुस्लिम, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:633, ह़दीस़ :1923)

मदीना 2: ***हमारे*** और अहले किताब के दरमियान ***स-ह़री*** खाने का फ़र्क़ है।

(स़ह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:552, ह़दीस़:1096)

मदीना 3: ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते ***स-ह़री*** खाने वालों पर रह़मत नाज़िल फ़रमाते हैं। (अल एहसान बि तरतीब, स़ह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान, जिल्द:5, स़-फ़ह़ा:194, ह़दीस़:3458)

मदीना 4: ***नबिय्ये करीम,*** रऊफ़ुर्रह़ीम, मह़बूबे रब्बे अ़ज़ीम عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने साथ जब किसी स़ह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ***स-ह़री*** खाने के लिये बुलाते तो इर्शाद फ़रमाते, "आओ ब-र-कत का खाना खा लो।"

(सु-नने अबू दावूद, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:442, ह़दीस़:2344)

मदीना 5: ***रोज़ा*** रखने के लिये ***स-ह़री*** खा कर क़ुव्वत ह़ासिल करो

और दिन (या'नी दो पहर) के वक़्त आराम (या'नी क़ैलूला) कर के रात की इ़बादत के लिये त़ाक़त ह़ासिल करो।

(सु-नने इब्ने माजह, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:321, ह़दीस़:1693)

मदीना 6: ***स-ह़री*** ब-र-कत की चीज़ है जो अल्लाह तआ़ला ने तुम को अ़त़ा फ़रमाई है, इस को मत छोड़ना।

(अस्सुननुल कुब्रा, लिन्नसाई, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:79, ह़दीस़:2472)

मदीना 7: ***तीन³*** आदमी जितना भी खा लें اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ उन से कोई ह़िसाब न होगा बशर्ते कि खाना ह़लाल हो (1) रोज़ादार इफ़्त़ार के वक़्त (2) ***स-ह़री*** खाने वाले (3) मुजाहिद जो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के रास्ते में सरह़द्दे इस्लाम की ह़िफ़ाज़त करे। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:90, ह़दीस़:9)

मदीना 8: ***स-ह़री*** पूरी की पूरी ब-र-कत है पस तुम न छोड़ो चाहे येही हो कि तुम पानी का एक घूंट पी लो। बेशक ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते रह़मत भेजते हैं ***स-ह़री*** करने वालों पर।

(मुस्नदे इमाम अह़मद, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:88, ह़दीस़:11396)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बेचैन दिलों के चैन, रह़मते दारैन, ताजदारे ह़-रमैन, सरवरे कोनैन, नानाए ह़-सनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ وَرَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के इन तमाम फ़रामीन से हमें येही दर्स मिलता है कि ***स-ह़री*** हमारे

लिये एक अ़ज़ीम ने'मत है जिस से बे शुमार जिस्मानी और रूह़ानी फ़वाइद ह़ासिल होते हैं । इसी लिये आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे मुबारक नाश्ता कहा है । जैसा कि

मदीना 9: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना इ़र्बाज़ बिन सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ बयान करते हैं कि एक दफ़्आ़ र-मज़ानुल मुबारक में ***रसूलुल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे अपने साथ ***स-ह़री*** खाने के लिये बुलाया और फ़रमाया, ''आओ मुबारक नाश्ते के लिये ।''

(सु-नने अबू दावूद, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:442, ह़दीस़:2344)

क्या रोज़े के लिये स-ह़री शर्त़ है ? ***किसी*** को येह ग़लत़ फ़ह्मी न हो जाए कि ***स-ह़री*** रोज़े के लिये शर्त़ है । ऐसा नहीं ***स-ह़री*** के बिग़ैर भी ***रोज़ा*** हो सकता है । मगर जानबूझ कर ***स-ह़री*** न करना मुनासिब नहीं कि एक अ़ज़ीम सुन्नत से मह़रूमी है और येह भी याद रहे कि ***स-ह़री*** में खूब डट कर खाना ही ज़रूरी नहीं । चन्द खजूरें और पानी ही अगर ब निय्यते ***स-ह़री*** इस्ते'माल कर लें जब भी काफ़ी है बल्कि खजूर और पानी से तो ***स-ह़री*** करना सुन्नत भी है जैसा कि

खजूर और पानी से स-ह़री करना सुन्नत है : *ह़ज़रते* सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ताजदारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ***स-ह़री*** के वक़्त मुझ से फ़रमाते : "मेरा रोज़ा रखने का इरादा है मुझे कुछ खिलाओ । तो मैं कुछ खजूरें और एक बरतन में पानी पेश करता ।"

(अस्सुननुल कुब्रा लिन्नसाई, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:80, ह़दीस़:2477)

खजूर बेह्तरीन स-ह़री है : *मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !* मा'लूम हुवा कि रोज़ादार के लिये एक तो ***स-ह़री*** करना ब ज़ाते खुद ***सुन्नत*** है और खजूर और पानी से ***स-ह़री*** करना दूसरी सुन्नत बल्कि खजूर से ***स-ह़री*** करने की तो हमारे आक़ा व मौला, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तरग़ीब भी दिलाई है । चुनान्चे सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, ***अल्लाह*** के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया: "نِعْمَ السَّحُوْرُ التَّمْرُ या'नी खजूर बेह्तरीन ***स-ह़री*** है ।"

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:90, ह़दीस़:12)

एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया, نِعْمَ سَحُوْرُ الْمُؤْمِنِ التَّمْرُ "या'नी खजूर मो'मिन की बेह्तरीन ***स-ह़री*** है ।"

(सु-नने अबू दावूद, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:443, ह़दीस़:2345)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! खजूर और पानी का जम्अ़ करना भी ***स-ह़री*** के लिये शर्त़ नहीं सिर्फ़ थोड़ा सा पानी भी अगर ब निय्यते ***स-ह़री*** पी लिया जाए तो इस से भी ***स-ह़री की सुन्नत*** अदा हो जाएगी ।

स-ह़री का वक़्त कब होता है ? : ***अ़-रबी*** की मशहूर किताबे लुग़त "क़ामूस" में है कि ***स-ह़री*** उस खाने को केहते हैं जो सुब्ह़ के वक़्त खाया जाए ।" ह़-नफ़ियों के ज़बरदस्त पेश्वा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ली बिन सुल्त़ान मुह़म्मद अल मा'रूफ़ मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं, "बा'ज़ों के नज़्दीक ***स-ह़री*** का वक़्त ***आधी रात*** से शुरूअ़ हो जाता है ।"

(मिर्क़ातुल मफ़ातीह शरहे मिश्कातुल मस़ाबीह़, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:477)

स-ह़री में ताख़ीर अफ़्ज़ल है जैसा कि ह़दीस़े मुबारक में आता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना या'ला बिन मुर्रा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि प्यारे सरकार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: "तीन चीज़ों को ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ मह़बूब रखता है (1) इफ़्त़ार में जल्दी (2) ***स-ह़री*** में ताख़ीर और (3) नमाज़ (के क़ियाम) में हाथ पर हाथ रखना ।"

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:91, ह़दीस़:4)

स-ह़री में ताख़ीर से कौन सा वक़्त मुराद है ? :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! स-ह़री में ताख़ीर करना मुस्तह़ब है और देर से ***स-ह़री*** करने में ज़ियादा स़वाब मिलता है। मगर इतनी ताख़ीर भी न की जाए कि सुब्ह़े स़ादिक़ का शुबा होने लगे ! यहां ज़ेह्न में येह सुवाल पैदा होता है कि ''ताख़ीर'' से मुराद कौन सा वक़्त है ? मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ''तफ़्सीरे नईमी'' में फ़रमाते हैं कि इस से मुराद ***रात का छटा ह़िस़्स़ा*** है । फिर सुवाल ज़ेह्न में उभरा कि रात का छटा ह़िस़्स़ा कैसे मा'लूम किया जाए ? इस का जवाब येह है कि ***ग़ुरूबे आफ़्ताब से ले कर सुब्ह़े स़ादिक़ तक रात केहलाती है ।*** म-स़लन किसी दिन ***सात***[7] बजे शाम को सूरज ग़ुरूब हुवा और फिर ***चार*** बजे सुब्ह़े स़ादिक़ हुई । इस त़रह़ ग़ुरूबे आफ़्ताब से ले कर सुब्ह़े स़ादिक़ तक जो नौ घन्टे का वक़्फ़ा गुज़रा वोह रात केहलाया । अब रात के इन नौ घन्टों के बराबर बराबर छे[6] ह़िस़्स़े कर दीजिये । हर ह़िस़्स़ा ***डेढ़ घन्टे*** का हुवा अब रात के आख़िरी डेढ़ घन्टे (या'नी अढ़ाई बजे ता चार बजे) के दौरान सुब्ह़े स़ादिक़ से पहले पहले जब भी ***स-ह़री*** की, वोह ताख़ीर से करना हुवा । ***स-ह़री*** व इफ़्त़ार का वक़्त उ़मूमन रोज़ाना तब्दील होता रहता है । बयान किये हुए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ जब भी चाहें रात का छटा[6] ह़िस़्स़ा निकाल सकते हैं अगर रात

स-ह़री कर ली और रोज़े की निय्यत भी कर ली । बल्कि अ़वामी इस्त़िलाह़ में "रोज़ा बन्द" भी कर लिया फिर भी बक़िय्या रात में जब चाहें खा पी सकते हैं । नई निय्यत की ह़ाजत नहीं ।

अज़ाने फ़ज्र नमाज़ के लिये है न कि रोज़ा बन्द करने के लिये ! : ***स-ह़री*** में इतनी ताख़ीर भी न कर दें कि सुब्ह़े स़ादिक़ का शक होने लगे । बल्कि बा'ज़ लोग तो सुब्ह़े स़ादिक़ के बा'द फ़ज्र की अज़ानें हो रही होती हैं मगर खाते पीते रहते हैं । और कान लगा कर सुनते हैं कि अभी फुलां मस्जिद की अज़ान ख़त्म नहीं हुई या वोह सुनो ! दूर से अज़ान की आवाज़ आ रही है ! और यूं कुछ न कुछ खा लेते हैं । अगर खाते नहीं तो पानी पी कर अपनी इस्त़िलाह़ में "रोज़ा बन्द" ज़रूर करते हैं । आह ! इस त़रह़ "रोज़ा बन्द" तो क्या करेंगे रोज़े को बिल्कुल ही "खुला" छोड़ देते हैं और यूं उन का रोज़ा होता ही नहीं और सारा दिन भूक प्यास के सिवा कुछ हाथ आता ही नहीं । "रोज़ा बन्द" कर ने का तअ़ल्लुक़ अज़ाने फ़ज्र से नहीं । सुब्ह़े स़ादिक़ से पहले पहले खाना पीना बन्द करना ज़रूरी है । जैसा कि आयते मुक़द्दसा के तह़त गुज़रा । ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हर मुसल्मान को अ़क़्ले सलीम अ़त़ा फ़रमाए और स़ह़ीह़ अवक़ात की मा'लूमात कर के रोज़ा नमाज़ वग़ैरा इ़बादात स़ह़ीह़ स़ह़ीह़ बजा लाने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमाए ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उसने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया।

खाना पीना बन्द कर दीजिये : *आजकल* इ़ल्मे दीन से दूरी के सबब आ़म त़ौर पर लोगों का येही मा'मूल देखा गया है कि वोह अज़ान या साइरन ही पर ***स-ह़री*** व इफ़्त़ार का दारो मदार रखते हैं। बल्कि बा'ज़ तो अज़ाने फ़ज्र के दौरान ही "रोज़ा बन्द" करते हैं। इस आ़म ग़-लत़ी को दूर करने के लिये क्या ही अच्छा हो कि र-मज़ानुल मुबारक में रोज़ाना सुब्हे़ सा़दिक़ से तीन[3] मिनट पहले हर मस्जिद में बुलन्द आवाज़ से صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد केहने के बा'द इस त़रह़ तीन[3] बार ए'लान कर दिया जाए, ***"रोज़ा रखने वालो ! आज*** स-ह़री ***का आख़िरी वक़्त (म-स़लन) चार बज कर बारह मिनट है। वक़्त ख़त्म हो रहा है, फ़ौरन खाना पीना बन्द कर दीजिये। अज़ान का हरगिज़ इन्तिज़ार न फ़रमाइये, अज़ान*** स-ह़री ***का वक़्त ख़त्म हो जाने के बा'द नमाज़े फ़ज्र के लिये दी जाती है।"*** हर एक को येह बात ज़ेह्न नशीन करनी ज़रूरी है कि अज़ाने ***फ़ज्र*** लाज़िमी त़ौर पर सुब्हे़ सा़दिक़ के बा'द ही होती है और वोह "रोज़ा बन्द" करने के लिये नहीं बल्कि सिर्फ़ ***नमाज़े फ़ज्र*** के लिये दी जाती है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-दनी क़ाफ़िले की निय्यत करते ही मुश्किल आसान हो गई ! : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र फ़रमाते रहिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां हाथ आएंगी । आप की ज़ौक़ अफ़्ज़ाई के लिये म-दनी क़ाफ़िले की एक बहार गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे लांढी (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई का बयान बित्तसर्रुफ़ अ़र्ज़ करता हूं : मेरे बड़े भाई की शादी के दिन क़रीब आ रहे थे, अख़राजात का इन्तिज़ाम नहीं था, मुझे सख़्त तश्वीश थी, क़र्ज़ लेने का ज़ेहन भी नहीं बन रहा था कि अदा करने में ताख़ीर की सूरत में मेरी जान से प्यारी म-दनी तह़रीक ***दा'वते इस्लामी*** के नाम पर बट्टा लग सकता है । एक दिन इन्तिहाई परेशानी के आ़लम में नमाज़े ज़ोहर अदा की और दिल ही दिल में निय्यत की कि अगर रक़म का इन्तिज़ाम हो गया तो ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल करूंगा । नमाज़ से फ़राग़त के बा'द अभी नमाज़ियों से मुलाक़ात और ***इन्फ़िरादी कोशिश*** में मस्रूफ़ था कि इमाम स़ाह़िब जो रिश्ते में मेरे ताया जान हैं और मेरी परेशानी से वाक़िफ़ भी । उन्हों ने मुझे बुलाया और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बिग़ैर सुवाल के ख़ुद ही

रक़म देने का वा'दा फ़रमा लिया । मैं दूसरे ही दिन ***म-दनी क़ाफ़िले*** का मुसाफ़िर बन गया । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र की निय्यत की ब-र-कत से मेरी उल्झन दूर हो गई । तारीख़ तै़ होते वक़्त हम बारे क़र्ज़ तले दबे हुए थे اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बड़े भाई जान की शादी भी हो गई और क़र्ज़ भी उतर गया ।

क़ल्ब भी शाद हो, घर भी आबाद हो शादियां भी रचें, क़ाफ़िले में चलो
क़र्ज़ उतर जाएगा, ज़ख़्म भर जाएगा सब बलाएं टलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! छोटे भाई की म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की ब-र-कत से अदाए क़र्ज़ का इन्तिज़ाम, रक़म का एहतिमाम और बड़े भाई की शादी वाला काम हो गया ।

क़र्ज़ से नजात का अ़मल : *हर* नमाज के बा'द सात बार सूरए कुरैश (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दुआ़ मांगिये । पहाड़ जितना क़र्ज़ होगा तब भी اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अदा हो जाएगा अ़मल ता हुसूले मुराद जारी रखिये ।

क़र्ज़ा उतारने का वज़ीफ़ा

اَللّٰھُمَّ اکْفِنِیْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِیْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ

(*तर्जमा:* या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे ह़लाल रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा कर ह़राम से बचा और अपने फ़ज़्लो करम से अपने सिवा ग़ैरों से बे नियाज़ कर दे) ता हुसूले मुराद हर नमाज़ के बा'द 11, 11 बार और सुब्ह़ो शाम 100,100 बार रोज़ाना (अव्वल व आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़िये। मरवी हुवा कि एक मुकातब[1] ने ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की बारगाह में अ़र्ज़ की : ''मैं अपनी कताबत (या'नी आज़ादी की क़ीमत) अदा करने से आ़जिज़ हूं मेरी मदद फ़रमाइये।'' आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : ''मैं तुम्हें चन्द कलिमात न सिखाऊं जो ***रसूलुल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे सिखाए हैं, अगर तुम पर ज-बले स़ीर[2] जितना दैन (या'नी क़र्ज़) होगा तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी त़रफ़ से अदा कर देगा, तुम यूं कहा करो, ''

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِىْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَ اَغْنِنِىْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ

(तर्जमा: या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे ह़लाल रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा कर ह़राम से बचा और अपने फ़ज़्लो करम से अपने सिवा ग़ैरों से बे नियाज़ कर दे)''

(जामेए़ तिरमिज़ी, जिल्द:5, स़-फ़ह़ा:329, ह़दीस़:3574)

म-दनी इल्तिजा: अ़मल शुरूअ़ करने से क़ब्ल हुज़ूरे ग़ौसे़ आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم के ईस़ाले स़वाब के लिये कम अज़ कम ग्यारह रूपै की नियाज़ और काम हो जाने की सूरत में कम अज़ कम पचीस रूपै की

---

1. मुकातब उस गुलाम को केहते हैं जिस ने अपने आक़ा से माल की अदाएगी के बदले आज़ादी का मुआ़-हदा किया हुवा हो। (अल मुख़्तस़र अल क़ुदूरी, किताबुल मुकातब, स़-फ़ह़ा:376) 2. स़ीर एक पहाड़ का नाम है। (अन्नहाया, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:61)

नियाज़ इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ईसा़ले स़वाब के लिये तक़्सीम कीजिये । (मज़्कूरा रक़म की दीनी किताबें भी तक़्सीम की जा सकती हैं)

सुब्ह़ो शाम की ता'रीफ़: आधी रात के बा'द से ले कर सूरज की पहली किरन चमकने तक ***सुब्ह़*** और इब्तिदाए वक़्ते ज़ोहर से गुरूबे आफ़्ताब तक ***शाम*** केहलाती है । ***म-दनी मश्वरा:*** परेशान ह़ाल इस्लामी भाई को चाहिये कि ***दा'वते इस्लामी*** के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले में ***आ़शिक़ाने रसूल*** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर के वहां दुआ़ मांगे, अगर ख़ुद मजबूर है म-स़लन इस्लामी बहन है तो अपने घर में से किसी और को सफ़र पर भिजवाए ।

इफ़्त़ार का बयान :

जब गुरूबे आफ़्ताब का यक़ीन हो जाए, इफ़्त़ार करने में देर नहीं करनी चाहिये । न साइरन का इन्तिज़ार कीजिये, न अज़ान का । फ़ौरन कोई चीज़ खा या पी लीजिये मगर ***खजूर*** या छूहारा या पानी से इफ़्त़ार करना सुन्नत है । ***खजूर*** खा कर या पानी पी लेने के बा'द येह दुआ़ पढ़िये :[1]

1. इफ़्त़ार की दुआ़ उ़मूमन क़ब्ल अज़ इफ़्त़ार पढ़ने का रवाज है मगर इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने ''फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:10, स-फ़ह़ा:631'' में अपनी तह़क़ीक़ येही पेश की है कि दुआ़ इफ़्त़ार के बा'द पढ़ी जाए ।

इफ़्त़ार की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ لَكَ صُمْتُ وَبِكَ اٰمَنْتُ وَعَلَیْكَ تَوَكَّلْتُ وَعَلٰی رِزْقِكَ اَفْطَرْتُ۔

तर्जमा: ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने तेरे लिये रोज़ा रखा और तुझ पर ईमान लाया और तुझी पर भरोसा किया और तेरे दिये हुए रिज़्क़ से रोज़ा इफ़्त़ार किया।

(आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:200)

इफ़्त़ार के लिये अज़ान शर्त़ नहीं : ***इफ़्त़ार*** के लिये अज़ान शर्त़ नहीं। वरना उन अ़लाक़ों में रोज़ा कैसे खुलेगा जहां मसाजिद ही नहीं या अज़ान की आवाज़ नहीं आती। बहर ह़ाल मग़रिब की अज़ान नमाज़े मग़रिब के लिये होती है। जहां मसाजिद हों वहां काश येह त़रीक़ए कार राइज हो जाए कि जैसे ही आफ़्ताब ग़ुरूब होने का यक़ीन हो जाए। बुलन्द आवाज़ से "صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد" केहने के बा'द इस त़रह़ तीन3 बार ए'लान कर दिया जाए:

"रोज़ादारो ! रोज़ा इफ़्त़ार कर लीजिये"

"या ग़ौस़ल आ'ज़म" के ग्यारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से इफ़्त़ार के 11 फ़ज़ाइल

मदीना 1: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना सह्ल बिन सअ़्द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से

रिवायत है कि बह़रो बर्र के बादशाह, दो[2] आ़लम के शहन्शाह, उम्मत के ख़ैरख़्वाह, आमेना के महरो माह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمْ وَ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाते हैं, "हमेशा लोग ख़ैर के साथ रहेंगे जब तक इफ़्त़ार में जल्दी करेंगे ।"

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:645, ह़दीस़:1957)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जैसे ही ग़ुरूबे आफ़्त़ाब का यक़ीन हो जाए बिला ताख़ीर खजूर या पानी वग़ैरा से रोज़ा खोल लें और दुआ़ भी अब रोज़ा खोल कर मांगें ताकि इफ़्त़ार में किसी क़िस्म की ताख़ीर न हो ।

मदीना 2: ***सरकारे*** नामदार, दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुश्कबार है : "मेरी उम्मत मेरी सुन्नत पर रहेगी जब तक इफ़्त़ार में सितारों का इन्तिज़ार न करे ।"

(अल एह़सान बितरतीब स़ह़ीह़ इब्ने ह़िब्बान, जिल्द:5, स़-फ़ह़ा:209, ह़दीस़:3501)

मदीना 3: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, सुल्त़ाने दो[2] जहान, मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमियान, सरवरे ज़ी शान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "मेरे बन्दों में मुझे ज़ियादा प्यारा वोह है जो इफ़्त़ार में जल्दी करता हैं ।"

(तिरमिज़ी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:164, ह़दीस़:700)

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का प्यारा बनना है तो इफ़्त़ार के वक़्त किसी क़िस्म की मश्गूलिय्यत मत रखिये, बस फ़ौरन इफ़्त़ार कर लीजिये ।

मदीना 4: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, मैं ने ***अल्लाह*** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कभी इस त़रह़ नहीं देखा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इफ़्त़ार से पहले नमाज़े मग़रिब अदा फ़रमाई हो, चाहे एक घूंट पानी ही होता । (आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस से इफ़्त़ार फ़रमाते।) (अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:91, ह़दीस़:91)

मदीना 5: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, बि इज़्ने परवर्द गार दो[2] जहां के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है: ''येह दीन हमेशा ग़ालिब रहेगा जब तक लोग इफ़्त़ार में जल्दी करते रहेंगे कि यहूदो नस़ारा ताख़ीर करते हैं ।''

(सु-नने अबू दावूद, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:446, ह़दीस़:2353)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीस़े पाक में भी इफ़्त़ार में ताख़ीर करने पर ना पसन्दीदगी का इज़्हार किया गया है । और इफ़्त़ार में ताख़ीर करना

चूंकि यहूदो नस़ारा का फ़े'ल है इस लिये इन की मुशा–बहत (या'नी नक़्ल) से रोका गया है।

मदीना 6: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद ***जु–हनी*** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे मदीनए मुनव्वरा, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया:

مَنْ جَهَّزَ غَازِياً اَوْحَاجًّا اَوْ خَلَفَهٗ فِیْ اَهْلِهٖ اَوْ فَطَّرَ صَائِماً كَانَ لَهٗ مِثْلُ اَجْرِهٖ مِنْ غَيْرِ اَنْ يَّنْقُصَ مِنْ اُجُوْرِهِمْ شَیْءٌ

तर्जमा: जिस ने किसी ग़ाज़ी या ह़ाजी को सामान (ज़ादेराह) दिया या उस के पीछे उस के घर वालों की देख भाल की या किसी रोज़ादार का रोज़ा इफ़्त़ार करवाया तो उसे भी उन्हीं की मिस़्ल अज्र मिलेगा बिग़ैर इस के कि उन के अज्र में कुछ कमी हो।

(अस्सुननुल कुब्रा लिन्नसाई, जिल्द:2, स़–फ़ह़ा:256, ह़दीस़:3330)

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! कितनी प्यारी बिशारत है कि ग़ाज़ी को सामाने जिहाद फ़राहम करने वाले को ग़ाज़ी जैसा, ह़ज पर जाने वाले की माली मदद करने पर ह़ाजी जैसा और इफ़्त़ार करवाने वाले को रोज़ादार जैसा स़वाब दिया जाएगा और करम बालाए करम येह कि उन लोगों के स़वाब में भी कोई कमी नहीं होगी। **ذَالِكَ فَضْلُ اللّٰه** عَزَّوَجَلَّ मगर येह हुक्मे शरीअ़त याद रखिये कि ह़ज्जो उ़म्रा

के लिये सुवाल करना ह़राम है और इस सुवाल करने वाले को देना भी गुनाह है ।

इफ़्त़ार करवाने की अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ीलत

मदीना 7: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना सल्मान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हु़जू़रे अनवर, शाफ़ेए़ महृशर, मदीने के ताजवर, बि इज़्ने रब्बे अक्बर ग़ैबों से बा ख़बर, महृबूबे दावर عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है : "जिस ने ह़लाल खाने या पानी से (किसी मुसल्मान को) रोज़ा इफ़्त़ार करवाया, फ़िरिश्ते माहे र-मज़ान के अवक़ात में उस के लिये ***इस्तिग़फ़ार*** करते हैं और जिब्रील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام शबे क़द्र में उस के लिये ***इस्तिग़फ़ार*** करते हैं ।"

(त़-बरानी अल मो'जमुल कबीर, जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:262, ह़दीस़:6162)

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! कु़रबान जाइये ***अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त*** عَزَّوَجَلَّ की इ़नायत व रह़मत पर कि कोई मुसल्मान माहे र-मज़ान में अगर किसी रोज़ादार को एक आध ***खजूर*** खिला कर या पानी का एक घूंट पिला कर रोज़ा इफ़्त़ार करवा दे तो उस के लिये ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के

मा'सूम फ़िरिश्ते र-मज़ानुल मुबारक के अवक़ात में और फ़िरिश्तों के सरदार ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام शबे क़द्र में दुआ़ए मग़्फ़िरत फ़रमाते हैं । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ

जिब्रीले अमीन के मुसाफ़ह़ा करने की अ़लामत

मदीना 8: ***एक*** रिवायत में आता है, "जो ह़लाल कमाई से र-मज़ान में रोज़ा इफ़्त़ार करवाए । र-मज़ान की तमाम रातों में फ़िरिश्ते उस पर दुरूद भेजते हैं और शबे क़द्र में जिब्रील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उस से ***मुसा-फ़ह़ा*** करते हैं । और जिस से जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ***मुसा-फ़ह़ा*** कर लें उस की आंखें (ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से) अश्कबार हो जाती हैं और उस का दिल नर्म हो जाता है ।

(कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:215, ह़दीस़:23653)

रोज़ादार को पानी पिलाने की फ़ज़ीलत

मदीना 9: ***एक*** और रिवायत में है, "जो रोज़ादार को पानी पिलाएगा ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उसे मेरे ह़ौज़ से पिलाएगा कि जन्नत में दाख़िल होने तक पियासा न होगा ।"

(स़ह़ीह़ इब्ने ख़ुज़ैमा, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:192, ह़दीस़:1887)

मदीना 10: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना सल्मान बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, ख़ा-तमुल मुर्सलीन, ***रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन,*** शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल गरीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ़-लमीन जनाबे सा़दिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है: "जब तुम में कोई रोज़ा इफ़्त़ार करे तो ***खजूर*** या छूहारे से इफ़्त़ार करे कि वोह ब-र-कत है और अगर न मिले तो पानी से कि वोह पाक करने वाला है।"

(जामेए़ तिरमिज़ी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:162, अल ह़दीस़:695)

इस ह़दीसे़ पाक में येह तरग़ीब दिलाई गई है कि हो सके तो ***खजूर*** या छूहारे से इफ़्त़ार किया जाए कि येह सुन्नत है और अगर ***खजूर*** मुयस्सर न हो तो फिर पानी से इफ़्त़ार कर लीजिये कि येह भी पाक करने वाला है।

मदीना 11: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है "त़बीबों के त़बीब, अल्लाह के ह़बीब, ह़बीबे लबीब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ से पहले तर ***खजूरों*** से रोज़ा इफ़्त़ार फ़रमाते, तर ***खजूरें*** न होतीं तो चन्द ख़ुश्क ***खजूरें*** या'नी छूहारों से और येह भी न होतीं तो चन्द चुल्लू पानी पीते।

(सु-नने अबू दावूद, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:447, ह़दीस़:2356)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जो मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा।

इस ह़दीसे़ पाक में इर्शाद फ़रमाया गया है कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अव्वलन तर ***खजूर*** से रोज़ा इफ़्त़ार करना पसन्द फ़रमाते अगर येह ह़ाज़िर न होतीं तो फिर छूहारों से, येह भी अगर मौजूद न होते तो फिर पानी से रोज़ा इफ़्त़ार फ़रमाते। लिहाज़ा हमारी पहली कोशिश येह होनी चाहिये कि हमें इफ़्त़ार के लिये मीठी मीठी तर ***खजूर*** मिल जाए जो कि मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नत है। येह भी न मिले तो फिर छूहारा और येह भी मुयस्सर न हो तो फिर अब पानी से रोज़ा इफ़्त़ार कर लें।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अह़ादीसे़ मुबा-रका में ***स-ह़री*** और इफ़्त़ार में ***खजूर*** के इस्ते'माल की काफ़ी तरग़ीब मौजूद है। ***खजूर*** खाना, इस को भिगो कर इस का पानी पीना, इस से इ़लाज तज्वीज़ करना येह सब सुन्नतें हैं। अल ग़रज़ इस में ला ता'दाद ब-र-कतें और बे शुमार बीमारियों का इ़लाज है।

"सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत की पच्चीस्वीं शरीफ़" के पच्चीस हुरूफ़ की निस्बत से खजूर के 25 म-दनी फूल

मदीना 1: ***त़बीबों*** के त़बीब, अल्लाह के ह़बीब, ह़बीबे लबीब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़ह़त निशान है, आ़ली रुत्बा ***अ़ज्वा*** (मदीनए मुनव्वरा की

सब से अ़ज़ीम ***खजूर*** का नाम) में हर बीमारी से शिफ़ा है। अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी ह़-नफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की रिवायत के मुताबिक़ "सात रोज़ तक रोज़ाना सात अ़दद ***अ़ज्वा खजूर*** खाना जुज़ाम (या'नी कोढ़) को रोकता है।"

(उ़म्दतुल क़ारी, जिल्दः14, स़-फ़ह़ाः446, ह़दीस़ः5768)

मदीना 2: ***मीठे*** मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है, ***अ़ज्वा खजूर*** जन्नत से है, इस में ज़हर से शिफ़ा है। (जामेए़ तिरमिज़ी, जिल्दः4, स़-फ़ह़ाः17, ह़दीस़ः2073) बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत के मुताबिक़ जिस ने नहार मुंह ***अ़ज्वा खजूर*** के सात[7] दाने खा लिये उस दिन उसे जादू और ज़हर भी नुक़्स़ान न दे सकेंगे।

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः540, ह़दीस़ः5445)

मदीना 3: ***सय्यिदुना*** अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, ***खजूर*** खाने से कूलन्ज[1] (या'नी बड़ी अन्तड़ी का दर्द) नहीं होता।

(कन्जुल उ़म्माल, जिल्दः10, स-फहाः12, हदीसः24191)

मदीना 4: ***त़बीबों*** के त़बीब, अल्लाह के ह़बीब, ह़बीबे लबीब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शिफ़ा निशान है, नहार मुंह ***खजूर*** खाओ इस से पेट के

---

1. कूलन्ज को इंग्रेज़ी में एपेन्डिक्स (APPENDIX) केहते हैं।

कीड़े मर जाते हैं ।

(अल जामिउ़स्स़ग़ीर, स़-फ़ह़ा:398, ह़दीस़:6394)

मदीना 5: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुस़ीम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, "मेरे नज़्दीक ह़ामिला के लिये ***खजूर*** से और मरीज़ के लिये शहद से बेहतर किसी चीज़ में शिफ़ा नहीं ।" (दुर्रे मन्सूर, जिल्द:5, स़-फ़ह़ा:505)

मदीना 6: ***सय्यिदी*** मुह़म्मद अह़मद ज़हबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं, ह़ामिला को ***खजूरें*** खिलाने से اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ लड़का पैदा होगा जो कि ख़ूबसूरत बुर्द बार और नर्म मिज़ाज होगा ।

मदीना 7: ***जो*** फ़ाक़े की वजह से कमज़ोर हो गया हो उस के लिये ***खजूर*** बहुत मुफ़ीद है क्यूं कि येह ग़िज़ाइय्यत से भरपूर है । इस के खाने से जल्द तवानाई बह़ाल हो जाती है । लिहाज़ा ***खजूर*** से इफ़्त़ार करने में येह ह़िक्मत भी है ।

मदीना 8: ***रोज़े*** में फ़ौरन बर्फ़ का ठन्डा पानी पी लेने से गेस, तब्ख़ीरे मे'दा और जिगर के वरम का सख़्त ख़त़रा है । ***खजूर*** खा कर ठन्डा पानी पीने से नुक़्स़ान का ख़त़रा टल जाता है, मगर सख़्त ठन्डा पानी पीना हर वक़्त नुक़्स़ान देह है ।

मदीना 9: ***खजूर*** और ***खीरा*** या ककड़ी, नीज़ ***खजूर*** और ***तरबूज़*** एक साथ खाना सुन्नत है । इस में भी ह़िक्मतों

के म–दनी फूल हैं । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारे अ़मल के लिये तो इस का सुन्नत होना ही काफ़ी है । अत़िब्बा का केहना है कि इस से जिन्सी व जिस्मानी कमज़ोरी और दुबला पन दूर होता है । ह़दीसे़ पाक में है, ***"मख्खन*** के साथ ***खजूर*** खाना भी सुन्नत है ।" (सु–नने इब्ने माजह, जिल्द:4, स़–फ़ह़ा:41, ह़दीस़:3334) ब–यक वक़्त पुरानी और ताज़ा ***खजूरें*** खाना भी सुन्नत है । इब्ने माजह में है, जब शैत़ान किसी को ऐसा करता देखता है तो अफ़्सोस करता है कि पुरानी के साथ नई ***खजूर*** खा कर आदमी तनू मन (या'नी मज़्बूत़ जिस्म वाला) हो गया ।

(सु–नने इब्ने माजह, जिल्द:4, स़–फ़ह़ा:40, ह़दीस़:3330)

मदीना 10: ***खजूर*** खाने से पुरानी क़ब्ज़ दूर होती है ।

मदीना 11: ***दमा,*** दिल, गुर्दा, मसाना, पित्ता और आंतों के अम्राज़ में ***खजूर*** मुफ़ीद है । येह बल्ग़म ख़ारिज करती, मुंह की ख़ुश्की को दूर करती, क़ुव्वते बाह बढ़ाती और पेशाब आवर है ।

मदीना 12: ***दिल*** की बीमारी और काला मोतिया के लिये ***खजूर*** को ***गुठली*** समेत कूट कर खाना मुफ़ीद है ।

मदीना 13: ***खजूर*** को भिगो कर इस का पानी पी लेने से जिगर की बीमारियां दूर होती हैं । दस्त की बीमारी में भी येह पानी मुफ़ीद है । (रात को भिगो कर सुब्ह़ नहार मुंह

इस का पानी पियें मगर भिगोने के लिये फ़्रीज़र में न रखें।)

मदीना 14: ***खजूर*** को दूध में उबाल कर खाना बेह्तरीन मुक़व्वी (या'नी त़ाक़त देने वाली) ग़िज़ा है। येह ग़िज़ा बीमारी के बा'द की कमज़ोरी दूर करने के लिये बेह़द मुफ़ीद है।

मदीना 15: ***खजूर*** खाने से ज़ख़्म जल्दी भरता है।

मदीना 16: ***यरक़ान*** (या'नी पीलिया) के लिये ***खजूर*** बेह्तरीन दवा है।

मदीना 17: ***ताज़ा*** पकी हुई ***खजूरें*** स़फ़रा (या'नी "पित" जिस में क़ै के ज़रीए़ कड़वा पानी निकलता है) और तेज़ाबिय्यत (ACIDITI) को ख़त्म करती हैं।

मदीना 18: ***खजूर*** की गुठलियों को आग में जला कर इस का मन्जन बना लीजिये। येह दांतों को चमकदार और मुंह की बदबू को दूर करता है।

मदीना 19: ***खजूर*** की जली हुई गुठलियों की राख लगाने से ज़ख़्म का खून बन्द होता और ज़ख़्म भर जाता है।

मदीना 20: ***खजूर*** की गुठलियों को आग में डाल कर धूनी लेना बवासीर के मस्सों को खुश्क करता है।

मदीना 21: ***खजूर*** के दरख़्त की जड़ों या पत्तों की राख से मन्जन

करना दांतों के दर्द के लिये मुफ़ीद है। जड़ों या पत्तों को पानी में उ़बाल कर इस से कुल्लियां करना भी दांतों के दर्द में फ़ाइदे मन्द है।

मदीना 22: ***जिस*** को ***खजूर*** खाने से किसी क़िस्म का नुक़्सान (SIDE EFECT) होता हो तो अनार का रस, या ***ख़शख़ाश*** या काली मिर्च के साथ इस्ते'माल करे اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाइदा होगा।

मदीना 23: ***अध*** पकी और पुरानी ***खजूरें*** ब-यक वक़्त खाना नुक़्सान देह है। इसी त़रह़ ***खजूर*** के साथ अंगूर या ***किशमिश*** या मुनक़्क़ा मिला कर खाना, ***खजूर*** और अन्जीर ब-यक वक़्त खाना, बीमारी से उठते ही कमज़ोरी में ज़ियादा ***खजूरें*** खाना और आंखों की बीमारी में खजूरें खाना मुज़िर या'नी नुक़्सान देह है।

मदीना 24: ***एक*** वक़्त में 5 तोला (या'नी तक़रीबन 60 ग्राम) से ज़ियादा ***खजूरें*** न खाएं। पुरानी ***खजूर*** खाते वक़्त खोल कर अन्दर से देख लीजिये क्यूं कि इस में बा'ज़ अवक़ात सुरसुरियां (या'नी छोटे छोटे लाल कीड़े) होती हैं लिहाज़ा साफ़ कर के खाइये। जिस ***खजूर*** में कीड़े होने का गुमान हो उस को साफ़ किये बिग़ैर खाना मकरूह है।

(ओ़नुल मा'बूद, जिल्द:10, स़-फ़ह़ा:246) बेचने वाले चमकाने के लिये अक्स़र सरसों का तेल लगा देते हैं। लिहाज़ा बेहतर येह है कि खजूरों को चन्द मिनट के लिये पानी में भिगो दें। ताकि मख्खियों की बीट, और मैल कुचैल छूट जाए। फिर धो कर इस्ते'माल फ़रमाएं। दरख़्त की पकी हुई खजूरें ज़ियादा मुफ़ीद होती हैं।

मदीना 25: ***मदीनए*** मुनव्वरा زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً की ***खजूरों*** की गुठलियां मत फेंकिये। किसी अदब की जगह डाल दीजिये या दरया बुर्द फ़रमा दीजिये, बल्कि हो सके तो सरौते से बारीक टुकड़ियां कर के डिबिया में डाल कर जेब में रख लीजिये और छालिया की जगह इस्ते'माल कर के इस की ब-र-कतें लूटिये। कोई चीज़ ख़्वाह दुन्या के किसी भी ख़ित़्त़े की हो जब मदीनए मुनव्वरा زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً की फ़ज़ाओं में दाख़िल हुई तो मदीने की हो गई लिहाज़ा उ़श्शाक़ उस का अदब करते हैं।

इफ़्तार के वक़्त दुआ़ क़बूल होती है : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** रोज़ादार कितना खुशनसीब है कि हर वक़्त ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करता रहता है। यहां तक कि इफ़्तार के वक़्त वोह जो भी दुआ़ मांगता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपने फ़ज़्लो करम से क़बूल

फ़रमाता है । चुनान्चे सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि इमामुल मु–तवक्किलीन, सय्यिदुल क़ानिईन, रह़मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है,

"اِنَّ لِلصَّائِمِ عِنْدَ فِطْرِہٖ لَدَعْوَۃً مَّاتُرَدُّ". ***तर्जमा:*** बेशक रोज़ादार के लिये इफ़्त़ार के वक़्त एक ऐसी दुआ़ होती है जो रद नहीं की जाती ।"

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:2, स़–फ़ह़ा:53, ह़दीस़:29)

सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सख़ावत, सरापा रह़मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर अ़–ज़मत है, "तीन[3] शख़्स़ों की दुआ़ रद नहीं की जाती (1) एक रोज़ादार की ब वक़्ते इफ़्त़ार (2) दूसरे बादशाहे आ़दिल की और (3) तीसरे मज़्लूम की । इन तीनों[3] की दुआ़ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ बादलों से भी ऊपर उठा लेता है और आस्मान के दरवाज़े उस के लिये खुल जाते हैं और ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, "मुझे मेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मैं तेरी ज़रूर मदद फ़रमाऊंगा अगर्चे कुछ देर बा'द हो ।"

(सु–नने इब्ने माजह, जिल्द:2, स़–फ़ह़ा:349, ह़दीस़:1752)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हम खाने पीने में रह जाते हैं : ***प्यारे रोज़ादारो !*** आप को मुबारक हो कि आप के लिये येह बिशारत है कि इफ़्त़ार के वक़्त जो कुछ दुआ़ मांगोगे वोह द-र-जए क़बूलिय्यत तक पहुंच कर रहेगी । मगर अफ़्सोस कि आजकल हमारी ह़ालत कुछ ऐसी अ़जीब हो चुकी है कि न पूछो बात ! इफ़्त़ार के वक़्त हमारा नफ़्स बड़ी सख़्त आज़्माइश में पड़ जाता है । क्यूं कि उ़मूमन इफ़्त़ार के वक़्त हमारे आगे अन्वाअ़ व अक़्साम के फलों, कबाब, समोसों, पकोड़ों के साथ साथ गरमी का मौसिम हो तो ठन्डे ठन्डे शरबत के जाम भी मौजूद होते हैं । भूक और प्यास की शिद्दत के सबब हम निढाल तो हो ही चुके होते हैं । बस जैसे ही सूरज ग़ुरूब हुवा, खानों और शरबत पर ऐसे टूट पड़ते हैं कि दुआ़ याद ही नहीं रहती ! दुआ़ तो दुआ़ हमारे बे शुमार इस्लामी भाई इफ़्त़ार के दौरान खाने पीने में इस क़दर मुन्हमिक हो जाते हैं कि इन को नमाज़े मग़रिब की पूरी जमाअ़त तक नहीं मिलती । बल्कि مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ बा'ज़ तो इस क़दर सुस्ती करते हैं कि घर ही में इफ़्त़ार कर के वहीं पर बिग़ैर जमाअ़त नमाज़ पढ़ लेते हैं । तौबा ! तौबा ! !

जन्नत के त़लबगारो ! इतनी भी ग़फ़्लत मत करो !! नमाज़े बा जमाअ़त की शरीअ़त में निहायत ही सख़्त ताकीद आई है । और हमेशा याद रखो ! बिला किसी स़ह़ीह़ शर-ई मजबूरी के मस्जिद की पन्ज वक़्ता नमाज़ की जमाअ़त तर्क कर देना गुनाह है ।

इफ़्त़ार की एह़तियातें : ***बेहतर*** येह है कि एक आध खजूर से इफ़्त़ार करके फौरन अच्छी तरह मुंह साफ कर ले और नमाज़े बा जमाअ़त में शरीक हो जाए। आजकल मस्जिद में लोग फल पकोड़े वग़ैरा खाने के बा'द मुंह को अच्छी त़रह़ स़ाफ़ नहीं करते फ़ौरन जमाअ़त में शरीक हो जाते हैं ह़ालांकि ग़िज़ा का मा'मूली ज़र्रा या ज़ाइक़ा भी मुंह में नहीं होना चाहिये कि एक ***फ़रमाने मुस्त़फ़ा*** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह भी है : ***किरामन कातिबीन*** (या'नी आ'माल लिखने वाले दोनों[2] बुज़ुर्ग फ़िरिश्तों) पर इस से ज़ियादा कोई बात शदीद नहीं कि वोह जिस शख़्स़ पर मुक़र्रर हैं उसे इस ह़ाल में नमाज़ पढ़ता देखें कि उस के दांतों के दरमियान कोई चीज़ हो।" (त़-बरानी कबीर, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:177, ह़दीस़:4061) मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मु-तअ़द्दद अह़ादीस़ में इर्शाद हुवा है कि जब बन्दा नमाज़ को खड़ा होता है फ़िरिश्ता उस के मुंह पर अपना मुंह रखता है येह जो पढ़ता है इस के मुंह से निकल कर फ़िरिश्ते के मुंह में जाता है उस वक़्त अगर खाने की कोई शय उस के दांतों में होती है मलाइका को उस से ऐसी सख़्त ईज़ा होती है कि और शय से नहीं होती।

हु़ज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले ***मोह़्तशम*** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, जब तुम में से कोई रात को नमाज़ के लिये खड़ा हो तो चाहिये, कि मिस्वाक कर ले

क्यूंकि जब वोह अपनी नमाज़ में क़िराअत करता है तो फ़िरिश्ता अपना मुंह इस के मुंह पर रख लेता है और जो चीज़ इस के मुंह से निकलती है वोह फ़िरिश्ते के मुंह में दाख़िल हो जाती है। (कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:9, स़-फ़ह़ा:319) और त़-बरानी ने कबीर में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की है कि दोनों फ़िरिश्तों पर इस से ज़ियादा कोई चीज़ गिरां नहीं कि वोह अपने साथी को नमाज़ पढ़ता देखें और इस के दातों में खाने के रेज़े फंसे हों। (फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:अव्वल, स़-फ़ह़ा: 624 ता 625) मस्जिद में इफ़्त़ार करने वालों को अक्स़र मुंह की स़फ़ाई दुश्वार होती है कि अच्छी त़रह़ स़फ़ाई करने बैठें तो जमाअ़त निकल जाने का अन्देशा होता है लिहाज़ा मश्वरा है कि सि़र्फ़ एक आध खजूर खा कर पानी पी लें। पानी को मुंह के अन्दर खूब जुम्बिश दें या'नी हिलाएं ता कि खजूर की मिठास और इस के अज्ज़ा छूट कर पानी के साथ पेट में चले जाएं ज़रू-रतन दांतों में ख़िलाल भी करें। अगर मुंह स़ाफ़ करने का मौक़अ़ न मिलता हो तो आसानी इसी में है कि सि़र्फ़ पानी से इफ़्त़ार कर लीजिये। मुझे उन रोज़ादारों पर बड़ा प्यार आता है जो त़रह़ त़रह़ की ने'मतों के थालों से बे नियाज़ हो कर ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले पहले मस्जिद की पहली स़फ़ में खजूर, पानी ले कर बैठ जाते हैं। इस त़रह़ इफ़्त़ार से जल्दी फ़राग़त भी मिले, मुंह को स़ाफ़ करना भी आसान रहे और पहली स़फ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़ भी नसी़ब हो।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ पर दुरूदे पाक की कस्रत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है।

इफ़्त़ार की दुआ़ : एक आध ***खजूर*** वग़ैरा से रोज़ा इफ़्त़ार कर लें और फिर दुआ़ ज़रूर मांग लिया करें। कम अज़ कम कोई एक ***दुआ़ए मासूरा***[1] ही पढ़ लें। दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार, मह़बूबे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो मुख़्तलिफ़ अवक़ात पर जुदा जुदा दुआ़एं मांगी हैं उन में से कम अज़ कम कोई एक दुआ़ तो याद कर ही लेनी चाहिये। इसी को पढ़ लेना चाहिये। इफ़्त़ार के बा'द की एक मश्हूर दुआ़ आगे स़-फ़ह़ा:178 पर गुज़र चुकी है। इस ज़िम्न में एक और रिवायत मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे अबू दावूद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की रिवायत में आता है कि सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब वक़्ते इफ़्त़ार येह दुआ़ पढते :-

اَللّٰھُمَّ لَکَ صُمْتُ وَعَلٰی رِزْقِکَ اَفْطَرْتُ۔

तर्जमा: ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने तेरे लिये रोज़ा रखा और तेरे ही अ़त़ा कर्दा रिज़्क़ से इफ़्त़ार किया।

(सुननु अबू दावूद, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:447, ह़दीस़:2358)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुज़श्ता ह़दीस़े मुबारक में फ़रमाया गया है कि "इफ़्त़ार के वक़्त दुआ़ रद्द नहीं की जाती।" बा'ज़ अवक़ात क़बूलिय्यते ***दुआ़*** के इज़्हार में ताख़ीर हो जाती है तो ज़ेह्न में येह बात आती है कि दुआ़ आख़िर क़बूल क्यूं नहीं हुई ! जब कि

1. क़ुरआनो ह़दीस़ में जो दुआ़एं वारिद हुई हैं उन्हें दुआ़ए मासूरा केहते हैं।

ह़दीसे़ मुबारक में तो क़बूले दुआ़ की बिशारत आई है। ***प्यारे इस्लामी भाइयो !*** ब ज़ाहिर ताख़ीर से न घबराइये। सय्यिदी ***आ'ला ह़ज़रत*** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के वालिदे गिरामी ह़ज़रते रईसुल मु–तकल्लिमीन सय्यिदुना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अह्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ स़–फ़ह़ा:7 पर नक़्ल करते हैं :–

दुआ़ के तीन[3] फ़वाइद : ***अल्लाह*** के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं: ***दुआ़*** बन्दे की, तीन[3] बातों से ख़ाली नहीं होती (1) या उस का गुनाह बख़्शा जाता है। या (2) उसे फ़ाइदा ह़ासिल होता है। या (3) उस के लिये आख़िरत में भलाई जम्अ़ की जाती है कि जब बन्दा आख़िरत में अपनी दुआ़ओं का स़वाब देखेगा जो दुन्या में मुस्तजाब (या'नी मक़्बूल) न हुई थीं तमन्ना करेगा, काश ! दुन्या में मेरी कोई ***दुआ़*** क़बूल न होती और सब यहीं (या'नी आख़िरत) के वासिते़ जम्अ़ हो जातीं।

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:2, स–फहा:315)

दुआ़ में पांच[5] सआ़दतें : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** देखा आपने दुआ़ राएगां तो जाती ही नहीं। इस का दुन्या में अगर अस़र ज़ाहिर न भी हो तो आख़िरत में अज्र व स़वाब मिल ही जाएगा। लिहाज़ा दुआ़ में सुस्ती करना मुनासिब नहीं।

"या अ़फ़ुव्वु" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से 5 म-दनी फूल

मदीना 1: ***पहला*** फ़ाइदा येह है कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की पैरवी होती है कि उस का हुक्म है मुझ से दुआ़ मांगा करो । जैसा कि कुरआने पाक में इर्शाद है :

اُدْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमानः*** मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा ।

(पारह:24, मोमिन 60)

मदीना 2: ***दुआ़*** मांगना सुन्नत है कि हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर अवक़ात ***दुआ़*** मांगते । लिहाज़ा दुआ़ मांगने में ***इत्तिबाए़ सुन्नत*** का भी श-रफ़ ह़ासिल होगा ।

मदीना 3: ***दुआ़*** मांगने में इत़ाअ़ते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ***दुआ़*** की अपने गुलामों को ताकीद फ़रमाते रहते ।

मदीना 4: ***दुआ़*** मांगने वाला आ़बिदों के ज़ुमरे (या'नी गुरोह) में दाख़िल होता है कि दुआ़ बज़ाते ख़ुद एक इ़बादत बल्कि इ़बादत का भी मग़्ज़ है । जैसा कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :-

اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ. ***तर्जमाः*** दुआ़ इ़बादत का मग़्ज़ है ।

(जामेए़ तिरमिज़ी, जिल्द:5, स़-फ़ह़ा:243, ह़दीस़:3382)

मदीना 5: ***दुआ़*** मांगने से या तो उस का गुनाह मुआफ़ किया जाता है या दुन्या ही में उस के मसाइल ह़ल होते हैं या फिर वोह ***दुआ़*** उस के लिये आख़िरत का ज़ख़ीरा बन जाती है।

न जाने कौन सा गुनाह हो गया है : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** देखा आपने ? दुआ़ मांगने में ***अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त*** عَزَّوَجَلَّ उस के प्यारे ह़बीब माहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त भी है, दुआ़ मांगना सुन्नत भी है, दुआ़ मांगने से इ़बादत का स़वाब भी मिलता है नीज़ दुन्या व आख़िरत के ***मु-तअ़द्दद*** फ़वाइद ह़ासि़ल होते हैं। बा'ज़ लोगों को देखा गया है कि वोह दुआ़ की क़बूलिय्यत के लिये बहुत जल्दी मचाते बल्कि مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! बातें बनाते हैं कि हम तो इतने अ़रसे़ से दुआ़एं मांग रहे हैं, बुज़ुर्गों से भी दुआ़एं करवाते रहे हैं, कोई पीर फ़क़ीर नहीं छोड़ा, येह वज़ाइफ़ पढ़ते हैं, वोह अवराद पढ़ते हैं, फ़ुलां फ़ुलां मज़ार पर भी गए मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी ह़ाजत पूरी करता ही नहीं। बल्कि बा'ज़ येह भी केहते सुने जाते हैं :

"न जाने ऐसा कौन सा गुनाह हो गया है जिस की हमें सज़ा मिल रही है।"

नमाज़ न पढ़ना तो गोया ख़त़ा ही नहीं !!! : इस त़रह़ की "भड़ास" निकालने वाले से अगर दरयाफ़्त किया जाए कि भाई ! आप नमाज़ तो पढ़ते ही होंगे ? तो शायद जवाब मिले, "जी नहीं ।" देखा आपने ! ज़बान पर तो बे साख़्ता जारी हो रहा है, "न जाने क्या ख़त़ा हम से ऐसी हुई है ? जिस की हम को सज़ा मिल रही है !" और नमाज़ में इन की ग़फ़्लत तो इन्हें नज़र ही नहीं आ रही ! गोया नमाज़ न पढ़ना तो مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कोई गुनाह ही नहीं है ! अरे ! अपने मुख़्तस़र से वुजूद पर ही थोड़ी नज़र डाल लेते, देखिये तो सही ! सर के बाल इंग्रेज़ी, इंग्रेज़ों की त़रह़ सर भी बरहना लिबास भी इंग्रेज़ी, चेहरा दुश्मनाने मुस्त़फ़ा आतश परस्तों जैसा या'नी ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़ीम सुन्नत दाढ़ी मुबारक चेहरे से ग़ाइब ! तहज़ीब व तमद्दुन इस्लाम के दुश्मनों जैसा, नमाज़ तक भी न पढ़ें । ह़ालांकि नमाज़ न पढ़ना ज़बरदस्त गुनाह, दाढ़ी मुंडाना ह़राम और भी दिन भर में झूट, ग़ीबत, चुग़ली, वा'दा ख़िलाफ़ी, बद गुमानी, बद निगाही, वालिदैन की ना फ़रमानी, गाली गलोच, फ़िल्में डिरामे, गाने बाजे वग़ैरा वग़ैरा न जाने कितने गुनाह किये जाएं । लेकिन येह गुनाह "जनाब" को नज़र ही न आएं । इतने इतने गुनाह करने के बा वुजूद शैत़ान ग़ाफ़िल कर देता है । और ज़बान पर येह अल्फ़ाज़े शिक्वा खेल रहे होते हैं ।

"क्या ख़त़ा हम से ऐसी हुई है ? जिस की हम को सज़ा मिल रही है !"

जिस दोस्त की बात हम न मानें : ज़रा सोचिये तो सही ! आप का कोई जिगरी दोस्त आप को कई बार कुछ काम बताए मगर आप उस का काम न करें । और कभी आप को अपने उसी दोस्त से काम पड़ जाए तो ज़ाहिर है आप पहले ही सहमे रहेंगे कि मैं ने तो इस का एक भी काम नहीं किया अब वोह भला मेरा काम क्यूं करेगा ! अगर आपने हिम्मत कर के बात कर के भी देखी और वाक़ेई उस ने काम न भी किया तब भी आप शिक्वा नहीं कर सकेंगे क्यूं कि आप ने भी तो अपने दोस्त का कोई काम नहीं किया था ।

अब ठन्डे दिल से ग़ौर कीजिये कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने कितने कितने काम बताए, कैसे कैसे अह़काम जारी फ़रमाए । मगर हम उस के कौन कौन से अह़काम पर अ़मल करते हैं ? ग़ौर करने पर मा'लूम होगा कि उस के कई अह़कामात की बजा आवरी में निहायत ही कोताह वाक़ेअ़ हुए हैं । उम्मीद है बात समझ में आ गई होगी कि ख़ुद तो अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ के हुक्मों पर अ़मल न करें । और वोह अगर किसी बात (या'नी दुआ़) का असर ज़ाहिर न फ़माए तो शिक्वा, शिकायत ले कर बैठ जाएं । देखियेना ! आप अगर अपने किसी जिगरी दोस्त की कोई बात बार बार टालते रहें तो हो सकता है कि वोह आप से दोस्ती ही ख़त्म

कर दे। लेकिन ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ बन्दों पर किस क़दर मेहरबान है कि लाख उस के फ़रमान की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करें। फिर भी वोह अपने बन्दों की फ़ेहरिस से ख़ारिज नहीं करता। वोह लुत़्फ़ो करम फ़रमाता ही रहता है। ज़रा ग़ौर तो फ़रमाइये ! जो बन्दे एह़सान फ़रमोशी का मुज़ा-हरा कर रहे हैं। अगर वोह भी बत़ौरे सज़ा अपने एह़सानात उन से रोक ले तो उन का क्या बने ? यक़ीनन उस की इनायत के बिग़ैर एक क़दम भी नहीं उठा सकता। अरे ! वोह अपनी अ़ज़ीमुश्शान ने'मत हवा को जो बिल्कुल मुफ़्त अ़त़ा फ़रमा रखी है अगर चन्द लम्ह़ों के लिये रोक ले तो अभी लाशों के अम्बार लग जाएं !!

क़बूलिय्यते दुआ़ में ताख़ीर का एक सबब : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** बसा अवक़ात क़बूलिय्यते दुआ़ की ताख़ीर में काफ़ी ***मस्लह़तें*** भी होती हैं जो हमारी समझ में नहीं आतीं। हुज़ूर, सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर सुरूर है, जब ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का कोई प्यारा ***दुआ़*** करता है, तो अल्लाह तआ़ला जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) से इर्शाद फ़रमाता है, "ठहरो ! अभी न दो ताकि फिर मांगे कि मुझ को इस की आवाज़ पसन्द है।" और जब कोई काफ़िर या फ़ासिक़ ***दुआ़*** करता है, फ़रमाता है, "ऐ जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ! इस का काम जल्दी कर दो, ताकि फिर न मांगे कि मुझ को इस की

आवाज़ मकरूह (या'नी ना पसन्द) है।

(कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:39, ह़दीस़:3261)

ह़िकायत : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना यह़्या बिन सईद बिन क़त्ता़न (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ को ख़्वाब में देखा, अ़र्ज़ की, इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मैं अक्स़र ***दुआ़*** करता हूं। और तू क़बूल नहीं फ़रमाता ? हुक्म हुवा, ***''ऐ यह़्या***! मैं तेरी आवाज़ को दोस्त रखता हूं। इस वासिते़ तेरी ***दुआ़*** की क़बूलिय्यत में ताख़ीर करता हूं।''

(अह़सनुल विआ़अ, स़-फ़ह़ा:35)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी जो ह़दीसे़ पाक और ह़िकायत गुज़री उस में येह बताया गया है कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ को अपने नेक बन्दों की गिर्या व ज़ारी पसन्द है तो यूं भी बसा अवक़ात क़बूलिय्यते ***दुआ़*** में ताख़ीर होती है। अब इस मस्लह़त को हम कैसे समझ सकते हैं ! बहर ह़ाल जल्दी नहीं मचानी चाहिये। ***अह़्सनुल विआ़अ*** स़-फ़ह़ा:33 में ***आदाबे दुआ़*** बयान करते हुए ह़ज़रते रईसुल मु-तकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं:-

जल्दी मचाने वाले की दुआ़ क़बूल नहीं होती ! :

(दुआ़ के आदाब में से येह भी है कि) ***दुआ़*** के क़बूल में जल्दी न करे। ह़दीस़ शरीफ़ में है कि ख़ुदाए तआ़ला तीन[3]

आदमियों की ***दुआ़*** क़बूल नहीं करता । एक वोह कि गुनाह की ***दुआ़*** मांगे । दूसरा वोह कि ऐसी बात चाहे कि क़त़ए़ रेह़्म हो । तीसरा वोह कि क़बूल में जल्दी करे कि मैं ने ***दुआ़*** मांगी अब तक क़बूल नहीं हुई ।

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:314, ह़दीस़:9)

इस ह़दीस़ में फ़रमाया गया है कि ना जाइज़ काम की ***दुआ़*** न मांगी जाए कि वोह क़बूल नहीं होती । नीज़ किसी रिश्तेदार का ह़क़ ज़ाएअ़ होता हो ऐसी दुआ़ भी न मांगें और ***दुआ़*** की क़बूलिय्यत के लिये जल्दी भी न करें वरना ***दुआ़*** क़बूल नहीं की जाएगी ।

अह़्सनुल विआ़ए लि आदाबिद्दुआ़अ पर आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने ह़ाशिया तह़रीर फ़रमाया है । और उस का नाम ***ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़सनिल विआ़अ*** रखा है । इसी ह़ाशिये में एक मक़ाम पर ***दुआ़*** की क़बूलिय्यत में जल्दी मचाने वालों को अपने मख़्सूस़ और निहायत ही इ़ल्मी अन्दाज़ में समझाते हुए फ़रमाते हैं:-

अफ़्सरों के पास तो बार बार धक्के खाते हो मगर..... :

सगाने दुन्या (या'नी दुन्यवी अफ़्सरों) के उम्मीदवारों (या'नी उन से काम निकलवाने के आरज़ूमन्दों) को देखा जाता है कि तीन[3] तीन[3] बरस तक उम्मीद वारी (और इन्तेज़ार) में गुज़ारते हैं, सुब्ह़ो शाम उन के दरवाज़ों पर

दौड़ते हैं, (धक्के खाते हैं) और वोह (अफ़्सरान) हैं कि रुख़ नहीं मिलाते, जवाब नहीं देते, झिड़कते, दिल तंग होते, नाक भौं चढ़ाते हैं, उम्मीदवारी में लगाया तो बेगार (बे कार मेह़नत) सर पर डाली, येह ह़ज़रत गिरेह (या'नी उम्मीद वार जेब) से खाते, घर से मंगाते, बेकार बेगार (फ़ुज़ूल मेह़नत) की बला उठाते हैं, और वहां (या'नी अफ़्सरों के पास धक्के खाने में) बरसों गुज़रें हुनूज़ (या'नी अभी तक गोया) रोज़े अव्वल (ही) है । मगर येह (दुन्यवी अफ़्सरों के पास धक्के खाने वाले) न उम्मीद तोडें, न (अफ़्सरों का) पीछा छोड़ें । और ***अह़कमुल ह़ाकिमीन, अकरमुल अकरमीन,*** عَزَّجَلَالُہٗ के दरवाज़े पर अव्वल तो आता ही कौन है ! और आए भी तो उक्ताते, घबराते, कल का होता आज हो जाए, एक हफ़्ता कुछ पढ़ते गुज़रा और शिकायत होने लगी, स़ाह़िब ! पढ़ा तो था, कुछ अस़र न हुवा ! येह अह़मक़ अपने लिये इजाबत (या'नी क़बूलिय्यत) का दरवाज़ा ख़ुद बन्द कर लेते हैं । ***मुह़म्मुदर्रसूलुल्लाह !*** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं:

يُسْتَجَابُ لِاَحَدِكُمْ مَالَمْ يُعَجِّلْ يَقُوْلُ دَعَوْتُ فَلَمْ يُسْتَجَبْ لِيْ -

तर्जमा: "तुम्हारी दुआ़ क़बूल होती है जब तक जल्दी न करो येह मत कहो कि मैं ने दुआ़ की थी क़बूल न हुई ।"

(स़ह़ीहुल बुख़ारी, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:200, ह़दीस़:6340)

बा'ज़ तो इस पर ऐसे जामे से बाहर (या'नी बे-क़ाबू) हो जाते हैं कि आ'माल व अदइय्या (या'नी अवराद और दुआ़ओं) के असर से बे ए'तेक़ाद, बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वा'दए करम से बे ए'तेमाद, وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ الْكَرِيْمِ الْجَوَّاد । ऐसों से कहा जाए कि ऐ बे ह़या ! बे शर्मो ! ज़रा अपने गरीबान में मुंह डालो । अगर कोई तुम्हारा बराबर वाला दोस्त तुम से हज़ार बार कुछ काम अपने कहे और तुम उस का एक काम न करो तो अपना काम उस से केहते हुए अव्वल तो आप लजाओ (शरमाओ)गे, (कि) हम ने तो उस का केहना किया ही नहीं अब किस मुंह से उस से काम को कहें ? और अगर गरज़ दीवानी होती है (या'नी मत़लब पड़ा तो) केह भी दिया और उस ने (अगर तुम्हारा काम) न किया तो अस्लन मह़ल्ले शिकायत न जानोगे (या'नी इस बात पर शिकायत करोगे ही नहीं ज़ाहिर है ख़ुद ही समझते हो) कि हम ने (उस का काम) कब किया था जो वोह करता ।

अब जांचो, कि तुम मालिके अ़लल इत़्लाक़ عَزَّجَلَالُهٗ के कितने अह़काम बजा लाते हो ? उस के हुक्म बजा न लाना और अपनी दरख़्वास्त का ख़्वाही न ख़्वाही (हर सूरत में) क़बूल चाहना कैसी बे ह़याई है !

ओ अह़मक़ ! फिर फ़र्क़ देख ! अपने सर से पांव तक नज़रे गौर कर ! एक एक रूएं में हर वक़्त हर आन कितनी कितनी हज़ार दर हज़ार दर हज़ार सद हज़ार बे शुमार

ने'मतें हैं । तू सोता है और उस के मा'सूम बन्दे (या'नी फ़िरिश्ते) तेरी ह़िफ़ाज़त को पहरा दे रहे हैं, तू गुनाह कर रहा है और (फिर भी) सर से पांव तक स़िह़्ह़त व आ़फ़िय्यत, बलाओं से ह़िफ़ाज़त, खाने का हज़्म, फ़ुज़लात (या'नी जिस्म के अन्दर की गन्दगियों) का दफ़्अ़, ख़ून की रवानी, आ'ज़ा में त़ाक़त, आंखों में रौशनी । बे ह़िसाब करम बे मांगे बे चाहे तुझ पर उतर रहे हैं । फिर अगर तेरी बा'ज़ ख़्वाहिशें अ़त़ा न हों, किस मुंह से शिकायत करता है ? तू क्या जाने कि तेरे लिये भलाई काहे में है ! तू क्या जाने कैसी सख़्त बला आने वाली थी कि इस (ब ज़ाहिर न क़बूल होने वाली) दुआ़ ने दफ़्अ़ की, तू क्या जाने कि इस दुआ़ के इवज़ कैसा स़वाब तेरे लिये ज़ख़ीरा हो रहा है, उस का वा'दा सच्चा है और क़बूल की येह तीनों सूरतें हैं जिन में हर पहली, पिछली से आ'ला है । हां, बे ए'तेक़ादी आई तो यक़ीन जान कि मारा गया और इब्लीसे लईन ने तुझे अपना सा कर लिया । وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ سُبْحٰنَهٗ وَتَعَالٰی (और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह वोह पाक है और अ–ज़मत वाला)

ऐ ज़लील ख़ाक ! ऐ आबे ना पाक ! अपना मुंह देख और इस अ़ज़ीम शरफ़ पर ग़ौर कर कि अपनी बारगाह में ह़ाज़िर होने, अपना पाक, मु–तआ़ली (या'नी बुलन्द) नाम लेने, अपनी त़रफ़ मुंह करने, अपने पुकारने की तुझे इजाज़त देता है । लाखों मुरादें इस फ़ज़्ले अ़ज़ीम पर निसार ।

ओ बे स़ब्रे ! ज़रा भीक मांगना सीख । इस आस्ताने रफ़ीअ़ की ख़ाक पर लौट जा । और लिपटा रह और टिकटिकी बंधी रख कि अब देते हैं, अब देते हैं ! बल्कि पुकारने, उस से मुनाजात करने की लज़्ज़त में ऐसा डूब जा कि इरादा व मुराद कुछ याद न रहे, यक़ीन जान कि इस दरवाज़े से हरगिज़ मह़रूम न फिरेगा कि مَنْ دَقَّ بَابَ الْكَرِيْمِ انْفَتَحَ (जिस ने करीम के दरवाज़े पर दस्तक दी तो वोह इस पर खुल गया)

وَبِاللّٰهِ التَّوْفِيْقُ (और तौफ़ीक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है)

(ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़सनिल विआ़अ, स़-फ़ह़ा:34 ता 37)

दुआ़ की कबूलिय्यत में ताख़ीर तो करम है : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान (عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن) फ़रमाते हैं, ऐ अ़ज़ीज़ ! तेरा परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,

أُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ

तर्जमा: मैं दुआ़ मांगने वाले की दुआ़ क़बूल करता हूं जब मुझ से दुआ़ मांगे ।

(पारह:2, अल बक़रह:186)

فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ﴿٧٥﴾

तर्जमा: हम क्या अच्छे क़बूल करने वाले हैं ।

(पारह:23, स़ाफ़्फ़ात: 75)

اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ط *तर्जमा:* मुझ से दुआ़ मांगो मैं क़बूल फ़रमाऊंगा ।

(पारह:24, मोमिन:60)

पस यक़ीन समझ कि वोह तुझे अपने दर से मह़रूम नहीं करेगा और अपने वा'दे को वफ़ा फ़रमाएगा । वोह अपने ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से फ़रमाता है:

وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿۱۰﴾ ط *तर्जमा:* साइल को न झिड़क ।

(पारह:30, वद्दुहा 10)

आप عَزَّوَجَلَّ किस त़रह़ अपने ख़्वाने करम से दूर करेगा । बल्कि वोह तुझ पर नज़्रे करम रखता है । कि तेरी दुआ़ के क़बूल करने में देर करता है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حال۔

(अह़सनुल विआ़अ, स़-फ़ह़ा:33)

इर्कुन्निसा का दर्द जाता रहा : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के ***म-दनी क़ाफ़िलों*** में ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर के दुआ़ मांगने वालों के मसाइल ह़ल होने के काफ़ी वाक़िआ़त सुनने को मिलते हैं । एक इस्लामी भाई का बयान अपने अन्दाज़ में अ़र्ज़ करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं । हमारा ***म-दनी क़ाफ़िला*** ठठ्ठा शहर वारिद हुवा, शु-रकाअ

में से एक इस्लामी भाई को ***इर्कुन्निसा*** का शदीद दर्द उठता था बे चारे शिद्दते दर्द से माहिये बे आब की त़रह़ तड़पते थे। एक बार दर्द के सबब रात भर सो न सके। आख़िरी दिन ***अमीरे क़ाफ़िला*** ने फ़रमाया: आइये ! सब मिल कर इन के लिये दुआ़ करते हैं। चुनान्चे दुआ़ शुरूअ़ हुई, उन इस्लामी भाई का बयान है: اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दौराने दुआ़ ही दर्द में कमी आनी शुरूअ़ हो गई और कुछ देर के बा'द ***इर्कुन्निसा का दर्द बिल्कुल जाता रहा***। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह बयान देते वक़्त काफ़ी अ़रसा हो चुका है वोह दिन आज का दिन मुझे फिर कभी ***इर्कुन्निसा*** की तक्लीफ़ नहीं हुई। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह बयान देते वक़्त मुझे अलाकाई ***म-दनी क़ाफ़िला*** ज़िम्मादार की हैसिय्यत से म-दनी क़ाफ़िलों की धूमें मचाने की ख़िदमत मिली हुई है।

गर हो इर्कुन्निसा, या आ़रिज़ा कोई सा — *पाओगे सिह़्ह़तें क़ाफ़िले में चलो*
दूर बीमारियां, और परेशानियां — *होंगी बस चल पड़ें, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! ***म-दनी क़ाफ़िले*** की ब-र-कत से ***इर्कुन्निसा*** जैसी मूज़ी बीमारी से नजात मिल गई। ***इर्कुन्निसा*** की पहचान येह है कि इस में चढ्ढे (या'नी रान के जोड़) से ले कर पांव के टख़्ने तक शदीद दर्द होता

है येह मरज़ बरसों तक पीछा नहीं छोड़ता ।

इर्कुन्निसा के 2 रूह़ानी इलाज : (1) दर्द के मक़ाम पर हाथ रख कर अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़, सू-रतुल फ़ातेह़ा एक बार और सात[7] मरतबा येह दुआ़ पढ़ कर दम कर दीजिये: اَللّٰھُمَّ اذْھِبْ عَنِّیْ سُوْءَ مَا اَجِدُ (ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ से मरज़ दूर फ़रमा दे) अगर दूसरा दम करे तो عَنِّیْ की जगह عَنْهُ (या'नी इस से) कहे । (मुद्दत: ता ह़ुसूले शिफ़ा) (2) یَا مُحْیِیُ सात बार पढ़ कर गेस हो या पीठ या पेट में तक्लीफ़ या इर्कुन्निसा या किसी भी जगह दर्द हो या किसी उ़ज़्व के ज़ाएअ़ हो जाने का ख़ौफ़ हो, अपने ऊपर दम कर दीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाइदा होगा । (मुद्दते इलाज: ता ह़ुसूले शिफ़ा)

"स़दके़ या रसूलल्लाह" के 14 ह़ुरूफ़ की निस्बत से रोज़ा तोड़ने वाली बातों के 14 पैरे

मदीना 1: ***खाने,*** पीने या हम बिस्तरी करने से रोज़ा जाता रहता है जब कि रोज़ादार होना याद हो ।

(रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:365)

मदीना 2: ***ह़ुक़्क़ा,*** सिगार, सिगरेट, चुरट वग़ैरा पीने से भी रोज़ा जाता रहता है । अगर्चे अपने ख़याल में ह़ल्क़ तक धुवां न पहुंचता हो ।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा पन्जुम, स़-फ़ह़ा:117)

मदीना 3: ***पान*** या सिर्फ़ तम्बाकू को खाने से भी रोज़ा जाता रहेगा अगर्चे आप बार बार इस की पीक थूकते रहें । क्यूं कि ह़ल्क़ में उस के बारीक अज्ज़ा ज़रूर पहुंचते हैं । (ऐज़न)

मदीना 4: ***शकर*** वग़ैरा ऐसी चीज़ें जो मुंह में रखने से घुल जाती हैं मुंह में रखी और थूक निगल गए रोज़ा जाता रहा । (ऐज़न)

मदीना 5: ***दांतों*** के दरमियान कोई चीज़ चने के बराबर या ज़ियादा थी उसे खा गए या कम ही थी मगर मुंह से निकाल कर फिर खा ली तो रोज़ा टूट गया ।

(दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:394)

मदीना 6: ***दांतों*** से ख़ून निकल कर ***ह़ल्क़*** से नीचे उतरा और ख़ून थूक से ज़ियादा या बराबर या कम था मगर इस का मज़ा ह़ल्क़ में मह़सूस हुवा तो रोज़ा जाता रहा और अगर कम था और मज़ा भी ह़ल्क़ में मह़सूस न हुवा तो रोज़ा न गया ।

(दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:368)

मदीना 7: ***रोज़ा*** याद रहने के बा वुजूद ***हुक़्ना***[1] लिया । या नाक के नथनों से दवाई चढ़ाई रोज़ा जाता रहा ।

(आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:204)

1. या'नी किसी दवा की बत्ती या पिचकारी पीछे के मक़ाम में चढ़ाना जिस से इजाबत हो जाए ।

मदीना 8: ***कुल्ली*** कर रहे थे बिला क़स्द पानी ह़ल्क़ से उतर गया या नाक में पानी चढ़ाया और दिमाग़ को चढ़ गया रोज़ा जाता रहा मगर जब कि रोज़ादार होना भूल गया हो तो न टूटेगा अगर्चे क़स्दन हो । यूं ही रोज़ेदार की त़रफ़ किसी ने कोई चीज़ फेंकी वोह उस के ह़ल्क़ में चली गई तो रोज़ा जाता रहा । (अल जौ-ह-रतुन्नय्यरह, जिल्दः1, स़-फ़ह़ाः178)

मदीना 9: ***सोते*** में (या'नी नींद की ह़ालत में) पानी पी लिया या कुछ खा लिया, या मुंह खुला था, पानी का क़त़रा या बारिश का ओला ह़ल्क़ में चला गया तो रोज़ा जाता रहा ।

(अल जौ-ह-रतुन्नय्यरह, जिल्दः1, स़-फ़ह़ाः178)

मदीना 10: ***दूसरे*** का थूक निगल लिया या अपना ही थूक हाथ में ले कर निगल लिया तो रोज़ा जाता रहा ।

(आ़लमगीरी, जिल्दः1, स़-फ़ह़ाः203)

मदीना 11: ***जब*** तक थूक या बल्ग़म मुंह के अन्दर मौजूद हो उसे निगल जाने से रोज़ा नहीं जाता, बार बार थूकते रहना ज़रूरी नहीं ।

मदीना 12: ***मुंह*** में रंगीन डोरा वग़ैरा रखा जिस से थूक रंगीन हो गया फिर वोही रंगीन थूक निगल गए तो रोज़ा जाता रहा ।

(आ़लमगीरी, जिल्दः1, स़-फ़ह़ाः203)

मदीना 13: ***आंसू*** मुंह में चला गया और आप उसे निगल गए । अगर

क़तरा दो क़तरा है तो रोज़ा न गया और ज़ियादा था कि उस की नमकीनी पूरे मुंह में महसूस हुई तो जाता रहा। पसीने का भी येही हुक्म है।

(आलमगीरी, जिल्द:1, स-फ़हा:203)

मदीना 14: ***फ़ुज़्ले*** का मक़ाम बाहर निकल आया तो हुक्म येह है कि ख़ूब अच्छी तरह किसी कपड़े वग़ैरा से पूंछ कर उठें ताकि तरी बाक़ी न रहे। अगर कुछ पानी उस पर बाक़ी था और खड़े हो गए जिस की वजह से पानी अन्दर चला गया तो रोज़ा फ़ासिद हो गया। इसी वजह से फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं कि रोज़ादार ***इस्तिन्जा*** करने में सांस न ले।

(आलमगीरी, जिल्द:1, स-फ़हा:204)

रोज़े में क़ै होना : बा'ज़ अवक़ात जब रोज़े में ***क़ै*** हो जाती है तो लोग परेशान हो जाते हैं बल्कि बा'ज़ तो समझते हैं कि रोज़े में ख़ुद ***बख़ुद क़ै*** हो जाने से भी रोज़ा टूट जाता है। हालांकि ऐसा नहीं। चुनान्चे सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूरे पुर नूर, ***शाफ़ेए यौमुन्नुशूर*** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : तर्जमा: जिस को माहे र-मज़ान में ख़ुद बख़ुद ***क़ै*** आई उस का रोज़ा

न टूटा और जिस ने जान बूझ कर ***क़ै*** की उस का रोज़ा टूट गया। (कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:230, ह़दीस़:23814) एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया, "जिस को खुद ब खुद ***क़ै*** आई उस पर ***क़ज़ा*** नहीं और जिस ने जानबूझ कर ***क़ै*** की वोह रोज़े की ***क़ज़ा*** करे।

(तिरमिज़ी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:173, ह़दीस़:720)

"करम या रब عزوجل !" के सात हुरूफ़ की निस्बत से क़ै के बारे में 7 पैरे

मदीना 1: ***रोज़े*** में खुद बखुद कितनी ही ***क़ै*** (उल्टी) हो जाए (ख़्वाह बाल्टी ही क्यूं न भर जाए) इस से रोज़ा नहीं टूटता।

(दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:392)

मदीना 2: ***अगर*** रोज़ा याद होने के बा वुजूद क़स्दन (या'नी जानबूझ कर) ***क़ै*** की और अगर वोह मुंह भर है (मुंह भर की ता'रीफ़ आगे आती है) तो अब रोज़ा टूट जाएगा।

(दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:392)

मदीना 3: ***क़स्दन*** मुंह भर होने वाली ***क़ै*** से भी इस सूरत में रोज़ा टूटेगा जब कि क़ै में खाना या (पानी) या स़फ़रा (या'नी कड़वा पानी) या ख़ून आए।

(ऐज़न)

मदीना 4: अगर ***क़ै*** में सिर्फ़ बल्ग़म निकला तो ***रोज़ा*** नहीं टूटेगा।

(ऐज़न, स़-फ़ह़ा:394)

मदीना 5: ***क़स्दन कै*** की मगर थोड़ी सी आई, मुंह भर न आई तो अब भी रोज़ा न टूटा । (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:393)

मदीना 6: ***मुंह*** भर से कम कै़ हुई और मुंह ही से दोबारा लौट गई या खुद ही लौटा दी, इन दोनों सूरतों में रोज़ा नहीं टूटेगा । (ऐज़न)

मदीना 7: ***मुंह*** भर कै़ बिला इख़्तियार हो गई तो ***रोज़ा*** तो न टूटा अलबत्ता अगर इस में से एक चने के बराबर भी वापस लौटा दी तो ***रोज़ा*** टूट जाएगा । और एक चने से कम हो तो ***रोज़ा*** न टूटा । (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:392)

मुंह भर कै़ की ता'रीफ़ : मुंह भर ***कै़*** के मा'ना येह हैं, ''इसे बिला तकल्लुफ़ न रोका जा सके ।'' (आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:204)

"मदीना" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से वुज़ू में कै़ के 5 अह़कामे शर-ई

मदीना 1: ***वुज़ू*** की ह़ालत में (जानबूझ कर कै़ करें या खुद बखुद हो जाए दोनों[2] सूरतों में) अगर मुंह भर ***कै़*** आई और इस में खाना, पानी या स़फ़रा (कड़वा पानी) आया तो वुज़ू टूट जाएगा । (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा दुवुम, स़-फ़ह़ा:26)

मदीना 2: ***अगर*** बल्ग़म की मुंह भर ***कै़*** हुई तो ***वुज़ू*** नहीं टूटेगा । (ऐज़न)

मदीना 3: ***बहते*** खून की ***क़ै*** वुज़ू तोड़ देती है।

मदीना 4: ***बहते*** खून की ***क़ै*** से ***वुज़ू*** उस वक़्त टूटता है जब कि खून थूक से मग़लूब न हो। (रद्दुल मुहतार, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:267) या'नी खून की वजह से ***क़ै*** सुर्ख़ हो रही है तो खून ग़ालिब है ***वुज़ू*** टूट गया और अगर थूक ज़ियादा है और खून कम तो ***वुज़ू*** नहीं टूटेगा। खून कम होने की निशान ही येह है कि पूरी क़ै जो थूक पर मुश्तमिल है वोह ज़र्द (या'नी पीली) होगी।

मदीना 5: अगर ***क़ै*** में जमा हुवा खून निकला और वोह मुंह भर से कम है तो ***वुज़ू*** नहीं टूटेगा।

(मुलख़्ख़स़ अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्स़ा दुवुम, स़-फ़ह़ा:26)

ज़रूरी हिदायत : मुंह भर ***क़ै*** (इलावा बल्ग़म के) नापाक है। इस का कोई छींटा कपड़े या जिस्म पर न गिरने पाए इस की एह़तियात़ फ़रमाइये। आजकल लोग इस में बड़ी बे एह़तियात़ी करते हैं, कपड़ों पर छींटे पड़ने की कोई परवाह नहीं करते और मुंह वग़ैरा पर जो नापाक ***क़ै*** लग जाती है उस को भी बिला झिजक अपने कपड़ों से पूंछ लेते हैं। ***अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त*** عَزَّوَجَلَّ हमें नजासत से बचने का ज़ेह्न इनायत फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

भूल कर खाने पीने से रोज़ा नहीं जाता : *हजरते* सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि सुल्ताने दो[2] जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमियान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि जिस रोज़ादार ने भूल कर खाया पिया वोह अपने ***रोज़े*** को पूरा करे कि उसे ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने खिलाया और पिलाया।

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:636, ह़दीस़:1933)

"वाह क्या बात है माहे र-मज़ान की" के इक्कीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से रोज़ा न तोड़ने वाली चीज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ 21 पैरे

मदीना 1: ***भूल*** कर खाया, पिया या जिमाअ़ किया रोज़ा फ़ासिद न हुवा, ख़्वाह वोह रोज़ा फ़र्ज़ हो या नफ़्ल।

(दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:365)

मदीना 2: ***किसी*** रोज़ादार को इन अफ़्आ़ल में देखें तो याद दिलाना वाजिब है। हां अगर रोज़ा दार बहुत ही कमज़ोर हो कि याद दिलाने पर वोह खाना छोड़ देगा जिस की वजह से कमज़ोरी इतनी बढ़ जाएगी कि इस के लिये ***रोज़ा*** रखना ही दुश्वार हो जाएगा और अगर खा लेगा तो ***रोज़ा*** भी अच्छी त़रह़ पूरा कर लेगा और दीगर इबादतें भी ब ख़ूबी अदा कर सकेगा (और चूंकि भूल कर खा पी रहा है इस लिये

इस का रोज़ा तो हो ही जाएगा) लिहाज़ा इस सूरत में याद न दिलाना ही बेहतर है । बा'ज़ मशाइख़े किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی) फ़रमाते हैं: ''***जवान*** को देखे तो याद दिला दे और ***बूढ़े*** को देखे तो याद न दिलाने में ह़रज नहीं ।'' मगर येह हुक्म अक्सर के लिहाज़ से है क्यूं कि ***जवान*** अक्स़र क़वी (या'नी त़ाक़त वर) होते हैं और ***बूढ़े*** अक्स़र कमज़ोर । चुनान्चे अस्ल हुक्म येही है कि जवानी और बुढ़ापे को कोई दख़्ल नहीं, बल्कि कुव्वत व ज़ो'फ़ (या'नी त़ाक़त और कमज़ोरी) का लिहाज़ है लिहाज़ा अगर जवान इस क़दर कमज़ोर हो तो याद न दिलाने में ह़रज नहीं और ***बूढ़ा*** क़वी (या'नी त़ाक़त वर) हो तो याद दिलाना वाजिब है । (रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:365)

मदीना 3: ***रोज़ा*** याद होने के बा वुजूद भी मख्खी या गुबार या धुवां ह़ल्क़ में चले जाने से ***रोज़ा*** नहीं टूटता । ख़्वाह गुबार आटे का हो जो चक्की पीसने या आटा छानने में उड़ता है या ग़ल्ले का गुबार हो या हवा से ख़ाक उड़ी या जानवरों के ख़ुर या टाप से । (दुर्रे मुख़्तार रद्दुल मुहतार जिल्द:3, स-फहा:366)

मदीना 4: ***इसी*** त़रह़ बस या कार का धुवां या उन से गुबार उड़ कर ह़ल्क़ में पहुंचा अगर्चे ***रोज़ादार*** होना याद था, ***रोज़ा*** नहीं जाएगा ।

मदीना 5: ***अगरबत्ती*** सुलग रही है और उस का धुवां नाक में गया तो ***रोज़ा*** नहीं टूटेगा। हां अगर लूबान या अगर बत्ती सुलग रही हो और ***रोज़ा*** याद होने के बा वुजूद मुंह क़रीब ले जा कर उस का धुवां नाक से खींचा तो ***रोज़ा*** फ़ासिद हो जाएगा। (रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:366)

मदीना 6: ***भरी*** सींगी[1] लगवाई या तेल या सुरमा लगाया तो रोज़ा न गया अगर्चे तेल या सुरमे का मज़ा ह़ल्क़ में महसूस होता हो बल्कि थूक में सुरमे का रंग भी दिखाई देता हो जब भी रोज़ा नहीं टूटता। (अल जौ-ह-रतुन्नय्यरह, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:179)

मदीना 7: ***ग़ुसुल*** किया और पानी की ख़ुन्की (या'नी ठन्डक) अन्दर मह़सूस हुई जब भी ***रोज़ा*** नहीं टूटा।

(आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:230)

मदीना 8: ***कुल्ली*** की और पानी बिल्कुल फेंक दिया सिर्फ़ कुछ तरी मुंह में बाक़ी रह गई थी थूक के साथ इसे निगल लिया, ***रोज़ा*** नहीं टूटा। (रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:367)

मदीना 9: ***दवा*** कूटी और ह़ल्क़ में इस का मज़ा मह़सूस हुवा ***रोज़ा*** नहीं टूटा। (ऐज़न)

मदीना 10: ***कान*** में पानी चला गया जब भी ***रोज़ा*** नहीं टूटा। बल्कि ख़ुद पानी डाला जब भी न टूटा।

(दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:367)

---

1. येह दर्द के इलाज का एक मख़्सूस़ त़रीक़ा है जिस में सूराख़ किया हुवा सींग दर्द की जगह रख कर मुंह के ज़रीए़ जिस्म की गरमी खींचते हैं।

मदीना 11: ***तिन्के*** से कान खुजाया और उस पर कान का मैल लग गया फिर वोही मैल लगा हुवा तिन्का कान में डाला अगर्चे चन्द बार ऐसा किया हो जब भी रोज़ा न टूटा। (ऐज़न)

मदीना 12: ***दांत*** या मुंह में ख़फ़ीफ़ (या'नी मा'मूली) चीज़ बे मा'लूम सी रह गई कि लुआ़ब के साथ खुद ही उतर जाएगी और वोह उतर गई, ***रोज़ा*** नहीं टूटा। (ऐज़न)

मदीना 13: ***दांतों*** से खून निकल कर ह़ल्क़ तक पहुंचा मगर ह़ल्क़ से नीचे न उतरा तो ***रोज़ा*** न गया।

(फ़त्हुल क़दीर, जिल्दः2, स़-फ़ह़ा:258)

मदीना 14: ***मख्खी*** ह़ल्क़ में चली गई रोज़ा न गया और क़स्दन (या'नी जानबूझ कर) निगली तो चला गया।

(आ़लमगीरी, जिल्दः1, स़-फ़ह़ा:203)

मदीना 15: ***भूले*** से खाना खा रहे थे, याद आते ही लुक़्मा फेंक दिया या पानी पी रहे थे याद आते ही मुंह का पानी फेंक दिया तो ***रोज़ा*** न गया। अगर मुंह में का लुक़्मा या पानी याद आने के बा वुजूद निगल गए तो ***रोज़ा*** गया। (ऐज़न)

मदीना 16: ***सुब्हे*** स़ादिक़ से पहले खा या पी रहे थे और सुब्ह़ होते ही (या'नी स-ह़री का वक़्त ख़त्म होते ही) मुंह में का सब कुछ उगल दिया तो ***रोज़ा*** न गया, और अगर निगल लिया तो जाता रहा। (आ़लमगीरी, जिल्दः1, स़-फ़ह़ा:203)

मदीना 17: ***ग़ीबत*** की तो ***रोज़ा*** न गया । (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:362) अगर्चे ग़ीबत सख़्त कबीरा गुनाह है । कुरआने मजीद में ग़ीबत करने की निस्बत फ़रमाया, "जैसे अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना ।" और ह़दीसे़ पाक में फ़रमाया, "ग़ीबत ज़िना से भी सख़्त तर है ।" (अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:331, ह़दीस़:24) ग़ीबत की वजह से ***रोज़े की नूरानिय्यत*** जाती रहती है । (बहारे शरीअ़त, ह़िस़्स़ा:5, स़-फ़ह़ा:611)

मदीना 18: ***जनाबत*** (या'नी ग़ुसुल फ़र्ज़ होने) की ह़ालत में सुब्ह़ की बल्कि अगर्चे सारे दिन ***जुनुब*** (या'नी बे ग़ुसुल) रहा रोज़ा न गया । (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:372) मगर इतनी देर तक क़स्दन (या'नी जानबूझ कर) ***ग़ुस्ल न करना कि नमाज़ क़ज़ा हो जाए गुनाह व ह़राम है ।*** ह़दीस़ शरीफ़ में फ़रमाया, जिस घर में ***जुनुब*** हो उस में रह़मत के फ़िरिश्ते नहीं आते ।" (बहारे शरीअ़त, ह़िस़्स़ा:5, स़-फ़ह़ा:116)

मदीना 19: ***तिल*** या तिल के बराबर कोई चीज़ चबाई और थूक के साथ ह़ल्क़ से उतर गई तो ***रोज़ा*** न गया मगर जब कि उस का मज़ा ह़ल्क़ में मह़सूस होता हो तो ***रोज़ा*** जाता रहा । (फ़त्ह़ुल क़दीर, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:259)

मदीना 20: ***थूक*** या बल्ग़म मुंह में आया फिर उसे निगल गए तो ***रोज़ा*** न गया । (रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:373)

मदीना 21: ***इसी*** त़रह़ नाक में रींठ जम्अ़ हो गई, सांस के ज़रीए़ खींच कर निगल जाने से भी ***रोज़ा*** नहीं जाता। (ऐज़न)

मक्रूहाते रोज़ा : ***अब*** रोजे़ के मक्रूहात का बयान किया जाता है जिन के करने से ***रोज़ा*** हो तो जाता है मगर उस की नूरानिय्यत चली जाती है। लफ़्ज़ ***''नबी''*** के तीन हुरूफ़ की निस्बत से पहले ***तीन अह़ादीसे़ मुबा-रका*** मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं। फिर फ़िक़्ही अह़काम अ़र्ज़ किये जाएंगे।

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमियान, सरदारे दो[2] जहान, मह़बूबे रह़मान عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जो बुरी बात केहना और उस पर अ़मल करना न छोड़े तो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ को इस की कुछ ह़ाजत नहीं कि उस ने खाना, पीना छोड़ दिया है।''

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:628, ह़दीस़:1903)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, ***नूरे मुजस्सम,*** शाहे बनी आदम, ***रसूले मोह़्तशम,*** ग़रीबों के हमदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है: ***रोज़ा*** सिपर (या'नी ढाल) है जब तक उसे फाड़ा न हो। अ़र्ज़ की गई, किस चीज़ से फाड़ेगा ? इर्शाद फ़रमाया: ''झूट या ग़ीबत से।''

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:94, ह़दीस़:3)

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है: "मैं ने बे शुमार बार सरकारे वाला तबार, बि इज़्ने परवर्द गार दो[2] जहां के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ***रोज़े*** में मिस्वाक करते देखा।" (तिरमिज़ी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:176, अल ह़दीस़:725)

"र-मज़ानुल मुबारक" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से मकरूहाते रोज़ा पर मुश्तमिल 12 पैरे

मदीना 1: ***झूट,*** चुग़ली, ग़ीबत, बद निगाही, गाली देना, बिला इजाज़ते शर-ई किसी का दिल दुखाना, दाढ़ी मुंडाना वग़ैरा चीज़ें वैसे भी ना जाइज़ व ह़राम हैं ***रोज़े*** में और ज़ियादा ह़राम और उन की वजह से ***रोज़े*** में कराहिय्यत आती और रोज़े की ***नूरानिय्यत*** चली जाती है।

मदीना 2: ***रोज़ादार*** का बिला उ़ज़्र किसी चीज़ को चखना या चबाना मकरूह है। चखने के लिये उ़ज़्र येह है कि म-स़लन औ़रत का शौहर बद मिज़ाज है कि नमक कम या बेश होगा तो उस की नाराज़गी का बाइस़ होगा। इस वजह से चखने में ह़रज नहीं। चबाने के लिये उ़ज़्र येह है कि इतना छोटा बच्चा है कि रोटी नहीं चबा सकता और कोई नर्म ग़िज़ा नहीं जो उसे खिलाई जा सके, न हैज़ो नफ़ास[1] वाली या कोई और ऐसा है

1. हैज़ो नफ़ास की ह़ालत में औ़रत को रोज़ा, नमाज़, तिलावत ना जाइज़ व गुनाह है। नमाज़ मुआ़फ़ है मगर बा'दे फ़राग़त रोज़ा क़ज़ा करना लाज़िमी है।

कि उसे चबा कर दे । तो बच्चे के खिलाने के लिये रोटी वग़ैरा चबाना मकरूह नहीं । (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:395) मगर पूरी एह़तियात़ रखिये अगर ह़ल्क़ से नीचे कुछ उतर गया तो रोज़ा गया ।

चखना किसे केहते हैं ? : ***चखने*** के मा'ना वोह नहीं जो आजकल आ़म मुहावरा है या'नी किसी चीज़ का मज़ा दरयाफ़्त करने के लिये उस में से थोड़ा खा लिया जाता है ! कि यूं हो तो कराहिय्यत कैसी ***रोज़ा*** ही जाता रहेगा । बल्कि कफ़्फ़ारे के शराइत़ पाए जाएं तो कफ़्फ़ारा भी लाज़िम होगा । चखने से मुराद येह है कि सिर्फ़ ज़बान पर रख कर मज़ा दरयाफ़्त कर लें और उसे थूक दें । उस में से ह़ल्क़ में कुछ भी न जाने पाए ।

मदीना 3: ***कोई*** चीज़ ख़रीदी और उस का चखना ज़रूरी है कि अगर न चखा तो नुक़्स़ान होगा तो ऐसी सूरत में चखने में ह़रज नहीं वरना मकरूह है । (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:395)

मदीना 4: ***बीवी*** का बोसा लेना और गले लगाना और बदन को छूना मकरूह नहीं । हां अगर येह अन्देशा हो कि ***इन्ज़ाल*** हो जाएगा या जिमाअ़ में मुब्तला होगा और होंट और ज़बान चूसना रोज़े में मुत्लक़न मकरूह हैं । यूं ही मुबा-श-रते फ़ाह़ेशा (या'नी शर्मगाह

से शर्मगाह टकराना) (रद्दुल मुह़तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः396)[1]

मदीना 5: ***गुलाब*** या मुश्क वग़ैरा सूंघना, दाढ़ी मूंछ में तेल लगाना और सुरमा लगाना मकरूह नहीं।

(दुर्रे मुख़्तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः397)

मदीना 6: रोज़े की ह़ालत में हर क़िस्म का ***इ़त्र*** सूंघ भी सकते हैं और कपड़ों पर लगा भी सकते हैं।

(रद्दुल मुह़तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः397)

मदीना 7: ***रोज़े*** में मिस्वाक करना मकरूह नहीं बल्कि जैसे और दिनों में सुन्नत है वैसे ही ***रोज़े*** में भी सुन्नत है, ***मिस्वाक ख़ुश्क*** हो या तर, अगर्चे पानी से तर की हो, ज़वाल से पहले करें या बा'द, किसी वक़्त भी मकरूह नहीं। (रद्दुल मुह़तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः399)

मदीना 8: ***अक्स़र*** लोगों में मशहूर है कि दो पहर के बा'द रोज़ादार के लिये मिस्वाक करना मकरूह है येह हमारे मज़्हबे ह़-नफ़िया के ख़िलाफ़ है। (ऐज़न)

मदीना 9: ***अगर*** मिस्वाक चबाने से रेशे छूटें या मज़ा मह़सूस हो तो ऐसी ***मिस्वाक*** रोज़े में नहीं करना चाहिये।

(फ़तावा र-ज़विय्या तख़्रीज शुदा, जिल्दः10, स़-फ़ह़ाः511) अगर

---

1. शादीशुदगान निय्यतों वग़ैरा की मा'लूमात के लिये फ़तावा र-ज़विय्या जिल्दः23, स़-फ़ह़ा नम्बर 385,386 पर मस्अला नम्बर 41,42 का मुता-लआ़ फ़रमा लें।

रोज़ा याद होते हुए ***मिस्वाक*** का रेशा या कोई जुज़ ह़ल्क़ से नीचे उतर गया तो ***रोज़ा*** फ़ासिद हो जाएगा ।

मदीना 10: ***वुज़ू*** व ग़ुसुल के इ़लावा ठन्डक पहुंचाने की ग़रज़ से कुल्ली करना या नाक में पानी चढ़ाना या ठन्डक के लिये नहाना बल्कि बदन पर भीगा कपड़ा लपेटना भी मकरूह नहीं । हां परेशानी ज़ाहिर करने के लिये भीगा कपड़ा लपेटना मकरूह है कि इ़बादत में दिल तंग होना अच्छी बात नहीं । (रद्दुल मुह़्तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः399)

मदीना 11: ***बा'ज़*** इस्लामी भाई रोज़े में बार बार थूकते रहते हैं शायद वोह समझते हैं कि रोज़े में थूक नहीं निगलना चाहिये, ऐसा नहीं । अलबत्ता मुंह में थूक इकठ्ठा कर के निगल जाना, येह तो बिग़ैर ***रोज़े*** के भी ना पसन्दीदा है और रोज़े में मकरूह । (बहारे शरीअ़त, ह़िस़्स़ाः5, स़-फ़ह़ाः129)

मदीना 12: ***र-मज़ानुल मुबारक*** के दिनों में ऐसा काम करना जाइज़ नहीं जिस से ऐसा ज़ो'फ़ (या'नी कमज़ोरी) आ जाए कि ***रोज़ा*** तोड़ने का ज़न्ने ग़ालिब हो । लिहाज़ा नानबाई को चाहिये कि दो पहर तक रोटी पकाए फिर बाक़ी दिन में आराम करे । (दुर्रे मुख़्तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः400) येही हुक्म मे'मार व मज़दूर और दीगर मशक़्क़त के काम करने वालों का है । ज़ियादा ज़ो'फ़ (कमज़ोरी) का अन्देशा हो तो काम में कमी कर दें ताकि ***रोज़ा*** अदा कर सकें ।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उसने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की।

आस्मान पर से काग़ज़ का पुर्ज़ा गिरा : *मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !* रोज़ों के शर-ई अह़काम सीखने का जज़्बा उजागर करने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** में ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ सुन्नतों भरे सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। एक बार सफ़र कर के तजरिबा कर लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप को वोह वोह दीनी मनाफ़ेअ़ ह़ासिल होंगे कि आप ह़ैरान रह जाएंगे। आप की तरग़ीब के लिये म-दनी क़ाफ़िले की ***एक बहार*** गोश गुज़ार की जाती है। चुनान्चे क़स्बा कॉलोनी (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलास़ा है : "हमारे ख़ानदान में लड़कियां काफ़ी थीं, चचाजान के यहां सात[7] लड़कियां तो बड़े भाई जान के यहां 9 लड़कियां ! मेरी शादी हुई तो मेरे यहां भी लड़की की विलादत हुई। सब को तश्वीश सी होने लगी और आजकल के एक आ़म ज़ेह्न के मुत़ाबिक़ सब को वह्म सा होने लगा कि किसी ने जादू कर के औलादे नरीना का सिल्सिला बन्द करवा दिया है ! मै ने मन्नत मानी कि मेरे यहां लड़का पैदा हुवा तो ***30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र करूंगा। मेरी म-दनी मुन्नी की अम्मी ने एक बार ख़्वाब देखा कि आस्मान से कोई काग़ज़ का पुर्ज़ा इन के क़रीब आ कर गिरा, उठा कर देखा तो उस पर लिखा था, ***बिलाल।*** اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ 30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत

से मेरे यहां ***म-दनी मुन्ने*** की आमद हो गई ! न सिर्फ़ एक बल्कि आगे चल कर यके बा'द दीगरे ***दो म-दनी मुन्ने*** मज़ीद पैदा हुए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का करम देखिये ! ***30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले*** की ब-र-कत सिर्फ़ मुझ तक मह़दूद न रही । हमारे ख़ानदान में जो भी औलादे नरीना से मह़रूम था सब के यहां खुशियों की बहारें लुटाते हुए ***म-दनी मुन्ने*** तवल्लुद हुए । येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं अ़लाकाई म-दनी क़ाफ़िला ज़िम्मादार की हैसिय्यत से म-दनी क़ाफ़िलों की बहारें लुटाने की कोशिशें कर रहा हूं ।"

आ के तुम बा अदब, देख लो फ़ज़्ले रब عَزَّوَجَلَّ ***म-दनी मुन्ने मिलें, क़ाफ़िले में चलो***
खोटी क़िस्मत खरी, गोद होगी हरी, मुन्ना मुन्नी मिलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मांगी मुराद न मिलना भी इन्आ़म ! ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** देखा आपने ! ***म-दनी क़ाफ़िले*** की ब-र-कत से किस त़रह़ मन की मुरादें बर आती हैं ! उम्मीदों की सूखी खेतियां हरी हो जाती हैं, दिलों की पज़् मुर्दा कलियां खिल उठती हैं और ख़ानमां बरबादों की खुशियां लौट आती हैं । मगर येह ज़ेहन में रहे कि ज़रूरी नहीं हर एक की दिली मुराद लाज़िमी ही पूरी हो । बारहा ऐसा

होता है कि बन्दा जो त़लब करता है वोह उस के ह़क़ में बेहतर नहीं होता और उस का सुवाल पूरा नहीं किया जाता। उस की मुंह मांगी मुराद न मिलना ही उस के लिये इन्आ़म होता है। म-स़लन येही कि वोह ***औलादे नरीना*** मांगता है मगर उस को म-दनी मुन्नियों से नवाज़ा जाता है और येही उस के ह़क़ में बेहतर भी होता है। चुनान्चे पारह दूसरा सूरतुल ब-क़रह की आयत नम्बर 216 में रब्बुल इ़बाद عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है :

عَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَیْــٴًـا وَّ هُوَ شَرٌّ لَّكُمْؕ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो।

(पारह:2, अल ब-क़रह 216)

बेटी के फ़ज़ाइल : ***याद रखिये !*** बेटी की फ़ज़ीलत किसी त़रह़ कम नहीं इस ज़िम्न में मुला-ह़ज़ा हों ***तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा*** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :-

(1) जिस ने अपनी तीन[3] बेटियों की परवरिश की वोह जन्नत में जाएगा और उसे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में उस जिहाद करने वाले की मिस्ल अज्र मिलेगा जिस ने दौराने जिहाद रोज़े रखे और नमाज़ क़ाइम की। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:46, ह़दीस़:26, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या, बैरूत)

(2) जिस की तीन[3] बेटियां या तीन बहनें हों और वोह उन के साथ अच्छा सुलूक करे तो दाख़िले जन्नत होगा।

(जामेए़ तिरमिज़ी, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:366, ह़दीस़:1919, दारुल फ़िक्र बैरूत)

(3) जो शख़्स़ तीन[3] बेटियों या बहनों की इस त़रह़ पर-वरिश करे कि इन को अदब सिखाए और इन पर मेहरबानी का बरताव करे यहां तक कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ इन्हें बे नियाज़ कर दे (या'नी वोह बालिग़ हो जाएं या इन का निकाह़ हो जाए या वोह स़ाह़िबे माल हो जाएं)[1] तो अल्लाह तआ़ला इस के लिये जन्नत वाजिब फ़रमा देता है। येह इर्शादे न-बवी सुन कर स़ह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की, अगर कोई शख़्स़ दो[2] लड़कियों की पर-वरिश करे ? तो इर्शाद फ़रमाया कि इस के लिये भी येही अज्रो स़वाब है यहां तक कि अगर लोग एक का ज़िक्र करते तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस के बारे में भी येही फ़रमाते।

(शरहुसुन्नह लिल बग़वी, जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:452, ह़दीस़:3351)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सि़द्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं, मेरे पास एक औ़रत अपनी दो बेटियों को ले कर मांगने के लिये आई (बा'ज़ मजबूरियों में मांगना जाइज़ है येह बीबी स़ाह़िबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا इन्हीं मजबूरियों में फंसी होंगी इस लिये सुवाल दुरुस्त था)[2] तो एक खजूर के सिवा उस ने मेरे पास कुछ नहीं पाया, वोही एक खजूर मैं ने उस को दे दी। तो उस ने इस एक खजूर को अपनी दो[2] बेटियों के दरमियान तक़्सीम कर दिया और ख़ुद नहीं खाया और बेटियों के साथ चली गई। इस के बा'द ***रसूलुल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए और मैं ने इस वाक़िए का तज़्किरा हुज़ूर से किया, तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, जो शख़्स़ इन

1. अशिअ़अतुल लम्आ़त, जिल्द:4, स-फहा:132, (2) मिर्आतुल मनाजीह, जिल्द:6, स-फहा:545

बेटियों के साथ मुब्तला किया गया उस ने इन बेटियों के साथ अच्छा सुलूक किया तो येह बेटियां उस के लिये आग (जहन्नम) से पर्दा और आड़ बन जाएंगी।

(स़ह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:414, ह़दीस़:2629, दारे इब्ने ह़ज़्म, बैरूत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के ***म-दनी माह़ौल*** और सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में रह़मतें क्यूं नाज़िल न होंगी कि इन ***आ़शिक़ाने रसूल*** में न जाने कितने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی होते होंगे। मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं, जमाअ़त में ब-र-कत है और दुआ़ए मज्मए़ मुस्लिमीन अक़्रब ब क़बूल (या'नी मुसल्मानों के मज्मअ़ में दुआ़ मांगना क़बूलिय्यत के क़रीब तर है) उ़-लमा फ़रमाते हैं, ***जहां चालीस मुसल्मान स़ालेह़ (या'नी नेक) जम्अ़ होते हैं उन में से एक वलिय्युल्लाह ज़रूर होता है।*** (फ़तावा र-ज़विय्या तख़्रीज शुदा, जिल्द:24, स़-फ़ह़ा:184, तीसीर शरहे़ जामेइ़स्स़ग़ीर, तह़तुल ह़दीस़:714, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:312, तब्आ़ दारुल ह़दीस़, मिस्र) बिलफ़र्ज़ दुआ़ की क़बूलिय्यत का अस़र ज़ाहिर न हो तब भी ह़र्फ़े शिकायत ज़बान पर नहीं लाना चाहिये। हमारी बेहतरी किस बात में है इस को यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम से ज़ियादा बेहतर जानता है। हमें हर ह़ाल में उस का शुक्र गुज़ार बन्दा बन कर रहना चाहिये। वोह बेटा दे तब भी उसका शुक्र, बेटी दे तब भी शुक्र, दोनों दे तब भी शुक्र और न दे तब भी शुक्र

शुक्र हर हा़ल में शुक्र शुक्र और शुक्र ही अदा करना चाहिये । पारह 25 सू-रतुश्शूरा की आयत नम्बर, 49 और 50 में इर्शादे बारी तआ़ला है:

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿۴۹﴾ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿۵۰﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: अल्लाह ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की सल्त़नत पैदा करता है जो चाहे, जिसे चाहे बेटियां अ़त़ा फ़रमाए और जिसे चाहे बेटे दे या दोनों मिला दे बेटे और बेटियां और जिसे चाहे बांझ कर दे बेशक वोह इ़ल्मो क़ुदरत वाला है ।

(पारह:25, अश्शूरा, 49,50)

स़द्रुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं, वोह मालिक है अपनी ने'मत को जिस त़रह़ चाहे तक़्सीम करे जिसे जो चाहे दे । अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام में भी येह सब सूरतें पाई जाती हैं । ह़ज़रते सय्यिदुना ***लूत़*** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام व ह़ज़रते सय्यिदुना ***शुऐ़ब*** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिर्फ़ बेटियां थी कोई बेटा न था और ह़ज़रते सय्यिदुना ***इब्राहीम*** ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिर्फ फ़रज़न्द थे कोई दुख़्तर हुई ही नहीं और सय्यिदुल अम्बिया

हबीबे खुदा ***मुहम्मदे मुस्तफ़ा*** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अल्लाह तआला ने चार फ़रज़न्द अता फ़रमाए और चार साहिब ज़ादियां और हज़रते सय्यिदुना ***यह्या*** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और हज़रते सय्यिदुना ***ईसा*** रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के कोई औलाद ही नहीं।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स-फ़हा:777)

रोज़ा न रखने की मजबूरियां : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** बा'ज़ मजबूरियां ऐसी हैं जिन के सबब र-मज़ानुल मुबारक में ***रोज़ा*** न रखने की इजाज़त है। मगर येह याद रहे कि मजबूरी में ***रोज़ा*** मुआफ़ नहीं वोह मजबूरी ***ख़त्म*** हो जाने के बा'द इस की ***क़ज़ा*** रखना फ़र्ज़ है। अलबत्ता ***क़ज़ा*** का गुनाह नहीं होगा। जैसा कि "बहारे शरीअत" में "दुर्रे मुख़्तार" के हवाले से लिखा है कि सफ़र व ह़म्ल और बच्चे को दूध पिलाना और मरज़ और बुढ़ापा और ख़ौफ़े हलाकत व इकराह या'नी (अगर कोई जान से मार डालने या किसी उ़ज़्व के काट डालने या सख़्त मार मारने की सहीह धमकी दे कर कहे कि रोज़ा तोड़ डाल अगर रोज़ादार जानता हो कि येह केहने वाला जो कुछ केहता है वोह कर गुज़रेगा तो ऐसी सूरत में रोज़ा फ़ासिद कर देना या तर्क करना गुनाह नहीं। "इकराह से मुराद येही है") व नुक़्साने अ़क्ल और जिहाद येह सब रोज़ा न रखने के उ़ज़्र हैं इन वुजूह से अगर कोई ***रोज़ा*** न रखे तो गुनाहगार नहीं।

(दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुह्तार, जिल्द:3, स-फ़हा:402)

सफ़र की ता'रीफ़ : ***दौराने*** सफ़र भी ***रोज़ा*** न रखने की इजाज़त है। सफ़र की मिक्दार भी ज़ेहन नशीन कर लीजिये। सय्यिदी व मुर्शिदी इमामे अहले सुन्नत, ***आ'ला ह़ज़रत,*** मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की तह़क़ीक़ के मुताबिक़ शरअ़न ***सफ़र*** की मिक्दार साढ़े ***सतावन मील*** (या'नी तक़रीबन बानवे किलो मीटर) है जो कोई इतनी मिक्दार का फ़ासिला तै करने की ग़-रज़ से अपने शहर या गांव की आबादी से बाहर निकल आया, वोह अब शरअ़न ***मुसाफ़िर*** है। उसे ***रोज़ा*** क़ज़ा कर के रखने की इजाज़त है और ***नमाज़*** में भी वोह ***क़स्र*** करेगा। मुसाफ़िर अगर ***रोज़ा*** रखना चाहे तो रख सकता है मगर चार रक्अ़त वाली फ़र्ज़ नमाज़ों में उसे क़स्र करना वाजिब है। नहीं करेगा तो गुनहगार होगा। और जहा–लतन (या'नी इल्म न होने की वजह से) पूरी (चार) पढ़ी तो इस ***नमाज़*** का फेरना भी वाजिब है। (मुलख़्ख़स़न फ़तावा र-ज़विय्या तख़्रीज शुदा, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:270) या'नी मा'लूमात न होने की बिना पर आज तक जितनी भी नमाज़ें ***सफ़र*** में पूरी पढ़ी हैं इन का ह़िसाब लगा कर चार रक्अ़ती फ़र्ज़ ***क़स्र*** की निय्यत से दो[2] दो[2] लौटाने होंगे। हां ***मुसाफ़िर*** को मुक़ीम इमाम के पीछे फ़र्ज़ चार[4] पूरे पढ़ने होते हैं सुन्नतें और वित्र लौटाने की ज़रूरत नहीं। ***क़स्र*** सिर्फ़ ज़ोहर, अ़स्र और इशा की फ़र्ज़ रक्अ़तों में करना है। या'नी इन चार[4] रक्अ़त फ़र्ज़ की जगह दो रक्अ़त अदा की जाएंगी। बाक़ी सुन्नतों

और वित्र की रक्अ़तें पूरी अदा की जाएंगी । दूसरे शहर या गांव वग़ैरा में पहुंचने के बा'द जब तक पन्दरह दिन से कम मुद्दत तक क़ियाम की निय्यत थी ***मुसाफ़िर*** ही केहलाएगा और ***मुसाफ़िर*** के अह़काम रहेंगे । और अगर ***मुसाफ़िर*** ने वहां पहुंच कर पन्दरह15 दिन या उस से ज़ियादा क़ियाम की निय्यत कर ली तो अब ***मुसाफ़िर*** के अह़काम ख़त्म हो जाएंगे । और वोह मुक़ीम केहलाएगा । अब इसे ***रोज़ा भी*** रखना होगा और नमाज़ भी क़स्र नहीं करेगा । सफ़र के मु-तअ़ल्लिक़ ज़रूरी अह़काम की तफ़्सी़ली मा'लूमात ह़ासि़ल करने के लिये बहारे शरीअ़त हि़स्सा चहारुम के बाब "नमाज़े मुसाफ़िर का बयान" का मुता़-लआ़ फ़रमाएं ।

मा'मूली बीमारी कोई मजबूरी नहीं : ***कोई*** सख़्त बीमार हो और उसे ***रोज़ा*** रखने की सूरत में मरज़ बढ़ जाने या देर में शिफ़ायाबी का गुमाने ग़ालिब हो तो ऐसी सूरत में भी ***रोज़ा क़ज़ा*** करने की इजाज़त है । (इस के तफ़्सी़ली अह़काम आगे आ रहे हैं) मगर आजकल देखा जाता है कि मा'मूली ***नज़्ला,*** बुख़ार या दर्दे सर की वजह से लोग ***रोज़ा*** तर्क कर दिया करते हैं या مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ रख कर तोड़ देते हैं, ऐसा हरगिज़ नहीं होना चाहिये । अगर किसी स़ह़ीह़ शर-ई मजबूरी के बिग़ैर कोई रोज़ा छोड़ दे अगर्चे बा'द में सारी उ़म्र भी रोज़े रखे, उस एक ***रोज़े*** की फ़ज़ीलत को नहीं पा सकता ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से क़ब्ल कि रोज़ा न रखने के आ'ज़ार (या'नी मजबूरियों) का तफ़्स़ीली बयान किया जाए लफ़्ज़ "***करम***" के तीन3 हुरूफ़ की निस्बत से तीन3 अह़ादीसे़ मुबा-रका बयान की जाती हैं।

सफ़र में चाहे रोज़ा रखो, चाहे न रखो

मदीना 1: ***उम्मुल मुअ्मिनीन*** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा बिन अम्र व अस्लमी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ बहुत रोज़े रखा करते थे । उन्हों ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सख़ावत, सरापा रह़मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया, सफ़र में रोज़ा रखूं ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ***"चाहे रखो, चाहे न रखो ।"***

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:640, ह़दीस:1943)

मदीना 2: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, सोलहवीं र-मज़ानुल मुबारक को सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ हम ***जिहाद*** में गए, हम में बा'ज़ ने ***रोज़ा*** रखा और बा'ज़ ने न रखा। न तो रोज़ादारों ने ग़ैर रोज़ादारों पर ऐ़ब लगाया और न इन्हों ने

उन पर। (सह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:564, ह़दीस़:1116)

मदीना 3: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अनस बिन मालिक का'बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मदीने के ताजदार, ग़रीबों के ***ग़म गुसार*** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश गवार है : ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने ***मुसाफ़िर*** से आधी नमाज़ मुआ़फ़ फ़रमा दी। (या'नी चार4 रक्अ़त वाली फ़र्ज़ नमाज़ दो2 रक्अ़त पढ़े) और मुसाफ़िर और दूध पिलाने वाली और ह़ामिला से ***रोज़ा*** मुआ़फ़ फ़रमा दिया। (कि इजाज़त है उस वक़्त न रखें बा'द में वोह मिक़्दार पूरी कर लें)

(जामेए़ तिरमिज़ी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:170, ह़दीस़:715)

"اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا سَیِّدِی یَا رَسُولَ اللّٰہ" के तैंतीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से रोज़ा न रखने की इजाज़ात पर मब्नी 33 पैरे

(मगर वोह मजबूरी ख़त्म हो जाने की सूरत में हर रोज़े के बदले एक रोज़ा क़ज़ा रखना होगा)

मदीना 1: ***मुसाफ़िर*** को रोज़ा रखने या न रखने का इख़्तियार है।

(रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:403)

मदीना 2: ***अगर*** ख़ुद उस ***मुसाफ़िर*** को और उस के साथ वाले को ***रोज़ा*** रखने में ज़रर (या'नी नुक़्स़ान) न पहुंचे तो ***रोज़ा*** रखना ***सफ़र*** में बेहतर है और अगर दोनों2 या उन

में से किसी एक को नुक़्स़ान हो रहा हो तो रोज़ा न रखना बेहतर है। (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:405)

मदीना 3: ***मुसाफ़िर*** ने ***ज़ह्वए कुब्रा***[1] से पेशतर इक़ामत की और अभी कुछ खाया नहीं तो रोज़े की निय्यत कर लेना वाजिब है। (अल जौ-ह-रतुन्नय्यरह, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:186) म-स़लन आप का घर पाकिस्तान के मश्हूर शहर ह़ैदरआबाद में है और आप बाबुल मदीना कराची से ह़ैदरआबाद के लिये चले और सुब्ह़ दस बजे पहुंच गए और सुब्हे़ स़ादिक़ के बा'द रास्ते में कुछ खाया पिया न था तो अब रोज़े की निय्यत कर लीजिये।

मदीना 4: दिन में अगर सफ़र किया तो उस दिन का ***रोज़ा*** छोड़ देने के लिये आज का सफ़र उ़ज़्र नहीं। अलबत्ता अगर दौराने सफ़र तोड़ देंगे तो कफ़्फ़ारा लाज़िम न आएगा मगर गुनाह ज़रूर होगा। (रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:416) और रोज़ा क़ज़ा करना फ़र्ज़ रहेगा।

मदीना 5: ***अगर*** सफ़र शुरूअ़ करने से पहले तोड़ दिया। फिर सफ़र किया तो (अगर कफ़्फ़ारे के शराइत़ पाए गए तो) ***कफ़्फ़ारा*** भी लाज़िम आएगा। (एज़न)

मदीना 6: ***अगर*** दिन में ***सफ़र*** शुरूअ़ किया (और दौराने सफ़र रोज़ा तोड़ा न था) और मकान पर कोई चीज़ भूल गए थे उसे लेने वापस आए और अब अगर आ कर ***रोज़ा*** तोड़ डाला तो (शराइत़ पाए जाने की सूरत में) ***कफ़्फ़ारा*** भी वाजिब है। अगर

---

1. जह्वए कुब्रा की ता'रीफ़ रोज़े की निय्यत के बयान में गुज़र चुकी है।

दौराने सफ़र ही तोड़ दिया होता तो सिर्फ़ ***क़ज़ा*** रखना फ़र्ज़ होता जैसा कि नम्बर 4 में गुज़रा ।

(फ़तावा आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:207)

मदीना 7: ***किसी*** को ***रोज़ा*** तोड़ डालने पर मजबूर किया गया तो रोज़ा तो तोड़ सकता है मगर स़ब्र किया तो अज्र मिलेगा । (मजबूरी की ता'रीफ़, स़-फ़ह़ा:234 पर गुज़री)

(रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:402)

मदीना 8: ***सांप*** ने डस लिया और जान ख़तरे में पड़ गई तो रोज़ा तोड़ दे । (रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:402)

मदीना 9: ***जिन*** लोगों ने इन मजबूरियों के सबब ***रोज़ा*** तोड़ा उन पर फ़र्ज़ है कि इन रोज़ों की ***क़ज़ा*** रखें और इन ***क़ज़ा*** रोज़ों में तरतीब फ़र्ज़ नहीं । लिहाज़ा अगर उन रोज़ों की क़ज़ा करने से क़ब्ल नफ़्ल ***रोज़े*** रखे तो येह नफ़्ली रोज़े हो गए, मगर हुक्म येह है कि उ़ज़्र जाने के बा'द आइन्दा र-मज़ानुल मुबारक के आने से पहले पहले ***क़ज़ा*** रख लें । ह़दीसे़ पाक में फ़रमाया, "जिस पर गुज़श्ता र-मज़ानुल मुबारक की क़ज़ा बाक़ी है और वोह न रखे, उस के इस ***र-मज़ानुल मुबारक*** के रोज़े क़बूल न होंगे" (मज्मउ़ज़्ज़वाइद, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:415)

अगर वक़्त गुज़रता गया और क़ज़ा रोज़े न रखे

यहां तक कि दूसरा ***र-मज़ान शरीफ़*** आ गया तो अब ***क़ज़ा*** रोज़े रखने की बजाए पहले इसी र-मज़ानुल मुबारक के रोज़े रख लीजिये । क़ज़ा बा'द में रख लीजिये । बल्कि अगर ग़ैर मरीज़ व मुसाफ़िर ने ***क़ज़ा*** की निय्यत की जब भी ***क़ज़ा*** नहीं बल्कि इसी र-मज़ान शरीफ़ के रोज़े हैं । (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:405)

मदीना 10: ***ह़म्ल*** वाली या दूध पिलाने वाली औ़रत को अगर अपनी या बच्चे की जान जाने का स़ह़ीह़ अन्देशा है तो इजाज़त है कि इस वक़्त ***रोज़ा*** न रखे । ख़्वाह दूध पिलाने वाली बच्चे की मां हो या दाई, अगर्चे र-मज़ानुल मुबारक में दूध पिलाने की नौकरी इख़्तियार की हो ।

(दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:403)

मदीना 11: **भूक** और पियास ऐसी हो कि हलाकत का ख़ौफ़े स़ह़ीह़ हो या नुक़्स़ाने अ़क़्ल का अन्देशा हो तो ***रोज़ा*** न रखें ।

(दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:402)

मदीना 12: ***मरीज़*** को मरज़ बढ़ जाने या देर में अच्छा होने या तन्दुरुस्त को बीमार हो जाने का गुमाने ग़ालिब हो तो इजाज़त है कि उस दिन ***रोज़ा*** न रखे । (बल्कि बा'द में क़ज़ा कर ले) (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:403)

मदीना 13: ***इन*** सूरतों में ग़ालिब गुमान की क़ैद है, मह़ज़ वह्म ना

काफ़ी है। ग़ालिब गुमान की तीन[3] सूरतें हैं। (1) पहली सूरत येह है कि इस की ज़ाहिरी निशानी पाई जाती है (2) दूसरी येह कि इस शख़्स का ज़ाती तजरिबा है। (3) तीसरी येह कि किसी मुसल्मान ह़ाज़िक़ (या'नी तजरिबे कार और अपने फ़न्ने तिब्ब में माहिर) त़बीबे मस्तूर या'नी ग़ैरे फ़ासिक़ ने इस की ख़बर दी हो। और अगर न कोई अ़लामत हो, न तजरिबा, न इस क़िस्म के त़बीब ने उसे बताया बल्कि किसी काफ़िर या फ़ासिक़ त़बीब (म-स़लन दाढ़ी मुंडे डॉक्टर) के केहने से इफ़्तार कर लिया या'नी रोज़ा तोड़ डाला तो शराइत़ पाए जाने की सूरत में ***क़ज़ा*** के साथ साथ ***कफ़्फ़ारा*** भी लाज़िम आएगा। (रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:404)

मदीना 14: ***ह़ैज़*** या नफ़ास की ह़ालत में ***नमाज़, रोज़ा*** ह़राम है और ऐसी ह़ालत में नमाज़ व रोज़ा स़ह़ीह़ होते ही नहीं। नीज़ तिलावते क़ुरआने पाक या क़ुरआने पाक की आयाते मुक़द्दसा या उन का तर्जमा छूना येह सब भी ***ह़राम*** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा:2, स़-फ़ह़ा:88,89)

मदीना 15: ***ह़ैज़*** व नफ़ास वाली के लिये इख़्तियार है कि छुप कर खाए या ज़ाहिरन। रोज़ादार की त़रह़ रहना उस पर ज़रूरी नहीं। (अल जौ-ह-रतुन्नय्यरह, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:186)

मदीना 16: ***मगर*** छुप कर खाना बेहतर है ख़ुसूसन ह़ैज़वाली के लिये। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा:5, स़-फ़ह़ा:135)

मदीना 17: ***''शैख़े फ़ानी''*** या'नी वोह मुअ़म्मर बुज़ुर्ग जिन की उ़म्र इतनी बढ़ चुकी है कि अब वोह बेचारे रोज़ बरोज़ कमज़ोर ही होते चले जाएंगे । जब वोह बिल्कुल ही रोज़ा रखने से आ़जिज़ हो जाएं । या'नी न अब रख सकते हैं न आइन्दा रोज़े की त़ाक़त आने की उम्मीद है । उन्हें अब रोज़ा न रखने की इजाज़त है । लिहाज़ा हर रोज़े के बदले में (बत़ौरे फ़िदया) एक ***स़-द-क़ए फ़ित्र*** (स-द-क़ए फ़ित्र की मिक़्दार सवा दो सेर या'नी तक़रीबन दो किलो पचास गिराम गेहूं या उस का आटा या उन गेहूं की रक़म है ।) की मिक़्दार ***मिस्कीन*** को दे दें । (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:410)

मदीना 18: ***अगर*** ऐसा बूढ़ा गर्मियों में रोज़े नहीं रख सकता तो न रखे मगर इस के बदले सर्दियों में रखना फ़र्ज़ है ।

(रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:472)

मदीना 19: ***अगर*** फ़िदया देने के बा'द रोज़ा रखने की त़ाक़त आ गई तो दिया हुवा ***फ़िदया*** स़-द-क़ए नफ़्ल हो गया । उन रोज़ों की ***क़ज़ा*** रखें । (आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:207)

मदीना 20: ***येह*** इख़्तियार है कि शुरूए र-मज़ान ही में पूरे र-मज़ान का एक दम ***फ़िदया*** दे दें या आख़िर में दें ।

(आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:207)

मदीना 21: ***फ़िदया*** देने में येह ज़रूरी नहीं कि जितने फ़िदये हों उतने

ही मसाकीन को अलग अलग दें। बल्कि एक ही मिस्कीन को कई दिन के भी दिये जा सकते हैं।

(दुर्रे मुख़्तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः410)

मदीना 22: ***नफ़्ल*** रोज़ा क़स्दन शुरूअ़ करने वाले पर अब पूरा करना वाजिब हो जाता है कि तोड़ दिया तो ***क़ज़ा*** वाजिब होगी।

(रद्दुल मुह़्तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः411)

मदीना 23: ***अगर*** आप ने येह गुमान कर के ***रोज़ा*** रखा कि मेरे ज़िम्मे कोई ***रोज़ा*** है मगर रोज़ा शुरूअ़ करने के बा'द मा'लूम हुवा कि मुझ पर किसी क़िस्म का कोई ***रोज़ा*** नहीं है, अब अगर फ़ौरन तोड़ दिया तो ***कुछ*** नहीं और येह मा'लूम करने के बा'द अगर फ़ौरन न तोड़ा, तो अब नहीं तोड़ सकते, अगर तोड़ेंगे तो ***क़ज़ा*** वाजिब होगी।

(दुर्रे मुख़्तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः411)

मदीना 24: ***नफ़्ल रोज़ा*** क़स्दन नहीं तोड़ा बल्कि बिला इख़्तियार टूट गया। म-स़लन दौराने रोज़ा औ़रत को हैज़ आ गया, जब भी ***क़ज़ा*** वाजिब है। (दुर्रे मुख़्तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः412)

मदीना 25: ***ई़दुल*** फ़ित्र या बक़र ईद के चार दिन या'नी 10,11,12,13 ***ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम*** में से किसी भी दिन का रोज़ए नफ़्ल रखा तो (चूंकि इस पांच दिनों में रोज़ा रखना ***ह़राम*** है लिहाज़ा) इन रोज़े का पूरा करना वाजिब नहीं। न इस के तोड़ने पर

क़ज़ा वाजिब, बल्कि इस का तोड़ देना ही वाजिब है। और अगर इन दिनों में रोज़ा रखने की मन्नत मानी तो मन्नत पूरी करनी वाजिब है मगर इन दिनों में नहीं, बल्कि और दिनों में। (रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:412)

मदीना 26: ***नफ़्ल*** रोज़ा बिला उ़ज़्र तोड़ देना ना जाइज़ है। मेहमान के साथ अगर मेज़बान न खाएगा तो उसे ना गवार होगा या मेहमान अगर खाना न खाएगा तो मेज़बान को अज़िय्यत होगी तो नफ़्ल रोज़ा तोड़ देने के लिये येह उ़ज़्र है। (سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ शरीअ़त को एह़तिरामे मुस्लिम का किस क़दर लिह़ाज़ है) बशर्ते़ कि येह भरोसा हो कि इस की क़ज़ा रख लेगा और ***ज़ह्वए कुब्रा*** से पहले तोड़ दे बा'द को नहीं। (आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:208)

मदीना 27: ***दा'वत*** के सबब ***ज़ह्वए कुब्रा*** से पहले रोज़ा तोड़ सकता है जब कि दा'वत करने वाला मह़ज़ इस की मौजूदगी पर राज़ी न हो और उस के न खाने के सबब नाराज़ हो बशर्ते़ कि येह भरोसा हो कि बा'द में रख लेगा, लिहाज़ा अब रोज़ा तोड़ ले और उस की क़ज़ा रखे। लेकिन अगर दा'वत करने वाला मह़ज़ उस की मौजूदगी पर राज़ी हो जाए और न खाने पर नाराज़ न हो तो रोज़ा तोड़ने की इजाज़त नहीं। (फ़तावा आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:208, कोइटा)

मदीना 28: ***नफ़्ल*** रोज़ा ज़वाल के बा'द मां बाप की नाराज़गी के सबब तोड़ सकता है । और इस में अ़स्र से पहले तक तोड़ सकता है बा'दे अ़स्र नहीं ।

(दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:414)

मदीना 29: ***औ़रत*** बिग़ैर शौहर की इजाज़त के नफ़्ल और मन्नत व क़सम के रोज़े न रखे और रख लिये तो शौहर तुड़वा सकता है मगर तोड़ेगी तो ***क़ज़ा*** वाजिब होगी मगर इस की ***क़ज़ा*** में भी शौहर की इजाज़त दरकार है । या शौहर और उस के दरमियान जुदाई हो जाए या'नी त़लाक़े बाइन (त़लाक़े बाइन उस त़लाक़ को केहते हैं जिस से बीवी निकाह़ से बाहर हो जाती है, अब शौहर रुजूअ़ नहीं कर सकता) दे दे या मर जाए । हां अगर ***रोज़ा*** रखने में शौहर का कुछ ह़रज न हो, म-स़लन वोह सफ़र में है या बीमार है या एह़राम में है तो इन ह़ालतों में बिग़ैर इजाज़त के भी ***क़ज़ा*** रख सकती है बल्कि वोह मन्अ़ करे जब भी रख सकती है । अलबत्ता इन दिनों में भी शौहर की इजाज़त के बिग़ैर नफ़्ल रोज़ा नहीं रख सकती । (रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:415)

मदीना 30: ***र-मज़ानुल मुबारक*** और क़ज़ाए र-मज़ानुल मुबारक के लिये शौहर की इजाज़त की कुछ ज़रूरत नहीं बल्कि उस की मुमा-न-अ़त पर भी रखे ।

(दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:415)

मदीना 31: ***अगर*** आप किसी के मुलाज़िम हैं या उस के यहां मज़्दूरी पर काम करते हैं तो उस की इजाज़त के बिग़ैर ***नफ़्ल रोज़ा*** नहीं रख सकते क्यूं कि ***रोज़े*** की वजह से काम में सुस्ती आएगी । हां ! अगर रोज़ा रखने के बा वुजूद आप बा क़ाइदा काम कर सकते हैं, उस के काम में किसी क़िस्म की कोताही नहीं होती, काम पूरा हो जाता है । तो अब ***नफ़्ल रोज़े*** की इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं ।

(रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:416)

मदीना 32: ***नफ़्ल*** रोज़े के लिये बेटी को बाप, मां को बेटे, बहन को भाई से इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं । (रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:416)

मदीना 33: ***मां*** बाप अगर बेटे को ***रोज़ए नफ़्ल*** से मन्अ़ कर दें इस वजह से कि मरज़ का अन्देशा है तो मां बाप की इत़ाअ़त करे । (रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:416)

अब " لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ " के बारह हुरूफ़ की निस्बत से "12 पैरे" उन चीज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ बयान किये जाते हैं जिन के करने से सिर्फ़ क़ज़ा लाज़िम आती है । क़ज़ा का त़रीक़ा येह है कि हर रोज़े के बदले र-मज़ानुल मुबारक के बा'द क़ज़ा की निय्यत से एक रोज़ा रख लें ।

क़ज़ा के बारे में 12 पैरे

मदीना 1: ***येह*** गुमान था कि सुब्ह़ नहीं हुई और खाया, पिया या जिमाअ़ किया बा'द को मा'लूम हुवा कि सुब्ह़ हो चुकी थी तो ***रोज़ा*** न हुवा, इस ***रोज़े की क़ज़ा*** करना ज़रूरी है या'नी इस ***रोज़े*** के बदले में एक ***रोज़ा*** रखना होगा।

(रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:380)

मदीना 2: ***खाने*** पर सख़्त मजबूर किया गया या'नी ***इक्राहे शर-ई*** पाया गया। अब चूंकि मजबूरी है, लिहाज़ा ख़्वाह अपने हाथ से ही खाया हो सिर्फ़ ***क़ज़ा*** लाज़िम है। (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:402) इस मस्अले का खुलासा येह है कि कोई क़त्ल या उ़ज़्व काट डालने या शदीद मार लगाने की स़ह़ीह़ धमकी दे कर कहे कि रोज़ा तोड़ डाल, अगर रोज़ादार येह समझे कि धमकी देनेवाला जो कुछ केह रहा है वोह कर गुज़रेगा। तो अब "इक्राहे शर-ई" पाया गया और ऐसी सूरत में रोज़ा तोड़ डालने की रुख़्स़त है मगर बा'द में इस रोज़े की क़ज़ा लाज़िमी है।

मदीना 3: ***भूल*** कर खाया, पिया या जिमाअ़ किया था या नज़र करने से इन्ज़ाल हुवा था या एह़तिलाम हुवा या क़ै हुई और इन सब सूरतों में येह गुमान किया कि रोज़ा जाता रहा। अब क़स्दन खा लिया तो सिर्फ़ ***क़ज़ा*** फ़र्ज़ है।

(दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:375)

मदीना 4: ***रोज़े*** की ह़ालत में नाक में दवा चढ़ाई तो रोज़ा टूट गया और इस की ***क़ज़ा*** लाज़िम है।

(दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:376)

मदीना 5: ***पत्थर,*** कंकर, (ऐसी) मिट्टी (जो आ़-दतन न खाई जाती हो) रूई, घास, काग़ज़ वग़ैरा ऐसी चीज़ें खाईं जिन से लोग घिन करते हों। इन से भी रोज़ा तो टूट गया मगर सिर्फ़ ***क़ज़ा*** करना होगा। (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:377)

मदीना 6: ***बारिश*** का पानी या औला ह़ल्क़ में चला गया तो रोज़ा टूट गया और ***क़ज़ा*** लाज़िम है। (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:378)

मदीना 7: ***बहुत*** सारा पसीना या आंसू निगल लिया तो रोज़ा टूट गया, ***क़ज़ा*** करना होगा। (ऐज़न)

मदीना 8: ***गुमान*** किया कि अभी तो रात बाक़ी है, ***स-ह़री*** खाते रहे और बा'द में पता चला कि स-ह़री का वक़्त ख़त्म हो चुका था। इस सूरत में भी ***रोज़ा*** गया और क़ज़ा करना होगा। (रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:380)

मदीना 9: ***इसी*** त़रह़ गुमान कर के कि सूरज ग़ुरूब हो चुका है। खा पी लिया और बा'द में मा'लूम हुवा कि सूरज नहीं डूबा था जब भी ***रोज़ा*** टूट गया और ***क़ज़ा*** करें।

(रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:380)

मदीना 10: ***अगर*** ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले ही ***साइरन*** की आवाज़

गूंज उठी या ***अज़ाने*** मग़रिब शुरूअ़ हो गई और आप ने रोज़ा इफ़्त़ार कर लिया। और फिर बा'द में मा'लूम हुवा कि ***साइरन*** या ***अज़ान*** तो वक़्त से पहले ही शुरूअ़ हो गए थे। इस में आप का क़ुसूर हो या न हो बहर ह़ाल ***रोज़ा*** टूट गया इसे ***क़ज़ा*** करना होगा।

(माख़ूज़ मिन रद्दिल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:383)

मदीना 11: ***आजकल*** चूंकि ला परवाही का दौर दौरा है इस लिये हर एक को चाहिये कि अपने रोज़े की ख़ुद ह़िफ़ाज़त करे। ***साइरन, रेडियो, टी.वी.*** के ए'लान बल्कि मस्जिद की अज़ान पर भी इक्तिफ़ा करने के बजाए ख़ुद ***स-ह़री व इफ़्त़ार*** के वक़्त की स़ह़ीह़ स़ह़ीह़ मा'लूमात ह़ासिल करे।

मदीना 12: ***वुज़ू*** कर रहे थे पानी नाक में डाला और दिमाग़ तक चढ़ गया या ह़ल्क़ के नीचे उतर गया, रोज़ादार होना याद था तो ***रोज़ा*** टूट गया और ***क़ज़ा*** लाज़िम है। हां अगर उस वक़्त रोज़ादार होना याद नहीं था तो ***रोज़ा*** न गया।

(आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:202)

कफ़्फ़ारे के अह़काम : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !***

र-मज़ानुल मुबारक का रोज़ा रख कर बिग़ैर किसी स़ह़ीह़ मजबूरी के जानबूझ कर तोड़ देने से बा'ज़ सूरतों में सिर्फ़ ***क़ज़ा*** लाज़िम आती है और

बा'ज़ सूरतों में ***क़ज़ा*** के साथ साथ ***कफ़्फ़ारा*** भी लाज़िम हो जाता है । इस के बारे में ***चन्द अह़काम*** बयान हों इस से पहले येह ज़ेहन नशीन कर लीजिये कि ***रोज़े का कफ़्फ़ारा*** क्या है ।

रोज़े के कफ़्फ़ारे का त़रीक़ा : रोज़ा तोड़ने का ***कफ़्फ़ारा*** येह है कि मुम्किन हो तो एक बांदी या ग़ुलाम आज़ाद करे और येह न कर सके म-सलन इस के पास न लौंडी, ग़ुलाम है न इतना माल कि ख़रीद सके, या माल तो है मगर ग़ुलाम मुयस्सर नहीं, जैसा कि आजकल लौंडी ग़ुलाम नहीं मिलते । तो अब ***पै दर पै साठ रोज़े*** रखे । येह भी अगर मुम्किन न हो तो ***साठ मिस्कीनों को पेट भर कर दोनों² वक़्त खाना खिलाए*** येह ज़रूरी है कि जिस को एक वक़्त खिलाया दूसरे वक़्त भी उसी को खिलाए । येह भी हो सकता है कि ***साठ ⁶⁰ मसाकीन को एक एक स़-द-क़ए फ़ित्र*** या'नी तक़रीबन दो² किलो 50 ग्राम गेहूं या उस की रक़म का मालिक कर दिया जाए । एक ही मिस्कीन को इकठ्ठे साठ⁶⁰ स़-द-क़ए फ़ित्र नहीं दे सकते । हां येह कर सकते हैं कि एक ही को साठ दिन तक रोज़ाना एक एक स़-द-क़ए फ़ित्र दें । रोज़ों की सूरत में (दौराने कफ़्फ़ारा) अगर दरमियान में एक दिन का भी ***रोज़ा*** छूट गया तो फिर नए सिरे से ***साठ ⁶⁰ रोज़े*** रखने होंगे, पहले के रोज़े शामिले

ह़िसाब न होंगे अगर्चे ***उनसठ*** [59] रख चुका था । चाहे बीमारी वग़ैरा किसी भी उ़ज़्र के सबब छूटा हो । हां औ़रत को अगर हैज़ आ जाए तो हैज़ की वजह से जितने नाग़े हुए, येह नाग़े शुमार नहीं किये जाएंगे । या'नी पहले के रोजे़ और हैज़ के बा'द वाले दोनों[2] मिल कर साठ[60] हो जाने से ***कफ़्फ़ारा*** अदा हो जाएगा ।

(मुलख़्ख़स अज़ रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:390)

जो कोई रात से ही रोजे़ की ***निय्यत*** कर चुका हो और फिर सुब्ह़ या दिन में किसी भी वक़्त बल्कि अगर ***इफ़्तार*** से एक लम्ह़ा भी क़ब्ल किसी स़ह़ीह़ मजबूरी के बिग़ैर किसी ऐसी चीज़ जिस से त़बीअ़ते इन्सानी नफ़रत न करती हो (म-स़लन खाना, पानी, चाय, फल, बिस्कुट, शरबत, शहद, मिठाई वग़ैरा वग़ैरा) से अ़मदन (या'नी जानबूझ कर) रोज़ा तोड़ डाले तो अब ***र-मज़ान शरीफ़*** के बा'द इस रोजे़ की ***क़ज़ा*** की निय्यत से एक रोज़ा रखना होगा । और फिर उस का ***कफ़्फ़ारा*** भी देना होगा । जिस का त़रीक़ा गुज़रा ।

"या अल्लाह करम कर" के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से कफ़्फ़ारे से मु-तअ़ल्लिक़ 11 पैरे

मदीना 1: ***र-मज़ानुल मुबारक*** में किसी आ़क़िल बालिग़ मुक़ीम (या'नी जो मुसाफ़िर न हो) ने अदाए रोज़ए र-मज़ान की निय्यत से रोज़ा रखा और बिग़ैर किसी स़ह़ीह़ मजबूरी के

जानबूझ कर जिमाअ़ किया या करवाया, या कोई भी चीज़ लज़्ज़त के लिये खाई या पी तो रोज़ा टूट गया और इस की ***क़ज़ा*** और ***कफ़्फ़ारा*** दोनों लाज़िम हैं।

(रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:388)

मदीना 2: ***जिस*** जगह रोज़ा तोड़ने से ***कफ़्फ़ारा*** लाज़िम आता है, उस में शर्त़ येह है कि ***रात*** ही से रोज़ए र-मज़ानुल मुबारक की निय्यत की हो। अगर ***दिन*** में निय्यत की और तोड़ दिया तो कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं। सिर्फ़ ***क़ज़ा*** काफ़ी है। (अल जौ-ह-रतुन्नय्यरह, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:180)

मदीना 3: ***क़ै*** आई या भूल कर खाया या जिमाअ़ किया और इन सब सूरतों में इसे मा'लूम था कि रोज़ा न गया फिर भी खा लिया तो ***कफ़्फ़ारा*** लाज़िम नहीं।

(रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:375)

मदीना 4: ***एह़तिलाम*** हुवा और उसे मा'लूम भी था कि रोज़ा न गया इस के बा वुजूद खा लिया तो ***कफ़्फ़ारा*** लाज़िम है।

(रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:375)

मदीना 5: ***अपना*** लुआ़ब थूक कर चाट लिया। या दूसरे का थूक निगल लिया तो ***कफ़्फ़ारा*** नहीं मगर मह़बूब का लज़्ज़त या मुअ़ज़्ज़मे दीनी (या'नी बुज़ुर्ग) का ***तबर्रुक*** के त़ौर पर थूक निगल लिया तो ***कफ़्फ़ारा*** लाज़िम है। (आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:203)

ख़रबूज़ा या तरबूज़ का छिल्का खाया । अगर ख़ुश्क हो या ऐसा हो कि लोग इस के खाने से घिन करते हों, तो ***कफ़्फ़ारा*** नहीं, वरना है। (आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:202)

मदीना 6: ***कच्चे*** चावल, बाजरा, मसूर, मूंग खाई तो ***कफ़्फ़ारा*** लाज़िम नहीं, येही हुक्म कच्चे जव का है और भुने हुए हों तो ***कफ़्फ़ारा*** लाज़िम । (आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:202)

मदीना 7: ***स-ह़री*** का निवाला मुंह में था कि सुब्ह़े स़ादिक़ का वक़्त हो गया, या भूल कर खा रहे थे, निवाला मुंह में था कि याद आ गया, फिर भी निगल लिया तो इन दोनों सूरतों में ***कफ़्फ़ारा*** वाजिब और अगर निवाला मुंह से निकाल कर फिर खा लिया हो तो सिर्फ़ ***क़ज़ा*** वाजिब होगी ***कफ़्फ़ारा*** नहीं । (आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:202)

मदीना 8: ***बारी*** से बुख़ार आता था और आज बारी का दिन था लिहाज़ा येह गुमान कर के कि बुख़ार आएगा, रोज़ा क़स्दन तोड़ दिया तो इस सूरत में ***कफ़्फ़ारा*** साक़ित़ है (या'नी कफ़्फ़ारे की ज़रूरत नहीं सिर्फ़ क़ज़ा काफ़ी है) यूं ही औ़रत को मुअ़य्यन तारीख़ पर ह़ैज़ आता था और आज ह़ैज़ आने का दिन था उस ने क़स्दन रोज़ा तोड़ दिया और ह़ैज़ न आया तो ***कफ़्फ़ारा*** साक़ित़ हो गया। (या'नी कफ़्फ़ारे की ज़रूरत नहीं सिर्फ़ क़ज़ा काफ़ी है) (दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:391)

मदीना 9: ***अगर*** दो² रोज़े तोड़े तो दोनों² के लिये ***दो² कफ़्फ़ारे*** दे अगर्चे पहले का अभी कफ़्फ़ारा अदा न किया था जब कि दोनों² दो² र-मज़ान के हों और अगर दोनों² रोज़े एक ही र-मज़ान के हों और पहले का ***कफ़्फ़ारा*** न अदा किया हो तो एक ही ***कफ़्फ़ारा*** दोनों² के लिये काफ़ी है ।

(अल जौ-ह-रतुन्नय्यरह, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:182)

मदीना 10: ***कफ़्फ़ारा*** लाज़िम होने के लिये येह भी ज़रूरी है कि रोज़ा तोड़ने के बा'द कोई ऐसा अम्र वाक़ेअ़ न हुवा हो जो रोज़े के मुनाफ़ी है या बिग़ैर इख़्तियार ऐसा अम्र न पाया गया हो जिस की वजह से रोज़ा तोड़ने की रुख़्स़त होती म-स़लन औ़रत को इस दिन ह़ैज़ या नफ़ास आ गया या रोज़ा तोड़ने के बा'द उसी दिन में ऐसा बीमार हुवा जिस में रोज़ा न रखने की इजाज़त है तो कफ़्फ़ारा साक़ित़ है और सफ़र से साक़ित़ न होगा कि येह इख़्तियारी अम्र है ।

(अल जौ-ह-रतुन्नय्यरह, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:181)

मदीना 11: ***जिन*** सूरतों में रोज़ा तोड़ने पर कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं उन में शर्त़ है कि एक बार ऐसा हुवा हो और मा'सिय्यत (या'नी ना फ़रमानी) का क़स्द (इरादा) न किया हो वरना इन में कफ़्फ़ारा देना होगा । (अद्दुर्रुल मुख़्तार व रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:440)

रोज़ा बरबाद होने से बचाओ ! :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आजकल इस्लामी मा'लूमात से अक्स़र मुसल्मान बिल्कुल

कोरे होते चले जा रहे हैं। और ऐसी ऐसी ग़-लत़ियां करते हैं कि बा'ज़ अवक़ात इ़बादत ही ज़ाएअ़ हो जाती है। ***अफ़्सोस !*** कि अब तमाम तर तवज्जोह सिर्फ़ और सिर्फ़ दुन्यवी उ़लूम व फ़ुनून के हुसूल पर ही है। आह ! अब सुन्नतें सीखने के लिये, इ़बादात के अह़कामात की मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये हमारी अक्स़रिय्यत को फ़ुरस़त है न शौक़। बल्कि अगर कोई दर्दमन्द ***इस्लामी भाई*** समझाने की कोशिश करे भी तो ना गवार गुज़रता है। इ़बादात में इस क़दर ग़लत़ बातें ख़ल्त मल्त़ हो गई हैं कि ***पनाहे ख़ुदा*** عَزَّوَجَلَّ ! इन्हीं में से ***स-ह़री*** और ***इफ़्त़ार*** भी है। इन के बारे में भी बा'ज़ लोग त़रह़ त़रह़ की बातें बताते हैं और फिर उस पर ज़िद भी करते हैं। म-स़लन ***स-ह़री*** के आख़िरी वक़्त के बारे में बा'ज़ लोग केह देते हैं, "जब तक सुब्ह़ का इतना उजाला फैल जाए कि च्यूटियां नज़र आने लगें उस वक़्त तक ***स-ह़री*** का वक़्त बाक़ी रहता है।" !!! इसी त़रह़ कुछ लोग येह समझते हैं कि जब तक ***फ़ज्र*** की ***अज़ान*** की आवाज़ आती रहे ***स-ह़री*** खाने पीने में मुज़ा-यक़ा नहीं और जहां कई कई अज़ानों की आवाज़ें आती हैं वहां आख़िरी अज़ान की आवाज़ ख़त्म होने तक खाते पीते रहते रहें। ***अ़जब तमाशा*** है ! ज़रा सोचिये तो सही ! अगर आप ऐसी जगह हों जहां अज़ान की आवाज़ ही न आए तो अब क्या करेंगे ? ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत का ज़ौक़ रखने वालो ! अपनी इ़बादत को चन्द

मिनटों की ग़फ़्लत के सबब बरबाद मत कीजिये। ***स-ह़री*** के बयान में स़-फ़ह़ा:165 पर भी सू-रतुल ब-क़रह की येह आयते मुक़द्दसा गुज़री, इस को फिर बग़ौर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :-

وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ اِلَى الَّيْلِ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: और खाओ और पियो यहां तक कि तुम्हारे लिये ज़ाहिर हो जाए सपेदी का डोरा सियाही के डोरे से पो फट कर। फिर रात आने तक रोज़े पूरे करो।

(पारह:2, अल ब-क़रह:187)

ज़ाहिर है इस आयते मुक़द्दसा में न च्यूंटियों का तज़किरा है न अज़ाने फ़ज्र का। बल्कि सुब्ह़े स़ादिक़ का ज़िक्र है। लिहाज़ा अज़ान का इन्तिज़ार न किया करें, मो'तबर नक़्शए निज़ामुल अवक़ात (टाइम टेबल) में सुब्ह़े स़ादिक़ और ग़ुरूबे आफ़्ताब का वक़्त देख कर उसी के मुत़ाबिक़ स-ह़री व इफ़्त़ार कीजिये।

ऐ हमारे प्यारे प्यारे ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हमें ऐन शरीअ़त व सुन्नत के मुत़ाबिक़ माहे र-मज़ानुल मुबारक का एह़तिराम करने, इस में रोज़े रखने, तरावीह़ अदा करने, तिलावते कलामे पाक और नवाफ़िल की कस़रत करने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा। और हमारी इ़बादात क़बूल फ़रमा और मह़ज़ अपने फ़ज़्लो करम से हमारी मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं बदल गया ! : ***तब्लीग़े*** कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माह़ौल के क्या केहने और म-दनी क़ाफ़िलों की भी क्या बात है । तरग़ीब के लिये मुला-ह़जा हो । शालीमार टाऊन (मर्कजु़ल औलिया लाहौर) के एक इस्लामी भाई का कुछ यूं बयान है मैं बेह़द बिगड़ा हुवा इन्सान था, फ़िल्मों डिरामों का रसिया होने के साथ साथ जवान लड़कियों के साथ छेड़ख़ानियां, औबाश नौ जवानों के साथ दोस्तियां, रात गए तक उन के साथ आवारा गर्दियां वग़ैरा मेरे मा'मूलात थे । मेरी ह़-रकाते बद के बाइस़ ख़ानदान वाले भी मुझ से कतराते, अपने घरों में मेरी आमद से घबराते नीज़ अपनी औलाद को मेरी स़ोह़बत से बचाते थे । मेरी गुनाहों भरी ख़ज़ां रसीदा शाम के सुब्ह़े बहारां बनने की सबील यूं हुई कि एक ***दा'वते इस्लामी*** वाले ***आ़शिक़े रसूल*** की मुझ पर मीठी नज़र पड़ गई, उस ने निहायत ही शफ़्क़त के साथ ***इन्फ़िरादी कोशिश*** करते हुए मुझे ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र की तरग़ीब दिलाई । बात मेरे दिल में उतर गई और मैं ने म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल की स़ोह़बतों ने मुझ पापी व बदकार के दिल में ***म-दनी इन्क़िलाब*** बरपा कर दिया । गुनाहों से तौबा का तोह़फ़ा और सुन्नतों भरे

म-दनी लिबास का जज़्बा मिला, सर पर ***सब्ज़ सब्ज़ इमामा*** सजा और मेरे जैसा गुनहगार व अबूल फ़ुज़ूल सुन्नतों के म-दनी फूल लुटाने में मश्ग़ूल हो गया। जो अ़ज़ीज़ व अक़्रिबा देख कर कतराते थे। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अब वोह गले लगाते हैं। पहले मैं ख़ानदान के अन्दर बद तरीन था। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के ***म-दनी क़ाफ़िले*** की ब-र-कत से अब अ़ज़ीज़ तरीन हो गया हूं,

जब तक बिके न थे कोई पूछता न था
तू ने ख़रीद कर मुझे अनमोल कर दिया

बे नमाज़ियों में बैठना कैसा ? : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** देखा आपने ! बुरी ***स़ोह़बतों*** का कितना ज़बरदस्त नुक़्स़ान होता है । बुरी स़ोह़बत में रह कर बिगड़ जाने वाले आदमी पर लोग थू थू करते हैं और अच्छी स़ोह़बतों की भी क्या ख़ूब ब-र-कत है कि गुनाहों से भी बचत होती रहती है और लोग भी मह़ब्बत करते हैं। हमेशा ऐसी स़ोह़बत इख़्तियार करनी चाहिये जिस से इ़बादत का शौक़ और सुन्नत पर अ़मल करने का ज़ौक़ बढ़े । हम नशीन ऐसा हो जिसे देख कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ याद आ जाए, उस की बातों से नेकियों की त़रफ़ रग़बत बढ़े, दुन्या की मह़ब्बत में कमी और आख़िरत की उल्फ़त में ज़ियादती हो। मुसाह़िब ऐसा हो कि उस के सबब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

की महब्बत में इज़ाफ़ा हो । ग़ैर सन्जीदा ह़-र-कतें करने वालों, फ़ैशन परस्तों और बे नमाज़ियों की सोह़बत से बचना चाहिये । बे नमाज़ियों की बाबत पूछे गए एक सुवाल के जवाब में मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : (बे नमाज़ियों को) ब नरमी समझाएं तर्के नमाज़ व तर्के जमाअ़त व तर्के मस्जिद पर कु़रआने अ़ज़ीम व अह़ादीस़ में जो सख़्त वई़दें हैं बार बार सुनाएं जिन के दिल में ईमान हैं उन्हें ज़रूर नफ़्अ़ पहुंचेगा । ***अल्लाह*** तबा-र-क व तआ़ला पारह 27 सू-रतुज़्ज़ारियात की आयत नम्बर 55 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَّ ذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: और समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाइदा देता है। (पारह:27, अज़्ज़ारियात:55)

अल्लाह के कलाम व अह़काम याद दिलाओ कि बेशक उन का याद दिलाना ईमान वालों को नफ़्अ़ देगा। और जो किसी त़रह़ न मानें उस पर अगर किसी का दबाव है उस के ज़रीए़ से दबाव डालें और यूं भी बाज़ न आए तो उस से सलाम व-कलाम , मैलजोल यक लख़्त तर्क कर दें, क़ालल्लाहु तआ़ला (या'नी अल्लाह तबारक व तआ़ला पारह 7 सू-रतुल अन्आ़म की आयत नम्बर 68 में इर्शाद फ़रमाता है :)

وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: और जो कहीं तुझे शैत़ान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ ।

(पारह:7, अल अन्आ़म:68)

(फ़तावा र-ज़विय्या तख़्रीज शुदा, जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:191,192)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

फैज़ाने तरावीह़

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अमीरुल मुअ्मिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया: "दुआ़ आस्मान व ज़मीन के दरमियान मुअ़ल्लक़ रहती है उस में से कुछ भी ऊपर नहीं चढ़ता (या'नी दुआ़ क़बूल नहीं होती) जब तक तू अपने नबी पर **दुरूद** न भेजे ।"

(जामेए तिरमिज़ी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:28, ह़दीस़:486)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सुन्नत की फ़ज़ीलत : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ र-मज़ानुल मुबारक में जहां हमें बे शुमार ने'मतें मुयस्सर आई हैं इन्ही में ***तरावीह़ की सुन्नत*** भी शामिल है और सुन्नत की अ़-ज़मत के क्या केहने ! अल्लाह के प्यारे रसूल, रसूले मक्बूल, सय्यिदह आमिना के गुलशन के महकते फूल عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ سَلَّمْ وَ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का फ़रमाने जन्नत निशान है, "जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने

मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।"

(जामेए़ तिरमिज़ी, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:310, ह़दीस़:2687)

र-मज़ान में 61 बार ख़त्मे क़ुरआन : *तरावीह़* सुन्नते मुअक्कदा है और इस में कम अज़ कम एक बार ख़त्मे क़ुरआन भी सुन्नते मुअक्कदा। हमारे इमामे आ'ज़म सय्यिदुना इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ र-मज़ानुल मुबारक में इक्सठ बार क़ुरआने करीम ख़त्म किया करते। ***तीस***[30] दिन में, ***तीस***[30] रात में और ***एक तरावीह़*** में नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ***पैंतालीस***[45] बरस इ़शा के वुज़ू से नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाई। (बहारे शरीअ़त, ह़िस़्स़ा:4, स़-फ़ह़ा:37)

एक रिवायत के मुत़ाबिक़ इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने ज़िन्दगी में 55 ह़ज किये और जिस मकान में वफ़ात पाई उस में सात[7] हज़ार बार क़ुरआने मजीद ख़त्म फ़रमाए थे।

(उ़क़ूदुल जिमान, स़-फ़ह़ा:221)

तिलावत और अहलुल्लाह : मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इमामुल अइम्मा सय्यिदुना इमामे आ'ज़म (अबू ह़नीफ़ा) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तीस[30] बरस कामिल हर रात एक रक्अ़त में क़ुरआने करीम ख़त्म किया है।

(फ़तावा र-ज़विय्या तख़्रीज शुदा, जिल्द:7, स़-फ़ह़ा:476)

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى ने फ़रमाया है, सलफ़ स़ालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن में बा'ज़ अकाबिर दिन रात में दो[2] ख़त्म फ़रमाते बा'ज़ चार[4] बा'ज़ आठ[8], मीज़ानुश्शरीअ़त अज़ इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी (قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی) में है कि सय्यिदी अ़ली मरस़फ़ी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی ने एक रात दिन में तीन[3] लाख साठ हज़ार ख़त्म फ़रमाते । (अल मीज़ानुश्शरीअ़तिल कुब्रा, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:79) आस़ार में है, अमीरुल मुअ्मिनीन ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم बायां पांव रिकाब में रख कर कु़रआने मजीद शुरूअ़ फ़रमाते और दहना (सीधा) पांव रिकाब तक न पहुंचता कि कलाम शरीफ़ ख़त्म हो जाता । (फ़तावा र-ज़विय्या तख़रीज शुदा, जिल्द:7, स़-फ़ह़ा:477) ह़दीस़ शरीफ़ में इर्शादे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है कि ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी सुवारी तैयार करने का हुक्म फ़रमाते और इस से पहले कि सुवारी पर ज़ीन कस दी जाए (येह) ज़बूर शरीफ़ ख़त्म फ़रमा लेते ।

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:447)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सकता है किसी को वस्वसा आए कि एक दिन में कई बार बल्कि लम्ह़ा भर में ख़त्मे कु़रआने पाक या ख़त्मे ज़बूर शरीफ़ कैसे मुम्किन है ? इस का

जवाब येह है कि येह औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की करामात और ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का मो'जिज़ा है और मो'जिज़ा और करामत वोही हैं जो आ़दतन मुह़ाल या'नी ना मुम्किन हों ।

ह़र्फ़ चबाना : ***अफ़्सोस !*** आजकल दीनी मुआ़-मलात में सुस्ती का दौर दौरा है, उ़मूमन ***तरावीह़*** में कुरआने मजीद एक बार भी स़ह़ीह़ मा'नों में ख़त्म नहीं हो पाता । ***कुरआने पाक*** तरतील के साथ या'नी ठहर ठहर कर पढ़ना चाहिये, मगर ह़ाल येह है कि अगर कोई ऐसा करे तो लोग उस के साथ ***तरावीह़*** पढ़ने के लिये तैयार ही नहीं होते । अब वोही ह़ाफ़िज़ पसन्द किया जाता है जो ***तरावीह़*** से जल्द फ़ारिग़ कर दे । याद रखिये ! ***तरावीह़*** के इ़लावा भी तिलावत में ह़र्फ़ चबा जाना ह़राम है । अगर जल्दी जल्दी पढ़ने में ह़ाफ़िज़ स़ाह़िब पूरे कुरआने मजीद में से सिर्फ़ एक ह़र्फ़ भी चबा गए तो ***ख़त्मे कुरआन*** की सुन्नत अदा न होगी । लिहाज़ा किसी आयत में कोई ह़र्फ़ "चब" गया या अपने "मख़्रज" से न निकला तो लोगों से शरमाए बिग़ैर पलट पड़िये और दुरुस्त पढ़ कर फिर आगे बढ़िये । एक अफ़्सोसनाक अम्र येह भी है कि हुफ़्फ़ाज़ की एक ता'दाद ऐसी होती है जिसे ***तरतील*** के साथ पढ़ना ही नहीं आता ! तेज़ी से न पढ़ें तो बेचारे भूल जाते हैं ! ऐसों की ख़िदमत में

हमदर्दाना म-दनी मश्वरा है, लोगों से न शरमाएं, ख़ुदा की क़सम ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गी बहुत भारी पड़ेगी लिहाज़ा बिला ताख़ीर तजवीद के साथ पढ़ाने वाले किसी क़ारी साह़िब की मदद से अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा अपना हिफ़्ज़ दुरुस्त फ़रमा लें । मद व लीन[1] का ख़याल रखना लाज़िमी है नीज़ ***मद, गुन्ना, इज़हार, इख़्फ़ा*** वग़ैरा की भी रिआयत फ़रमाएं । साह़िबे बहारे शरीअ़त ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ा बदरुत्तरीक़ा अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं, "***फ़र्ज़ों*** में ठहर ठहर कर क़िराअ़त करे और ***तरावीह़*** में मुतवस्सित (या'नी दरमियाना) अन्दाज़ पर और ***रात के नवाफ़िल*** में जल्द पढ़ने की इजाज़त है, मगर ऐसा पढ़े कि समझ में आ सके या'नी कम से कम "मद्द" का जो द-रजा क़ारियों ने रखा है उस को अदा करे वरना ह़राम है । इस लिये कि तरतील से (या'नी ख़ूब ठहर ठहर कर) कुरआन पढ़ने का हुक्म है ।"

(अद्दुर्रुल मुख़्तार व रद्दुल मुह़तार, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:262)

पारह 29 सूरतुल मुज़्ज़म्मिल की चौथी आयत में इर्शादे रब्बानी है :

وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ؕ﴿۴﴾ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान:*** और कुरआन ख़ूब ठहर ठहर कर पढ़ो ।

मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कमालैन अ़ला ह़ाशिया

---

1. वाव, या और अलिफ़ साकिन और क़ब्ल की ह़-र-कत मुवाफ़िक़ हो तो उस को मद्द और वाव और या साकिन मा क़ब्ल मफ़्तूह़ को लीन केहते हैं (निस़ाबुत्तज्वीद, स़-फ़ह़ा:9, अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या बाबुल मदीना,) (या'नी वाव के पहले पेश और या के पहले ज़ेर और अलिफ़ के पहले ज़बर ।)

जलालैन के ह़वाले से "तरतील" की वज़ाह़त करते हुए नक़्ल करते हैं : "या'नी कुरआने मजीद इस त़रह़ आहिस्ता और ठहर कर पढ़ो कि सुनने वाला इस की आयात व अल्फ़ाज़ गिन सके।" (फ़तावा र-ज़विय्या तख़्रीज शुदा, जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:276) नीज़ फ़र्ज़ नमाज़ में इस त़रह़ तिलावत करे कि जुदा जुदा हर ह़र्फ़ समझ आए, तरावीह़ में ***मु-तवस्सित़*** त़रीक़े पर और रात के नवाफ़िल में इतनी तेज़ पढ़ सकता है जिसे वोह समझ सके। (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:80) ***मदारिकुत्तन्ज़ील*** में है : कुरआन को आहिस्ता और ठहर कर पढ़ो, इस का मा'ना येह है कि इत़्मीनान के साथ हुरूफ़ जुदा जुदा, वक़्फ़ की ह़िफ़ाज़त और तमाम ह़-रकात की अदाइगी का ख़ास़ ख़याल रखना है "तरतीला" इस मस्अले में ताकीद पैदा कर रहा है कि येह बात तिलावत करने वाले के लिये निहायत ही ज़रूरी है। (तफ़्सीरे मदारिकुत्तन्ज़ील, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:203, फ़तावा र-ज़विय्या तख़्रीज शुदा, जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:278,279)

तरावीह़ बिग़ैर उजरत पढ़ाए : ***पढ़ने*** पढ़ाने वालों को अपने अन्दर ***इख़्लास़*** पैदा करना ज़रूरी है अगर ***ह़ाफ़िज़*** अपनी तेज़ी दिखाने, ख़ुश आवाज़ी की दाद पाने और नाम चमकाने के लिये कुरआने पाक पढ़ेगा तो स़वाब तो दूर की बात है, उल्टा ***हुब्बे जाह और रियाकारी*** की तबाहकारी में जा पड़ेगा। इसी त़रह़ ***उजरत*** का लैन दैन भी न हो। तै़ करने ही को उजरत नहीं केहते बल्कि अगर यहां ***तरावीह़*** पढ़ाने इसी लिये आते हैं कि मा'लूम है

कि यहां कुछ मिलता है अगर्चे तै न हुवा हो तो येह भी **उजरत** ही है। उजरत रक़म ही का नाम नहीं बल्कि कपड़े या ग़ल्ला वग़ैरा की सूरत में भी उजरत, उजरत ही है। हां अगर ह़ाफ़िज़ स़ाह़िब इस्लाह़े निय्यत के साथ साफ़ साफ़ केह दें कि मैं कुछ नहीं लूंगा या पढ़वाने वाला केह दे, नहीं दूंगा। फिर बा'द में ह़ाफ़िज़ स़ाह़िब की ख़िदमत कर दें तो ह़रज नहीं कि ह़दीसे मुबारक में है, اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّات या'नी आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:6, ह़दीस़:1)

तिलावत व ज़िक्रो ना'त की उजरत ह़राम है : *मेरे* आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की बारगाह में उजरत दे कर मय्यित के ईसाले स़वाब के लिये ख़त्मे क़ुरआन व ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करवाने से मु-तअ़ल्लिक़ जब इस्तिफ़्ता पेश हुवा तो जवाबन इर्शाद फ़रमाया : ***"तिलावते क़ुरआन व ज़िक्रे इलाही** عَزَّوَجَلَّ **पर उजरत लेना देना दोनों ह़राम है।*** लेने देने वाले दोनों[2] गुनहगार होते हैं और जब येह फ़े'ले ह़राम के मुर्तकिब हैं तो स़वाब किस चीज़ का अम्वात (या'नी मरने वालों) को भेजेंगे ? गुनाह पर स़वाब की उम्मीद और ज़ियादा सख़्त व अशद्द (या'नी शदीद तरीन जुर्म) है। अगर लोग चाहें कि ईसाले स़वाब भी हो और त़रीक़ए जाइज़ा शर-इय्या भी ह़ासिल हो (या'नी शरअ़न जाइज़ भी रहे)

तो उस की सूरत येह है कि पढ़ने वालों को घन्टे दो घन्टे के लिये नौकर रख लें और तनख़्वाह उतनी देर की हर शख़्स़ की मुअ़य्यन (मुक़र्रर) कर दें। म-स़लन पढ़वाने वाला कहे, ''मैं ने तुझे आज फ़ुलां वक़्त से फ़ुलां वक़्त के लिये इस उजरत पर नौकर रखा (कि) जो काम चाहूंगा लूंगा।'' वोह कहे, ''मैं ने क़बूल किया।'' अब वोह उतनी देर के वासिते़ अजीर (या'नी मुलाज़िम) हो गया। जो काम चाहे ले सकता है इस के बा'द उस से कहे फ़ुलां मय्यित के लिये इतना क़ुरआने अ़ज़ीम या इस क़-दर कलिमए त़य्यिबा या दुरूदे पाक पढ़ दो। येह सूरत जवाज़ (या'नी जाइज़ होने) की है।'' (फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:10, स़-फ़ह़ा:193,194)

तरावीह़ की उजरत का शर-ई ह़ीला : इस मुबारक फ़त्वा की रौशनी में ***तरावीह़*** के लिये ह़ाफ़िज़ स़ाह़िब की भी तरकीब हो सकती है। म-स़लन मस्जिद की कमीटी वाले उजरत तै़ कर के ह़ाफ़िज़ स़ाह़िब को माहे र-मज़ानुल मुबारक में नमाज़े इशा के लिये ***इमामत*** पर रख लें और ह़ाफ़िज़ स़ाह़िब बित्तबअ़ या'नी साथ ही साथ तरावीह़ भी पढ़ा दिया करें क्यूं कि र-मज़ानुल मुबारक में ***तरावीह़*** भी नमाज़े इशा के साथ ही शामिल होती है। या यूं करें कि माहे र-मज़ानुल मुबारक में रोज़ाना तीन घन्टे के लिये (म-स़लन रात 8 ता 11) ह़ाफ़िज़ स़ाह़िब को नौकरी की ऑफ़र करते हुए कहें कि हम जो काम देंगे वोह करना होगा, तनख़्वाह की रक़म भी

बता दें । अगर ह़ाफ़िज़ स़ाह़िब मन्ज़ूर फ़रमा लेंगे तो वोह मुलाज़िम हो गए । अब रोज़ाना ह़ाफ़िज़ स़ाह़िब की इन तीन[3] घन्टों के अन्दर ड्यूटी लगा दें कि वोह ***तरावीह़*** पढा दिया करें । याद रखिये ! चाहे इमामत हो या ख़ि़त़ाबत, मुअज़्ज़िनी हो या किसी क़िस्म की मज़्दूरी जिस काम के लिये भी ***इजारा*** करते वक़्त येह मा'लूम हो कि यहां उजरत या तनख़्वाह का लैन दैन यक़ीनी है तो पहले से रक़म ***त़ै करना वाजिब*** है, वरना देने वाला और लेने वाला दोनों[2] गुनहगार होंगे । हां जहां पहले ही से उजरत की मुक़र्ररा रक़म मा'लूम हो म-स़लन बस का किराया, या बाज़ार में बोरी लादने, ले जाने की फ़ी बोरी मज़्दूरी की रक़म वग़ैरा । तो अब बार बार त़ै करने की ह़ाजत नहीं । येह भी ज़ेह्न में रखिये कि जब ह़ाफ़िज़ स़ाह़िब को (या जिस को भी जिस काम के लिये) नौकर रखा उस वक़्त येह केह देना जाइज़ नहीं कि हम जो मुनासिब होगा दे देंगे या आप को राज़ी कर देंगे, बल्कि स़रा-ह़तन या'नी वाज़ेह़ त़ौर पर रक़म की मिक़्दार बतानी होगी, म-स़लन हम आप को 12 हज़ार रूपै पेश करेंगे और येह भी ज़रूरी है कि ह़ाफ़िज़ स़ाह़िब भी मन्ज़ूर फ़रमा लें । अब बारह हज़ार देने ही होंगे, चाहे चन्दा हो सके या न हो सके । हां ह़ाफ़िज़ स़ाह़िब को मुत़ालबे के बिग़ैर अगर अपनी मरज़ी से त़ै शुदा से ज़ाइद दे दें तब भी जाइज़ है । जो ह़ाफ़िज़ स़ाह़िबान, या ना'त ख़्वान बिग़ैर पैसों के ***तरावीह़,*** क़ुरआन ख़्वानी या ना'त ख़्वानी में ह़िस्स़ा नहीं ले सकते वोह शर्म की

वजह से ना जाइज़ काम का इर्तिकाब न करें । मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के बताए हुए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के पाक रोज़ी ह़ासिल करें । और अगर सख़्त मजबूरी न हो तो ह़ीले के ज़रीए़ भी रक़म ह़ासिल करने से गुरेज़ करें कि ***जिस का अ़मल हो बे गरज़ उस की जज़ा कुछ और है ।*** एक इम्तिह़ान सख़्त इम्तिह़ान येह है कि जो मिलने वाली रक़म क़बूल नहीं करता उस की काफ़ी वाह ! वाह ! होती है और वोह बेचारा अपने आप को न जाने किस त़रह़ ***रियाकारी*** से बचा पाता होगा ! ***ज़हे मुक़द्दर !*** ऐसा जज़्बा नसीब हो जाए कि बयान कर्दा ह़ीले के ज़रीए़ रक़म ह़ासिल कर ले और चुपचाप ख़ैरात कर दे मगर अपने क़रीबी किसी एक इस्लामी भाई बल्कि घर के किसी फ़र्द को भी न बताए, वरना ***रियाकारी*** से बचना दुश्वार हो जाएगा । लुत़्फ़ तो इसी में हे कि बन्दा जाने और उस का रब عَزَّوَجَلَّ जाने ।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो — कर इख़्लास़ ऐसा अ़त़ा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

ख़त्मे क़ुरआन और रिक़्क़त : ***जहां*** तरावीह़ में एक बार क़ुरआने पाक की तिलावत की जाए वहां बेहतर येह है कि ***सत्ताईस्वीं*** शब को ख़त्म करें । रिक़्क़त व सोज़ के साथ इख़्तिताम हो और येह एह़सास दिल को तड़पा कर रख दे कि मैं ने स़ह़ीह़ मा'नों में क़ुरआने पाक पढ़ा या सुना नहीं, कोताहियां भी हुईं, दिल जम्ई भी न रही, ***इख़्लास़*** में भी कमी थी । ***स़द हज़ार अफ़्सोस !***

दुन्यवी शख़्सिय्यत का कलाम तो तवज्जोह के साथ सुना जाता है मगर सब के ख़ालिक़ व मालिक अपने प्यारे प्यारे ***अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त*** عَزَّوَجَلَّ का पाकीज़ा कलाम ध्यान से न सुना, साथ ही येह भी ग़म हो कि अफ़्सोस ! अब माहे र–मज़ानुल मुबारक चन्द घड़ियों का मेहमान रह गया, न जाने आइन्दा साल इस की तशरीफ़ आ–वरी के वक़्त इस की बहारें लूटने के लिये मैं ज़िन्दा रहूंगा या नहीं ! इस त़रह़ के तस़व्वुरात जमा कर अपनी ला परवाहियों पर ख़ुद को शर्मिन्दा करे और हो सके तो रोए अगर रोना न आए तो रोने की सी सूरत बनाए कि अच्छों की नक़्ल भी अच्छी है। अगर किसी की आंख से मह़ब्बते क़ुरआन व फ़िराक़े र–मज़ान में एक आध क़त़रए आंसू टपक कर मक़्बूले बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ हो गया तो क्या बईद कि उसी के स़दक़े ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ सभी ह़ाज़िरीन को बख़्श दे।

***लाज रख ले गुनहगारों की नाम रह़मान* جَلَّ وَعَلَا *है तेरा या रब !* جَلَّ وَعَلَا**
***ऐ़ब मेरे न खोल मह़शर में नाम सत्तार* جَلَّ وَعَلَا *है तेरा या रब !* جَلَّ وَعَلَا**
***बे सबब बख़्श दे न पूछ अ़मल नाम ग़फ़्फ़ार* جَلَّ وَعَلَا *है तेरा या रब !* جَلَّ وَعَلَا**
तू करीम और करीम* جَلَّ وَعَلَا *भी ऐसा
***कि नहीं जिस का दूसरा या रब !* جَلَّ وَعَلَا**

तरावीह़ की जमाअ़त बिद्अ़ते ह़–सना है : *अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब* عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद भी ***तरावीह़*** अदा फ़रमाई और उस को ख़ूब पसन्द भी फ़रमाया : चुनान्चे स़ाह़िबे क़ुरआन, मदीने के सुल्त़ान عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

का फ़रमाने आ़लीशान है, जो ईमान व त़-लबे स़वाब के सबब से ***र-मज़ान*** में ***क़ियाम*** करे उस के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे । (या'नी स़ग़ीरा गुनाह) फिर इस अन्देशे की वजह से तर्क फ़रमाई कि कहीं उम्मत पर (तरावीह़) फ़र्ज़ न कर दी जाए । फिर अमीरुल मुअ्मिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना ***उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म*** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने (अपने दौरे ख़िलाफ़त में) माहे र-मज़ानुल मुबारक की एक रात मस्जिद में देखा कि लोग जुदा जुदा अन्दाज़ पर (तरावीह़) अदा कर रहे हैं, कोई अकेला तो कुछ ह़ज़रात किसी की इक़्तिदा में पढ़ रहे हैं । येह देख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : मैं मुनासिब ख़याल करता हूं कि इन सब को एक इमाम के साथ जम्अ़ कर दूं । लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते ***सय्यिदुना उबय्यिब्ने का'ब*** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को सब का इमाम बना दिया । फिर जब दूसरी रात तशरीफ़ लाए, और देखा कि लोग बा जमाअ़त (तरावीह़) अदा कर रहे हैं (तो बहुत ख़ुश हुए और) फ़रमाया, نِعْمَ الْبِدْعَۃُ ھٰذِہٖ । या'नी "येह अच्छी बिद्अ़त है।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़्ह़ा:658, ह़दीस़:2010)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हमारा कितना ख़याल है ! मह़ज़ इस ख़ौफ़ से ***तरावीह़*** पर हमेशगी न फ़रमाई कि कहीं उम्मत पर फ़र्ज़ न कर दी जाए । इस ह़दीसे़ पाक से बा'ज़ ***वसाविस*** का इलाज भी

हो गया । म-स़लन तरावीह़ की बा क़ाइदा जमाअ़त सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी जारी फ़रमा सकते थे मगर न फ़रमाई और यूं इस्लाम में अच्छे अच्छे त़रीक़े राइज करने का अपने गुलामों को मौक़अ़ फ़राहम किया । जो काम शाहे खै़रुल अनाम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नहीं किया वोह काम सय्यिदुना ***फ़ारूक़े आ'ज़म*** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने मह़्ज़ अपनी मर्ज़ी से नहीं किया बल्कि सरकारे आ़लमे मदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ता क़ियामत ऐसे अच्छे अच्छे काम जारी करते रहने की अपनी ह़याते ज़ाहिरी में ही इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा दी थी । चुनान्चे हु़जू़रे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़्तशम, शाफ़ेए़ उमम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है, ''जो कोई इस्लाम में ***अच्छा त़रीक़ा*** जारी करे उस को उस का स़वाब मिलेगा और उस का भी जो (लोग) इस के बा'द उस पर अ़मल करेंगे और उन के स़वाब से कुछ कम न होगा और जो शख़्स़ इस्लाम में ***बुरा त़रीक़ा*** जारी करे उस पर इस का गुनाह भी है और उन (लोगों) का भी जो इस के बा'द इस पर अ़मल करें और उन के गुनाह में कुछ कमी न होगी ।

(स़ह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:11438, ह़दीस़:1017)

"करम या नबिय्यल्लाह" के बारह हु़रूफ़ की निस्बत से 12 बिदआ़ते ह़-सना

इस ह़दीसे़ मुबारक से मा'लूम हुवा, क़ियामत तक इस्लाम में अच्छे अच्छे नए त़रीक़े निकालने की इजाज़त है और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ निकाले भी जा रहे हैं जैसा कि

(1) अमीरुल मुअ्मिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ***तरावीह़*** की बा क़ाइ़दा जमाअ़त का एहतिमाम किया और इस को ख़ुद अच्छी बिद्अ़त भी क़रार दिया। इस से येह भी मा'लूम हुवा कि ***सरकार*** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द स़ह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी जो अच्छा नया काम जारी करें वोह भी ***बिद्अ़ते ह़-सना*** केहलाता है (2) मस्जिद में इमाम के लिये त़ाक़नुमा ***मेह़राब*** नहीं होती थी सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना ***उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़*** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मस्जिदुन्न-बविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में ***मेह़राब*** बनाने की सआ़दत ह़ासिल की इस नई ईजाद (बिद्अ़ते ह़-सना) को इस क़दर मक़्बूलिय्यत ह़ासिल है कि अब दुन्या भर में मस्जिद की पहचान इसी से है (3) इसी त़रह़ मसाजिद पर ***गुम्बद व मीनार*** बनाना भी बा'द की ईजाद है। बल्कि का'बे के ***मनारे*** भी सरकारे मदीना व स़ह़ाबए किराम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم وَعَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के दौर में नहीं थे (4) ईमाने मुफ़स़्स़ल (5) ईमाने मुज्मल (6) छे कलिमे इन की ता'दाद व तरकीब कि येह पहला येह दूसरा और उन के नाम (7) क़ुरआने पाक के तीस[30] पारे बनाना, ए'राब लगाना इन में रुकूअ़ बनाना, रुमूज़े अवक़ाफ़ की अ़लामात लगाना। बल्कि नुक़्ते़ भी बा'द में लगाए गए, ख़ूबसूरत जिल्दें छापना वग़ैरा (8) अह़ादीसे़ मुबारका को किताबी शक्ल देना, इस की अस्नाद पर जिरह़ करना, इन की स़ह़ीह़, ह़सन, ज़ईफ़ और मौज़ूअ़ वग़ैरा अक़्साम बनाना (9) फ़िक़्ह, उसूले फ़िक़्ह व

इ़ल्मे कलाम (10) ज़कात व फ़ित़्रा सिक्कए राइजुल वक़्त बल्कि बातस्वीर नोटों से अदा करना (11) ऊंटों वग़ैरा के बजाए सफ़ीने या हवाई जहाज़ के ज़रीए़ ***सफ़रे ह़ज*** करना (12) शरीअ़त व त़रीक़त के चारों सिल्सिले या'नी ह़-नफ़ी, शाफ़ेई़, मालिकी, ह़म्बली इसी त़रह़ क़ादिरी नक़्शबन्दी, सुहरवर्दी और चिश्ती ।

हर बिद्अ़त गुमराही नहीं है : ***हो*** सकता है कि किसी के जे़ह्न में येह सुवाल पैदा हो कि इन दो[2] अह़ादीसे़ मुबा-रका (1) كُلُّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ وَّ كُلُّ ضَلَالَةٍ فِى النَّار या'नी हर ***बिद्अ़त*** (नई बात) गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में (ले जाने वाली) है । (सु-ननुन्नसाई, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:189) (2) شَرُّ الْاُمُوْرِ مُحْدَثَاتُهَا وَ كُلُّ بِدْعَةٍ ضَلَالَة या'नी बद तरीन काम नए त़रीके़ हैं हर ***बिद्अ़त*** (नई बात) गुमराही है ।

(स़ह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:430, ह़दीस़:867)

के क्या मा'ना हैं ? इस का जवाब येह है कि दोनों[2] अह़ादीसे़ मुबा-रका ह़क़ हैं । यहां ***बिद्अ़त*** से मुराद बिद्अ़ते सय्यिअह या'नी ***बुरी बिद्अ़त*** है और यक़ीनन हर वोह बिद्अ़त बुरी है जो किसी ***सुन्नत*** के ख़िलाफ़ या सुन्नत को मिटाने वाली हो । जैसा कि दीगर अह़ादीस़ में इस मस्अले की मज़ीद वज़ाह़त मौजूद है चुनान्चे हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : हर वोह गुमराह करने वाली ***बिद्अ़त*** जिस से अल्लाह और

उस का रसूल राज़ी न हो तो उस गुमराही वाली ***बिद्अ़त*** को जारी करने वाले पर इस ***बिद्अ़त*** पर अ़मल करने वालों की मिस्ल गुनाह है, उसे गुनाह मिल जाना लोगों के गुनाहों में कमी नहीं करेगा। (जामेए तिरमिज़ी, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:309, ह़दीस़:2686) एक और ह़दीसे़ मुबारक में मज़ीद वज़ाह़त मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे उम्मुल मुअ्मिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सि़द्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से मरवी है, ***अल्लाह*** के मह़बूब दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**مَنْ أَحْدَثَ فِیْ أَمْرِنَا هٰذَا مَا لَیْسَ فِیْهِ فَهُوَ رَدٌّ**" (स़ह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़, जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:211, ह़दीस़:2697) या'नी जो हमारे दीन में ऐसी नई बात निकाले जो इस (की अस्ल) में से न हो वोह मर्दूद है।" इन अह़ादीसे़ मुबा-रका से मा'लूम हुवा ऐसी नई बात जो सुन्नत से दूर कर के गुमराह करने वाली हो, जिस की अस्ल दीन में न हो वोह ***बिद्अ़ते सय्यिअह*** या'नी बुरी बिद्अ़त है जब कि दीन में ऐसी नई बात जो सुन्नत पर अ़मल करने में मदद करने वाली हो और जिस की अस्ल दीन से स़ाबित हो वोह बिद्अ़ते ह़-सना या'नी अच्छी बिद्अ़त है।

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस़ देहलवी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ह़दीसे़ पाक, "**وَّ کُلُّ ضَلَالَةٍ فِی النَّار**" के तह़त फ़रमाते हैं, जो ***बिद्अ़त*** कि उसूल और क़वाइदे ***सुन्नत*** के मुवाफ़िक़ और उस के मुत़ाबिक़ क़ियास की हुई है (या'नी शरीअ़त व सुन्नत से नहीं टकराती)

उस को बिद्अ़ते ह़-सना केहते हैं और जो इस के ख़िलाफ़ है वोह ***बिद्अ़ते ज़लालत*** या'नी गुमराही वाली बिद्अ़त केहलाती है।

(अशिअ़्अ़तुल्लम्आ़त, जिल्द अव्वल, स़-फ़ह़ा:135)

बिद्अ़ते ह़-सना के बिग़ैर गुज़ारा नहीं : ***बहर ह़ाल*** अच्छी और बुरी बिद्आ़त की तक़्सीम ज़रूरी है वरना कई अच्छी अच्छी बिद्अ़तें ऐसी हैं कि अगर उन को सिर्फ़ इस लिये तर्क कर दिया जाए कि ***क़ुरुने स़लास़ा*** या'नी शाहे ख़ैरुल अनाम, स़ह़ाबए किराम व ताबिईने इज़्ज़ाम, صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ وَعَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के अदवारे पुर अन्वार में नहीं थीं, तो दीन का मौजूदा निज़ाम ही न चल सके। जैसा कि दीनी मदारिस, इन में दर्से निज़ामी, क़ुरआन व अह़ादीस़ और इस्लामी किताबों की प्रेस में छपाई वग़ैरा वग़ैरा येह तमाम काम पहले न थे बा'द में जारी हुए और ***बिद्अ़ते ह़-सना*** में शामिल हैं। बहर ह़ाल रब्बे ज़ुलजलाल عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم यक़ीनन येह सारे अच्छे अच्छे काम अपनी ह़याते ज़ाहिरी में भी राइज फ़रमा सकते थे। मगर ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़ुलामों के लिये स़वाबे जारिय्या कमाने के बे शुमार मवाक़ेअ़ फ़राहम कर दिये और ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों ने स़-द-क़ए जारिय्या की ख़ात़िर जो शरीअ़त से नहीं टकराती हैं

ऐसी नई ईजादों की धूम मचा दी । किसी ने अज़ान से पहले दुरूदो सलाम पढ़ने का रवाज डाला, किसी ने ईदे मीलाद मनाने का त़रीक़ा निकाला फिर इस में चरागां और सब्ज़ सब्ज़ परचमों और मरह़बा की धूमें मचाते म-दनी जुलूसों का सिल्सिला हुवा, किसीने ग्यारहवीं शरीफ़ तो किसी ने आ'रासे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की बुन्याद रख दी और अब भी येह सिल्सिले जारी हैं । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ***दा'वते इस्लामी*** वालों ने सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त वग़ैरा में اُذْكُرُوا الله ! (या'नी ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करो !) और صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! (या'नी ह़बीब पर दुरूद भेजो !) के ना'रे लगाने की बिल्कुल नई तरकीब निकाल कर ***अल्लाह अल्लाह*** और दुरूदो सलाम की पुर कैफ़ स़दाओं का ह़सीन समां क़ाइम कर दिया !

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

सब्ज़ गुम्बद की तारीख़ : ***सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद*** जिस के दीदार के लिये हर आ़शिक़ का दिल बे क़रार होता और आंख अश्कबार हो जाया करती है । येह भी ***बिद्अ़ते ह़-सना*** है क्यूं कि वोह सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विस़ाले ज़ाहिरी के सेंकड़ों बरस बा'द बना है । इस की मुख़्तस़रन मा'लूमात भी ह़ासिल कर लीजिये ।

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर पर सब से पहला गुम्बद शरीफ़ सिने 678 हिजरी (सिने 1269 इस्वी) में ता'मीर हुवा और इस पर ज़र्द रंग करवाया गया और वोह पीला ***गुम्बद*** केहलाया, फिर मुख़्तलिफ़ अदवार में तग़य्युर व तबद्दुल होता रहा। यहां तक कि सिने 888 हिजरी सिने 1483 इस्वी) में काले पत्थर से नया गुम्बद बनाया गया और इस पर सफ़ेद रंग करवाया गया। उ़श्शाक़ उस को कुब्बतुल बैज़ा या "गुम्बदे बैज़ा" या'नी ***सफ़ेद गुम्बद*** केहने लगे। सिने 980 हिजरी (सिने 1572 इस्वी) में इन्तिहाई ह़सीन गुम्बद बनाया गया और उस को रंग बिरंगे पत्थरों से सजाया गया। अब उस का एक रंग न रहा। ग़ालिबन मीनाकारी के दिलकश व जाज़िबे नज़र मन्ज़र के बाइस़ वोह ***रंग बिरंगा गुम्बद*** केहलाया। सिने 1233 हिजरी (सिने 1818 इस्वी) में अज़ सरे नौ इस की ता'मीर की गई और इस पर सब्ज़ रंग किया गया जो अल्कुब्बतुल ख़ज़्रा या'नी ***सब्ज़ गुम्बद*** के नाम से मशहूर हुवा। इस के बा'द अब तक किसी ने उस में रद्दो बदल नहीं किया। हां सब्ज़ रंग को येह सआ़दत मिलती रहती है कि वोह ख़ुद्दाम के हाथों ऊपर जा कर लिपट जाता है। गुम्बदे ख़ज़्रा जो कि यक़ीनन क़त्अ़न बिद्अ़ते ह़-सना है वोह अब दुन्या भर के मुसल्मानों का मर्जअ़, आंखों का नूर और दिल का सुरूर है। اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ इस को दुन्या की कोई त़ाक़त नहीं मिटा सकती। जो इस को इ़नादन (या'नी बुग़्ज़ की वजह से) मिटाना चाहेगा اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ वोह ख़ुद ही मिट जाएगा।

गुम्बदे खज्रा खुदा عَزَّوَجَلَّ तुझ को सलामत रखे
देख लेते हैं तुझे प्यास बुझा लेते हैं

इन जैसे तमाम नौ ईजाद नेक कामों की बुन्याद वोही ह़दीसे पाक है जो मुस्लिम शरीफ़ के ह़वाले से, स़-फ़्ह़ा:13 पर गुज़री जिस में फ़रमाया गया है, जो कोई इस्लाम में अच्छा त़रीक़ा जारी करे उस को इस का स़वाब मिलेगा और उस का भी जो इस के बा'द इस पर अ़मल करें ।[1]

दीदारे मुस्त़फ़ा ﷺ : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** अ़क़ाइदो आ'माल की इस्लाह़ और ज़रूरी मा'लूमात के हुसूल की ख़ात़िर तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी अहले ह़क़ की सुन्नतों भरी तह़रीक है इस की एक ईमान अफ़रोज़ बहार सुनिये और झूमिये चुनान्चे तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गैर सियासी तहरीक ***दा'वते इस्लामी के तीन 3 रोज़ा बैनल अक्वामी*** सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (मुल्तान शरीफ़) के इख़्तिताम पर ***आ़शिक़ाने रसूल*** के बे शुमार ***म-दनी क़ाफ़िले*** सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये शहर ब शहर और गांव ब गांव सफ़र पर रवाना होते हैं । इसी ज़िम्न में बैनल अक्वामी इज्तिमाअ़ (सिने 1426 हिजरी) से आग्रा ताज कोलोनी (बाबुल मदीना कराची) का एक म-दनी क़ाफ़िला सफ़र करता हुवा तरकीब के मुत़ाबिक़ एक

---

1. मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की किताबे मुस्तताब ''जा अल ह़क़ व ज़हकल बात़िल'' में बिदआ़त और इन की अक़्साम वग़ैरा के बारे में मज़ीद तफ़्स़ीलात देखी जा सकती हैं ।

मस्जिद में क़ियाम पज़ीर हुवा। शब को जब सब सो गए तो ***म-दनी क़ाफ़िले*** में शरीक एक नए इस्लामी भाई की क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी और उन को ख़्वाब में ***मदीने के ताजदार*** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार हो गया। वोह बहुत खुश हुए, ***दा'वते इस्लामी*** की ह़क़्क़ानिय्यत के दिलो जान से मो'तरिफ़ हो कर म-दनी माह़ौल से वाबस्ता हो गए।

कोई आया पा के चला गया कोई उ़म्र भर भी न पा सका
येह बड़े करम के हैं फ़ैस़ले येह बड़े नस़ीब की बात है

अच्छों से मह़ब्बत के फ़ज़ाइल : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** देखा आपने ! आ़शिक़ाने रसूल की स़ोह़बत की ब-र-कत से एक खुश क़िस्मत इस्लामी भाई को ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हो गई। लिहाज़ा हमेशा अच्छी स़ोह़बत इख़्तियार करनी और अच्छों से मह़ब्बत रखनी चाहिये। म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने वाले खुश नस़ीबों को अच्छों से मह़ब्बत करने का बेहतरीन मौक़अ़ नस़ीब हो जाता है। रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये अच्छों से मह़ब्बत रखने के ***सात फ़ज़ाइल*** सुनिये और झूमिये। (1) अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन फ़रमाएगा कहां हैं जो मेरे जलाल की वजह से आपस में मह़ब्बत

रखते थे आज मैं उन को अपने साए में रखूंगा आज मेरे साए के सिवा कोई साया नहीं । (स़ह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:1388, ह़दीस़:2566) (2) अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है जो लोग मेरी वजह से आपस में मह़ब्बत रखते हैं और मेरी वजह से एक दूसरे के पास बैठते हैं और आपस में मिलते जुलते हैं और माल ख़र्च करते हैं उन से मेरी मह़ब्बत वाजिब हो गई । (अल मूअ़त्ता, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:439, ह़दीस़:1828) (3) अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : जो लोग मेरे जलाल की वजह से आपस में मह़ब्बत रखते हैं उन के लिये नूर के मिम्बर होंगे । अम्बिया व शो-हदा उन पर ग़िब्त़ा (या'नी रश्क) करेंगे । (सु-ननुत्तिरमिज़ी, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:174, ह़दीस़:2397, दारुल फ़िक्र बैरूत) (4) दो[2] शख़्स़ों ने ***अल्लाह*** के लिये बाहम मह़ब्बत की और एक मश्रिक़ में है दूसरा मग़रिब में क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला दोनों[2] को जम्अ़ करेगा और फ़रमाएगा येही वोह है जिस से तू ने मेरे लिये मह़ब्बत की थी । (शुअ़बुल ईमान, जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:492, ह़दीस़:9022, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या, बैरूत) (5) जन्नत में याकूत के सुतून हैं उन पर ज़बरजद के बाला ख़ाने हैं वोह ऐसे रौशन हैं जैसे चमकदार सितारे, लोगों ने अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन में कौन रहेगा ? फ़रमाया : वोह लोग जो ***अल्लाह*** के लिये आपस में मह़ब्बत रखते हैं एक जगह बैठते हैं आपस में मिलते हैं ।

(शुअ़बुल ईमान, जिल्दः6, स़-फ़ह़ाः9002, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या, बैरूत) (6) ***अल्लाह*** के लिये मह़ब्बत रखने वाले अ़र्श के गिर्द याकूत की कुर्सी पर होंगे। (अल मो'जमुल कबीर, जिल्दः4, स़-फ़ह़ाः150, ह़दीस़ः3973, दारे एह़याउत्तुरासि़ल अ़-रबी, बैरूत) (7) जो किसी से ***अल्लाह*** के लिये मह़ब्बत रखे ***अल्लाह*** के लिये दुश्मनी रखे और ***अल्लाह*** के लिये दे और ***अल्लाह*** के लिये मन्अ़ करे उसने अपना ईमान कामिल कर लिया।

(सु-नने अबी दावूद, जिल्दः4, स़-फ़ह़ाः290, ह़दीस़ः4681)

"तरावीह़ पढ़िये और खु़दा व रसूल की रह़मतें लूटिये" के 35 हुरूफ़ की निस्बत से तरावीह़ के 35 म-दनी फूल

मदीना 1 : ***तरावीह़*** हर आ़क़िल व बालिग़ इस्लामी भाई और इस्लामी बहन के लिये सुन्नते मुअक्कदा है। (दुर्रे मुख़्तार, जिल्दः2, स़-फ़ह़ाः493) इस का तर्क जाइज़ नहीं।

मदीना 2 : ***तरावीह़*** की बीस[20] रक्अ़तें हैं। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ के अ़ह्द में बीस[20] रक्अ़तें ही पढ़ी जाती थीं। (अस्सु-ननुल कुब्रा बैहक़ी, जिल्दः2, स़-फ़ह़ाः699, ह़दीस़ः4617)

मदीना 3 : ***तरावीह़*** की जमाअ़त सुन्नते मुअक्कदा अ़लल किफ़ाया है। अगर मस्जिद के सारे लोगों ने छोड़ दी तो सब ***इसाअत*** के मुर्तकिब हुए (या'नी बुरा किया) और अगर चन्द अफ़राद ने बा जमाअ़त पढ़ ली तो तन्हा पढ़ने वाला

जमाअ़त की फ़ज़ीलत से मह़रूम रहा। (हिदाया, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:70)

मदीना 4: ***तरावीह़*** का वक़्त इशा के फ़र्ज़ पढ़ने के बा'द से सुब्ह़े स़ादिक़ तक है। इशा के फ़र्ज़ अदा करने से पहले अगर पढ़ ली तो न होगी। (आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:115)

मदीना 5: ***इ़शा*** के फ़र्ज़ व ***वित्र*** के बा'द भी तरावीह़ पढ़ी जा सकती है। (अद्दुर्रुल मुख़्तार, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:494) जैसा कि बा'ज़ अवक़ात 29 को रूयते हिलाल की शहादत मिलने में ताख़ीर के सबब ऐसा हो जाता है।

मदीना 6: ***मुस्तह़ब*** येह है ***तरावीह़*** में तिहाई रात तक ताख़ीर करें अगर आधी रात के बा'द पढ़ें तब भी कराहत नहीं।

(अद्दुर्रुल मुख़्तार, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:495)

मदीना 7: ***तरावीह़*** अगर फ़ौत हुई तो उस की क़ज़ा नहीं।

(अद्दुर्रुल मुख़्तार, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:494)

मदीना 8: ***बेहतर*** येह है कि ***तरावीह़*** की बीस[20] रक्अ़तें दो[2] दो[2] कर के दस[10] सलाम के साथ अदा करे।

(अद्दुर्रुल मुख़्तार, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:495)

मदीना 9: ***तरावीह़*** की बीस रक्अ़तें एक सलाम के साथ भी अदा की जा सकती हैं, मगर ऐसा करना मक्रूह है, हर दो रक्अ़त पर क़ा'दह करना फ़र्ज़ है। हर ***क़ा'दह*** में अत्तह़िय्यात के बा'द दुरूद शरीफ़ भी पढ़े और ताक़ रक्अ़त (या'नी पहली, तीसरी, पांचवीं वग़ैरा) में स़ना पढ़े और इमाम तअ़व्वुज़ व तस्मिय्या भी पढ़े। (अद्दुर्रुल मुख़्तार, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:496)

मदीना 10: ***जब*** दो[2] दो[2] रक्अ़त कर के पढ़ रहा है तो हर दो रक्अ़त

पर अलग अलग निय्यत करे और अगर बीस[20] रक्अ़तों की एक साथ निय्यत कर ली तब भी जाइज़ है।

(अद्दुर्रुल मुख़्तार, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:494)

मदीना 11: ***बिला उ़ज़्र*** तरावीह़ बैठ कर पढ़ना मक्रूह है बल्कि बा'ज़ फु-क़हाए किराम رحمہم اللہ के नज़्दीक तो होती ही नहीं। (अद्दुर्रुल मुख़्तार, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:499)

मदीना 12: ***तरावीह़*** मस्जिद में बा जमाअ़त अदा करना अफ़्ज़ल है। अगर घर में बा जमाअ़त अदा की तो तर्के जमाअ़त का गुनाह न हुवा मगर वोह स़वाब न मिलेगा जो ***मस्जिद*** में पढ़ने का था। (आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:116) इशा के फ़र्ज़ मस्जिद में बा जमाअ़त अदा कर के घर या हॉल वग़ैरा में तरावीह़ अदा कीजिये अगर बिला उ़ज़्रे शर-ई मस्जिद के बजाए घर या हॉल वग़ैरा में इशा के फ़र्ज़ की जमाअ़त क़ाइम कर ली तो तर्के वाजिब के गुनहगार होंगे। इस का तफ़्स़ीली मस्अला फ़ैज़ाने सुन्नत के बाब ''पेट का क़ुफ़्ले मदीना'' स़-फ़ह़ा:135 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये।

मदीना 13: ***ना बालिग़*** इमाम के पीछे सिर्फ़ ना बालिग़ान ही तरावीह़ पढ सकते हैं।

मदीना 14: ***बालिग़*** की तरावीह़ (बल्कि कोई भी नमाज़ ह़त्ता कि नफ़्ल भी) ना बालिग़ के पीछे नहीं होती।

मदीना 15: ***तरावीह़*** में पूरा कलामुल्लाह शरीफ़ पढ़ना और सुनना सुन्नते मुअक्कदा है।

(फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, तख़्रीज शुदा, जिल्द:7, स़-फ़ह़ा:458)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ पर दुरूदे पाक की कस़रत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है।

मदीना 16: ***अगर*** बा शराइत़ ह़ाफ़िज़ न मिल सके या किसी वजह से ख़त्म न हो सके तो तरावीह़ में कोई सी भी सूरतें पढ़ लीजिये अगर चाहें तो اَلَمْ تَرَ से وَالنَّاس दो[2] बार पढ़ लीजिये, इस त़रह़ बीस[20] रक्अ़तें याद रखना आसान रहेगा। (आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:118)

मदीना 17: ***एक*** बार بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم जह्‌र के साथ (या'नी ऊंची आवाज़ से) पढ़ना सुन्नत है और हर सूरत की इब्तिदा में आहिस्ता पढ़ना मु-स्तह़ब है। मुतअख़्ख़िरीन (या'नी बा'द में आने वाले फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰه) ने ख़त्मे तरावीह़ में तीन[3] बार قُلْ هُوَاللّٰه शरीफ़ पढ़ना मुस्तह़ब कहा नीज़ बेहतर येह है कि ख़त्म के दिन पिछली रक्अ़त में الٓمّٓ से مُفْلِحُوْن तक पढ़े। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा:4, स़-फ़ह़ा:37)

मदीना 18: ***अगर*** किसी वजह से (तरावीह़) की नमाज़ फ़ासिद हो जाए तो जितना क़ुरआने पाक उन रक्अ़तों में पढ़ा था उन का इआ़दा करें ताकि ख़त्म में नुक़्स़ान न रहे।

(आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:118)

मदीना 19: ***इमाम*** ग़-लत़ी से कोई आयत या सूरह छोड़ कर आगे बढ़ गया तो ***मुस्तह़ब*** येह है कि उसे पढ़ कर फिर आगे बढ़े। (आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:118)

मदीना 20: ***अलग*** अलग मस्जिद में ***तरावीह़*** पढ़ सकता है जब कि ख़त्मे कुरआन में नुक़्सान न हो । म-स़लन तीन[3] मसाजिद ऐसी हैं कि इन में हर रोज़ सवा पारह पढ़ा जाता है तो तीनों[3] में रोज़ाना बारी बारी जा सकता है ।

मदीना 21: ***दो [2]*** रक्अ़त पर बैठना भूल गया तो जब तक तीसरी[3] का सज्दा न किया हो बैठ जाए आख़िर में सज्दए सह्व कर ले। और अगर तीसरी[3] का सज्दा कर लिया तो चार[4] पूरी कर ले मगर येह दो[2] शुमार होंगी । हां अगर दो[2] पर क़ा'दह किया था तो चार[4] हुईं । (आ़लमगीरी, जिल्दः1, स़-फ़ह़ाः118)

मदीना 22: ***तीन [3]*** रक्अ़तें पढ़ कर सलाम फेरा अगर दूसरी पर बैठा नहीं था तो न हुईं इन के बदले की दो[2] रक्अ़तें दोबारा पढ़े । (आ़लमगीरी, जिल्दः1, स़-फ़ह़ाः118)

मदीना 23: ***सलाम*** फेरने के बा'द कोई केहता है दो[2] हुईं कोई केहता है तीन[3], तो इमाम को जो याद हो उस का ए'तिबार है, अगर इमाम ख़ुद भी तज़ब्ज़ुब का शिकार हो तो जिस पर ए'तिमाद हो उस की बात मान ले । (आ़लमगीरी, जिल्दः1, स़-फ़ह़ाः117)

मदीना 24: ***अगर*** लोगों को शक हो कि बीस[20] हुईं या अठ्ठारह ? तो दो[2] रक्अ़त तन्हा तन्हा पढ़ें। (आ़लमगीरी, जिल्दः1, स़-फ़ह़ाः117)

मदीना 25: ***अफ़्ज़ल*** येह है कि तमाम शुफ़्ओं में क़िराअत बराबर हो

अगर ऐसा न किया जब भी ह़-रज नहीं इसी त़रह़ हर शुफ़्अ़ (कि दो[2] रक्अ़त पर मुश्तमिल होता है इस) की पहली और दूसरी रक्अ़त की क़िराअत मसावी (या'नी यक्सां) हो दूसरी की क़िराअत पहली से ज़ाइद नहीं होनी चाहिये । (आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:117)

मदीना 26: ***इमाम*** व मुक़्तदी हर दो[2] रक्अ़त की पहली पर ***स़ना*** पढ़ें (इमाम अऊ़ज़ु और बिस्मिल्लाह भी पढ़े) और अत्तहिय्यात के बा'द दुरूदे इब्राहीम और दुआ़ भी ।

(दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:498)

मदीना 27: ***अगर*** मुक़्तदियों पर गिरानी होती हो तो तशह्हुद के बा'द اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍوَّاٰلِہٖ पर इक्तिफ़ा करे ।

(दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:499)

मदीना 28: ***अगर*** सताईस्वीं को (या इस से क़ब्ल) क़ुरआने पाक ख़त्म हो गया तब भी आख़िरी र-मज़ान तक तरावीह़ पढ़ते रहें कि सुन्नते मुअक्कदा है । (आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:118)

मदीना 29: ***हर*** चार[4] रक्अ़तों के बा'द उतनी देर आराम लेने के लिये बैठना मुस्तह़ब है जितनी देर में चार रक्आ़त पढ़ी हैं । इस वक़्फ़े को तर्वीह़ा केहते हैं । (आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:115)

मदीना 30: ***तर्वीह़ा*** के दौरान इख़्तियार है कि चुप बैठा रहे या ज़िक्रो दुरूद और तिलावत करे या तन्हा नफ़्ल पढ़े । (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:497) येह तस्बीह़ भी पढ़ सकते हैं :-

سُبْحَانَ ذِی الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ ۰ سُبْحَانَ ذِی
الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْكِبْرِيَاءِ
وَالْجَبَرُوْتِ ۰ سُبْحَانَ الْحَيِّ الَّذِیْ لَا يَنَامُ وَ
لَا يَمُوْتُ ۰ سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ
وَالرُّوْحِ ۰ اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ ۰ يَا مُجِيْرُ
يَا مُجِيْرُ يَا مُجِيْرُ ۰ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ ۰

मदीना 31: ***बीस*** [20] रक्अ़तें हो चुकने के बा'द पांचवां तर्वीह़ा भी मुस्तह़ब है, अगर लोगों पर गिरां हो तो पांचवीं बार न बैठे।

(आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:115)

मदीना 32: ***बा'ज़*** मुक़्तदी बैठे रहते हैं जब इमाम रुकूअ़ करने वाला होता है उस वक़्त खड़े होते हैं। येह मुनाफ़िक़ीन की मुशा-बहत है। चुनान्चे सूरतुन्निसा की आयत नम्बर 142 में है, وَاِذَا قَامُوْۤا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: और (मुनाफ़िक़) जब नमाज़ को खड़े हों तो हारे जी से) फ़र्ज़ की जमाअ़त में भी अगर इमाम रुकूअ़ से उठ गया तो सज्दों वगै़रा में फ़ौरन शरीक हो जाएं नीज़ इमाम क़ा'दए ऊला में हो तब भी उस के खड़े होने का इन्तिज़ार न करें बल्कि शामिल हो जाएं। अगर क़ा'दह में शामिल हो गए और इमाम खड़ा हो गया तो अत्तह़िय्यात पूरी किये

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जिसने येह कहा جزی اللہ عنا محمدا ما ھو اھلہٗ सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक उस के लिये नेकियां लिखते रहेंगे।

बिग़ैर न खड़े हों। (बहारे शरीअ़त, ह़िस़्स़ा:4, स़-फ़ह़ा:36, गुन्यतुल मुतमली, स़-फ़ह़ा:410)

मदीना 33: ***र-मज़ान*** शरीफ़ में वित्र जमाअ़त से पढ़ना अफ़्ज़ल है। मगर जिस ने इशा के फ़र्ज़ बिग़ैर जमाअ़त के पढ़े वोह ***वित्र*** भी तन्हा पढ़े। (बहारे शरीअ़त, ह़िस़्स़ा:4, स़-फ़ह़ा:36)

मदीना 34: ***एक*** इमाम के पीछे इशा के फ़र्ज़, दूसरे इमाम के पीछे ***तरावीह़*** और तीसरे इमाम के पीछे वित्र पढ़े इस में ह़रज नहीं।

मदीना 35: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़र्ज़ व वित्र की जमाअ़त करवाते थे। और ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्यिब्ने का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तरावीह़ पढ़ाते।

(आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:116)

ऐ हमारे प्यारे प्यारे ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ! हमें नेक, मुख़्लिस़ और दुरुस्त पढ़ने वाले ह़ाफ़िज़ स़ाह़िब के पीछे इख़्लास़ व दिल जम्ई के साथ हर साल ***तरावीह़*** अदा करने की सआ़दत नस़ीब कर और क़बूल भी फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

केन्सर का मरीज़ ठीक हो गया :

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी पर ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

का बेह़द करम है । बारहा सुनने में आया कि डॉक्टरों ने जिन मरीज़ों को ला इलाज क़रार दे दिया उन का म-दनी क़ाफ़िलों में ख़ैर से इलाज हो गया चुनान्चे ***माड़ी पूर*** (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई ने एक ईमान अफ़रोज़ वाक़ेआ़ लिख कर दिया जिस का मज़्मून कुछ यूं था : हॉक्स बे (बाबुल मदीना कराची) के मुक़ीम एक इस्लामी भाई जो कि केन्सर के मरीज़ थे उन्हों ने तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ***दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की । दौराने सफ़र बेचारे काफ़ी सहमे हुए और मायूस से थे । शु-रकाए क़ाफ़िला ढारस बंधाते और उन के लिये दुआ़एं भी फ़रमाते । एक दिन सुब्ह़ के वक़्त बैठे बैठे अचानक उन्हें क़ै हुई और उस में एक गोश्त की बोटी ह़ल्क़ से निकल पड़ी ! क़ै के बा'द उन को काफ़ी सुकून मिल गया । म-दनी क़ाफ़िले से वापसी पर जब डाक्टरों से रुजूअ़ किया और दोबारा टेस्ट करवाए तो ह़ैरत बालाए ह़ैरत के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ब-र-कत से उन का केन्सर का मरज़ ख़त्म हो चुका था । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह बिल्कुल रू ब सिह़ह़त हो गए ।

अल्सरो केन्सर या हो दर्दे कमर   देगा मौला शिफ़ा, क़ाफ़िले में चलो
दूर बीमारियां, और परेशानियां   हों ब फ़ज़्ले ख़ुदा, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

फ़ैज़ाने लैलतुल क़द्र

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है, "जिस ने मुझ पर दिन में ***एक हज़ार मरतबा*** दरूदे ***पाक*** पढ़ा, वोह मरेगा नहीं जब तक जन्नत में अपना ठिकाना न देख ले।"

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:328, ह़दीस़:22)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लैलतुल क़द्र इन्तिहाई ब-र-कत वाली रात है इस को लैलतुल क़द्र इस लिये केहते हैं कि इस में साल भर के अह़काम नाफ़िज़ किये जाते हैं। या'नी फ़िरिश्ते रजिस्टरों में आइन्दा साल होने वाले मुआ़-मलात लिखते हैं। जैसा कि "तफ़सीरे स़ावी जिल्द:6, स़-फ़ह़ा नम्बर 2398 पर है,

"اَیْ اِظْهَارُهَا فِیْ دَوَاوِیْنِ الْمَلَأِ الْاَعْلٰی" ***तर्जमा:*** इसे (या'नी उमूरे तक़्दीर को) मुक़र्रब फ़िरिश्तों के रजिस्टरों में ज़ाहिर कर दिया जाता है।" और भी मु-तअ़द्दद शराफ़तें इस मुबारक रात को ह़ासिल हैं। ***मुफ़स्सिरे*** शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं: "इस शब को लैलतुल क़द्र चन्द वुजूह से केहते हैं (1) इस में साले आइन्दा के उमूर मुक़र्रर कर के मलाइका के सिपुर्द कर दिये जाते हैं। क़द्र ब मा'ना तक़्दीर या क़द्र ब मा'ना इ़ज़्ज़त या'नी इ़ज़्ज़त वाली रात (2) इस में क़द्रवाला क़ुरआने पाक नाज़िल हुवा (3) जो इ़बादत इस में की जावे उस की क़द्र है (4) क़द्र ब मा'ना तंगी या'नी मलाइका इस रात में इस क़दर आते हैं कि ज़मीन तंग हो जाती है। इन वुजूह से इसे ***शबे क़द्र*** या'नी क़द्र वाली रात केहते हैं।"

(मवाइज़े नईमिय्या, स़-फ़ह़ा:62)

बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस़ में है, "जिस ने इस रात में ईमान और ***इख़्लास़*** के साथ क़ियाम किया तो उस के उ़म्र भर के गुज़श्ता गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:660, ह़दीस़:2014)

83 साल 4 माह से ज़ियादा इ़बादत का स़वाब :

लिहाज़ा इस मुक़द्दस रात को हरगिज़ हरगिज़ ग़फ़्लत में नहीं गुज़ारना चाहिये। ***इस रात इ़बादत करने वाले को एक हज़ार माह या'नी***

तिरासी साल चार माह से भी ज़ियादा इ़बादत का स़वाब अ़त़ा किया जाता है। और इस ''ज़ियादा'' का इ़ल्म ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ जाने या इस के बताए से उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जानें कि कितना है। इस रात में ह़ज़रते सय्यिदुना ***जिब्रील*** (عَلَيْهِ السَّلَام) और फ़िरिश्ते नाज़िल होते हैं और फिर इ़बादत करने वालों से ***मुसा-फ़ह़ा*** करते हैं। इस मुबारक शब का हर एक लम्ह़ा सलामती ही सलामती है और येह सलामती सुब्ह़े स़ादिक़ तक बर क़रार रहती है। येह ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का ख़ास़ुल ख़ास़ करम है कि येह अ़ज़ीम रात सिर्फ़ अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के स़दक़े में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत को अ़त़ा की गई है। ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है :-

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ فِى لَيْلَةِ ٱلْقَدْرِ ﴿١﴾ وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا لَيْلَةُ ٱلْقَدْرِ ﴿٢﴾ لَيْلَةُ ٱلْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ﴿٣﴾ تَنَزَّلُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ﴿٤﴾ سَلَٰمٌ هِىَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ ٱلْفَجْرِ ﴿٥﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला। बेशक हम ने इसे शबे क़द्र में उतारा और तुम ने क्या जाना, क्या शबे क़द्र ? शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर, इस में फ़िरिश्ते और जिब्रील (عَلَيْهِ السَّلَام) उतरते हैं अपने रब के हुक्म से, हर काम के लिये, वोह सलामती है सुब्ह़ चमकने तक।

(पारह:30, सूरतुल क़द्र)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शबे क़द्र किस क़दर अहम्म रात है कि इस की शाने मुबारक में ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने पूरी एक सूरत नाज़िल फ़रमाई । जिसे अभी आप ने मुला-हज़ा किया । इस सूरए मुबा-रका में ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने इस मुबारक रात की कई ख़ुसूसिय्यात इर्शाद फ़रमाई हैं ।

मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى इसी सूरए क़द्र के ज़िम्न में फ़रमाते हैं, "इस रात में ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने मजीद को लौहे़ मह़फ़ूज़ से आस्माने दुन्या पर नाज़िल फ़रमाया और फिर तक़रीबन 23 बरस की मुद्दत में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर इसे ब-तदरीज नाज़िल किया ।" (अज़ तफ़्सीरे स़ावी, जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:2398)

सरकार ﷺ रन्जीदा हो गए : "तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी" में है कि जब हमारे मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस़्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने साबिक़ा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की उम्मतों की त़वील उ़म्रों और अपनी उम्मत की क़लील उ़म्रों को मुला-ह़ज़ा फ़रमाया तो ग़मख़्वारे उम्मत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक दिल शफ़्क़त से भर आया और ***सरकार*** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ***रन्जीदा हो गए*** कि मेरे उम्मती अगर खूब खूब नेकियां करें जब भी उन की बराबरी नहीं कर सकेंगे । चुनान्चे ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत जोश पर आई और उस ने अपने प्यारे ह़बीब

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ***लैलतुल क़द्र*** अ़ता फ़रमाई ।

(तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:434)

ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत : ***सूरए क़द्र*** का शाने नुज़ूल बयान करते हुए बा'ज़ मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى ने एक निहायत ही ***ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत*** बयान की है । इस का मज़मून कुछ इस त़रह़ है, कि ***ह़ज़रते शम्ऊ़न*** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने हज़ार माह इस त़रह़ इ़बादत की कि रात को क़ियाम और दिन को रोज़ा रखने के साथ साथ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की राह में कुफ़्फ़ार के साथ जिहाद भी करते । वोह इस क़दर ***त़ाक़त वर*** थे कि लोहे की वज़्नी और मज़्बूत़ ***ज़न्जीरों*** को अपने हाथों से तोड़ डालते थे ।

कुफ़्फ़ारे ना हन्जार ने जब देखा कि ***ह़ज़रते शम्ऊ़न*** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर कोई भी हर्बा कारगर नहीं होता तो बाहम मश्वरा करने के बा'द बहुत सारे मालो दौलत का लालच दे कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़ौजा को इस बात पर आमादा कर लिया कि वोह किसी रात नींद की ह़ालत में पाए तो उन्हें निहायत ही ***मज़्बूत़ रस्सियों*** से खूब अच्छी त़रह़ जकड़ कर इन के ह़वाले कर दे । चुनान्चे ***बे वफ़ा बीवी*** ने ऐसा ही किया । जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बेदार हुए और अपने आप को ***रस्सियों*** से बंधा हुवा पाया तो फ़ौरन अपने आ'ज़ा को

ह़-र-कत दी। देखते ही देखते रस्सियां टूट गईं और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه आज़ाद हो गए। फिर अपनी बीवी से इस्तिफ़सार किया, ''मुझे किस ने बांध दिया था ? ***बे वफ़ा बीवी*** ने वफ़ादारी की नक़्ली अदाओं से झूट मूट केह दिया कि मैं तो आप की त़ाक़त का अन्दाज़ा कर रही थी कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इन रस्सियों से किस त़रह़ अपने आप को आज़ाद करवाते हैं।'' बात रफ़्अ़ दफ़्अ़ हो गई। एक बार नाकाम होने के बा वुजूद **बे वफ़ा बीवी** ने हिम्मत नहीं हारी और मुसल्सल इस बात की ताक में रही कि कब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर नींद त़ारी हो और वोह इन्हें बांध दे।

आख़िरे कार एक बार फिर मौक़अ़ मिल ही गया। लिहाज़ा जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर नींद का ग़-लबा हुवा तो उस ज़ालिमा ने निहायत ही चालाकी के साथ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ***लोहे की ज़न्जीरों*** में अच्छी त़रह़ जकड़ दिया। जूं ही आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की आंख खुली, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक ही झटके में ज़न्जीर की एक एक कड़ी अलग कर दी और ब आसानी आज़ाद हो गए। बीवी येह मन्ज़र देख कर सटपटा गई मगर फिर मक्कारी से काम लेते हुए वोही बात दोहरा दी कि मैं तो आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) को आज़्मा रही थी। दौराने गुफ़्तुगू (ह़ज़रते) ***शम्ऊ़न*** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी बीवी के आगे अपना राज़ इफ़्शा कर दिया कि मुझ पर ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का बड़ा करम है उस ने मुझे अपनी विलायत का शरफ़ इनायत फ़रमाया है।

मुझ पर दुन्या की कोई चीज़ असर नहीं कर सकती मगर हां, "मेरे सर के बाल ।" चालाक औरत सारी बात समझ गई ।

आह ! उसे दुन्या की महब्बत ने अन्धा कर दिया था । आखिर एक बार मौक़अ पा कर उस ने आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) को आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ही के उन ***आठ गेसूओं*** से बांध दिया जिन की दराज़ी ज़मीन तक थी । (येह अगली उम्मत के बुज़ुर्ग थे हमारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नते गेसू ज़ियादा से ज़ियादा शानों तक है) आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आंख खुलने पर बड़ा ज़ोर लगाया मगर आज़ाद न हो सके । दुन्या की दौलत के नशे में बद मस्त बे वफ़ा औरत ने अपने नेक और पारसा शौहर को दुश्मनों के हवाले कर दिया ।

कुफ़्फ़ारे बद अत्वार ने ***हज़रते शम्ऊन*** (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ***को एक सुतून से बांध दिया और इन्तिहाई बे दर्दी और सफ़्फ़ाकी से उन के नाक, कान काट डाले और आंखें निकाल लीं ।*** अपने वलिय्ये कामिल की बे कसी पर ***रब्बुल इज़्ज़त*** عَزَّوَجَلَّ की गैरत को जोश आया । क़हरे क़ह्हार व ग़-ज़बे जब्बार جَلَّ جَلَالُه ने ज़ालिम काफ़िरों को ज़मीन के अन्दर धंसा दिया और दुन्या के लालच में आ कर बे वफ़ाई करने वाली बद नसीब बीवी पर क़हरे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ की बिजली गिरी और वोह भी ख़ाकिस्तर हो गई ।

(माख़ूज़ अज़ मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स-फ़हा:306)

हमारी उ़म्रें तो बहुत क़लील हैं : *ह़ज़राते स़ह़ाबए किराम* عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने जब ह़ज़रते ***शम्ऊ़न*** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की इबादात व जिहाद व तकालीफ़ व मसाइब का तज़्किरा सुना तो उन्हें ***ह़ज़रते शम्ऊ़न*** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर बड़ा रश्क आया और माहे नुबुव्वत, आक़ाए रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में अ़र्ज़ की, "या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमें तो बहुत थोड़ी उ़म्रें मिली हैं। इस में भी कुछ ह़िस्सा नींद में गुज़रता है तो कुछ त़लबे मआ़श में, खाने पकाने में और दीगर उमूरे दुन्यवी में भी कुछ वक़्त स़र्फ़ हो जाता है। लिहाज़ा हम तो ***ह़ज़रते शम्ऊ़न*** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की त़रह़ इबादत कर ही नहीं सकते। यूं बनी इस्राईल हम से इबादत में बढ़ जाएंगे।"

उम्मत के ग़मख़्वार आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह सुन कर ग़मगीन हो गए। उसी वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना ***जिब्राईले अमीन*** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ह़ाज़िरे ख़िदमते बा ब-र-कत हुए और ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की जानिब से ***सूरए क़द्र*** पेश की। और तसल्ली दे दी गई कि ***प्यारे ह़बीब*** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रन्जीदा न हों, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत को हम ने हर साल में एक ऐसी रात

इनायत फ़रमा दी कि ***अगर वोह उस रात में मेरी इ़बादत करेंगे तो ह़ज़रते शम्ऊ़न*** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ***के हज़ार माह की इ़बादत से भी बढ़ जाएंगे ।*** (माख़ूज़ अज़ तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:434)

आह हमें क़द्र कहां ? ***अल्लाहु अक्बर*** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ अपने मह़बूबे ज़ीशान, रह़मते आ़लमियान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत पर किस क़दर मेहरबान है और उस ने हम ग़ुलामों पर हमारे मीठे मीठे आक़ा नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के स़दक़े किस क़दर अ़ज़ीमुश्शान एह़सान फ़रमाया कि अगर ***शबे क़द्र*** में इ़बादत कर लें तो ***एक हज़ार माह*** से भी ज़ियादा की इ़बादत का स़वाब पा लें । मगर आह ! हमें शबे क़द्र की क़द्र कहां ! एक स़ह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी तो थे कि उन की ह़सरत पर हम सब को इतना बड़ा ***इन्आ़म*** बिग़ैर किसी ख़्वाहिश के मिल गया । उन्हों ने तो इस की क़द्र भी की मगर हम ना क़द्रों को तो इ़बादत की फ़ुरस़त ही नहीं मिलती । ***आह !*** हर साल मिलने वाले इस अ़ज़ीमुश्शान ***इन्आ़म*** को हम ग़फ़्लत की नज़्र कर देते हैं ।

म-दनी इन्आ़मात के कार्ड की ब-र-कत : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** शबे क़द्र की दिल में अ़-ज़मत बढ़ाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा 'वते इस्लामी*** के म-दनी माह़ौल से हरदम वाबस्ता

रहिये । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये इ़बादात व अख़्लाक़िय्यात के तअ़ल्लुक़ से इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63 और त़-ल-बए इ़ल्मे दीन के लिये 92 दीनी त़ालिबात के लिये 83 और म-दनी मुन्नों और मुन्नियों के लिये 40 ***म-दनी इन्आ़मात*** सुवालात की सूरत में मुरत्तब किये गए हैं । ***फ़िक्रे मदीना*** (या'नी अपने आ'माल का मुह़ासिबा) करते हुए रोज़ाना ***म-दनी इन्आ़मात का कार्ड*** पुर कर के दा'वते इस्लामी के मक़ामी ज़िम्मादार को हर म-दनी माह या'नी इस्लामी महीने की इब्तिदाई 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर जम्अ़ करवाना होता है । म-दनी इन्आ़मात ने न जाने कितने इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों में ***म-दनी इन्क़िलाब*** बरपा कर दिया है ! इस की एक झलक मु-लाह़ज़ा हो चुनान्चे न्यू कराची के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ का बयान है : अ़लाक़े की मस्जिद के इमाम स़ाह़िब जो कि ***दा'वते इस्लामी*** से वाबस्ता हैं, उन्हों ने ***इन्फ़िरादी कोशिश*** करते हुए मेरे बड़े भाईजान को ***म-दनी इन्आ़मात*** का एक कार्ड तोह़फ़े में दिया । वोह घर ले आए और पढ़ा तो ह़ैरान रह गए कि इस मुख़्तस़र से कार्ड में एक मुसल्मान को इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने का इतना ज़बरदस्त फ़ारमूला दे दिया गया है ! ***म-दनी इन्आ़मात का कार्ड*** मिलने की ब-र-कत से اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन को ***नमाज़*** का जज़्बा मिला और नमाज़े बा जमाअ़त की अदाएगी के लिये मस्जिद में ह़ाज़िर हो गए और अब पांच वक़्त के ***नमाज़ी*** बन चुके हैं, ***दाढ़ी मुबारक*** भी

सजा ली और ***म-दनी इन्आमात*** का कार्ड भी पुर करते हैं।

म-दनी इन्आमात के आमिल पे हर दम हर घड़ी
या इलाही ! عَزَّوَجَلَّ ख़ूब बरसा रहमतों की तू झड़ी

आमिलीने म-दनी इन्आमात के लिये बिशारते उ़ज़्मा : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** म-दनी इन्आमात का कार्ड पुर करने वाले किस क़दर ख़ुश क़िस्मत होते हैं इस का अन्दाज़ा इस ***म-दनी बहार*** से लगाइये चुनान्चे हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ ह़-लफ़िया बयान है कि माहे र-जबुल मुरज्जब सिने 1426 हिजरी की एक शब मुझे ख़्वाब में ***मुस्त़फ़ा जाने रह़मत*** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की अज़ीम सआदत मिली। लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई और रहमत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए: ***जो इस माह रोज़ाना पाबन्दी से म-दनी इन्आमात से मु-तअ़ल्लिक़ फ़िक्रे मदीना करेगा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की मग़फ़िरत फ़रमा देगा।***

म-दनी इन्आमात की भी मरह़बा क्या बात है
क़ुर्बे ह़क़ عَزَّوَجَلَّ के त़ालिबों के वासित़े सौग़ात है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तमाम भलाइयों से मह़रूम कौन ? : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं, एक बार जब माहे र-मज़ान शरीफ़ तशरीफ़ लाया तो सुल्त़ाने दो जहान, मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: "तुम्हारे पास एक महीना आया है जिस में एक रात ऐसी भी है जो हज़ार महीनों से अफ़्ज़ल है जो शख़्स़ उस रात से मह़रूम रह गया, गोया तमाम की तमाम भलाई से मह़रूम रह गया और उस की भलाई से मह़रूम नहीं रहता मगर वोह शख़्स़ जो ह़क़ीक़तन मह़रूम है।"

(सु-नने इब्ने माजह, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:298, ह़दीस़:1644)

एक हज़ार शहज़ादे : ***सू-रतुल*** क़द्र का एक और शाने नुज़ूल मश्हूर त़ाबेई ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मन्क़ूल है। चुनान्चे सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं, बनी इस्राईल में एक नेक ख़स़्लत बादशाह था। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस ज़माने के नबी عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि फ़ुलां से कहो कि अपनी तमन्ना बयान करे। जब इस को पैग़ाम मिला तो उस ने अ़र्ज़ की, "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ मेरी तमन्ना है कि मैं अपने माल, औलाद और जान के साथ जिहाद करूं।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे एक हज़ार लड़के अ़त़ा फ़रमाए। वोह अपने एक एक शहज़ादे को अपने माल के साथ लश्कर के लिये तैयार किया करता और फिर उसे

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में मुजाहिद बना कर भेज देता। वोह एक माह जिहाद करता और शहीद हो जाता। फिर दूसरे शहज़ादे को लश्कर में तैयार करता तो हर माह एक शहज़ादा शहीद हो जाता। इस के साथ साथ बादशाह रात को क़ियाम करता और दिन को रोज़ा रखा करता। एक हज़ार महीनों में उस के हज़ार शहज़ादे शहीद हो गए। फिर खुद आगे बढ़ कर जिहाद किया और शहीद हो गया। लोगों ने कहा कि इस बादशाह का मरतबा कोई शख़्स नहीं पा सकता। तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबा-रका नाज़िल फ़रमाई कि لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर) या'नी इस बादशाह के हज़ार महीनों से जो कि इस ने रात के क़ियाम, दिन के रोज़ों और माल, जान और औलाद के साथ राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद कर के गुज़ारे इस से बेहतर है। (तफ़्सीरे कुरतुबी, जिल्द:20, पारह:30, स-फ़हा:122)

हज़ार शहरों की बादशाहत : ***हज़रते*** सय्यिदुना अबू बक्र वर्राक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मिल्क में पांच सौ शहर थे और सय्यिदुना ज़ुल क़रनैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की मिल्क में भी पांच सौ शहर। यूं इन दोनों की मिल्क में एक हज़ार शहर हुए। तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस रात के अ़मल को जो इसे पाए उस के लिये इन दोनों की मिल्क से बेहतर बनाया है। (तफ़्सीरे कुरतुबी, जिल्द:20, पारह:30 स-फ़हा:122)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह रात हर त़रह़ से ख़ैरिय्यत व सलामती की ज़ामिन है । येह रात अव्वल ता आख़िर रह़मत ही रह़मत है । मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं, "येह रात सांप व बिच्छू, आफ़ात व बलय्यात और शयात़ीन से भी मह़फ़ूज़ है इस रात में सलामती ही सलामती है ।"

परचम कुशाई : ***रिवायत*** है कि शबे क़द्र में सिद्रतुल मुन्तहा के फ़िरिश्तों की फ़ौज ह़ज़रते ***जिब्रील*** عَلَيْهِ السَّلَام की सरदारी में ज़मीन पर उतरती है, और उन के साथ ***चार झन्डे*** होते हैं, ***एक झन्डा*** हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए मह़शर, मदीने के ताजवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे मुनव्वर पर, ***एक झन्डा*** बैतल मुक़द्दस की छत पर । और ***एक झन्डा*** का'बए मुअ़ज़्ज़मा की छत पर, ***एक झन्डा*** तूरे सीना पर लहराते हैं फिर येह फ़िरिश्ते मुसल्मानों के घरों में तशरीफ़ ले जा कर हर मोमिन मर्द व औ़रत को सलाम करते हैं और केहते हैं, ***सलाम*** عَزَّوَجَلَّ (सलाम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का सिफ़ाती नाम है) ***तुम पर सलामती भेजता है ।*** मगर जिन घरों में ***शराबी*** या ***ख़िन्ज़ीर*** का गोश्त खाने वाला या बिला वज्हे शर-ई अपनी ***रिश्तेदारी काट देनेवाला*** रहता हो इन घरों में येह फ़िरिश्ते दाख़िल नहीं होते ।" (तफ़्सीरे स़ावी, जिल्द:6, स़-फ़्ह़ा:2401)

एक रिवायत में येह भी है कि "इन फ़िरिश्तों की ता'दाद रूए

ज़मीन की कंकरियों से भी ज़ियादा होती है और येह सब सलाम व रह़मत ले कर नाज़िल होते हैं ।''

(तफ़्सीरे दुर्रे मन्सूर, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:579)

सब्ज़ झन्डा : ***एक*** और त़वील ह़दीस़ जिसे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने रिवायत किया है, इस में ***शबे क़द्र*** के बारे में नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम, मह़बूबे रब्बे अ़ज़ीम عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने आ़लीशान नक़्ल किया गया है :- ''***जब शबे क़द्र*** आती है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से ह़ज़रते ***जिब्रील*** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام एक ***सब्ज़ झन्डा*** लिये फ़िरिश्तों की बहुत बड़ी फ़ौज के साथ ज़मीन पर नुज़ूल फ़रमाते हैं और उस सब्ज़ झन्डे को का'बए मुअ़ज़्ज़मा पर लहरा देते हैं । ह़ज़रते ***जिब्रील*** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के सौ बाज़ू हैं, जिन में से दो बाज़ू सिर्फ़ इसी रात खोलते हैं । वोह बाज़ू मश्रिक़ व मग़रिब में फैल जाते हैं । फिर ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام फ़िरिश्तों को हुक्म देते हैं कि जो कोई मुसल्मान आज रात क़ियाम, नमाज़ या ***ज़िक्रुल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल है उस से ***सलाम*** व मुसा फ़ह़ा करो । नीज़ उन की दुआओं पर आमीन भी कहो । चुनान्चे सुब्ह़ तक येही सिल्सिला रहता है । सुब्ह़ होने पर ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام फ़िरिश्तों को वापसी का हुक्म सादिर फ़रमाते हैं । फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, ***ऐ जिब्रील*** عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत की ह़ाजात के

बारे में क्या किया ? हज़रते ***जिब्रील*** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़रमाते हैं, "***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने इन लोगों पर ख़ुसूसी नज़रे करम फ़रमाई और चार[4] क़िस्म के लोगों के इलावा तमाम लोगों को मुआफ़ फ़रमा दिया। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह चार[4] क़िस्म के लोग कौन से हैं ?" इर्शाद फ़रमाया: (1) एक तो आ़दी शराबी (2) दूसरे वालिदैन के नाफ़रमान (3) तीसरे क़त्ए रेह़्मी करने वाले (या'नी रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ात तोड़ने वाले) और (4) चौथे वोह लोग जो आपस में बुग़्ज़ व कीना रखते हैं और आपस में क़त्ए तअ़ल्लुक़ करने वाले।"

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स-फ़ह़ा:336, ह़दीस़:3695)

बद नसीब लोग : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** देखा आपने ? ***शबे क़द्र*** किस क़दर अ-ज़मत वाली रात है। इस रात में हर ख़ासो आ़म को बख़्श दिया जाता है। ता हम आ़दी शराबी, मां बाप के ना फ़रमान, क़त्ए रेह़्मी करने वाले और बिला मस्लह़ते शर-ई आपस में कीना रखने वाले और इस सबब से आपस में तअ़ल्लुक़ात मुन्क़तेअ़ करने वाले इस आ़म बख़्शिश से मह़रूम कर दिये जाते हैं।

तौबा कर लो ! : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** क़हरे क़ह्हार व ग़-ज़बे जब्बार عَزَّوَجَلَّ से लरज़ जाने के लिये क्या येह बात काफ़ी नहीं ?

और ***शबे क़द्र*** जैसी बा ब-र-कत रात भी जिन मुजरिमों की बख़्शिश नहीं की जा रही वोह किस क़दर शदीद मुजरिम होंगे ? इन गुनाहों से सिद्क़े दिल से तौबा कर लेनी चाहिये और हुक़ूक़ुल इबाद वाले मुआ़-मलात भी ह़ल कर लिये जाएं बेशक ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्लो करम बेहद व बे इन्तिहा है ।

लड़ाई का वबाल : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना उ़बादा बिन सा़मित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए ताकि हम को शबे क़द्र के बारे में बताएं (कि किस रात में है) दो मुसल्मान आपस में ***झगड़*** रहे थे । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया: "मैं इस लिये आया था कि तुम्हें ***शबे क़द्र*** बताऊं लेकिन फ़ुलां फ़ुलां शख़्स़ ***झगड़*** रहे थे । इस लिये इस का तअ़य्युन उठा लिया गया । और मुम्किन है कि इसी में तुम्हारी बेह्तरी हो । अब इस को (आख़िरी अ़श्रे की) ***नवीं, सातवीं,*** और पांचवीं रातों में ढूंडो ।"

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:663, ह़दीस़:2023)

हम तो शरीफ़ के साथ शरीफ़ और..... ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** इस ह़दीसे़ पाक में हमारे लिये किस क़दर दर्से इ़ब्रत है कि मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

बताने ही वाले थे कि ***शबे क़द्र*** कौन सी रात है कि दो मुसल्मानों का ***बाहम लड़ना*** मानेअ़ हो गया और हमेशा हमेशा के लिये ***शबे क़द्र*** को मख़्फ़ी कर दिया गया । ***इस से अन्दाज़ा लगाइये कि मुसल्मानों का आपस में लड़ाई झगड़ा करना रह़मत से किस क़दर दूरी का सबब बन जाता है ।*** मगर आह ! अब कौन किस को समझाए ? आज तो बड़े फ़ख़्र से कहा जा रहा है कि "मियां इस दुन्या में शरीफ़ रह कर तो गुज़ारा ही नहीं, हम तो शरीफ़ों के साथ शरीफ़ और बद मआ़श के साथ बद मआ़श हैं !" सिर्फ़ इस क़ौल ही पर इक्तिफ़ा नहीं । अब तो मा'मूली सी बात पर पहले ज़बान दराज़ी, फिर दस्त अन्दाज़ी, इस के बा'द चाकू बाज़ी बल्कि गोलियां तक चल जाती हैं । अफ़्सोस ! आजकल बा'ज़ मुसल्मान कभी ***पठान*** बन कर कभी ***पन्जाबी*** कहला कर, कभी ***मुहाजिर*** हो कर, कभी ***सिन्धी*** और ***बलूच*** क़ौमिय्यत का ना'रा लगा कर एक दूसरे का गला काट रहे हैं । एक दूसरे की अम्लाक व अम्वाल को आग लगा रहे हैं । आपस में एक दूसरे के ख़िलाफ़ सिर्फ़ नस्ली और लिसानी फ़र्क़ की बिना पर महाज़ आराई हो रही है । मुसल्मानो ! आप तो एक दूसरे के मुहाफ़िज़ थे आप को क्या हो गया है ? हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान तो येह है कि "मोमिनों की मिसा़ल तो एक जिस्म की त़रह़ है कि अगर एक उ़ज़्व को तक्लीफ़ पहुंचे तो सारा जिस्म इस तक्लीफ़ को मह़सूस करता है ।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:4, स़-फ़्ह़ा:103, ह़दीस़:6011)

एक शाइ़र ने कितने प्यारे अन्दाज़ में समझाया है

मुब्तलाए दर्द कोई उ़ज़्व हो रोती है आंख

किस क़दर हमदर्द सारे जिस्म की होती है आंख

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें आपस में ***लड़ाई झगड़ा*** करने के बजाए एक दूसरे की हमदर्दी और ग़मगुसारी करनी चाहिये। मुसल्मान एक दूसरे को मारने, काटने और लूटने, एक दूसरे की दुकानें और अस्बाब जलाने वाला नहीं होता।

मुसल्मान मोमिन और मुहाजिर की ता'रीफ़ :

सय्यिदुना फ़ुज़ाला बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सख़ावत, सरापा रह़मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम्हें मोमिन के बारे में ख़बर न दूं ?" फिर इर्शाद फ़रमाया: मोमिन वोह है जिस से दूसरे मुसल्मान अपनी जान और अपने अम्वाल से बे ख़ौफ़ हों और ***मुसल्मान*** वोह है जिस की ज़बान और हाथ से दूसरे मुसल्मान मह़फ़ूज़ रहें और ***मुजाहिद*** वोह है जिस ने इत़ाअ़ते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ के मुआ़-मले में अपने नफ़्स के साथ जिहाद किया और ***मुहाजिर*** वोह है जिस ने ख़त़ा और गुनाहों से अलाह़िदगी इख़्तियार की।"

(अल मुस्तदरक लिल ह़ाकिम, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:158)

और इर्शाद फ़रमाया: किसी मुसल्मान के लिये जाइज़ नहीं कि वोह किसी दूसरे मुसल्मान की त़रफ़ (या उस के बारे में) इस क़िस्म के इशारे, किनाये से काम ले जो उस की ***दिल आज़ारी*** का बाइस़ हो। और येह भी ह़लाल नहीं कि कोई ऐसी ह़-र-कत की जाए जो किसी मुसल्मान को हिरासां या ख़ौफ़ज़दा कर दे।

(इत्तिह़ाफ़ुस्सा-दतुल मुत्तक़ीन, जिल्द:7, स़-फ़ह़ा:177)

त़रीक़े मुस़्तफ़ा को छोड़ना है वज्हे बरबादी
इसी से क़ौम दुन्या में हुई बे इक़्तिदार अपनी

ना क़ाबिले बरदाश्त ख़ारिश : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ बा'ज़ दोज़ख़ियों को ऐसी ***ख़ारिश*** में मुब्तला कर देगा कि खुजाते खुजाते उन की खाल उधड़ जाएगी। यहां तक कि उन की हड्डियां ज़ाहिर हो जाएंगी। फिर निदा सुनाई देगी कि कहो, कैसी रही येह तक्लीफ़ ? वोह कहेंगे कि इन्तिहाई सख़्त और ***ना क़ाबिले बरदाश्त*** है। तब उन्हें बताया जाएगा। कि "दुन्या में जो तुम मुसल्मानों को सताया करते थे येह उस की सज़ा है।" (इत्तिह़ाफ़ुस्सा-दतुल मुत्तक़ीन, जिल्द:7, स़-फ़ह़ा:175)

तक्लीफ़ दूर करने का स़वाब : ***हु़ज़ूरे*** अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़्तशम, शाफ़ेए़ उमम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया: "मैं ने एक शख़्स़ को जन्नत में घूमते हुए

देखा कि जिधर चाहता था निकल जाता था । जानते हो क्यूं ? सिर्फ़ इस लिये कि उस ने इस दुन्या में एक दरख़्त रास्ते से इस लिये काट दिया था कि मुसल्मानों को राह चलने में तक्लीफ़ न हो ।"

(स़ह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:1410, ह़दीस़:1914)

लड़ना है तो नफ़्स के साथ लड़ो ! : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** इन अह़ादीस़े मुबा-रका से दर्स ह़ासि़ल कीजिये और आपस में लड़ाई झगड़ा और लूट मार से परहेज़ कीजिये । अगर लड़ना ही है तो मर्दूद शैत़ान से लड़िये, नफ़्से अम्मारा से लड़ाई कीजिये । ब वक़्ते जिहाद दीन के दुश्मनों से क़िताल कीजिये । मगर आपस में भाई भाई बन कर रहिये । आपस में ***झगड़ा*** करने का नुक़्स़ाने अ़ज़ीम तो आप ने देख ही लिया कि ***शबे क़द्र*** की तअ़यीन उठा ली गई । इस के इलावा भी आपस में ***लड़ाई झगड़ा*** करने से न जाने कैसी कैसी अ़ज़ीम ने'मतों और रह़मतों से हमें मह़रूम किया जाता होगा ? ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हमारे ह़ाले ज़ार पर रह़्म फ़रमाए और इस बात को समझने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए कि हम अगर्चे ***पन्जाबी, पठान, सिन्धी, बलूच, सराईकी, मुहाजिर, बंगाली, बिहारी*** वग़ैरा क़ौमिय्यत से तअ़ल्लुक़ रखते हों मगर हैं ***"अ़-रबी आक़ा*** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम ।" हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم न "पठान" हैं, न "पंजाबी", न "बलूच" हैं, न "सिन्धी" । बल्कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो "अ़-रबी" हैं । ऐ काश ! हम

ह़क़ीक़ी मा'नों में ***अ़-रबी आक़ा*** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दामने करम से लिपट कर रहें और तमाम नस्ली और लिस़ानी इख़्तिलाफ़ात को भुला कर एक और नेक बन जाएं ।

फ़र्द क़ाइम रब्त़े मिल्लत से है तन्हा कुछ नहीं
मौज है दरया में और बैरूने दरया कुछ नहीं

म-दनी इन्आ़मात के कार्ड्ज़ को देख कर आक़ा ﷺ मुस्करा रहे थे :

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के ***म-दनी माह़ौल*** में किसी क़िस्म का लिसानी और क़ौमी इख़्तिलाफ़ नहीं, हर ज़बान बोलने वाला और हर बरादरी से तअ़ल्लुक़ रखने वाला ***अ़-रबी आक़ा*** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दामने करम ही में पनाह गुज़ीं है । आप भी हरदम ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माह़ौल से वाबस्ता रहिये और इश्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में डूबी हुई ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये अपने आप को ***म-दनी इन्आ़मात*** के सांचे में ढाल लीजिये । तरग़ीब व तह़रीस़ के लिये एक ख़ुश गवार और ख़ुश्बूदार ***म-दनी बहार*** आप के गोश गुज़ार की जाती है चुनान्चे 5 फ़रवरी 2005 में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना कराची में ***म-दनी क़ाफ़िला कोर्स*** करने के लिये तशरीफ़ लाए हुए ***रावलपिंडी*** के एक मुबल्लिग़ ने जो कुछ ह़-लफ़िया लिख कर दिया उस का ख़ुलास़ा है कि मैं ***आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना*** में सो रहा था, सर की आंखें

तो क्या बन्द हुई اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दिल की आंखें खुल गई, आलमे ख़्वाब में देखा कि ***सरकारे रिसालत मआब*** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक बुलन्द चबूतरे पर जल्वा अफ़रोज़ हैं, क़रीब ही ***म-दनी इन्आमात*** के ***कार्डज़*** की बोरियां रखी हुई हैं। सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ***म-दनी इन्आमात*** के एक एक कार्ड को मुस्कराते हुए बग़ौर मुला-हज़ा फ़रमा रहे हैं । फिर मेरी आंख खुल गई ।

म-दनी इन्आमात से अ़त्तार हम को प्यार है

اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दो 2 जहां में अपना बेड़ा पार है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जादूगर का जादू नाकाम : ***हज़रते*** सय्यिदुना इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं, "येह रात सलामती वाली रात है या'नी इस में बहुत सी चीज़ों से सलामती है । इस रात में बीमारी, शर्र और आफ़ात से सलामती है, इसी त़रह़ आंधी, बिजली वग़ैरा ऐसी बातें जिन से डर पैदा होता हो उन से भी सलामती है, बल्कि इस रात में जो कुछ नाज़िल होता है वोह सलामती, नफ़्अ़ और ख़ैर पर मुश्तमिल होता है । और न ही इस में शैत़ान बुराई करवाने की त़ाक़त रखता है और न ही ***जादूगर का जादू*** इस में चलता है बस इस रात में सलामती ही सलामती है ।"

(रूहुल बयान, जिल्द:10, स-फ़हा:485)

अ़लामाते शबे क़द्र : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना उ़बादा बिन स़ामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने सरकारे वाला तबार, बि इज़्नि परवर्द गार दो[2] जहां के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में ***शबे क़द्र*** के बारे में सुवाल किया तो सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया: "***शबे क़द्र*** र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरह की ***ताक़ रातों*** या'नी इक्कीस्वीं, तेईस्वीं, पच्चीस्वीं, सताईस्वीं या उन्तीस्वीं शब या ***र-मज़ान*** की आख़िरी शब में है। तो जो कोई ईमान के साथ ब निय्यते स़वाब इस मुबारक रात में इ़बादत करे, उस के तमाम गुज़श्ता गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। उस की अ़लामात में से येह भी है कि वोह मुबारक शब खुली हुई, रौशन और बिल्कुल स़ाफ़ व शफ़्फ़ाफ़ होती है। इस में न ज़ियादा गरमी होती है न ज़ियादा सर्दी बल्कि येह रात मो'तदिल होती है, गोया कि इस में चांद खुला हुवा होता है, इस पूरी रात में शयात़ीन को आस्मान के सितारे नहीं मारे जाते। मज़ीद निशानियों में से येह भी है कि इस रात के गुज़रने के बा'द जो सुब्ह़ आती है उस में सूरज बिग़ैर शुआ़अ़ के तुलूअ़ होता है और वोह ऐसा होता है गोया कि चौधवीं का चांद। ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने इस दिन तुलूए़ आफ़्ताब के साथ शैत़ान को निकलने से रोक दिया है। (इस एक दिन के इ़लावा हर रोज़ सूरज के साथ साथ शैत़ान भी निकलता है।)

(मुस्नदे इमाम अह़मद, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:414, ह़दीस़:22829)

समुन्दर का पानी मीठा हो जाता है : *मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !* ह़दीसे़ पाक में फ़रमाया गया है कि र-मज़ानुल मुबारक के आखि़री अ़शरह की ***ताक़ रातों*** में या आखि़री रात में से चाहे वोह 30 वीं शब हो कोई एक रात शबे क़द्र है । इस रात को मख़्फ़ी रखने में हज़ार हा ह़िक्मतें हैं । जिन में यक़ीनन एक ह़िक्मत येह भी है कि मुसल्मान हर रात इसी रात की जुस्तुजू में ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में गुज़ारने की कोशिश करें कि न जाने कौन सी रात, ***शबे क़द्र*** हो । इसी ह़दीसे़ पाक में ***शबे क़द्र*** की बा'ज़ अ़लामात भी इर्शाद फ़रमाई गई हैं । इन अ़लामात के इ़लावा भी दीगर रिवायात में मज़ीद अ़लामाते लैलतुल क़द्र का बयान किया गया है । इन अ़लामात को पा लेना सब के बस की बात नहीं । बल्कि येह तो सिर्फ़ अहले नज़र ही का ह़िस्सा है । ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ बसा अवक़ात अपने ख़ास़ बन्दों पर इन का ज़ुहूर फ़रमाता है । शबे क़द्र की एक अ़लामत येह भी है कि इस रात में समुन्दर का खारी पानी मीठा हो जाता है । नीज़ इन्सान व जिन्नात के इ़लावा काएनात की हर शय ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की बुज़ुर्गी के ए'तिराफ़ में सज्दा रेज़ हो जाती है मगर येह हर एक को नज़र नहीं आता ।

ह़िकायत : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना उ़बैद इब्ने इमरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, ''मैं एक रात बुहै़रए कुल्ज़ुम (कुल्ज़ुम नामी समुन्दर) के कनारे पर था और उसी खारी पानी से वुज़ू करने लगा । जब मैं ने वोह

पानी चखा तो **शहद** से भी ज़ियादा मीठा मा'लूम हुवा । मुझे बेहद तअ़ज्जुब हुवा । मैं ने जब हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इस बात का ज़िक्र किया तो उन्हों ने फ़रमाया : "ऐ उ़बैद ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वोह लैलतुल क़द्र होगी ।" मज़ीद फ़रमाया : "जिस शख़्स़ ने येह रात ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की याद में गुज़ारी उस ने गोया हज़ार माह से भी ज़ियादा अ़रसा इबादत की और अल्लाह तआ़ला उस के तमाम गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देगा ।" (तज़्किरतुल वाइज़ीन, स़-फ़ह़ा:626)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।***

हिकायत : ***हज़रते*** सय्यिदुना उ़स्मान इब्ने अबिल आ़स़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के गुलाम ने उन से अ़र्ज़ की, "ऐ आक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! मुझे किश्ती बानी करते एक अ़रसा गुज़रा । मैं ने दरया के पानी में एक अ़जीब बात मह़सूस की । जिस को मेरी अ़क़्ल तस्लीम करने से इन्कार करती है ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा, "वोह क्या अ़जीब बात है ?" अ़र्ज़ की, "ऐ आक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! हर साल एक ऐसी रात भी आती है कि जिस में समुन्दर का पानी मीठा हो जाता है ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने गुलाम से फ़रमाया, "इस बार ख़याल रखना जैसे ही रात में पानी मीठा हो जाए तो मुझे मुत्त़लअ़ करना । जब र-मज़ान की सताईस्वीं रात आई तो गुलाम ने आक़ा से अ़र्ज़ की कि आक़ा ! आज समुन्दर का पानी मीठा हो चुका है ।" (रूहुल बयान, जिल्द:10, स़-फ़ह़ा:481)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़्फ़िरत हो ।

हमें अलामात क्यूं नज़र नहीं आतीं ? : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** शबे क़द्र की मु-तअद्दद अलामात का ज़िक्र गुज़रा। हमारे ज़ेहन में येह सुवाल उभर सकता है कि हमारी उ़म्र के काफ़ी साल गुज़रे हर साल शबे क़द्र आती रहती है तो क्या वजह है कि हमें कभी इस की अलामात नज़र नहीं आतीं ? इस के जवाब में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं, इन बातों का इल्म हर एक को नहीं हो सकता क्यूं कि इन का तअ़ल्लुक़ ***कश्फ़ो करामत*** से है। इसे तो वोही देख सकता है जिस को बसीरत (या'नी क़ल्बी नज़र) की ने'मत हासिल हो। हर वक़्त मा'सिय्यत की नुहूसत में लतपत रहने वाला गुनहगार इन्सान इन नज़्ज़ारों को कैसे देख सकता है ?

आंख वाला तेरे जोबन का तमाशा देखे
दीदए कोर को क्या आए नज़र क्या देखे

ताक़ रातों में ढूंडो : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी मशिय्यत के तहत ***शबे क़द्र*** को पोशीदा रखा है। लिहाज़ा हमें यक़ीन के साथ नहीं मा'लूम कि शबे क़द्र कौन सी रात होती है।

उम्मुल मुअ्मिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है, मेरे सरताज, स़ाहि़बे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया: "***शबे क़द्र*** को र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरह की ***त़ाक़ रातों*** या'नी इक्कीस्वीं21, तेईस्वीं23, पच्चीस्वीं25, सताईस्वीं27, और उन्तीस्वीं29 रातों में तलाश करो ।"

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:662, ह़दीस़:2020)

आख़िरी सात रातों में तलाश करो : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا रिवायत करते हैं कि बह़रो बर के बादशाह, दो2 आ़लम के शहन्शाह, उम्मत के ख़ैरख़्वाह, आमिना के महरो माह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم وَ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के स़ह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن में से चन्द अफ़राद को ख़्वाब में आख़िरी सात रातों में ***शबे क़द्र*** दिखाई गई । मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया: "मैं देखता हूं कि तुम्हारे ख़्वाब आख़िरी सात रातों में मुत्तफ़िक़ हो गए हैं । इस लिये इस का तलाश करने वाला इसे ***आख़िरी सात रातों*** में तलाश करे ।"

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:660, ह़दीस़:2015)

लैलतुल क़द्र पोशीदा क्यूं ? : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की सुन्नते करीमा है कि उस ने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहोंचता है।

बा'ज़ अहम्म तरीन मुआ़-मलात को अपनी मशिय्यत से बन्दों पर पोशीदा रखा है। जैसा कि मन्क़ूल है, "***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी ***रिज़ा*** को नेकियों में, अपनी ***नाराज़गी*** को गुनाहों में और अपने औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى को अपने बन्दों में पोशीदा रखा है।" इस का खुलासा येही है कि बन्दा किसी भी नेकी को छोटी समझ कर छोड़ न दे। क्यूं कि वोह नहीं जानता कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ किस नेकी पर राज़ी हो जाए। हो सकता है कि नेकी ब ज़ाहिर बहुत ही छोटी नज़र आती हो उसी से ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ राज़ी हो जाए। मु-तअ़द्दद अह़ादीसे मुबा-रका से येही पता चलता है। म-सलन क़ियामत के रोज़ एक बदकार औ़रत सिर्फ़ इस नेकी के इ़वज़ बख़्श दी जाएगी कि उस ने एक प्यासे कुत्ते को दुन्या में पानी पिला दिया था। इसी त़रह़ अपनी नाराज़गी को गुनाहों में पोशीदा रखने की ह़िक्मत येही है कि बन्दा किसी गुनाह को छोटा तसव्वुर कर के कर न बैठे बल्कि हर गुनाह से बचता ही रहे। चूंकि बन्दा नहीं जानता कि ***अल्लाह*** तबा-र-क व तआ़ला किस गुनाह से नाराज़ हो जाएगा। लिहाज़ा वोह हर गुनाह से परहेज़ ही करे। इसी त़रह़ औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى को बन्दों में इसी लिये पोशीदा रखा है कि इन्सान हर नेक मुसल्मान की रिआ़यत व ता'ज़ीम बजा लाए और सोचे कि हो सकता है कि "येह" वलिय्युल्लाह हो। हो सकता है, "वोह" वलिय्युल्लाह हो। और ज़ाहिर है जब हम नेक लोगों का अदब व ता'ज़ीम करना सीख लेंगे, बद गुमानी की आ़दत निकाल देंगे और सब मुसल्मानों को अपने से अच्छा तसव्वुर करने लगेंगे तो हमारा मुआ़शरा भी स़ह़ीह़ हो जाएगा और اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

हमारी आक़िबत भी संवर जाएगी।

ह़िक्मतों के म-दनी फूल : ***इमाम*** फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी मशहूर तफ़्सीर, तफ़्सीरे कबीर में फ़रमाते हैं, ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने ***शबे क़द्र*** को चन्द वुजूह की बिना पर पोशीदा रखा, है। अव्वल येह कि जिस तरह दीगर अश्या को पोशीदा रखा, म-स़लन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपनी रिज़ा को इत़ाअ़तों में पोशीदा फ़रमाया ताकि बन्दे हर इत़ाअ़त में रग़बत ह़ासिल करें। अपने ग़ज़ब को गुनाहों में पोशीदा फ़रमाया कि हर गुनाह से बचते रहें। अपने वली को लोगों में पोशीदा रखा ताकि लोग सब की ता'ज़ीम करें, क़बूलिय्यते दुआ़ को दुआ़ओं में पोशीदा रखा कि सब दुआ़ओं में मुबालग़ा करें और इस्मे आ'ज़म को अस्मा में पोशीदा रखा कि सब अस्मा की ता'ज़ीम करें। और स़लाते वुस्त़ा को नमाज़ों में पोशीदा रखा कि तमाम नमाज़ों पर मुह़ाफ़ज़त करें और क़बूले तौबा को पोशीदा रखा कि मुकल्लफ़ (बन्दा) तौबा की तमाम अक़्साम पर हमेशगी इख़्तियार करे। और मौत का वक़्त पोशीदा रखा कि मुकल्लफ़ (बन्दा) ख़ौफ़ खाता रहे। इसी त़रह़ शबे क़द्र को भी पोशीदा रखा कि र-मज़ानुल मुबारक की तमाम रातों की ता'ज़ीम करें। दूसरे येह कि गोया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है, "अगर मैं शबे क़द्र को मुअ़य्यन कर देता और येह कि मैं गुनाह पर तेरी जुर्अत को भी जानता हूं तो अगर कभी शहवत तुझे इस रात में मा'सिय्यत के किनारे ला छोड़ती और तू गुनाह में मुब्तला हो जाता तो तेरा इस

रात को जानने के बा वुजूद गुनाह करना ला इल्मी के साथ गुनाह करने से बढ़ कर सख़्त होता । पस इस सबब से मैं ने इसे पोशीदा रखा । मरवी है कि **सरकार** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो एक शख़्स को सोए हुए मुला-हज़ा फ़रमाया, इर्शाद फ़रमाया, "ऐ अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم इसे उठाओ कि वुज़ू कर ले । हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने उसे बेदार फ़रमाया, फिर अ़र्ज़ की, ***या रसूलल्लाह*** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो नेकी की तरफ़ ज़ियादा सब्क़त फ़रमाने वाले हैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खुद उसे बेदार क्यूं न फ़रमाया ? इर्शाद फ़रमाया, "इस लिये कि उस का तुझे इन्कार कर देना कुफ़्र नहीं लिहाज़ा मैं ने उस के जुर्म में तख़्फ़ीफ़ के लिये ऐसा किया ।" तो जब रह़मते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह ह़ाल है तो अब इसी पर रब तआ़ला की रह़मत को क़ियास करो कि उस का क्या आ़लम होगा ! गोया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमा रहा है, "अगर तू ***शबे क़द्र*** को जानता और इस में इ़बादत करता तो ***हज़ार माह से ज़ियादा*** का सवाब कमाता और अगर इस में मा'सिय्यत (गुनाह) करता तो ***हज़ार महीने की सज़ा*** पाता और सज़ा का दफ़्अ़ करना सवाब लेने से औला (या'नी बेहतर) है । ***तीसरे*** येह कि मैं ने इस रात को पोशीदा रखा ता कि मुकल्लफ़ (बन्दा) इस की त़लब में मेह़नत करे और इस मेह़नत का सवाब कमाए । ***चौथे*** येह कि जब बन्दे को शबे क़द्र का यक़ीन ह़ासिल न होगा तो र-मज़ानुल मुबारक की हर रात में ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त में कोशिश करेगा इस उम्मीद पर कि

हो सकता है कि येह रात शबे क़द्र हो । तो उन के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़िरिश्तों को तम्बीह फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया कि तुम इन (इन्सानों) के बारे में केहते थे कि झगड़ा करेंगे और ख़ून बहाएंगे, ह़ालांकि येह तो इस की इस गुमान शुदा रात में मेह़नत व कोशिश है अगर मैं इसे इस रात का इ़ल्म अ़त़ा कर देता तो फिर कैसा होता.....? तो यहां ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के इस क़ौल का भेद खुला कि जो फ़िरिश्तों को जवाबन इर्शाद फ़रमाया था । जब ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने उन से इर्शाद फ़रमाया कि

اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: "मैं ज़मीन में अपना नाइब बनाने वाला हूं ।"

(पारह:1, अल ब-क़रह:30)

तो फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ की :-

قَالُوْۤا اَتَجْعَلُ فِیْهَا مَنْ یُّفْسِدُ فِیْهَا وَ یَسْفِكُ الدِّمَآءَۚ-وَ نَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَ نُقَدِّسُ لَكَؕ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: बोले, क्या ऐसे को नाइब करेगा जो इस में फ़साद फैलाए और ख़ूं रेज़ियां करे और हम तुझे सराहते हुए तेरी तस्बीह़ करते और तेरी पाकी बोलते हैं ।"

(पारह:1, अल ब-क़रह:30)

तो फिर येह इर्शाद फ़रमाया कि :-

قَالَ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۰﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: फ़रमाया, मुझे मा'लूम है जो तुम नहीं जानते ।"

(पारह:1, अल ब-क़रह, आयत:30)

तो आज इसी क़ौल का भेद खोला गया ।

(तफ़्सीरे कबीर, जिल्द:11, स़-फ़ह़ा:229)

साल में कोई भी रात शबे क़द्र हो सकती है :

चुनान्चे बे शुमार मस्लहतों की बिना पर लैलतुल क़द्र को पोशीदा रखा गया है ताकि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे उस की तलाश में सारा साल ही लगे रहें और यूं हर ह़ाल में वोह नेकियां कमाने में कोशां रहें । इस के तअ़य्युन में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का बेह़द इख़्तिलाफ़ पाया जाता है । बा'ज़ बुज़ुर्गों رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के नज़्दीक तो शबे क़द्र पूरे साल में फिरती रहती है । म-स़लन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عنه का फ़रमान है, शबे क़द्र को वोही शख़्स़ पा सकता है जो सारा ही साल रातों को ***मु-तवज्जेह*** रहे । इसी क़ौल की ताईद करते हुए इमामुल आ़रिफ़ीन सय्यिदुना शैख़ मुह़्युद्दीन इब्ने अ़-रबी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि मैं ने शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं शब (या'नी शबे बराअत) और एक बार शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म ही की उन्नीस्वीं19 शब में शबे क़द्र को पाया है । नीज़ र-मज़ानुल मुबारक की तेरहवीं13 शब और अठारहवीं18 शब को भी देखा । और मुख़्तलिफ़ सालों में र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़-शरह की हर त़ाक़ रात में इस को पाया है ।

मज़ीद फ़रमाते हैं कि अगर्चे ज़ियादा तर ***शबे क़द्र*** र-मज़ान शरीफ़ में ही पाई जाती है ताहम मेरा तजरिबा तो येही है कि येह पूरा साल घूमती रहती है। या'नी हर साल के लिये इस की कोई एक ही रात मख़्सूस नहीं है।

रह़मते कोनैन ﷺ की बमअ़ शैख़ैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم जल्वा गरी :

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ौल में र-मज़ानुल मुबारक के ए'तिकाफ़ की खू़ब बहारें होती हैं दुन्या के मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर इस्लामी भाई मसाजिद में और इस्लामी बहनें "मस्जिदे बैत" में ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल करते और खू़ब जल्वे समेटते हैं तरग़ीब के लिये एक बहार आप के गोश गुज़ार की जाती है । चुनान्चे तह़सील लियाक़त पूर, ज़िल्अ़ रह़ीम यार ख़ान (पंजाब, पाकिस्तान) के एक नौ जवान इस्लामी भाई ह़ल्क़ा क़ाफ़िला ज़िम्मादार के बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं फ़िल्मों का ऐसा रसिया था कि हमारे गांव की सीडीज़ की दुकान की तक़रीबन आधी सीडीज़ देख चुका था। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे तुल्बानी गांव की म-दनी मस्जिद में आख़िरी अ-श-रए र-मज़ानुल मुबारक (सिने 1422 हिजरी, 2001) के ***ए'तिकाफ़*** की सआ़दत नसीब हो गई । दा'वते इस्लामी के ***आ़शिक़ाने रसूल*** की सोह़बत की ब-र-कतों के क्या केहने ! **27** र-मज़ानुल मुबारक का ना क़ाबिले फ़रामोश ईमान अफ़्रोज़ वाक़ेआ़ तह़दीसे ने'मत के लिये अ़र्ज़ करता हूं : शब भर बेदार रह कर मैं ने खू़ब रो रो कर ***सरकारे नामदार*** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ***दीदार*** की भीक मांगी ।

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सुब्हे दम मुझ पर ख़ुसूसी बाबे करम खुल गया, मैं ने आ़लमे गुनूदगी में अपने आप को किसी मस्जिद के अन्दर पाया, इतने में ए'लान किया गया : ***"सरकारे मदीना*** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ***तशरीफ़ लाएंगे और नमाज़ की इमामत फ़रमाएंगे ।"*** कुछ ही देर में रह़मते कोनैन, सुल्ताने दारैन, नानाए ह़-सनैन, हम दुखिया दिलों के चैन, बमअ़ शैख़ैने करीमैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ وَرَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم اَجْمَعِیْن जल्वा नुमा हो गए और मेरी आंख खुल गई । सिर्फ़ एक झलक नज़र आते ही वोह ***ह़सीन जल्वा*** निगाहों से ओझल हो गया, इस पर दिल एक दम भर आया और आंखों से सैले अश्क रवां हो गया यहां तक कि रोते रोते मेरी हिचकियां बंध गईं । ऐ काश !

इतनी देर तक हो दीदे मुस्ह़फ़े आ़रिज़ नसीब
ह़िफ़्ज़ कर लूं नाज़िरा पढ़ पढ़ के क़ुरआने जमाल

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस के बा'द मेरे दिल में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** की मह़ब्बत और बढ़ गई बल्कि मैं ***दा'वते इस्लामी*** ही का हो कर रह गया । घर से तरकीब बना कर मैं ने बाबुल मदीना कराची का रुख़ किया और ***दर्से निज़ामी*** करने के लिये जामिअ़तुल मदीना में दाख़िला ले लिया । येह बयान देते वक़्त द-र-जए ऊला में इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के साथ साथ तन्ज़ीमी त़ौर पर एक ज़ैली ह़ल्क़े के ***क़ाफ़िला ज़िम्मादार*** की हैसिय्यत से ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी कामों

की धूमें मचाने की कोशिश कर रहा हूं ।

जल्वए यार की आरज़ू है अगर, म-दनी माहौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मीठे आक़ा करेंगे करम की नज़र, म-दनी माहौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दो[2] अक़्वाल :

हज़रते सय्यिदुना ***इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा*** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से इस बारे में दो[2] क़ौल मन्क़ूल हैं (1) लैलतुल क़द्र र-मज़ानुल मुबारक ही में है लेकिन कोई रात मुअ़य्यन नहीं । जब कि सय्यिदुना इमाम ***अबू यूसुफ़*** और सय्यिदुना ***इमाम मुहम्मद*** رحمۃ اللہ تعالٰی علیہما के नज़्दीक र-मज़ान की ***आख़िरी पन्दरह*** रातों में लैलतुल क़द्र होती है ।

(2) सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ का एक मशहूर क़ौल येह है कि लैलतुल क़द्र पूरे साल घूमती रहती है कभी माहे र-मज़ानुल मुबारक में होती है और कभी दूसरे महीनों में येही क़ौल सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास, सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द और सय्यिदुना इक्रमा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم اَجْمَعِيْن से भी मन्क़ूल है ।

(उ़म्दतुल क़ारी, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:253, ह़दीस़:2015)

सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के नज़्दीक शबे क़द्र र-मज़ानुल मुबारक के अ़-श-रए अख़ीरह में है और उस का दिन मुअ़य्यन है इस में क़ियामत तक तब्दीली नहीं होगी ।

(उ़म्दतुल क़ारी, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:253, अल ह़दीस़:2015)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब तुम मुर्सलीन عَلَيْهِمُ السَّلَام पर दुरूदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं।

शबे क़द्र बदलती रहती है : ***सय्यिदुना इमामे मालिक*** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के नज़्दीक ***शबे क़द्र*** र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरह की त़ाक़ रातों में होती है मगर इस के लिये कोई एक रात मख़्सूस़ नहीं, हर साल इन त़ाक़ रातों में घूमती रहती है, या'नी कभी इक्कीस्वीं[21] शब लैलतुल क़द्र हो जाती है तो कभी तेईस्वीं[23], कभी पच्चीस्वीं[25] तो कभी सताईस्वीं[25] और कभी कभी उन्तीस्वीं[29] शब भी शबे क़द्र हो जाया करती है।

(तफ़्सीरे स़ावी, जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:2400)

अबुल ह़सन इराक़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه और शबे क़द्र :

बा'ज़ बुज़ुर्गों ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल ह़सन इराक़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इर्शाद नक़्ल किया है कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, मैं जब से बालिग़ हुवा हूं اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कभी ऐसा नहीं हुवा कि मैं ने शबे क़द्र को न देखा हो। फिर अपना तजरिबा इर्शाद फ़रमाते हैं, ''जब कभी इतवार या बुध को पहला रोज़ा हुवा तो उन्तीस्वीं[29] शब, अगर पीर का पहला रोज़ा हुवा तो इक्कीस्वीं[21] शब, अगर पहला रोज़ा मंगल या जुमुआ़ को हुवा तो सताईस्वीं[27] शब अगर पहला रोज़ा जुमा'रात को हुवा तो पच्चीस्वीं[25] शब और अगर पहला रोज़ा हफ़्ते को हुवा तो मैं ने तेईस्वीं[23] शब में शबे क़द्र को पाया।

(नुज़हतुल मजालिस, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:223)

सताईस्वीं रात को शबे क़द्र : ***अगर्चे*** बुज़ुर्गाने दीन और मुफ़स्सिरीन व मुह़द्दिसीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم اَجْمَعِيْن का शबे क़द्र के तअ़य्युन में इख़्तिलाफ़ है। ताहम भारी अक्स़रिय्यत की राय येही है कि हर साल ***शबे क़द्र*** माहे र-मज़ानुल मुबारक की ***सताईस्वीं***[27] ***शब*** को ही होती है।

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बय्यिब्ने का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ **सताईस्वीं**[27] शबे र-मज़ान ही को शबे क़द्र केहते हैं।

(तफ़्सीरे स़ावी, जिल्द:6, स-फ़हा: 2400)

हुज़ूरे ग़ौस़े आ'ज़म सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی भी इसी के क़ाइल हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا भी येही फ़रमाते हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस देहल्वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِی भी फ़रमाते हैं कि ***शबे क़द्र*** र-मज़ान शरीफ़ की ***सताईस्वीं रात*** ही को होती है। अपने बयान की ताईद के लिये उन्हों ने दो दलाइल बयान फ़रमाए हैं, ***अव्वलन*** येह कि ''लैलतुल क़द्र'' का लफ़्ज़ नौ हु़रूफ़ पर मुश्तमिल है और येह कलिमा सूरतुल क़द्र में तीन[3] मरतबा इस्ते'माल किया गया है। इस त़रह़ ''तीन'' को ''नौ'' से ज़र्ब देने से ह़ासिले ज़र्ब ''सताईस'' आता है। जो इस बात की त़रफ़ इशारा करता है कि शबे क़द्र ***सताईस्वीं*** को होती है। दूसरी तौजीह येह पेश करते हैं कि इस सूरए मुबा-रका में तीस[30] कलिमात (या'नी

तीस[30] अल्फ़ाज़) हैं। सताईस्वां कलिमा "هِيَ" है जिस का मर्कज़ "लैलतुल क़द्र" है। गोया ***अल्लाह*** तबारक व तआ़ला की त़रफ़ से नेक लोगों के लिये येह इशारा है कि र-मज़ान शरीफ़ की ***सताईस्वीं*** को ***शबे क़द्र*** होती है। (तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:437)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने शबे क़द्र को पोशीदा रख कर गोया अपने बन्दों को हर रात में कुछ न कुछ इबादत करने की तरग़ीब इनायत फ़रमाई है। अगर वोह शबे क़द्र के लिये किसी एक रात को मख़्सूस़ फ़रमा कर स़रा-ह़तन इस का इ़ल्म हमें अ़त़ा फ़रमा देता तो फिर इस बात का इम्कान था कि हम साल की दीगर रातों के मुआ़-मले में ग़ाफ़िल हो जाते। सिर्फ़ उसी एक रात का एहतिमाम करते। अब चूंकि इसे मख़्फ़ी रखा गया है। इस लिये ***अ़क़्लमन्द*** वोही है जो तमाम साल इस अ़ज़ीमुश्शान रात की जुस्तुजू में रहे कि न जाने कौन सी रात शबे क़द्र हो। वाक़ेई अगर कोई सि़द्क़े दिल से इस को तमाम साल तलाश करे तो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ किसी की मेह़नत को ज़ाएअ़ नहीं फ़रमाता। वोह ज़रूर अपने फ़ज़्लो करम से उसे इस रात की सआ़दत अ़त़ा फ़रमा देगा।

हर रात इ़बादत में गुज़ारने का आसान नुस्ख़ा :

"ग़राइबुल कुरआन" स़-फ़ह़ा:187 पर एक रिवायत नक़्ल की गई है कि जो शख़्स़ रात में ***येह दुआ़ तीन[3] मरतबा*** पढ़ लेगा। तो

उस ने गोया **शबे क़द्र** को पा लिया । लिहाज़ा हर रात इस दुआ़ को पढ़ लेना चाहिये । दुआ़ येह है :-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ ، سُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ.

या'नी ! ख़ुदाए ह़लीमो करीम के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर्द गार है ।

रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के ख़्वाहिश मन्दो ! हो सके तो सारा ही साल हर रात में ख़ुसूसी एहतिमाम के साथ कुछ न कुछ नेक अ़मल ज़रूर कर लेना चाहिये । कि न जाने कब **शबे क़द्र** हो जाए । हर रात में दो[2] फ़र्ज़ नमाज़ें आती हैं, दीगर नमाज़ों के साथ साथ मग़रिब व इ़शा की नमाज़ों की जमाअ़त का भी ख़ूब एहतिमाम होना चाहिये कि अगर **शबे क़द्र** में उन की जमाअ़त नसीब हो गई तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बेड़ा ही पार है । बल्कि इसी त़रह़ पांचों नमाज़ों के साथ साथ रोज़ाना इ़शा व फ़ज्र की जमाअ़त की ख़ुसूसिय्यत के साथ आ़दत डाल लीजिये । मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, "जिस ने इ़शा की नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ी उस ने गोया आधी रात क़ियाम किया और जिस ने फ़ज्र की नमाज़ बा जमाअ़त अदा की उसने गोया पूरी रात क़ियाम किया ।" (स़ह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:329, ह़दीस़:656) इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का

फ़रमाने रह़मत निशान नक़्ल करते हैं, "जिस ने इशा की नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ी तह़क़ीक़ उस ने लैलतुल क़द्र से अपना ह़िस्सा ह़ासिल कर लिया ।"

(अल जामेउ़स्सग़ीर, स़-फ़ह़ा:532, ह़दीस़:8796)

सताईस्वीं शब की क़द्र करें : ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के मु-तलाशियो ! अगर तमाम साल येही आ़दते जमाअ़त रही तो शबे क़द्र में भी न दोनों[2] नमाज़ों की जमाअ़त اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ नस़ीब हो जाएगी । और रात भर सोए रहने के बा वुजूद भी اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ रोज़ाना की त़रह़ शबे क़द्र में भी तमाम रात इ़बादत करने का स़वाब मिल जाएगा ।

अगर क़द्रदानी तो हर शब, शबे क़द्र अस्त

जिन रातों में ***शबे क़द्र*** होने का ज़ियादा इम्कान है म-स़लन र-मज़ानुल मुबारक का आख़िरी अ़-शरह या कम अज़ कम उस की ***त़ाक़ रातें*** इन में तो इ़बादत का ख़ास़ एहतिमाम होना चाहिये और ख़ास़ कर ***सताईस्वीं शब*** कि इस रात के बारे में क़वी तर गुमान ***शबे क़द्र*** होने का है । इस रात को तो ग़फ़्लत में गंवाना ही नहीं चाहिये । ***सताईस्वीं रात*** तो ख़ुसूस़न तौबा व इस्तिग़फ़ार और दुरूदो अज़्कार की तकरार में गुज़ारना चाहिये ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कंजूस तरीन शख़्स़ है ।

शबे क़द्र में पढ़िये : ***अमीरुल मुअ्मिनीन*** ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं, "जो कोई शबे क़द्र में सूरतुल क़द्र ***सात बार*** पढ़ता है ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उसे हर बला से मह़फ़ूज़ फ़रमा देता है और ***सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते*** उस के लिये जन्नत की दुआ़ करते हैं और जो कोई (साल भर में जब कभी) ***जुमुआ़*** के रोज़ नमाज़े जुमुआ़ से क़ब्ल ***तीन 3 बार*** पढ़ता है ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उस रोज़ के तमाम नमाज़ पढ़ने वालों की ता'दाद के बराबर नेकियां लिखता है ।"

(नुज़्हतुल मजालिस, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:223)

शबे क़द्र की दुआ़ : ***उम्मुल मुअ्मिनीन*** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं, मैं ने अपने सरताज, स़ाह़िबे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में अ़र्ज़ की, "***या रसूलल्लाह !*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّمَ अगर मुझे ***शबे क़द्र*** का इ़ल्म हो जाए तो क्या पढूं ?" सरकारे अ-बदे क़रार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "इस त़रह़ दुआ़ मांगो:- اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّی या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बेशक तू मुआ़फ़ फ़रमाने वाला है और मुआ़फ़ी देने को पसन्द भी करता है लिहाज़ा मुझे भी मुआ़फ़ फ़रमा दे ।"

(जामेए़ तिरमिज़ी, जिल्द:5, स़-फ़ह़ा:306, ह़दीस़:3524)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! काश ! रोज़ाना रात को हम इस दुआ़ को कम अज़ कम एक बार ही पढ़ लिया करें कि कभी तो ***शबे क़द्र*** नसीब हो जाएगी । वरना कम अज़ कम सताईस्वीं शब तो इस दुआ़ को बारहा पढ़ना चाहिये । इस के इ़लावा भी ***सताईस्वीं शब*** को ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ तौफ़ीक़ दे तो शब बेदारी कर के दुरूदो सलाम की कस़रत कीजिये, ***इजतिमाए ज़िक्रो ना'त*** मुयस्सर आए तो उस में भी शिर्कत फ़रमाइये और नवाफ़िल में वक़्त गुज़ारने की कोशिश कीजिये ।

शबे क़द्र के नवाफ़िल : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना इस्माई़ल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه "तफ़्सीरे रूहुल बयान" में येह रिवायत नक़्ल करते हैं, जो ***शबे क़द्र*** में इख़्लासे़ निय्यत से नवाफ़िल पढ़ेगा । उस के अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे ।

(रूहुल बयान, जिल्द:10, स़-फ़ह़ा:480)

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब र-मज़ानुल मुबारक के ***आख़िरी दस दिन*** आते तो इ़बादत पर कमर बांध लेते उन में रातों को जागा करते और अपने अह्ल को जगाया करते ।

(सु-नने इब्ने माजह, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:357, ह़दीस़:1768)

ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माई़ल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه नक़्ल करते हैं कि ***बुज़ुर्गाने दीन*** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن इस अ़-शरे की हर रात में दो रक्अ़त नफ़्ल ***शबे क़द्र*** की निय्यत से पढ़ा करते थे । नीज़ बा'ज़ अकाबिर से मन्कूल है कि जो ***हर रात दस आयात*** इस निय्यत

से पढ़ ले तो उस की ब-र-कत और स़वाब से मह़रूम न होगा। और ***फ़क़ीह अबुल्लैस़ समर कन्दी*** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, ***शबे क़द्र*** की कम से कम नमाज़ दो रक्अ़त है और ज़ियादा से ज़ियादा ***हज़ार रक्अ़त*** (नवाफ़िल) और दरमियाना द-रजा ***दो सौ रक्अ़त*** है, और हर रक्अ़त में औसत क़िराअत येह है कि सूरए फ़ातिह़ा के बा'द एक मरतबा सूरए क़द्र और तीन मरतबा सूरए इख़्लास़ पढ़े और हर दो रक्अ़त के बा'द सलाम फेरे और सलाम के बा'द सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेजे और फिर नमाज़ के लिये खड़ा हो जाए यहां तक कि अपना दो सौ रक्अ़त का या इस से कम या इस से ज़ियादा का जो इरादा किया हो पूरा करे तो ऐसा करना इस शबे क़द्र की जलालते क़द्र जो कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने बयान फ़रमाई और जो सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के क़ियाम के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया है उस के लिये इसे किफ़ायत करेगा।

(रूहुल बयान, जिल्द:10, स़-फ़ह़ा:483)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन येह रात मम्बए ब-रकात है। चुनान्चे हु़ज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर, मदीने के ताजवर, बि इज़्ने रब्बे अक्बर ग़ैबों से बा ख़बर मह़बूबे दावर عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम पर एक ऐसा महीना आया है जिस में एक रात ऐसी है जो हज़ार महीनों से बेहतर है। जो इस रात से मह़रूम रह गया वोह पूरी

भलाई से मह़रूम रह गया । और ***शबे क़द्र*** की भलाई से मह़रूम नहीं रहता मगर अस्ली मह़रूम ।

(मिश्कात, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:372, ह़दीस़:1964)

ऐसी रह़मतों और ब-र-कतों वाली रात को गंवाना बहुत बड़े मह़रूम होने की दलील है । लिहाज़ा सबको चाहिये कि शबे क़द्र की पूरे र-मज़ानुल मुबारक में तलाश करें वरना कम अज़ कम सताईस्वीं शब को तो ज़रूर, इ़बादत में गुज़ारें ।

ऐ हमारे प्यारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल हम गुनहगारों को लैलतुल क़द्र की ब-र-कतों से मालामाल कर और ज़ियादा से ज़ियादा अपनी इ़बादत की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

लैलतुल क़द्र में मत़्लइ़ल फ़ज्रे ह़क़
मांग की इस्तिक़ामत पे लाखों सलाम

(ह़दाइके़ बख़्शिश)

बेदारी में दीदार हो गया.... किस का ? : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा 'वते इस्लामी*** के सुन्नतों की तरबिय्यत के ***म-दनी***

क़ाफ़िलों में ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ सुन्नतों भरे सफ़र का मा'मूल बनाइये اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ शबे क़द्र पाने का जज़्बा नसीब होगा। तरग़ीब के लिये म-दनी क़ाफ़िले की एक ख़ुश्बूदार बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं। चुनान्चे न्यू कराची के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलास़ा है : मैं ने पहली बार ***12 दिन के म-नी क़ाफ़िले*** में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की, नवाब शाह (बाबुल इस्लाम सिन्ध) की एक मस्जिद में हमारा म-दनी क़ाफ़िला क़ियाम पज़ीर हुवा। नेकियों की त़रफ़ रग़्बत कम होने के सबब दिल उचाट सा था। एक दिन सह्ने मस्जिद में जद्वल के मुत़ाबिक़ ***सुन्नतों भरा ह़ल्क़ा*** क़ाइम था कि धूप आ गई। एक इस्लामी भाई उठ कर मस्जिद के अन्दरूनी ह़िस्से में चले गए। कुछ ही देर बा'द मस्जिद के अन्दरूनी ह़िस्से में एक आवाज़ बुलन्द हुई। सब उस त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए इतने में वोही इस्लामी भाई रोते हुए बरआमद हुए और केहने लगे, अभी अभी जागती ह़ालत में मुझे ***सब्ज़ सब्ज़ इमामा*** सजाए हुए, रौशन चेहरे वाले एक बुज़ुर्ग नज़र आए जो कुछ इस त़रह़ फ़रमा रहे थे, "सह्न के अन्दर धूप में सुन्नतें सीखने वाले ज़ियादा स़वाब कमा रहे हैं।" येह सुन कर तमाम शु-रकाए म-दनी क़ाफ़िला अश्कबार हो गए और मैं भी बहुत ही मु-तअस्सिर हुवा और मैं ने दिल ही दिल में ठान ली कि अब कभी ***दा'वते इस्लामी*** का म-दनी माह़ौल नहीं छोडूंगा।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहोंचता है।

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अब तो ***म-दनी क़ाफ़िलों*** में सफ़र की आ़दत मेरी फ़ित़रते स़ानिया बन चुकी है। एक बार हमारा ***म-दनी क़ाफ़िला*** मीर पूर ख़ास़ (बाबुल इस्लाम सिन्ध) में ठहरा हुवा था। एक आ़शिक़े रसूल ने बताया कि तहज्जुद के वक़्त मैं ने देखा सारे क़ाफ़िले वालों पर नूर की बरसात हो रही है। इस से मज़ीद जज़्बा मिला। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह बयान देते हुए मुझे दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों में से ***म-दनी इन्आ़मात*** की अ़लाक़ाई ज़िम्मादारी मिली हुई है।

आधी धूप में न बैठें : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** देखा आपने ! म-दनी क़ाफ़िले वालों पर क्या ख़ूब करम की बारिशें होती हैं ! ग़ालिबन वोह मौसिम सख़्त गर्मियों का नहीं होगा और सुब्ह़ की ठन्डी ठन्डी धूप में दीवाने सुन्नतें सीखने में मश्ग़ूल होंगे। और उन की ह़ौस़ला अफ़्ज़ाई की तरकीब बनी होगी। वरना बिला वजह सख़्त धूप में सुन्नतें सीखने का ह़ल्क़ा लगाना मुनासिब नहीं कि इस से यक्सूई ह़ासिल नहीं होगी और सीखने में भी ग़लत़ फ़ह्मियों का इम्कान रहेगा। तह़सीले इल्मे दीन के लिये पुर सुकून माह़ौल होना चाहिये। जिस्म के कुछ हिस्से पर धूप आ रही हो तो सुन्नत येह है कि वहां से हट जाए। या'नी या तो मुकम्मल छांव में रहे या फिर मुकम्मल धूप में। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہ से

रिवायत है, ***अल्लाह*** के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़्क़त निशान है, जब कोई शख़्स़ साए में हो और साया सिमट गया, कुछ साए में हो गया कुछ धूप में तो वहां से उठ जाए। (सु-नने अबी दावूद, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:338, ह़दीस़:4821)

औलिया का करम, ख़ूब लूटेंगे हम — आओ मिल कर चलें, क़ाफ़िले में चलो
धूप में छांव में, जाऊं मैं आऊं मैं — सब येह निय्यत करें, क़ाफ़िले में चलो
होती हैं सब सुनें नूर की बारिशें
सब नहाने चलें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जन्नत में भी उ़-लमा की ह़ाजत होगी

मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर नूर है : ***जन्ती जन्नत में उ़-लमाए किराम के मोह़ताज होंगे, इस लिये कि वोह हर जुमुआ़ को अल्लाह तआ़ला के दीदार से मुशर्रफ़ होंगे ।*** अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा : تَمَنَّوْ عَلَيَّ مَا شِئْتُمْ या'नी "मुझ से मांगो, जो चाहो" वोह जन्नती उ़-लमाए किराम की त़रफ़ मु-तवज्जेह होंगे कि अपने रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ से क्या मांगें ? वोह फ़रमाएंगे, येह मांगो वोह मांगो, जैसे वोह लोग दुन्या में उ़-लमाए किराम के मोह़ताज थे, जन्नत में भी उन के मोह़ताज होंगे। (अल फ़िरदौस बिमअ सूरुल ख़ित़ाब, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:230, ह़दीस़:880, अल जामिउ़स्स़ग़ीर लिस्सुयूत़ी, स़-फ़ह़ा:135, ह़दीस़:2235)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़ैज़ाने ए'तिकाफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे दिल नशीन है :

مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ حِيْنَ يُصْبِحُ عَشْرًا وَحِيْنَ يُمْسِيْ عَشْرًا اَدْرَكَتْهُ شَفَاعَتِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ۔

तर्जमा: जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस मरतबा **दुरूदे *पाक*** पढ़ा वोह क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त को पाएगा ।

(मज्मउ़ज़्ज़वाइद, जिल्द:10, स़-फ़ह़ा:163, ह़दीस़:17022)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! र-मज़ानुल मुबारक की ब-र-कतों के क्या केहने ! यूं तो इस की हर हर घड़ी रह़मत भरी और हर हर साअ़त अपने जिलौ में बे पायां ब-र-कतें लिये हुए है । मगर इस माहे मोह़तरम में शबे क़द्र सब से ज़ियादा अहम्मिय्यत

की ह़ामिल है । इसे पाने के लिये हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने माहे र-मज़ाने पाक का पूरा महीना भी ए'तिकाफ़ फ़रमाया है और आख़िरी दस10 दिन का बहुत ज़ियादा एहतिमाम था । यहां तक कि एक बार किसी ख़ास़ उ़ज़्र के तह़्त "आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم र-मज़ानुल मुबारक में ***ए'तिकाफ़*** न कर सके तो शव्वालुल मुकर्रम के आख़िरी अ़-शरह में ***ए'तिकाफ़*** फ़रमाया ।" (सह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स-फ़ह़ा:671, ह़दीस:2031) "एक मर्तबा सफ़र की वजह से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ए'तिकाफ़ रह गया तो अगले र-मज़ान शरीफ़ में बीस दिन का ए'तिकाफ़ फ़रमाया ।"

(जामेअ़ तिरमिज़ी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:212, ह़दीस़:803)

ए'तिकाफ़ पुरानी इ़बादत है : ***पिछली*** उम्मतों में भी ***ए'तिकाफ़*** की इ़बादत मौजूद थी । चुनान्चे पारह पहला सू-रतुल ब-क़रह की आयत नम्बर 125 में ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है:

وَعَهِدْنَاۤ اِلٰۤى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآىِٕفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿۱۲۵﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: और हम ने ताकीद फ़रमाई इब्राहीम व इस्माई़ल عَلَیْہِمَا السَّلَام को कि मेरा घर ख़ूब सुथरा करो त़वाफ़ वालों और ***ए'तिकाफ़*** वालों और रुकूअ़ व सुजूद वालों के लिये ।

(पारह:1, अल ब-क़रह:125)

मस्जिदों को स़ाफ़ रखने का हुक्म है : *मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !* नमाज़ व ए'तिकाफ़ के लिये का'बए मुशर्रफ़ा की पाकीज़गी और स़फ़ाई का ख़ुद रब्बे का'बा عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से फ़रमान जारी किया गया है। मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि मस्जिदों को पाक स़ाफ़ रखा जाए, वहां गन्दगी और बदबूदार चीज़ न लाई जाए येह सुन्नते अम्बिया है। येह भी मा'लूम हुवा कि ए'तिकाफ़ इ़बादत है और पिछली उम्मतों की नमाज़ों में रुकूअ़ सुजूद दोनों[2] थे येह भी मा'लूम हुवा कि मस्जिदों का मु-तवल्ली होना चाहिये और मु-तवल्ली स़ालेह़ (परहेज़गार) इन्सान होना चाहिये। मज़ीद आगे फ़रमाते हैं : त़वाफ़ व नमाज़ व ए'तिकाफ़ बड़ी पुरानी इ़बादतें हैं जो ज़मानए इब्राहीमी में भी थीं। (नूरुल इ़रफ़ान, स़-फ़ह़ा:29)

दस दिन का ए'तिकाफ़ : इस के बा'द अल्लाह के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, हम गुनाहों के मरीज़ों के त़बीब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ का येह मा'मूल हो गया कि हर र-मज़ान शरीफ़ के अ़-श-रए आख़िरा (या'नी आख़िरी दस दिन) का ए'तिकाफ़ फ़रमाया करते और इसी सुन्नते करीमा को ज़िन्दा रखते हुए उम्महातुल मुअ्मिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ भी ***ए'तिकाफ़*** फ़रमाती रहीं। चुनान्चे उम्मुल मुअ्मिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत

फ़रमाती हैं कि मेरे सरताज, स़ाहि़बे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़-शरह (या'नी आख़िरी दस10 दिन) का ए'तिकाफ़ फ़रमाया करते। यहां तक कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वफ़ाते (ज़ाहिरी) अ़त़ा फ़रमाई। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ ***ए'तिकाफ़*** करती रहीं।

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:664, ह़दीस़:2026)

आ़शिक़ों की धुन : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** यूं तो ए'तिकाफ़ के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं मगर उ़श्शाक़ के लिये तो इतनी ही बात काफ़ी है कि आख़िरी अ़-शरह का ए'तिकाफ़ सुन्नत है। येह तस़व्वुर ही ज़ौक़ अफ्ज़ा है कि हम प्यारे सरकार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक प्यारी प्यारी सुन्नत अदा कर रहे हैं। आ़शिक़ों की तो ***धुन*** येही होती है कि फ़ुलां फ़ुलां काम हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किया है बस इसी लिये हमें भी करना है। मगर अ़मल करने के लिये येह ज़रूरी है कि हमारे लिये कोई शर-ई मुमा-न-अ़त न हो म-स़लन ए'तिकाफ़ में चारपाई बिछाना सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से स़ाबित है मगर हम नहीं बिछा सकते कि नमाज़ियों के लिये जगह की तंगी भी होगी और मुसल्मानों के लिये तश्वीश का बाइ़स़ भी।

ऊंटनी के साथ फेरे लगाने की ह़िक्मत : ह़ज़रते **सय्यिदुना** अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا बहुत ज़ियादा **मुत्तबेए़ सुन्नत** थे। उन्हें जब भी कोई **सुन्नत** मा'लूम हो जाती तो उस की बजा आवरी में किसी क़िस्म की पसो पेश का मुज़ा-हरा न फ़रमाते। चुनान्चे "एक बार किसी मक़ाम पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ऊंटनी के साथ फेरे लगा रहे थे येह देख कर लोगों को तअ़ज्जुब हुवा। पूछने पर इर्शाद फ़रमाया : एक बार मैं ने मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को यहां इसी त़रह़ करते देखा था, लिहाज़ा आज मैं इस मक़ाम पर उसी **अदाए मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अदा कर रहा हूं।"

(अश्शिफ़ा, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:30)

मैं फेरे जो नाक़े को लगवा रहा हूं | *बताता हूं तुम को मैं क्या कर रहा हूं*
मैं सुन्नत का उन صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم *की मज़ा पा रहा हूं* | *मुझे शादमानी इसी बात की है*

एक बार तो ए'तिकाफ़ कर ही लें!: आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के दीवानो! हो सके तो हर बरस वरना ज़िन्दगी में कम अज़ कम एक बार तो र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़-शरह का **ए'तिकाफ़** कर ही लेना चाहिये और यूं भी मस्जिद में पड़ा रहना बहुत बड़ी सआ़दत है और मो'तकिफ़ की तो क्या बात है कि रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने के लिये अपने आप को तमाम मशाग़िल से फ़ारिग़ कर के मस्जिद में डेरे डाल देता है। फ़तावा आ़लमगीरी में है, "**ए'तिकाफ़** की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह तआ़ला तुम पर रह़मत भेजेगा।

ख़ूबियां बिल्कुल ही ज़ाहिर हैं क्यूंकि इस में बन्दा ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये कुल्लिय्यतन (या'नी मुकम्मल त़ौर पर) अपने आप को ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मुन्हमिक कर देता है और इन तमाम मशाग़िले दुन्या से कनारा कश हो जाता है जो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के कुर्ब की राह में ह़ाइल होते हैं और मो'तकिफ़ के तमाम अवक़ात ह़क़ीक़तन या हुक्मन नमाज़ में गुज़रते हैं। (क्यूंकि नमाज़ का इन्तिज़ार करना भी नमाज़ की त़रह़ स़वाब रखता है) और ***ए'तिकाफ़*** का मक़्सूदे अस्ली जमाअ़त के साथ नमाज़ का इन्तिज़ार करना है और मो'तकिफ़ इन (फ़िरिश्तों) से मुशा-बहत रखता है जो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की ना फ़रमानी नहीं करते और जो कुछ उन्हें हुक्म मिलता है उसे बजा लाते हैं, और उन के साथ मुशा-बहत रखता है जो शबो रोज़ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ (पाकी) बयान करते रहते हैं और इस से उक्ताते नहीं।''

(फ़तावा आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:212)

एक दिन के ए'तिकाफ़ की फ़ज़ीलत : जो र-मज़ानुल मुबारक के इलावा भी सिर्फ़ ***एक दिन*** मस्जिद के अन्दर इख़्लास़ के साथ ***ए'तिकाफ़*** कर ले उस के लिये भी ज़बरदस्त स़वाब की बिशारत है। चुनान्चे ***ए'तिकाफ़*** की तरग़ीब दिलाते हुए, सरकारे नामदार, दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: ''जो शख़्स़ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुशनूदी के लिये एक दिन का ए'तिकाफ़ करेगा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के और जहन्नम के दरमियान तीन[3] ख़न्दकें हाइल कर देगा जिन की मसाफ़त मरिश्क़ व मग़रिब के फ़ासिले से भी ज़ियादा होगी।" (अद्दुर्रुल मन्सूर, जिल्द:1, स-फ़हा:486)

साबिक़ा गुनाहों की बख़्शिश: ***उम्मुल मुअ्मिनीन*** हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि सरकारे अ-बदे क़रार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है:

مَنِ اعْتَكَفَ اِيْمَانًا وَّاِحْتِسَابًا غُفِرَلَهٗ مَاتَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ

तर्जमा: "जिस शख़्स ने ईमान के साथ सवाब हासिल करने की निय्यत से ***ए'तिकाफ़*** किया उस के तमाम पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।"

(जामेइस्सग़ीर, स-फ़हा:516, अल हदीस:8480)

आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जाए ए'तिकाफ़: ***हज़रते*** सय्यिदुना नाफ़ेअ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ केहते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने उमर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं, मदीने के सुल्तान, रहमते आलमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم माहे र-मज़ान के आख़िरी अ-शरे का ***ए'तिकाफ़*** फ़रमाया करते थे। हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने उमर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने मुझे मस्जिद में वोह जगह दिखाई जहां सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ए'तिकाफ़ फ़रमाते थे।

(सहीह मुस्लिम, स-फ़हा:597, हदीस:1171)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मस्जिदे न-बविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام में जिस जगह हमारे मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ए'तिकाफ़ के लिये खजूर शरीफ़ की लकड़ी वग़ैरा से बनी हुई मुबारक चारपाई बिछाते थे। वहां बतौरे यादगार एक मुबारक सुतून बनाम "उस्तू-नतुस्सरीर" आज भी क़ाइम है। खुश नसीब उ़श्शाक़ उस की ज़ियारत करते और हुसूले ब-र-कत के लिये यहां नवाफ़िल अदा करते हैं।

सारे महीने का ए'तिकाफ़ : ***हमारे*** प्यारे प्यारे और रह़मत वाले आक़ा, मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ाजूई के लिये हर वक़्त कमर बस्ता रहते थे और खुसूसन र-मज़ान शरीफ़ में इ़बादत का खूब ही एहतिमाम फ़रमाया करते। चूंकि ***माहे र-मज़ान*** ही में ***शबे क़द्र*** को भी पोशीदा रखा गया है लिहाज़ा इस मुबारक रात को तलाश करने के लिये आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक बार ***पूरे माहे मुबारक का ए'तिकाफ़*** फ़रमाया। चुनान्चे ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, "एक मरतबा सुल्ताने दो[2] जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमियान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यकुम र-मज़ान से बीस[20] र-मज़ान तक ***ए'तिकाफ़*** करने के बा'द इर्शाद फ़रमाया: मैं ने शबे क़द्र की तलाश के लिये र-मज़ान के पहले अ़-शरह का ए'तिकाफ़ किया फिर दरमियानी अ़-शरह का ए'तिकाफ़ किया फिर मुझे बताया गया कि शबे क़द्र आखि़री अ़-शरह में है लिहाज़ा तुम में

से जो शख़्स मेरे साथ ए'तिकाफ़ करना चाहे वोह कर ले।"

(सहीह मुस्लिम, स-फ़हा:594, हदीस:1167)

तुर्की ख़ैमे में ए'तिकाफ़ : ***हज़रते*** सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, "सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक ***तुर्की ख़ैमे*** के अन्दर र-मज़ानुल मुबारक के पहले अ-शरे का ए'तिकाफ़ फ़रमाया, फिर दरमियानी अ-शरे का, फिर सरे अक़्दस बाहर निकाला और फ़रमाया, "मैं ने ***पहले अ-शरे का ए'तिकाफ़*** शबे क़द्र तलाश करने के लिये किया, फिर इसी मक़्सद के तहत ***दूसरे अ-शरे का ए'तिकाफ़*** भी किया, फिर मुझे अल्लाह तआला की तरफ़ से येह ख़बर दी गई कि ***शबे क़द्र आख़िरी अ-शरे*** में है। लिहाज़ा जो शख़्स मेरे साथ ए'तिकाफ़ करना चाहे वोह आख़िरी अ-शरे का ए'तिकाफ़ करे। इस लिये कि मुझे पहले शबे क़द्र दिखा दी गई थी फिर भुला दी गई, और अब मैं ने येह देखा है कि ***शबे क़द्र*** की सुब्ह को गीली मिट्टी में सज्दा कर रहा हूं। लिहाज़ा अब तुम शबे क़द्र को आख़िरी अ-शरे की ताक़ रातों में तलाश करो। हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि उस शब बारिश हुई और मस्जिद शरीफ़ की छत मुबारक टपकने लगी, चुनान्चे इक्कीस[21] र-मज़ानुल मुबारक की सुब्ह को मेरी आंखों ने मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस हालत में देखा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पेशानी मुबारक पर पानी वाली गीली मिट्टी

का निशाने आ़लीशान था ।(मिश्कात, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:392, ह़दीस़:2086)

ए'तिकाफ़ का मक़्स़दे अ़ज़ीम : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** हमें भी अगर हर साल न सही कम अज़ कम ज़िन्दगी में एक बार इस अदाए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अदा करते हुए पूरे माहे र-मज़ानुल मुबारक का ए'तिकाफ़ कर लेना चाहिये । र-मज़ानुल मुबारक में ए'तिकाफ़ करने का सब से बड़ा मक़्स़द शबे क़द्र की तलाश है । और राजेह़ (या'नी ग़ालिब) येही है कि शबे क़द्र र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी दस10 दिनों की त़ाक़ रातों में होती है। इस ह़दीसे़ मुबारक से येह भी मा'लूम हुवा कि उस बार शबे क़द्र इक्कीस्वीं21 शब थी मगर येह फ़रमाना कि ''आख़िरी अ़-शरह की त़ाक़ रातों में इस को तलाश करो ।'' इस बात को ज़ाहिर करता है कि शबे क़द्र बदलती रहती है । या'नी कभी इक्कीस्वीं21, कभी तेईस्वीं23, कभी पच्चीस्वीं25 कभी सताईस्वीं27 तो कभी उन्तीस्वीं29 शब । मुसल्मानों को शबे क़द्र की सआ़दत ह़ासि़ल करने के लिये आख़िरी अ़-शरह के ए'तिकाफ़ की तरग़ीब दिलाई गई है। क्यूं कि मो'तकिफ़ दसों दिन मस्जिद में ही पड़ा रहता है और इन दस10 दिनों में कोई भी एक रात शबे क़द्र होती है। लिहाज़ा वोह येह शब मस्जिद में गुज़ारने में काम्याब हो जाता है। एक और नुक्ता इस ह़दीसे़ पाक से येह भी मा'लूम हुवा कि रसूले पाक, स़ाहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ाक पर सज्दा अदा फ़रमाया जभी तो ख़ाक के ख़ुश नसीब ज़र्रात सरवरे काइनात, शहन्शाहे

मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नूरानी पेशानी से बे ताबाना चिमट गए थे ।

बिला ह़ाइल ज़मीन पर सज्दा करना मुस्तह़ब है :

अल्लाहु अक्बर عَزَّوَجَلَّ ! हमारे सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किस क़दर सादगी पसन्द हैं, यक़ीनन ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के हु़ज़ूर सज्दे में अपनी पेशानी ख़ाक पर रखना और पेशानी से ख़ाके पाक के ज़र्रात का चिमट जाना सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बहुत बड़ी आ़जिज़ी है। फुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى फ़रमाते हैं : ज़मीन पर बिला ह़ाइल (या'नी मुसल्ला, कपड़ा वग़ैरा न हो यूं) सज्दा करना मुस्तह़ब है । (मराक़िल फ़लाह़, ह़िस्सा:3, स़-फ़ह़ा:85) "मुका-श-फ़तुल क़ुलूब" में है, "ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ सिर्फ़ मिट्टी ही पर सज्दा करते थे । (मुका-श-फ़तुल क़ुलूब, स़-फ़ह़ा:181)

दो² ह़ज और दो² उ़म्रों का स़वाब : अमीरुल ***मुअ्मिनीन*** ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा, ह़बीबे किब्रिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुशनुमा है :

مَنِ اعْتَكَفَ فِيْ رَمَضَانَ كَانَ كَحَجَّتَيْنِ وَعُمْرَتَيْنِ۔

तर्जमा: "जिस ने र-मज़ानुल मुबारक में (दस10 दिन का) ए'तिकाफ़ कर लिया वोह ऐसा है जैसे दो² ह़ज और दो² उ़म्रे किये ।"

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:425, ह़दीस़:2966)

गुनाहों से तह़फ़्फ़ुज़ : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सुल्त़ाने ज़ीशान, रह़मते आ़लमियान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तह़फ़्फ़ुज़ निशान है :

هُوَيَعْكِفُ الذُّنُوْبَ يُجْرٰى لَه' مِنَ الْحَسَنَاتِ كَعَامِلِ الْحَسَنَاتِ كُلِّهَا۔

तर्जमा: "ए'तिकाफ़ करने वाला गुनाहों से बचा रहता है और उस के लिये तमाम नेकियां लिखी जाती हैं जैसे उन के करने वाले के लिये होती हैं ।"

(इब्ने माजह, जिल्दः2, स़-फ़ह़ाः365, ह़दीस़ः1781)

बिग़ैर किये नेकियों का स़वाब : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** ए'तिकाफ़ का एक बहुत बड़ा फ़ाइदा येह भी है कि जितने दिन मुसल्मान ए'तिकाफ़ में रहेगा गुनाहों से बचा रहेगा और जो गुनाह वोह बाहर रह कर करता, उन से भी मह़फ़ूज़ रहेगा । लेकिन येह ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की ख़ास़ रह़मत है कि बाहर रह कर जो नेकियां वोह किया करता था, ए'तिकाफ़ की ह़ालत में अगर्चे वोह इन को अन्जाम न दे सकेगा मगर फिर भी वोह इस के नामए आ'माल में बदस्तूर लिखी जाती रहेंगी और उसे इन का स़वाब भी मिलता रहेगा । म-स़लन कोई इस्लामी भाई मरीज़ों की इयादत करता था, और ए'तिकाफ़ की वजह से येह काम नहीं कर सका तो वोह इस के स़वाब से मह़रूम नहीं होगा बल्कि इस को ऐसा ही स़वाब मिलता रहेगा जैसे वोह ख़ुद इस को अन्जाम देता रहा हो ।

रोज़ाना ह़ज का स़वाब : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना ह़सन बस़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मन्कूल है, ''मो'तकिफ़ को हर रोज़ एक ***ह़ज का स़वाब*** मिलता है।''

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:425, अल ह़दीस़:3968)

ए'तिकाफ़ की ता'रीफ़ : ***''मस्जिद में अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***की रिज़ा के लिये ब निय्यते ए'तिकाफ़*** ठहरना ***ए'तिकाफ़ है।''*** इस के लिये मुसल्मान का आ़क़िल और जनाबत और ह़ैज़ो नफ़ास से पाक होना शर्त़ है। बुलूग़ शर्त़ नहीं ना बालिग़ भी जो तमीज़ रखता है अगर ब निय्यते ***ए'तिकाफ़*** मस्जिद में ठहरे तो उस का ***ए'तिकाफ़*** स़ह़ीह़ है।

(आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:211)

ए'तिकाफ़ के लफ़्ज़ी मा'ना : ***ए'तिकाफ़*** के लुग़वी मा'ना हैं, ''धरना मारना'' मत़लब येह कि मो'तकिफ़ ***अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त*** عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे अ़-ज़मत में उस की इ़बादत पर कमर बस्ता हो कर धरना मार कर पड़ा रहता है। उस की येही धुन होती है कि किसी त़रह़ उस का परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ उस से राज़ी हो जाए।

अब तो ग़नी के दर पर बिस्तर जमा दिये हैं :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा ख़ुरासानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं, ''मो'तकिफ़ की मिस़ाल उस शख़्स़ की सी है जो अल्लाह तआ़ला के दर पर आ पड़ा हो और येह केह रहा हो, ***''या अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त*** عَزَّوَجَلَّ जब तक तू मेरी मग़्फ़िरत नहीं फ़रमा देगा

मैं यहां से नहीं टलूंगा।" (शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:426, ह़दीस़:3970)

हम से फ़क़ीर भी अब फेरी को उठते होंगे
अब तो ग़नी के दर पर बिस्तर जमा दिये हैं

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

ए'तिकाफ़ की क़िस्में : ए'तिकाफ़ की तीन[3] क़िस्में हैं (1) ए'तिकाफ़े वाजिब (2) ए'तिकाफ़े सुन्नत (3) ए'तिकाफ़े नफ़्ल।

ए'तिकाफ़े वाजिब : ***ए'तिकाफ़*** की नज़्र (या'नी मन्नत) मानी या'नी ज़बान से कहा : "***मैं अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त*** عَزَّوَجَلَّ के लिये फ़ुलां दिन या इतने दिन का ए'तिकाफ़ करूंगा।" तो अब जितने भी दिन का कहा है उतने दिन का ***ए'तिकाफ़*** करना वाजिब हो गया। येह बात ख़ास़ कर याद रखिये कि जब कभी किसी भी क़िस्म की ***मन्नत*** मानी जाए उस में येह शर्त़ है कि ***मन्नत*** के अल्फ़ाज़ ज़बान से अदा किये जाएं सिर्फ़ दिल ही दिल में ***मन्नत*** की निय्यत कर लेने से ***मन्नत*** स़ह़ीह़ नहीं होती। (ऐसी ***मन्नत*** का पूरा करना वाजिब नहीं होता)

(रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:430)

ए'तिकाफ़े सुन्नत : ***मन्नत*** का ए'तिकाफ़ मर्द मस्जिद में करे और औ़रत ***मस्जिदे बैत*** में। इस में रोज़ा भी शर्त़ है। (औ़रत घर में जो जगह नमाज़ के लिये मख़्सूस़ कर ले उसे "मस्जिदे बैत" केहते हैं) र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरह का ए'तिकाफ़ "सुन्नते मुअक्कदा अ़लल किफ़ाया" है

(दुर्रे मुख़्तार मअ़हू रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:430) या'नी पूरे शहर में किसी एक ने कर लिया तो सब की त़रफ़ से अदा हो गया और अगर किसी एक ने भी न किया तो सभी मुजरिम हुए ।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्स़ा पन्जुम, स़-फ़ह़ा:152)

इस ए'तिकाफ़ में येह ज़रूरी है कि र-मज़ानुल मुबारक की ***बीस्वीं*** तारीख़ को ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले पहले मस्जिद के अन्दर ***ब निय्यते ए'तिकाफ़*** मौजूद हो और ***उन्तीस*** के चांद के बा'द या ***तीस*** के ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द मस्जिद से बाहर निकले ।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्स़ा पन्जुम, स़-फ़ह़ा:151)

अगर 20 र-मज़ानुल मुबारक को ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द मस्जिद में दाख़िल हुए तो ***ए'तिकाफ़*** की सुन्नते मुअक्कदा अदा न हुई बल्कि सूरज डूबने से पहले पहले मस्जिद में तो दाख़िल हो चुके थे मगर ***निय्यत*** करना भूल गए थे या'नी दिल में ***निय्यत*** ही नहीं थी (निय्यत दिल के इरादे को केहते हैं) तो इस सूरत में भी ***ए'तिकाफ़*** की सुन्नते मुअक्कदा अदा न हुई । अगर ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द ***निय्यत*** की तो ***नफ़्ली ए'तिकाफ़*** हो गया । दिल में निय्यत कर लेना ही काफ़ी है ज़बान से केहना शर्त़ नहीं । अलबत्ता दिल में निय्यत ह़ाज़िर होना ज़रूरी है साथ ही ज़बान से भी केह लेना ज़ियादा बेहतर है :

ए'तिकाफ़ की निय्यत इस त़रह़ कीजिये :

"मैं ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये र-मज़ानुल मुबारक के

आख़िरी अ़-शरह के सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत करता हूं ।"

ए'तिकाफ़े नफ़्ल : ***नज़्र*** और सुन्नते मुअक्कदा के इ़लावा जो ए'तिकाफ़ किया जाए वोह मुस्तह़ब (या'नी नफ़्ली) व सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा है ।(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा:5, स़-फ़ह़ा:152)

इस के लिये न रोज़ा शर्त़ है न कोई वक़्त की क़ैद । जब भी मस्जिद में दाख़िल हों ***ए'तिकाफ़*** की निय्यत कर लीजिये । जब तक मस्जिद में रहेंगे कुछ पढ़ें या न पढ़ें ए'तिकाफ़ का स़वाब मिलता रहेगा, जब मस्जिद से बाहर निकलेंगे ***ए'तिकाफ़*** ख़त्म हो जाएगा । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मज़हबे मुफ़्ताबेही पर (नफ़्ली) ए'तिकाफ़ के लिये रोज़ा शर्त़ नहीं और एक साअ़त का भी हो सकता है जब से दाख़िल हो बाहर आने तक (के लिये) ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ले, इन्तिज़ारे नमाज़ व अदाए नमाज़ के साथ ए'तिकाफ़ का भी स़वाब पाएगा । (फ़तावा र-ज़विय्या तख़रीज शुदा, जिल्द:5, स़-फ़ह़ा:674) एक और जगह फ़रमाते हैं : जब मस्जिद में जाए ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ले, जब तक मस्जिद ही में रहेगा ए'तिकाफ़ का भी स़वाब पाएगा । (ऐज़न, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:98) ***ए'तिकाफ़*** की निय्यत करना कोई मुश्किल काम नहीं, निय्यत दिल के इरादे को केहते हैं अगर दिल ही में आप ने इरादा कर लिया कि "मैं सुन्नते ***ए'तिकाफ़*** की निय्यत करता हूं ।" येही काफ़ी है और अगर दिल में निय्यत ह़ाज़िर है और ज़बान से भी येही अल्फ़ाज़ अदा कर लें तो ज़ियादा बेहतर है । ***मादरी ज़बान*** में

भी निय्यत हो सकती है और अगर अ़-रबी ***में निय्यत*** याद कर लें तो ज़ियादा मुनासिब है। हो सके तो आप येह अ़-रबी निय्यत याद कर लीजिये: जैसा कि "अल मल्फ़ूज़" ह़िस्सा 2 स़-फ़ह़ा:272 पर है:

نَوَيْتُ سُنَّةَ الْاِعْتِكَاف

तर्जमा: मैं ने सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत की।

मस्जिदुन्न-ब-विय्यिश्शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के क़दीम और मशहूर दरवाज़े "बाबुर्रह़मह" से दाख़िल हों तो सामने ही सुतूने मुबारक है उस पर याद दहानी के लिये क़दीम ज़माने से नुमायां तौ़र पर نَوَيْتُ سُنَّةَ الْاِعْتِكَاف लिखा हुवा है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी आप किसी इ़बादत म-स़लन नमाज़, रोज़ा, एह़राम, त़वाफ़े का'बा वग़ैरा की अ़-रबी में निय्यत करें तो इस बात का ख़ास़ ख़याल रखिये कि इस अ़-रबी इ़बारत के मा'ना भी आप समझ रहे हों क्यूं कि निय्यत दिल के इरादे को केहते हैं अगर आप ने रटी हुई "अ़-रबी निय्यत" के अल्फ़ाज़ अदा कर लिये या किताब में देख कर पढ़ लिये और ध्यान किसी और त़रफ़ लगा हुवा था और इरादा दिल में मौजूद न था तो निय्यत सिरे से होगी ही नहीं। म-स़लन आप मस्जिद में दाख़िल हो कर نَوَيْتُ سُنَّةَ الْاِعْتِكَاف कहें तो दिल में भी इरादा होना लाज़िमी है कि मैं येह ए'तिकाफ़ की निय्यत कर रहा हूं। येह बात ख़ास़ तौ़र पर ज़ेह्न नशीन कर लें कि येह आख़िरी अ़-शरए र-मज़ानुल मुबारक का ए'तिकाफ़ नहीं येह ***नफ़्ली ए'तिकाफ़*** है और एक लम्ह़े के लिये भी किया जा सकता है, आप जब

भी मस्जिद से बाहर निकलेंगे येह ***नफ़्ली ए'तिकाफ़*** उसी वक़्त ख़त्म हो जाएगा।

मस्जिद में खाना पीना : ***याद रखिये !*** मस्जिद के अन्दर खाने पीने और सोने की शर-अ़न इजाज़त नहीं, अगर ***ए'तिकाफ़*** की निय्यत थी तो ज़िम्नन खाने पीने और सोने की इजाज़त भी हो जाएगी। हमारे यहां अक्सर मसाजिद में दुरूदो सलाम वग़ैरा का विर्द होता है फिर पानी पर दम कर के हमारे इस्लामी भाई इस को तबर्रुकन पीते हैं। बेशक येह एक बहुत अच्छा अ़मल है। अलबत्ता किसी इस्लामी भाई की ***ए'तिकाफ़*** की निय्यत न हो तो वोह मस्जिद में येह पानी नहीं पी सकता। इसी त़रह़ मस्जिद के अन्दर जिस ने ए'तिकाफ़ की निय्यत की हुई थी वोही मस्जिद के अन्दर र-मज़ानुल मुबारक में इफ़्त़ार कर सकता है। मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ में भी ***आबे ज़मज़म*** शरीफ़ पीने, इफ़्त़ार करने या सोने के लिये ए'तिकाफ़ की निय्यत होनी चाहिये। मस्जिदुन्न-ब-विय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में भी ***बिला निय्यते ए'तिकाफ़*** पानी वग़ैरा नहीं पी सकते। यहां येह बात भी समझ लेना ज़रूरी है कि ए'तिकाफ़ की निय्यत सिर्फ़ खाने, पीने और सोने के लिये न की जाए, स़वाब के लिये की जाए। रद्दुल मुह़तार (शामी) में है, अगर कोई मस्जिद में खाना, पीना या सोना चाहे तो ***ए'तिकाफ़ की निय्यत*** कर ले। कुछ देर ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करे फिर जो चाहे करे (या'नी अब चाहे तो खा पी या सो सकता है।) (रद्दुल मुह़तार, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:435)

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** की जानिब से दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक के जुदा जुदा शहरों में इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की तरकीब की जाती है दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा की जानिब से बा क़ाइदा तरबिय्यती जद्वल पेश किया जाता है इन मो'तकिफ़ीन के लिये निय्यतों की फ़ेहरिस ह़ाज़िर की है। जो इज्तिमाई ए'तिकाफ़ से अलग हों वोह भी ह़स्बे ज़रूरत निय्यतें कर के अपने स़वाब में इज़ाफ़े की तरकीब फ़रमाएं।

इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की 41 निय्यतें : *फ़रमाने मुस्त़फ़ा* صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ ۔ "मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

(त़-बरानी मो'जमे कबीर, ह़दीस़:5942, जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:185)

अपने ए'तिकाफ़ की अ़ज़ीमुश्शान नेकी के साथ मज़ीद अच्छी अच्छी निय्यतें शामिल कर के स़वाब में ख़ूब इज़ाफ़ा कीजिये। मक्त-बतुल मदीना की त़रफ़ से शाएअ़ कर्दा कार्ड में से सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बयान कर्दा मस्जिद में जाने की 40 निय्यतों के साथ साथ मज़ीद येह निय्यतें कर के घर से निकलिये, (मस्जिद में आ कर भी ह़स्बे ह़ाल निय्यतें की जा सकती हैं, जब भी अच्छी अच्छी निय्यतें करें स़वाब की निय्यत पेशे नज़र रखा करें)

(1) र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी दस[10] दिन (या पूरे माह) के सुन्नते ए'तिकाफ़ के लिये जा रहा हूं (2) तस़व्वुफ़ के इन म-दनी उस़ूलों (अलिफ़) तक़्लीले त़आ़म (या'नी कम खाना)

(बा) तक़्लीले कलाम (या'नी कम बोलना) (जीम) तक़्लीले मनाम(या'नी कम सोना) पर कारबन्द रहूंगा (3) रोज़ाना पांचों नमाज़ें पहली सफ़ में (4) तक्बीरे ऊला के साथ (5) बा जमाअ़त अदा करूंगा (6) हर अज़ान और (7) हर इक़ामत का जवाब दूंगा (8) हर बार बमअ अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ अज़ान के बा'द की दुआ पढूंगा (9) रोज़ाना तहज्जुद (10) इश्राक़ (11) चाश्त और (12) अव्वाबीन के नवाफ़िल अदा करूंगा (13) तिलावत और (14) दुरूद शरीफ़ की कस्रत करूंगा (15) रोज़ाना रात सू-रतुल मुल्क पढूं या सुनूंगा (16) कम अज़ कम ताक़ रातों में स़लातुत्तस्बीह़ अदा करूंगा (17) तमाम सुन्नतों भरे ह़ल्क़ों और (18) बयानात में अव्वल ता आख़िर शिर्कत करूंगा (19) रिश्तेदारों और मुलाक़ातियों को भी ***इन्फ़िरादी कोशिश*** कर के सुन्नतों भरे ह़ल्क़ों में बिठाऊंगा (20) ज़बान पर ***क़ुफ़्ले मदीना*** लगाऊंगा या'नी फ़ुज़ूल गोई से बचूंगा और मुम्किन हुवा तो इस निय्यते ख़ैर के साथ ज़रूरत की बात भी ह़त्तल इम्कान लिख कर या इशारे से करूंगा ताकि फ़ुज़ूल या बुरी बातों में न जा पड़ूं या शोरो गुल का सबब न बन जाऊं (21) मस्जिद को हर त़रह़ की बदबू से बचाऊंगा (22) मस्जिद में नज़र आने वाले तिन्के और बालों के गुच्छे वग़ैरा उठाते रहने के लिये अपनी जेब में शापर रखूंगा। ***फ़रमाने मुस्तफ़ा*** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मस्जिद से अज़िय्यत की चीज़ निकाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा। (सु-नने इब्ने माजह, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:419, ह़दीस़:757) (23) अपने पसीने, मुंह की राल वग़ैरा की आलूदगी से मस्जिद के फ़र्श या दरी को बचाने के लिये सिर्फ़ अपनी चादर या

चटाई पर ही सोऊंगा (24) ब निय्यते ह़या सोने में ***पर्दे में पर्दा*** का हर त़रह़ से ख़याल रखूंगा (सोते वक़्त पाजामे पर तहबन्द बांध कर मज़ीद ऊपर से चादर ओढ़ लेनी मुफ़ीद है। म-दनी क़ाफ़िले में, घर में और हर जगह इस का ख़याल रखना चाहिये) (25) वुज़ू ख़ाना फ़िनाए मस्जिद में होने की सूरत में (अगर कोई वुज़ू के लिये मुन्तज़िर हो तो निशस्त से हट कर तेल कंघी कीजिये) तेल कंघी वहीं करूंगा और जो बाल झड़ेंगे उठा लूंगा (26) बिग़ैर इजाज़त किसी की कोई चीज़ म-स़लन इस्तिन्जा ख़ाने जाने के लिये दूसरों के चप्पल वग़ैरा इस्ते'माल नहीं करूंगा बल्कि (27) चप्पल, चादर तक्या वग़ैरा किसी चीज़ के लिये दूसरों से सुवाल भी नहीं करूंगा (28) खाना फ़िनाए मस्जिद में वोह भी खाने की मख़्सूस़ दरी पर खाऊंगा नमाज़ की दरी पर हरगिज़ नहीं खाउंगा (29) खाना कम होने की सूरत में ईस़ार की निय्यत से आहिस्ता आहिस्ता खाऊंगा ता कि दूसरे इस्लामी भाई ज़ियादा खा सकें। ईस़ार का स़वाब बे शुमार है चुनान्चे ताजदारे रिसालत, माहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : "जो शख़्स़ उस चीज़ को जिस की ख़ुद इसे ह़ाजत हो दूसरे को दे दे तो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ इसे बख़्श देता है।" (इत्तिह़ाफ़ुस्सा-दतुल मुत्तक़ीन, जिल्द:9, स़-फ़ह़ा:779) (30) पेट का ***क़ुफ़्ले मदीना*** लगाऊंगा या'नी ख़्वाहिश से कम खाऊंगा (31) अगर किसी ने ज़ियादती की तो स़ब्र करूंगा और (32) उस को ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुआ़फ़ करूंगा (33) पड़ौसी मो'तकिफ़ के साथ हुस्ने सुलूक करूंगा (34) अपने ए'तिकाफ़ के ह़ल्क़े के ***निगरान*** की इत़ाअ़त करूंगा (35) ***फ़िक्रे मदीना*** करते हुए रोज़ाना ***म-दनी इन्आमात*** का कार्ड

पुर करूंगा (36) इस्लामी भाइयों के सामने मुस्करा मुस्करा कर स़-दके करने का स़वाब कमाऊंगा (37) कोई मेरी त़रफ़ देख कर मुस्कराएगा तो येह दुआ़ पढ़ूंगा : اَضْحَكَ اللّٰهُ سِنَّكَ या'नी (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे हंसता बसता रखे) (38) अपने लिये, घर वालों, अह़बाब और सारी उम्मत के लिये दुआ़एं करूंगा (39) अगर कोई मो'तकिफ़ बीमार हो गया तो मुम्किना ह़द तक उस की दिलजूई और ख़िदमत करूंगा (40) उ़म्र रसीदा मो'तकिफ़ीन के साथ बहुत ज़ियादा हुस्ने सुलूक करूंगा (41) दौराने ए'तिकाफ़ ह़स्बे तौफ़ीक़ लंगरे रसाइल तक़्सीम करूंगा (हर मो'तकिफ़ इस्लामी भाई की ख़िदमत में दर्द भरी म-दनी इल्तिजा है कि कम अज़ कम 25 रूपै के मक्त-बतुल मदीना के रसाइल या सुन्नतों भरे म-दनी फूलों के म-दनी पम्फ़्लेट ज़रूर तक़्सीम फ़रमाएं और अगर हैसिय्यत हो तो ज़ियादा तक़्सीम करें। आने वाले मुलाक़ातियों को सुन्नतों भरे बयानात की केसेट या रिसाला या कम अज़ कम म-दनी फूलों का एक पम्फ़्लेट ज़रूर तोह़फ़े में पेश किया जाए कि र-मज़ानुल मुबारक में स़वाब ज़ियादा मिलेगा। बांटने में बद नज़्मी न हो इस का ख़याल रखना ज़रूरी है)

ए'तिकाफ़ किस मस्जिद में करे ? *ए'तिकाफ़* के लिये तमाम मसाजिद से मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ अफ़्ज़ल है, फिर मस्जिदुन्नबविय्यिशशरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फिर ***मस्जिदे अक़्सा*** शरीफ़ (बैतल मुक़द्दस) फिर ऐसी जामेअ़ मस्जिद जिस में पंज वक़्ता बा जमाअ़त नमाज़ होती हो।

अगर जामेअ़ मस्जिद में जमाअ़त न होती हो तो फिर अपने मह़ल्ले की मस्जिद में ए'तिकाफ़ करना अफ़्ज़ल है ।

(फ़त्हुल क़दीर, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:308)

जामेअ़ मस्जिद होना ए'तिकाफ़ के लिये शर्त़ नहीं बल्कि मस्जिदे जमाअ़त में भी हो सकता है । मस्जिदे जमाअ़त वोह है जिस में इमाम व मुअज़्ज़िन मुक़र्रर हों अगर्चे इस में पंजगाना नमाज़ न होती हो और आसानी इस में है कि मुत़्लक़न हर मस्जिद में ***ए'तिकाफ़*** स़ह़ीह़ है । अगर्चे वोह मस्जिदे जमाअ़त न हो । (रद्दुल मुहतार, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:429) खुसूसन इस जमाने में कि बा'ज मस्जिदें एसी हैं कि जिन में न इमाम हैं न मुअज़्ज़िन । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा:5, स़-फ़ह़ा:151)

मो'तकिफ़ और एह़तिरामे मस्जिद : प्यारे मो'तकिफ़ इस्लामी भाइयो ! चूंकि आप को दस रोज़ मस्जिद ही में गुज़ारने हैं इस लिये मुनासिब येही है कि चन्द बातें एह़तिरामे मस्जिद से मु-तअ़ल्लिक़ सीख लीजिये । दौराने ए'तिकाफ़ मस्जिद के अन्दर ज़रूरतन दुन्यवी बात करने की इजाज़त है लेकिन धीमी आवाज़ के साथ और एह़तिरामे मस्जिद को मल्हूज़ रखते हुए बात कीजिये । येह नहीं होना चाहिये कि आप चिल्ला कर किसी इस्लामी भाई को बुला रहे हों और वोह भी आप को चिल्ला कर जवाब दे रहा हो, "अबे तबे" और गुल ग़पाड़े से मस्जिद गूंज रही हो । येह अन्दाज़ ना जाइज़ व गुनाह है । याद रखिये ! मस्जिद में बिला ज़रूरत दुन्यवी बातचीत की मो'तकिफ़ को भी इजाज़त नहीं ।

उन को अल्लाह से कुछ काम नहीं : सय्यिदुना हसन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है:

يَاْتِیْ عَلَی النَّاسِ زَمَانٌ يَّكُوْنُ حَدِيْثُهُمْ فِيْ مَسَاجِدِهِمْ فِيْ اَمْرِ دُنْيَاهُمْ فَلَا تُجَالِسُوْهُمْ فَلَيْسَ لِلّٰهِ فِيْهِمْ حَاجَةٌ.

तर्जमा: लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि मसाजिद में दुन्या की बातें होंगी, तुम उन के साथ मत बैठो कि उन को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कुछ काम नहीं ।

(शुअबुल ईमान, जिल्द:3, स-फ़हा:87, हदीस:2962)

अल्लाह तेरी गुमशुदा चीज़ न मिलाए : हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

مَنْ سَمِعَ رَجُلًا يَنْشُدُ ضَالَّةً فِي الْمَسْجِدِ فَقُوْلُوْا لَا رَدَّهَا اللّٰهُ عَلَيْكَ فَاِنَّ الْمَسَاجِدَ لَمْ تُبْنَ لِهٰذَا ۔

तर्जमा: जो किसी को मस्जिद में ब आवाज़े बुलन्द गुमशुदा चीज़ ढूंडते सुनें तो वोह कहें, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ वोह गुमशुदा शय तुझे न मिलाए ।'' क्यूं कि मस्जिदें इस काम के लिये नहीं बनाई गईं ।

(सहीह मुस्लिम, स-फ़हा:284, हदीस:568)

मस्जिद में जूते तलाश करते फिरना : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** जो लोग अपने जूते या कोई और चीज़ गुम हो जाने पर मस्जिद में शोर करते हुए ढूंडते फिरते हैं उन को बयान कर्दा ह़दीसे़ मुबारक से दर्स ह़ासिल करना चाहिये। मा'लूम हुवा कि हर उस काम से मस्जिद को बचाना ज़रूरी है जिस से मस्जिद का तक़द्दुस पामाल होता हो। दुन्यवी बातें, हंसी मज़ाक़ और इसी त़रह़ की लग़्वियात के लिये मस्जिदें नहीं बनाई गईं बल्कि मस्जिदें तो इ़बादते इलाही के लिये बनाई गई हैं। मस्जिद में बुलन्द आवाज़ से गुफ़्तुगू करने को स़ह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان कितना ना पसन्द करते हैं इस का इस रिवायत से अन्दाज़ा लगाइये। चुनान्चे

तो तुम्हें सज़ा देता : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, मैं मस्जिद में खड़ा हुवा था कि मुझे किसी ने कंकरी मारी। मैं ने देखा तो वोह ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरुल मुअ्मिनीन उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ थे, उन्हों ने मुझ से (इशारा कर के) फ़रमाया: "इन दो शख़्सों को मेरे पास लाओ !" मैं उन दोनों को ले आया ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उन से इस्तिफ़्सार फ़रमाया, "तुम कहां से तअ़ल्लुक़ रखते हो ? अ़र्ज़ की, "त़ाइफ़ से।" फ़रमाया, "अगर तुम मदीनए मुनव्वरा के रहने वाले होते (क्यूंकि वोह मस्जिद के आदाब बख़ूबी जानते हैं) तो मैं तुम्हें ज़रूर सज़ा देता (क्यूंकि) तुम रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मस्जिद

में अपनी आवाज़ें बुलन्द करते हो! (स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:178, ह़दीस़:470)

मुबाह़ कलाम नेकियों को खा जाता है : ह़ज़रते सय्यिदुना मुल्ला अ़ली का़री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى, मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़ शैख़ इब्ने हुमाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام के ह़वाले से नक़्ल फरमाते हैं, "اَلْكَلَامُ الْمُبَاحُ فِى الْمَسْجِدِ مكروهٌ يَا كُلُ الْحَسَنَاتِ." ***(तर्जमा)*** "मस्जिद में मुबाह (या'नी जाइज़) बात करना मक्रूहे (तह़रीमी) है और नेकियों को खा जाता है।"

(मिर्क़ातुल मफ़ातीह़, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:449)

सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, बि इज़्ने परवर्द गार दो जहां के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया: اَلضَّحْكُ فِى الْمَسْجِدِ ظُلْمَةٌ فِي الْقَبْرِ ***तर्जमा:*** "मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा (लाता) है।"

(अल जामिउ़स्सग़ीर, 322, ह़दीस़:5231)

क़ब्र में अंधेरा : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** मज़्कूरा बाला रिवायात को बार बार पढ़िये और ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से लरज़िये ! कहीं ऐसा न हो कि मस्जिद में दाख़िल तो हुए स़वाब कमाने मगर खूब हंस बोल कर नेकियां बरबाद कर के बाहर निकले कि मस्जिद में दुन्या की जाइज़ बात भी नेकियों को खा जाती है। लिहाज़ा मस्जिद में पुर सुकून और ख़ामोश रहिये। बयान भी करें या सुनें तो संजीदगी के साथ कि कोई ऐसी बात न हो जिस से लोगों को हंसी आए। न खुद हंसिये

न लोगों को हंसने दीजिये कि मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा लाता है। हां ज़रूरतन मुस्कराना मन्अ़ नहीं। मस्जिद के एह़तिराम का ज़ेह्न बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र का मा'मूल बनाइये। आप की तरग़ीब के लिये एक म-दनी बहार गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी का ए'तिकाफ़ : ***ह़वेलियां*** केन्ट (सरह़द, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई (उ़म्र 52 साल) का कुछ इस त़रह़ बयान है, मैं सर ता पा गुनाहों में डूबा हुवा था, बच्चे जवान हो चुके थे फिर भी फ़ैशन का भूत नहीं उतरता था। माहे र-मज़ानुल मुबारक में बाबुल मदीना कराची से तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के ***आ़शिक़ाने रसूल*** का 30 दिन का म-दनी क़ाफ़िला ***ह़वेलियां*** तशरीफ़ लाया। उस ***म-दनी क़ाफ़िले*** की खु़सूसिय्यत येह थी कि उस में दा'वते इस्लामी की मजलिसे शूरा के रुक्न ***मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अल्ह़ाज मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी म-दनी*** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی भी शरीक थे। मेरे बड़े स़ाह़िबज़ादे मुझे म-दनी क़ाफ़िले वाले आ़शिक़ाने रसूल से मिलवाने ले गए। मुफ़्तीए दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی की ***इन्फ़िरादी कोशिश*** से मैं उन के म-दनी क़ाफ़िले के साथ आख़िरी अ़शरह में मो'तकिफ़ हो गया। ***मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी*** قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی के हु़स्ने

अख़्लाक़ ने मेरा दिल जीत लिया, दीगर ***आ़शिक़ाने रसूल*** ने भी मुझ पर ख़ूब इन्फ़िरादी कोशिश की । ह़त्ता कि मुझ सा सख़्त दिल इन्सान भी मोम हो गया और اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरे क़ल्ब में ***म-दनी इन्क़िलाब*** बरपा हो गया । मैं ने फ़ैशन से मुंह मोड़ा, सुन्नतों से रिश्ता जोड़ा, दाढ़ी मुंडाना छोड़ा, बुराइयों से नाता तोड़ा और भरपूर त़रीक़े पर म-दनी माह़ौल से तअ़ल्लुक़ जोड़ा । अल ग़रज़ मैं ने गुनाहों से तौबा कर ली, दाढ़ी रख ली और ***इमामा शरीफ़*** का ताज सर पर सजा लिया । अब मेरी कोशिश येह होती है कि जो भी सुन्नत मा'लूम हो जाए उस पर अ़मल करूं । येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों की धूमें मचाने के लिये तन्ज़ीमी त़ौर पर ***ह़ल्क़ा सत़्ह़ का ज़िम्मादार*** हूं ।

आएंगी सुन्नतें जाएगी फैशनें नेकियां भी मिलें कीजिये ए'तिकाफ़
ब-र-कतें पाएंगे और सुधर जाएंगे म-दनी माह़ौल में कीजिये ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ने बा'दे वफ़ात भी म-दनी क़ाफ़िले की दा'वत दी :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی की भी क्या बात है ! म-दनी माह़ौल में रह कर उन्हों ने म-दनी क़ाफ़िलों में ख़ूब सफ़र किया और बे शुमार इस्लामी भाइयों की इस़्लाह़ कर के अपने

लिये स़वाबे जारिय्या का ज़ख़ीरा जम्अ़ कर के 18 मुहर्रमुल ह़राम (सिने 1427 हिजरी 17-2-2006) को बा'दे नमाज़े जुमुआ़ रेह़लत फ़रमाई और अब दुन्या से जाने के बा'द भी ख़्वाब में आ कर इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए एक इस्लामी भाई को ***म-दनी क़ाफ़िले*** का मुसाफ़िर बना दिया और फिर म-दनी क़ाफ़िले में पहुंच कर भी उस को ***जल्वा*** दिखाया और बि इज़्निल्लाह عَزَّوَجَلَّ मस़ाने के मरज़ से छुटकारा दिलाया चुनान्चे एक इस्लामी भाई का बयान है, मेरे ***मस़ाने*** में कुछ अ़रसे से तक्लीफ़ थी, मैं ने ख़्वाब में ***ह़ज़रते क़िब्ला मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी मौलाना मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी म-दनी*** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی की ज़ियारत की उन्हों ने मुझे म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र का हुक्म फ़रमाया। मैं ने सफ़र की निय्यत कर ली मगर जुमादिल ऊला (सिने 1427 हिजरी) में सफ़र न कर सका। 24 जुमादिल आख़िर (सिने 1427 हिजरी) को मैं ने तीन[3] रोज़ा म-दनी क़ाफ़िले में ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार किया। क़ाफ़िले वाली मस्जिद में पहुंच कर जब लेटा तो ***मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी*** قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی मेरे ख़्वाब में तशरीफ़ लाए उस वक़्त आप ***पर्दे में पर्दा*** किये (या'नी गोद में चादर फैला कर रानें वग़ैरा छुपाए) तशरीफ़ फ़रमा थे और कुछ मल्फ़ूज़ात से नवाज़ रहे थे जो मैं समझ न पाया। जब से म-दनी क़ाफ़िले से वापस आया हूं येह बयान देते हुए तक़रीबन एक हफ़्ता हो चुका है اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ***मुझे मस़ाने की तक्लीफ़ से नजात मिल चुकी है।***

दर्द गर्चे तुम्हारे मसाने में है, नफ़्अ़ पर आख़िरत के बनाने में है
केहते फ़ारूक़ हैं क़ाफ़िले में चलो सब मुबल्लिग़ कहें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से मस्जिद के मु-तअ़ल्लिक़ 19 म-दनी फूल

मदीना 1: ***मरवी*** हुवा कि एक मस्जिद अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर शिकायत करने चली कि लोग मुझ में दुन्या की बातें करते हैं । मलाइका उसे आते हुए मिले और बोले, हम उन (मस्जिद में दुन्या की बातें करने वालों) के हलाक करने को भेजे गए हैं । (फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:16, स-फ़हा:312)

मदीना 2: ***रिवायत*** किया गया है कि जो लोग ग़ीबत करते (जो कि सख़्त ह़राम और ज़िना से भी अशद्द है) और जो लोग मस्जिद में दुन्या की बातें करते हैं उन के मुंह से गन्दी बदबू निकलती है जिस से फ़िरिश्ते ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर उन की शिकायत करते हैं ।" سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जब मुबाह़ व जाइज़ बात बिला ज़रूरते शर-इय्या करने को मस्जिद में बैठने पर येह आफ़तें हैं तो (मस्जिद में) ह़राम व ना जाइज़ काम करने का क्या ह़ाल होगा ! (ऐज़न)

मदीना 3: ***दरज़ी*** को इजाज़त नहीं कि मस्जिद में बैठ कर कपड़े सिये । हां अगर बच्चों को रोकने और मस्जिद की ह़िफ़ाज़त

के लिये बैठा तो ह़रज नहीं। इसी त़रह़ कातिब को (मस्जिद में) उजरत पर किताबत करने की इजाज़त नहीं।

(आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:110)

मदीना 4: ***मस्जिद*** के अन्दर किसी क़िस्म का कूड़ा हरगिज़ न फेंकें। सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस़ देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِى "जज़्बुल कुलूब" में नक़्ल करते हैं कि मस्जिद में अगर ख़स (या'नी मा'मूली सा तिन्का या ज़र्रा) भी फेंका जाए तो इस से मस्जिद को इस क़दर तक्लीफ़ पहुंचती है जिस क़दर तक्लीफ़ इन्सान को अपनी आंख में ख़स (या'नी मा'मूली ज़र्रा) पड़ जाने से होती है। (जज़्बुल कुलूब, स़-फ़ह़ा:257)

मदीना 5: ***मस्जिद*** की दीवार, इस के फ़र्श, चटाई या दरी के ऊपर या उस के नीचे थूकना, नाक सिनक्ना, नाक या कान में से मैल निकाल कर लगाना, मस्जिद की दरी या चटाई से धागा या तिन्का वग़ैरा नोचना सब मम्नूअ़ है।

मदीना 6: ***ज़रूरतन*** अपने रूमाल वग़ैरा से नाक पूंछने में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं।

मदीना 7: ***मस्जिद*** का कूड़ा झाड़ कर ऐसी जगह मत डालिये जहां बे अ-दबी हो।

मदीना 8: ***जूते*** उतार कर मस्जिद में साथ ले जाना चाहें तो गर्द वग़ैरा बाहर झाड़ लें। अगर पांव के तल्वों में गर्द के ज़र्रात लगे हों तो अपने रूमाल वग़ैरा से पूंछ कर मस्जिद में दाख़िल हों।

मदीना 9: ***मस्जिद*** के वुज़ू ख़ाने पर वुज़ू करने के बा'द पांव वुज़ू

ख़ाने पर ही अच्छी त़रह़ ख़ुश्क कर लीजिये। गीले पांव ले कर चलने से मस्जिद का फ़र्श गन्दा और दरियां मैली और बदनुमा हो जाती है।

अब मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के मल्फ़ूज़ात शरीफ़ा से बा'ज़ आदाबे मस्जिद पेश किये जा रहे हैं:

मदीना 10: ***मस्जिद*** में दौड़ना या ज़ोर से क़दम रखना, जिस से धमक पैदा हो मन्अ़ है।

मदीना 11: ***वुज़ू*** करने के बा'द आ'ज़ाए वुज़ू से एक भी छींट पानी फ़र्शे मस्जिद पर न गिरे। (याद रखिये ! आ'ज़ाए वुज़ू से वुज़ू के पानी के क़त़रे फ़र्शे मस्जिद पर गिराना, ना जाइज़ है)

मदीना 12: ***मस्जिद*** के एक द-रजे से दूसरे द-रजे के दाख़िले के वक़्त (म-स़लन सेह़न में दाख़िल हों तब भी और सेह़न से अन्दरूनी ह़िस़्से में जाएं जब भी) सीधा क़दम बढ़ाया जाए ह़त्ता कि अगर स़फ़ बिछी हो उस पर भी सीधा क़दम रखें और जब वहां से हटें तब भी सीधा क़दम फ़र्शे मस्जिद पर रखें (या'नी आते जाते हर बिछी हुई स़फ़ पर पहले सीधा क़दम रखें) या ख़त़ीब जब मिम्बर पर जाने का इरादा करे। पहले सीधा क़दम रखे और जब उतरे तो (भी) सीधा क़दम उतारे।

मदीना 13: ***मस्जिद*** में अगर छींक आए तो कोशिश करें आहिस्ता

आवाज़ निकले इसी त़रह़ खांसी । सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में ज़ोर की छींक को ना पसन्द फ़रमाते। इसी त़रह़ डकार को ज़ब्त़ करना चाहिये और न हो तो ह़त्तल इम्कान आवाज़ दबाई जाए अगर्चे ग़ैरे मस्जिद में हो। खु़सूस़न मजलिस में या किसी मुअ़ज़्ज़म (या'नी बुज़ुर्ग) के सामने बे तहज़ीबी है। ह़दीस़ में है, "एक शख़्स़ ने दरबारे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में डकार ली आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हम से अपनी डकार दूर रख कि दुन्या में जो ज़ियादा मुद्दत तक पेट भरते थे वोह क़ियामत के दिन ज़ियादा मुद्दत तक भूके रहेंगे ।" (शरहुस्सुन्नह, जिल्द:7, स़-फ़ह़ा:294, ह़दीस़:2944) और जमाही में आवाज़ कहीं भी नहीं निकालनी चाहिये। अगर्चे मस्जिद से बाहर तन्हा हो क्यूंकि येह शैत़ान का क़ह्क़हा है। जमाही जब आए ह़त्तल इम्कान मुंह बन्द रखें मुंह खोलने से शैत़ान मुंह में थूक देता है। अगर यूं न रुके तो ऊपर के दांतों से नीचे का होंट दबा लें। और इस त़रह़ भी न रुके तो ह़त्तल इम्कान मुंह कम खोलें और उल्टा हाथ उल्टी त़रफ़ से मुंह पर रख लें। चूंकि जमाही शैत़ान की त़रफ़ से है और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इस से मह़फ़ूज़ हैं। लिहाज़ा जमाही आए तो येह तस़व्वुर करें कि "अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को जमाही नहीं आती ।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ौरन रुक जाएगी। (रद्दुल मुह़तार, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:413)

मदीना 14: ***तमस्ख़ुर*** (मस्ख़रापन) वैसे ही मम्नूअ़ है और मस्जिद में सख़्त ना जाइज़ ।

मदीना 15: ***मस्जिद*** में हंसना मन्अ़ है कि क़ब्र में तारीकी (या'नी अंधेरा) लाता है। मौक़अ़ के लिहाज़ से तबस्सुम में ह़रज नहीं।

मदीना 16: ***मस्जिद*** के फ़र्श पर कोई चीज़ फेंकी न जाए बल्कि आहिस्ता से रख दी जाए। मौसिमे गरमा में लोग पंखा झलते झलते फेंके देते हैं (मस्जिद में टोपी, चादर वग़ैरा भी न फेंके इसी त़रह़ चादर या रूमाल से फ़र्श इस त़रह़ न झाड़ें कि आवाज़ पैदा हो) या लकड़ी, छत्री वग़ैरा रखते वक़्त दूर से छोड़ दिया करते हैं। इस की मुमानअ़त है। ग़रज़ मस्जिद का एह़तिराम हर मुसल्मान पर फ़र्ज़ है।

मदीना 17: ***मस्जिद*** में हदस (या'नी रीह ख़ारिज करना) मन्अ़ है ज़रूरत हो तो (जो ए'तिकाफ़ में नहीं हैं वोह) बाहर चले जाएं। लिहाज़ा मो'तकिफ़ को चाहिये कि अय्यामे ए'तिकाफ़ में थोड़ा खाए, पेट हल्का रखे कि क़ज़ाए ह़ाजत के वक़्त के सिवा किसी वक़्त इख़्राजे रीह़ की ह़ाजत न हो। वोह इस के लिये बाहर न जा सकेगा। (अलबत्ता इह़ातए मस्जिद में मौजूद बैतुल ख़ला में रीह़ ख़ारिज करने के लिये जा सकता है)

मदीना 18: ***क़िब्ले*** की त़रफ़ पांव फैलाना तो हर जगह मन्अ़ है। मस्जिद में किसी त़रफ़ न फैलाइए कि येह ख़िलाफ़े आदाबे दरबार है। ह़ज़रते इब्राहीम बिन अद्हम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه

मस्जिद में तन्हा बैठे थे, पांव फैला लिया, गोशए मस्जिद से हातिफ़ ने आवाज़ दी, "इब्राहीम ! बादशाहों के हुज़ूर में यूंही बैठते हैं ?" मअ़न (या'नी फ़ौरन) पांव समेटे और ऐसे समेटे कि वक़्ते इन्तिक़ाल ही फैले । (छोटे बच्चों को भी प्यार करते, उठाते, लिटाते वक़्त एह़तियात़ करें कि उन के पांव क़िब्ले की त़रफ़ न हों और मुताते (पोटी करवाते) वक़्त भी ज़रूरी है कि उस का रुख़ क़िब्ले की त़रफ़ न हो)

मदीना 19: ***इस्ते'माल*** शुदा जूता मस्जिद में पहन कर जाना गुस्ताख़ी व बे अ–दबी है ।

(मुलख़्ख़स़न अज़ अल मल्फ़ूज़, ह़िस्सा दुवुम, स़–फ़ह़ा:377)

मस्जिदों को खुशबूदार रखिये ! : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि–दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : "हुज़ूरे पुरनूर, **शाफ़ेए़ यौमुन्नूशूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मह़ल्लों में मस्जिदें बनाने का हुक्म दिया और येह कि वोह स़ाफ़ और खुशबूदार रखी जाएं ।" (सु–नने अबी दावूद, जिल्द:1, स़–फ़ह़ा:197, ह़दीस़:455)

एर फ़्रेशनर से केन्सर हो सकता है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा मस्जिदें बनाना और इन्हें ऊ़द, लूबान और अगरबत्ती वग़ैरा से खुशबूदार रखना कारे स़वाब है । मगर मस्जिद में दिया सलाई (या'नी माचिस की तीली) न जलाइये कि इस से बारूद की **बदबू** निकलती है

और मस्जिद को **बदबू** से बचाना वाजिब है । बारूद का **बदबूदार** धुवां अन्दर न आने पाए इतनी दूर बाहर से लूबान या अगरबत्ती वग़ैरा सुलगा कर मस्जिद में लाइये । अगरबत्तियों को किसी बड़े त़श्त वग़ैरा में रखना ज़रूरी है ताकि इस की राख मस्जिद के फ़र्श वग़ैरा पर न गिरे। अगरबत्ती के **पेकिट** पर अगर जानदार की तस्वीर बनी हुई हो तो उस को खुरच डालिये । मस्जिद (नीज़ घरों और कारों वग़ैरा) में "एर फ्रेशनर" (AIR FRESHNER) से ख़ुश्बू का छिड़काव मत कीजिये कि उस के कीमियावी माद्दे फ़ज़ा में फैल जाते और सांस के ज़रीए **फेफड़ों** में पहुंच कर नुक़्सान पहुंचाते हैं। एक तिब्बी तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ एर फ्रेशनर के इस्ते'माल से जिल्द का सरत़ान या'नी (SKINCANCER) हो सकता है।

मुंह में बदबू हो तो मस्जिद में जाना ह़राम है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! भूक से कम खाने की आ़दत बनाइये या'नी अभी ख़्वाहिश बाक़ी हो कि हाथ रोक लीजिये । अगर खूब डट कर खाते रहे, और वक़्त बे वक़्त सीख़, कबाब, बर्गर, आलूछोले, पिज़्ज़े, आइस्क्रीम, ठन्डी बोतलें वग़ैरा पेट में पहुंचाते रहे, पेट ख़राब हो गया और ख़ुदा न ख़्वास्ता **"गन्दा द-हनी"** या'नी **मुंह से बदबू** आने की बीमारी लग गई तो सख़्त इम्तिह़ान हो जाएगा, क्यूंकि मुंह से **बदबू** आती हो तो मस्जिद का दाख़िला **ह़राम** है, यहां तक कि जिस वक़्त

मुंह से **बदबू** आ रही हो उस वक़्त बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने के लिये भी मस्जिद में आना गुनाह है । चूंकि फ़िक्रे आख़िरत की कमी के बाइस़ लोगों की भारी अक्स़रिय्यत में खाने की ह़िर्स़ ज़ियादा और आजकल हर त़रफ़ "फ़ूड कल्चर" का दौर दौरा है, इस वजह से एक ता'दाद है जिन के मुंह से ***बदबू*** आती है । मुझे बारहा का तजरिबा है कि जब कोई मुंह क़रीब कर के बात करता है तो उस के **मुंह की बदबू** के सबब सांस रोकना पड़ता है । बा'ज़ अवक़ात इमाम व मोअज़्ज़िन को भी **गन्दा द-हनी** का मरज़ हो जाता है, ऐसा हो तो उन्हें फ़ौरन छुट्टियां ले कर इ़लाज करवाना चाहिये क्यूंकि मुंह में **बदबू** होने की सूरत में मस्जिद के अन्दर दाख़िल होना ***ह़राम*** है । अफ़्सोस ! बदबू दार मुंह वाले कई अफ़राद مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ मस्जिद के अन्दर मो'तकिफ़ भी हो जाते हैं । **र-मज़ानुल मुबारक** में कबाब समोसे और दीगर तली हुई चीज़ें और त़रह़ त़रह़ की मुरग़्ग़न ग़िज़ाएं ठांस ठांस कर खाने के सबब मुंह की बदबू के मरीज़ों में इज़ाफ़ा हो जाता है, इस का बेह्तरीन इ़लाज येह है कि सादा ग़िज़ा और वोह भी भूक से कम खाए और हाज़िमा दुरुस्त रखे । सिर्फ़ मुंह ही की **बदबू** नहीं हर त़रह़ की **बदबू** से मस्जिद को बचाना **वाजिब** है ।

मुंह में बदबू हो तो नमाज़ मकरूह होती है : फ़तावा **र-ज़विय्या**, जिल्द:7, स़-फ़ह़ा:384 पर है : मुंह में बदबू होने की ह़ालत में (घर में पढ़ी जाने वाली) नमाज़ भी मकरूह है और ऐसी ह़ालत में मस्जिद जाना **ह़राम** है जब तक मुंह स़ाफ़ न कर ले। और दूसरे नमाज़ी को ईज़ा पहुंचनी **ह़राम** है, और दूसरा नमाज़ी न भी हो तो भी ***बदबू*** से मलाइका को ईज़ा पहुंचती है। **ह़दीस़** में है : "जिस चीज़ से इन्सान तकलीफ़ मह़सूस करते हैं फ़िरिश्ते भी उन से तकलीफ़ मह़सूस करते हैं।"

(स़ह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:282, ह़दीस़:564)

बदबू दार मरहम लगा कर मस्जिद में आने की मुमा-न-अ़त : मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं: "जिस के बदन में ***बदबू*** हो कि उस से नमाज़ियों को ईज़ा हो म-स़लन مَعَاذَاللّٰه **गन्दा दहन** (या'नी जिस के मुंह से बदबू आने की बीमारी हो) **गन्दा बग़ल** (या'नी जिस के बग़ल से बदबू आने का मरज़ हो) या जिस ने **ख़ारिश** वग़ैरा के बाइस़ **गंधक** मली (या कोई सा बदबू दार मरहम या लोशन लगाया) हो उसे भी मस्जिद में न आने दिया जाए।"

(फ़तावा र-ज़विय्या तख़्रीज शुदा, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:72)

कच्ची प्याज़ खाने से भी मुंह बदबू दार हो जाता है :

कच्ची मूली, कच्ची प्याज़, कच्चा लहसन और हर वोह चीज़ कि जिस की **बू** ना पसन्द हो उसे खा कर मस्जिद में उस वक़्त तक जाना जाइज़ नहीं जब तक कि हाथ मुंह वग़ैरा में **बू** बाक़ी हो कि फ़िरिश्तों को इस से तकलीफ़ होती है । **ह़दीस़ शरीफ़** में है, **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: "जिस ने प्याज़, लहसन या गेंदना (लहसन से मुशाबह एक तरकारी) खाई वोह हमारी मस्जिद के क़रीब हरगिज़ न आए।" और फ़रमाया : "अगर खाना ही चाहते हो तो पका कर उस की **बू** दूर कर लो।" (स़ह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:282, ह़दीस़:564, दारे इब्ने ह़ज़्म, बैरूत) सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्त़रीक़ह अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं: "मस्जिद में कच्चा लहसन और कच्ची प्याज़ खाना या खा कर जाना जाइज़ नहीं जब तक की **बू** बाक़ी हो । और येही हुक्म हर उस चीज़ का है जिस में **बू** हो जैसे गेंदना (येह लहसन से मिलती जुलती तरकारी है) मूली, कच्चा गोश्त और मिट्टी का तेल, वोह दिया सलाई जिस के रगड़ने में बू उड़ती हो, रियाह़ ख़ारिज करना वग़ैरा वग़ैरा । जिस को **गन्दा दहनी** का आ़रिज़ा (या'नी मुंह से बदबू आने की बीमारी) या कोई बदबू दार ज़ख़्म हो या कोई बदबू दार दवा लगाई हो तो जब तक बू

मुन्क़ते़अ़ (या'नी ख़त्म) न हो उस को मस्जिद में आने की मुमानअ़त है।''

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा:3, स़-फ़ह़ा:154)

कच्ची प्याज़ वाले कचूमर और राइते से मोह़तात रहिये : कच्ची प्याज़ वाले चन्ने, छोले, राइते और कचूमर नीज़ कच्चे लहसन वाले अचार चटनी वग़ैरा खाने से नमाज़ के अवक़ात में परहेज़ कीजिये। बा'ज़ अवक़ात कबाब समोसे वग़ैरा में भी कच्ची प्याज़ और लहसन की बू मह़सूस होती है लिहाज़ा नमाज़ से पहले उन को भी न खाइये। ऐसी बू वाली चीजें मस्जिद में लाने की भी इजाज़त नहीं।

बदबू दार मुंह ले कर मुसल्मानों के मज्मअ़ में जाने की मुमा-न-अ़त : मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं: मुसल्मानों के **मज्मओं,** दर्से क़ुरआन की मजलिसों, उ़-लमाए दीन व औलियाए कामिलीन की बारगाहों में बदबू दार मुंह ले कर न जाओ। (मिर्आत, जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:25) मज़ीद फ़रमाते हैं : जब तक मुंह में **बदबू** रहे घर में ही रहो, मुसल्मानों के जल्सों, मज्मओं में न जाओ। हुक़्क़ा पीने वाले, तम्बाकू वाला पान खा कर कुल्ली न करने वालों को इस से इब्रत पकड़नी चाहिये। फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : जिसे **गन्दा द-हनी** की बीमारी हो उसे मस्जिदों की ह़ाज़िरी मुआ़फ़ है।

(मिर्आत, जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:26)

नमाज़ के अवक़ात में कच्ची प्याज़ खाना कैसा ? :

सुवाल : "गन्दा दहन" को मस्जिद की ह़ाज़िरी मुआ़फ़ है, तो क्या कच्ची प्याज़ वाला राइता या कचूमर या ऐसे कबाब समोसे जिन में लहसन प्याज़ बराबर पके हुए न हों और उन की बू आती हो या मस्ली हुई बाजरे की रोटी जिस में कच्चा लहसन शामिल होता है ऐसी ग़िज़ा वग़ैरा जमाअ़त से कुछ देर पहले इस निय्यत से खा सकते हैं कि मुंह में बू हो जाए और मस्जिद की जमाअ़त वाजिब न रहे !

जवाब: ऐसा करना जाइज़ नहीं म-स़लन नमाज़े मग़रिब के बा'द ऐसा कचूमर या सलाद वग़ैरा न खाए जिस में कच्ची मूली या कच्ची प्याज़ या कच्ची लहसन हो क्यूंकि इ़शा की नमाज़ का वक़्त क़रीब होता है और इतनी जल्दी मुंह स़ाफ़ कर के मस्जिद में पहुंचना दुश्वार। हां अगर जल्द मुंह स़ाफ़ करना मुम्किन है या किसी और वजह से मस्जिद की ह़ाज़िरी से मा'ज़ूर है म-स़लन औ़रत। या नमाज़ पढ़ने में अभी काफ़ी देर है उस वक़्त तक **बू ख़त्म** हो जाएगी तो खाने में मुज़ा-यक़ा नहीं। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं: कच्चा लहसन प्याज़ खाना कि बिला शुबा ह़लाल है और उसे खा कर जब तक **बू** ज़ाइल न हो मस्जिद में जाना मम्नूअ़ मगर जो हुक़्क़ा ऐसा कस़ीफ़ (गाढ़ा) व बे एहतिमाम हो कि مَعَاذَالله तग़य्युरे बाक़ी (या'नी देर पा बदबू) पैदा करे कि वक़्ते जमाअ़त

तक कुल्ली से भी **बकुल्ली** (या'नी मुकम्मल त़ौर पर) ज़ाइल न हो तो कुर्बे जमाअ़त में इस का पीना शर-अ़न ना जाइज़ कि अब वोह तर्के जमाअ़त व तर्के सज्दा या **बदबू** के साथ दुख़ूले मस्जिद का मूजिब (सबब) होगा और येह दोनों मम्नूअ़ व ना जाइज़ हैं और (येह शर-ई उसूल है कि) हर मुबाह़ फ़ी नफ़्सिही (या'नी हर वोह काम जो ह़क़ीक़त में जाइज़ हो मगर) अम्रे मम्नूअ़ की त़रफ़ मुअद्दी (या'नी मम्नूअ़ काम की त़रफ़ ले जाने वाला) हो मम्नूअ़ व ना रवा (या'नी ना जाइज़) है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:25, स़-फ़ह़ा:94)

मुंह की बदबू मा'लूम करने का त़रीक़ा : अगर मुंह में ***तग़य्युरे राएह़ा*** (या'नी बदबू) हो तो जितनी बार मिस्वाक और कुल्लियों से इस (बदबू) का इज़ाला (या'नी दूर करना मुम्किन) हो (उतनी बार कुल्लियां वग़ैरा करना) लाज़िम है, इस के लिये कोई ह़द मुक़र्रर नहीं। बदबू दार कसीफ़ (गाढ़ा) बे एह़तियाती का हुक़्क़ा पीने वालों को इस का ख़याल (रखना) सख़्त ज़रूरी है और उन से ज़ियादा **सिगरेट** वाले को कि इस की बदबू मुरक्कब तम्बाकू से सख़्त तर और ज़ियादा देर पा है और इन सब से ज़ाइद अशद्द ज़रूरत **तम्बाकू** खाने वालों को है जिन के मुंह में उस का जिर्म (या'नी धूएं के बजाए ख़ुद तम्बाकू ही) दबा रहता है और मुंह अपनी **बदबू** से बसा देता है। येह सब लोग वहां तक मिस्वाक और कुल्लियां करे कि मुंह बिल्कुल स़ाफ़ हो जाए

और **बू** का अस्लन निशान न रहे और इस का इम्तिह़ान यूं है कि हाथ अपने मुंह के क़रीब ले जा कर मुंह खोल कर ज़ोर से तीन बार ह़ल्क़ से पूरी सांस हाथ पर लें और मअ़न (फ़ौरन) सूंघें। बिग़ैर इस के अन्दर की **बदबू** ख़ुद कम मह़सूस होती है और जब मुंह में **बदबू** हो तो मस्जिद में जाना **ह़राम,** नमाज़ में दाख़िल होना मन्अ़। वल्लाहुल हादी।

(फ़तावा र-ज़विय्या तख़्रीज शुदा, जिल्द अव्वल, स़-फ़ह़ा:623)

मुंह की बदबू का इ़लाज : **अगर** किसी चीज़ के खाने के सबब मुंह में **बदबू** आती हो तो हरा धनिया चबा कर खाइये नीज़ गुलाब के ताज़ा या सूखे हुए फूलों से दांत मांझिये اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ फ़ाइदा होगा। हां अगर पेट की ख़राबी की वजह से **बदबू** आती हो तो "कमखोरी" की सआ़दत ह़ासिल कर के भूक की ब-र-कतें लूटने से اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ टांगों और बदन के मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों के दर्द, क़ब्ज़, सीने की जलन, मुंह के छाले, बारबार होने वाले नज़्ले, खांसी और गले के दर्द, मसूढ़ों में ख़ून आना वग़ैरा बहुत सारे अम्राज़ के साथ साथ **मुंह की बदबू** से भी जान छूट जाएगी। भूक बाक़ी रहे इस त़रह़ से कम खाने में **80 फ़ी स़द अम्राज़** से बचत हो सकती है। (तफ़्स़ीली मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत के बाब "पेट का क़ुफ़्ले मदीना" का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये) अगर

नफ़्स की ह़िर्स़ का इलाज हो जाए तो कई जिस्मानी और रूह़ानी अम्राज़ खुद ही दम तोड़ जाएं ।

रज़ा नफ़्स दुश्मन है दम में न आना
कहां तुम ने देखे हैं चंदराने वाले

मुंह की बदबू का म-दनी इलाज :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى النَّبِيِّ الطَّاهِرِ.

मुन्द-र-जए बाला दुरूद शरीफ़ मौक़अ़ ब मौक़अ़ एक ही सांस में ग्यारह मरतबा पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुंह की **बदबू** ज़ाइल हो जाएगी । एक ही सांस में पढ़ने का बेहतर त़रीक़ा येह है कि मुंह बन्द कर के आहिस्ता आहिस्ता नाक से सांस लेना शुरूअ़ कीजिये और मुम्किना ह़द तक हवा **फेफड़ों** में भर लीजिये । अब **दुरूद शरीफ़** पढ़ना शुरूअ़ कीजिये । चन्द बार इस त़रह़ मश्क़ करेंगे तो सांस टूटने से क़ब्ल اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुकम्मल ग्यारह बार दुरूद शरीफ़ पढ़ने की तरकीब बन जाएगी । मज़्कूरा त़रीक़े पर नाक से गहरा सांस ले कर मुम्किन ह़द तक रोक रखने के बा'द मुंह से ख़ारिज करना सिह़ह़त के लिये इन्तिहाई मुफ़ीद है । दिन भर में जब जब मौक़अ़ मिले बिल ख़ुसूस़ खुली फ़ज़ा में रोज़ाना चन्द बार तो ऐसा कर ही लेना चाहिये । मुझे (सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ को) एक सिन रसीदा ह़कीम स़ाह़िब ने बताया था कि मैं सांस लेने के बा'द आधे घन्टे तक (या कहा)

दो घन्टे तक हवा को अन्दर रोक लेता हूं और इस दौरान अपने विर्दो वज़ाइफ़ भी पढ़ सकता हूं । बक़ौल उन ह़कीम स़ाह़िब के सांस रोकने के ऐसे ऐसे मश्शाक़ (या'नी मश्क़ कर के माहिर हो जाने वाले लोग) भी दुन्या में होते हैं कि सुब्ह़ सांस लेते हैं तो शाम को निकालते हैं !

इस्तिन्जाख़ाने मस्जिद से कितनी दूर होने चाहियें ? :

बारगाहे र-ज़विय्यत में सुवाल हुवा कि नमाज़ियों के लिये **इस्तिन्जाख़ाने** मस्जिद से कितनी दूर बनाने चाहियें ? इस पर मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया, मस्जिद को **बू** से बचाना वाजिब है व लिहाज़ा मस्जिद में मिट्टी का तेल जलाना **ह़राम,** मस्जिद में दिया सलाई (या'नी बदबू दार बारूद वाली माचिस की तीली) सुलगाना **ह़राम,** ह़त्ता कि ह़दीस़ में इर्शाद हुवा : मस्जिद में कच्चा गोश्त ले जाना जाइज़ नहीं । (इब्ने माजह, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:413, ह़दीस़:748, दारुल मारिफ़ह, बैरूत) ह़ालांकि कच्चे गोश्त की **बू** बहुत **ख़फ़ीफ़** (या'नी हल्की) है । तो जहां से मस्जिद में **बू** पहुंचे वहां तक (इस्तिन्जाख़ाने बनाने की) मुमा-न-अ़त की जाएगी । (फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:16, स़-फ़ह़ा:232) कच्चे गोश्त की बदबू हल्की होती है जब येह भी मस्जिद में ले जाना जाइज़ नहीं तो कच्ची मछली ले जाना ब द-र-जए ऊला ना जाइज़ होगा क्यूं कि इस की बू गोश्त से ज़ियादा तेज़ होती है बल्कि बा'ज़ अवक़ात पकाने वालों की बे एह़तियाती के सबब इस का सालन खाने से भी हाथ

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआला उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है।

और मुंह में ना गवार बू हो जाती है। ऐसी सूरत में बू दूर किये बिग़ैर मस्जिद में न जाए। इस्तिन्जाख़ानों की जब स़फ़ाई की जाती है उस वक़्त बदबू काफ़ी फैलती है लिहाज़ा (इस्तिन्जाख़ाने और मस्जिद के दरमियान) इतना फ़ासिला रखना ज़रूरी है कि स़फ़ाई के मौक़अ़ पर भी **बदबू** मस्जिद में दाख़िल न हो सके। इस्तिन्जाख़ाने इह़ात़ए मस्जिद में खुलते हों तो ज़रूरतन दीवार पाट कर बाहर की जानिब दरवाज़े निकाल कर भी बदबू से मस्जिद को बचाया जा सकता है।

अपने लिबास वग़ैरा पर ग़ौर करने की आ़दत बनाइये : मस्जिद में **बदबू** ले जाना ह़राम है। नीज़ बदबू वाले शख़्स़ का दाख़िल होना भी **ह़राम** है। मस्जिद में किसी तिन्के से ख़िलाल भी न करें कि जो पाबन्दी से हर खाने के बा'द ख़िलाल के आ़दी नहीं होते उन के दांतों के ख़लाओं से बदबू निकलती है। मो'तकिफ़ फ़िनाए मस्जिद में भी उतनी दूर दांतों का ख़िलाल करे कि बदबू अस्ल मस्जिद में दाख़िल न हो। बदबू दार ज़ख़्म वाला या वोह मरीज़ जिस ने पेशाब की थेली (URINBAG ❖ STOOL BAG) लगाई हुई है वोह मस्जिद में दाख़िल न हो। इसी त़रह़ लेबॉरेटरी टेस्ट करवाने के लिये ली हुई ख़ून या पेशाब की शीशी, ज़बीह़ा के ब वक़्ते ज़ब्ह़ निकले हुए ख़ून से आलूद कपड़े वग़ैरा किसी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالی علیہ والہٖ وسلم जिसने येह कहा جزی اللہ عنا محمدا ما ھو اھلہ सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक उस के लिये नेकियां लिखते रहेंगे ।

चीज़ में छुपा कर भी मस्जिद के अन्दर नहीं ले जा सकते चुनान्चे फ़ुक़्हा ए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : मस्जिद में नजासत ले कर जाना अगर्चे इस से मस्जिद आलूदा न हो या जिस के बदन पर नजासत लगी हो उस को मस्जिद में जाना मन्अ़ है । (रद्दुल मुह़तार, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:614) "मस्जिद में किसी बरतन के अन्दर पेशाब करना या फ़स्द का ख़ून लेना भी जाइज़ नहीं ।" (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:614) पाक बदबू छुपी हुई हो जैसा कि अक्सर लोगों के बदन में पसीने की बदबू होती है मगर लिबास में छुपी हुई होती है तो इस सूरत में मस्जिद के अन्दर जाने में कोई ह़रज नहीं । इसी त़रह़ अगर रूमाल में पसीने वग़ैरा की बदबू है तो मस्जिद के अन्दर न निकाले, जेब ही में रहने दे, अगर इमामा या टोपी उतारने से पसीने या मैल कुचैल वग़ैरा की बदबू आती है तो मस्जिद में न उतारे । इसी त़रह़ कच्चा गोश्त या कच्ची मछली वग़ैरा इस त़रह़ पेक किये हुए हैं कि बदबू नहीं आती तो मस्जिद में ले जाने में ह़रज नहीं । चुनान्चे इस की मिस़ाल देते हुए **मुफ़स्सिरे** शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "हां अगर किसी सूरत से मिट्टी के तेल की बदबू उड़ा दी जाए या इस त़रह़ लेम्प वग़ैरा में बन्द किया जाए कि उस की बदबू ज़ाहिर न हो तो (मस्जिद में) जाइज़ है ।" (फ़तावा नईमिय्या, स़-फ़ह़ा:65) हर मुसल्मान को अपने मुंह, बदन, रूमाल, लिबास और जूती चप्पल वग़ैरा पर ग़ौर करते रहना चाहिये कि इस

में कहीं से बदबू तो नहीं आ रही और ऐसा मैला कुचैला लिबास पहन कर भी मस्जिद में न आएं जिस से लोगों को घिन आए । अफ़्सोस ! दुन्यवी अफ़्सरों वग़ैरा के पास तो उ़म्दा लिबास पहन कर जाएं और अपने प्यारे प्यारे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में ह़ाज़िरी के वक़्त नफ़ासत का कोई एहतेमाम न करें । मस्जिद में आते वक़्त इन्सान कम अज़ कम वोह लिबास तो पहने जो दा'वतों में पहन कर जाता है । मगर इस बात का ख़याल रखिये कि लिबास शरीअ़त व सुन्नत के मुत़ाबिक़ हो ।

मस्जिद में बच्चे को लाने की मुमा-न-अ़त : ***सुल्त़ाने मदीना,*** क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गंजीना, स़ाह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : मस्जिदों को **बच्चों** और **पागलों** और ख़रीदो फरोख़्त और झगड़े और **आवाज़ बुलन्द करने,** और हुदूद क़ाइम करने और तल्वार ख़ींचने से बचाओ । (इब्ने माजह, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:415, ह़दीस़:750)

ऐसा बच्चा जिस से नजासत *(या'नी पेशाब वग़ैरा कर देने)* ***का ख़त़रा हो और पागल को मस्जिद के अन्दर ले जाना ह़राम है अगर नजासत का ख़त़रा न हो तो मकरूह ।*** जो लोग जूतियां मस्जिद के अन्दर ले जाते हैं उन को इस का ख़याल रखना चाहिये कि अगर नजासत लगी हो तो स़ाफ़ कर लें और जूता पहने मस्जिद में चले जाना बे अदबी है । (रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:22, स़-फ़ह़ा:518)

बच्चा या **पागल** (या बेहोश या जिस पर जिन्न आया हुवा हो उस) को दम करवाने के लिये भी मस्जिद में ले जाने की शरीअ़त में इजाज़त नहीं। छोटे बच्चे को अच्छी त़रह़ कपड़े में लपेट कर बल्कि "पेकींग" कर के भी नहीं ला सकते। अगर आप बच्चे वग़ैरा को मस्जिद में लाने की भूल कर चुके हैं तो बराए करम ! फ़ौरन तौबा कर के आइन्दा न लाने का अ़ह्द कीजिये। हां फ़िनाए मस्जिद म–स़लन इमाम स़ाह़िब के हुजरे में बच्चे को ले जा सकते हैं जब कि मस्जिद के अन्दर से न गुज़रना पड़े।

गोश्त मछली बेचने वाले : **गोश्त** या मछली बेचने वाले के लिबास में **सख़्त बदबू** होती है लिहाज़ा उन को चाहिये कि फ़ारिग़ हो कर अच्छी त़रह़ नहाएं, स़ाफ़ लिबास ज़ैबे तन फ़रमाएं, ख़ुश्बू लगाएं और फिर मस्जिद में आएं। नहाना और ख़ुश्बू लगाना शर्त़ नहीं सिर्फ़ मश्वरतन अ़र्ज़ किया है, कोई भी ऐसी तरकीब करें कि बदबू मुकम्मल त़ौर पर ज़ाइल (या'नी दूर) हो जाए।

बा'ज़ ग़िज़ाओं की वजह से पसीने में बदबू : बा'ज़ ग़िज़ाएं ऐसी होंती हैं जिन के खाने से **बदबूदार पसीना** आता है ऐसे अफ़राद ग़िज़ाएं तब्दील करें।

मुंह की स़फ़ाई का त़रीक़ा : ***जो*** मिस्वाक और खाने के बा'द ख़िलाल की सुन्नत अदा नहीं करते और दांतों की स़फ़ाई करने में सुस्त होते हैं अक्स़र उन के मुंह **बदबूदार** होते हैं। सिर्फ़

रस्मी तौ़र पर मिस्वाक और ख़िलाल का तिन्का दांतों से मस कर देना काफ़ी नहीं होता। मसूढ़े ज़ख़्मी न हों इस एह़तियात़ के साथ मुम्किना सूरत में गि़ज़ा का एक एक ज़र्रा दांतों से निकालना होगा वरना दांतों के दरमियान गि़ज़ाई अज्ज़ा पड़े पड़े सड़ते और सख़्त सड़ांद का बाइस़ बनते रहेंगे। दांतों की स़फ़ाई का एक त़रीक़ा येह भी है कि कोई चीज़ खाने और चाय वग़ैरा पीने के बा'द और इस के इ़लावा भी जब जब मौक़अ़ मिले म-स़लन बैठे बैठे कोई काम कर रहे हैं उस वक़्त पानी का घूंट मुंह में भर लें और **जुम्बिशें** देते रहें या'नी हिलाते रहें, इस त़रह़ मुंह का कचरा और मैल कुचैल स़ाफ़ होता रहेगा। सादा पानी भी चल जाएगा और अगर नमक वाला नीम गर्म पानी हो तो येह اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ बेह्तरीन "माउथ वॉश" स़ाबित होगा।

दाढ़ी को बदबू से बचाइये : **दाढ़ी** में अक्स़र गि़ज़ाई अज्ज़ा अटक जाते हैं, सोने में बा'ज़ अवक़ात मुंह की **बदबू दार** राल भी दाख़िल हो जाती है और इस त़रह़ **बदबू** आती है लिहाज़ा मश्वरतन अ़र्ज़ है, कि हो सके तो रोज़ाना एक आध बार स़ाबुन से दाढ़ी धो ली जाए।

ख़ुश्बूदार तेल बनाने का आसाना त़रीक़ा :

सर में सरसौं का तेल डालने वाला सर से टोपी या इ़मामा उतारता है तो बा'ज़ अवक़ात **बदबू** का भपका निकलता है लिहाज़ा जिस से बन पड़े वोह उ़म्दा ख़ुश्बूदार तेल डाले ख़ुश्बूदार तेल

बनाने का एक आसान त़रीक़ा येह भी है कि खोपरे के तेल की शीशी में अपने पसन्दीदा इत्र के चन्द क़त़रे डाल कर ह़ल कर लीजिये। **खुश्बूदार तेल** तैयार है। (खुश्बूदार तेल बनाने के मख़्सूस़ एसेन्स भी खुश्बूयात की दुकानों से ह़ासिल किये जा सकते हैं) सर के बालों को वक़्तन फ़ वक़्तन स़ाबुन से धोते रहिये।

हो सके तो रोज़ नहाएं : **जिस** से बन पड़े वोह रोज़ाना नहाए कि काफ़ी ह़द तक बैरूनी बदन की **बदबू** ज़ाइल होगी और येह **सिह़्ह़त** के लिये भी मुफ़ीद है। (मगर **मो'तकिफ़ीन** मस्जिद के ग़ुस्ल खानों में बिला सख़्त ज़रूरत के न नहाएं कि नमाज़ियों के लिये वुज़ू के पानी की तंगी हो सकती है और मोटर भी बार बार चलने से ख़राब हो सकती है)

इमामा वग़ैरा को बदबू से बचाने का त़रीक़ा : *बा'ज़* इस्लामी भाई काफ़ी बड़े साइज़ के इमामा शरीफ़ बांधने का जज़्बा तो रखते हैं मगर स़फ़ाई रखने में कोताही कर जाते हैं और यूं बसा अवक़ात ला शुऊ़री में मस्जिद के अन्दर "बदबू" फैलाने के जुर्म में फंस जाते हैं। लिहाज़ा **म-दनी इल्तिजा** है कि इमामा, सरबन्द शरीफ़ और चादर इस्ते'माल करने वाले इस्लामी भाई ह़त्तल इम्कान हर हफ़्ते और मौसिम के ए'तिबार से या ज़रूरतन मज़ीद जल्दी जल्दी इन्हें धोने की तरकीब बनाए। वरना मैल कुचैल, पसीना और तेल वग़ैरा के सबब इन चीज़ों में **बदबू** हो जाती है, अगर्चे खुद को मह़सूस नहीं होती मगर दूसरों को बदबू के सबब काफ़ी घिन

आती है, ख़ुद को इस लिये पता नहीं चलता कि जिस के पास मुस्तक़िलन कोई मख़्सूस़ ख़ुश्बू या **बदबू** हो इस से उस की नाक अट जाती है।

इमामा कैसा होना चाहिये : **सख़्त** टोपी पर बंधे बंधाए इमामे का इस्ते'माल भी इस के अन्दर **बदबू** पैदा कर सकता है। अगर हो सके तो बारीक मलमल के हल्के फुल्के कपड़े का इमामा शरीफ़ इस्ते'माल कीजिये और इस के लिये कपड़े की ऐसी टोपी पहनिये जो सर से चिपड़ी हुई हो। कि ऐसी टोपी पहनना भी सुन्नत है। बंधा बंधाया इमामा शरीफ़ सर पर रख लेने और उतार कर रख देने के बजाए बांधते वक़्त **सुन्नत** के मुत़ाबिक़ एक एक पेच कर के बांधिये और इसी त़रह़ खोलने की तरकीब कीजिये। इस त़रह़ करने से ब हुक्मे अह़ादीस़ हर बार बांधते हुए हर पेच पर **एक नेकी** और **एक नूर** मिलेगा और हर बार उतारने में (जब कि दोबारा बांधने की भी निय्यत हो तो) एक एक गुनाह उतरेगा। (माख़ूज़ अज़ कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:15, स़-फ़ह़ा:132,133, अल हदीस:41126,41138, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या, बैरूत) और बार बार हवा लगने की वजह से اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **बदबू** भी दूर होगी। इमामा व सरबन्द शरीफ़, चादर और लिबास वग़ैरा को उतार कर धूप में डालने से भी पसीने वग़ैरा की **बदबू** दूर हो सकती है। नीज़ इन पर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ उ़म्दा इ़त्र लगाते रहना भी बदबू को दूर कर सकता है। ज़िम्नन इ़त्र लगाने की निय्यतें भी मुला ह़ज़ा फ़रमा लीजिये :

"दुन्या पसन्द करती है इत्रे गुलाब को लेकिन मुझे नबी ﷺ का पसीना पसन्द है" के सेंतालीस हुरूफ़ की निस्बत से ख़ुश्बू लगाने की 47 निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **: "मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है ।"** (त़-बरानी मो'जमे कबीर, ह़दीस़:5942, जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:185, दारे एह़्याउत्तुरासुल अ़-रबी, बैरूत)

(**1**) सुन्नते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है इस लिये ख़ुश्बू लगाऊंगा (**2**) लगाने से क़ब्ल बिस्मिल्लाह (**3**) लगाते हुए दुरूद शरीफ़ (**4**) लगाने के बा'द अदाए शुक्रे ने'मत की निय्यत से اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن कहूंगा (**5**) मलाइका और (**6**) मुसल्मानों को फ़रह़त पहुंचाऊंगा (**7**) अ़क़्ल बढ़ेगी तो अह़कामे शर-ई याद करने और सुन्नतें सीखने पर कुव्वत ह़ासिल करूंगा (इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : उ़म्दा ख़ुश्बू लगाने से अ़क़्ल बढ़ती है) (**8**) लिबास वग़ैरा से बदबू दूर कर के मुसल्मानों को ग़ीबत के गुनाहों से बचाऊंगा (क्यूंकि बिला इजाज़ते शर-ई किसी मुसल्मान के बारे में पीछे से म-स़लन इस त़रह़ से केहना कि "इस के लिबास या हाथों या मुंह से बदबू आ रही थी," ग़ीबत है) (**9**) मौक़अ़ की मुना-सबत से येह निय्यतें भी की जा सकती हैं म-स़लन (**10**) नमाज़ के लिये ज़ीनत ह़ासिल करूंगा (**11**) मस्जिद (**12**) नमाज़े तहज्जुद (**13**) जुमुआ़ (**14**) पीर शरीफ़ (**15**) र-मज़ानुल मुबारक (**16**) ईदुल फ़ित्र (**17**) ईदुल अज़्ह़ा (**18**) शबे मीलाद (**19**) ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (**20**) जुलूसे मीलाद (**21**) शबे मे'राजुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(**22**) शबे बराअत (**23**) ग्यारहवीं शरीफ़ (**24**) यौमे रज़ा (**25**) दर्से कुरआन व (**26**) ह़दीस़ (**27**) तिलावत (**28**) अवरादो वज़ाइफ़ (**29**) दुरूद शरीफ़ (**30**) दीनी किताब का मुत़ा-लआ़ (**31**) तदरीसे इ़ल्मे दीन (**32**) ता'लीमे इ़ल्मे दीन (**33**) फ़तवा नवेसी (**34**) दीनी कुतुब की तस्नीफ़ व तालीफ़ (**35**) सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ (**36**) इजतिमाए ज़िक्रो ना'त (**37**) कुरआन ख़्वानी (**38**) दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत (**39**) अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत (**40**) सुन्नतों भरा बयान करते वक़्त (**41**) आ़लिम (**42**) मां (**43**) बाप (**44**) मोमिने स़ालेह़ (**45**) पीर स़ाह़िब (**46**) मूए मुबारक की ज़ियारत और (**47**) मज़ार शरीफ़ की ह़ाज़िरी के मौक़अ़ पर भी ता'ज़ीम की निय्यत से ख़ुश्बू लगाई जा सकती है । जितनी अच्छी अच्छी निय्यतें करेंगे उतना ही ज़ियादा स़वाब मिलेगा । जब कि निय्यत का मौक़अ़ भी हो और वोह निय्यत शरअ़न दुरुस्त भी हो । ज़ियादा याद न भी रहें तो कम अज़ कम दो[2] तीन[3] निय्यतें कर ही लेनी चाहियें ।

ऐ हमारे प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आज तक हम से जितनी बार भी मस्जिद में बदबू ले जाने का गुनाह हुवा हो उस से तौबा करते हैं और येह अ़ज़्म करते हैं कि आइन्दा कभी भी मस्जिद में किसी त़रह़ की बदबू नहीं ले जाएंगे ।

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें मसाजिद को ख़ुश्बूदार रखने की सआ़दत दे । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें हर

तृरह़ की ज़ाहिरी बातिनी बदबूओं से पाक हो कर मस्जिद में ह़ाज़िरी की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे ख़ुश्बूदार सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के स़दक़े हमें गुनाहों की बदबूओं से नजात दे और ख़ुश्बूओं से महकती हुई जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मुअ़त्तृर मुअ़त्तृर मह़बूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ौस नसीब फ़रमा ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

वल्लाह जो मिल जाए मेरे गुल का पसीना
मांगे न कभी इत्र न फिर चाहे दुल्हन फूल

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़िनाए मस्जिद और मो 'तकिफ़ : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** फ़िनाए मस्जिद में जाने से ए'तिकाफ़ फ़ासिद नहीं होता । मो'तकिफ़ बिग़ैर किसी ज़रूरत के भी फ़िनाए मस्जिद में जा सकता है । फ़िनाए मस्जिद से मुराद वोह जगहें हैं जो इह़ातृए मस्जिद (उ़र्फ़े आ़म में जिस को मस्जिद कहा जाता है) में वाक़ेअ़ हों और मस्जिद की मस़ालेह़ या'नी ज़रूरियाते मस्जिद के लिये हों, जैसे मनारा, वुज़ू ख़ाना, इस्तिन्जा ख़ाना, ग़ुसुल ख़ाना, मस्जिद से मुत्तसिल मद्रसा, मस्जिद से मुल्ह़क़ इमाम व मुअज़्ज़िन वग़ैरा के हुजरे, जूते उतारने की जगह वग़ैरा येह मक़ामात बा'ज़ मुआ़-मलात में हुक्मे मस्जिद

में हैं और बा'ज़ मुआ-मलात में ख़ारिजे मस्जिद। म-स़लन यहां पर जुनुबी (या'नी जिस पर गुस्ल फ़र्ज़ हो) जा सकता है। इसी त़रह़ इक्तिदा और ए'तिकाफ़ के मुआ-मले में येह मक़ामात हुक्मे मस्जिद में हैं। मो'तकिफ़ बिला ज़रूरत भी यहां जा सकता है। गोया वोह मस्जिद ही के किसी एक हिस्से में गया।

मो'तकिफ़ फ़िनाए मस्जिद में जा सकता है :

ह़ज़रते स़दरुश्शरीअ़ह, स़ाहिबे बहारे शरीअ़त ह़ज़रते मौलाना अम्जद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, "फ़िनाए मस्जिद जो जगह मस्जिद से बाहर इस से मुल्ह़क़ ज़रूरियाते मस्जिद के लिये है, म-स़लन जूता उतारने की जगह और गुस्ल ख़ाना वग़ैर इन में जाने से ए'तिकाफ़ नहीं टूटेगा।" मज़ीद आगे फ़रमाते हैं, "फ़िनाए मस्जिद इस मुआ-मले में हुक्मे मस्जिद में है।" (फ़तावा अम्जदिय्या, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:399)

इसी त़रह़ मनारा भी फ़िनाए मस्जिद है। अगर इस का रास्ता मस्जिद की चार दीवारी (बाउन्ड्री वॉल) के अन्दर हो तो मो'तकिफ़ बिला तकल्लुफ़ इस पर जा सकता है और अगर मस्जिद के बाहर से रास्ता हो तो सिर्फ़ अज़ान देने के लिये जा सकता है कि अज़ान देना ह़ाजते शर-ई है।

आ'ला ह़ज़रत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का फ़त्वा : मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "बल्कि जब वोह मदारिसे

मु-तअ़ल्लिक़े मस्जिद हुदूदे मस्जिद के अन्दर हैं, उन में रास्ता फ़ासिल नहीं (जो इन मदारिस को मस्जिद की चार दीवारी से जुदा कर दे) सिर्फ़ एक फ़सील (या'नी दीवार) से सह़नों का इम्तियाज़ कर दिया है तो इन में जाना मस्जिद से बाहर जाना ही नहीं, यहां तक कि एसी जगह मो'तकिफ़ का जाना जाइज़ कि वोह गोया मस्जिद ही का एक क़ित़्आ़ (या'नी हि़स्सा है) ।"

रद्दुल मुह़तार (जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:436) में "बदाएउ़स्सनाएअ़" के ह़वाले से है, अगर मो'तकिफ़ मनारे पर चढ़ा तो बिला इख़्तिलाफ़ इस का ए'तिकाफ़ फ़ासिद न होगा क्यूंकि मनारा (मो'तकिफ़ के लिये) मस्जिद ही (के हुक्म) में है। (फ़तावा र-ज़विय्या जदीद, जिल्द:7, स़-फ़ह़ा:453)

देखा आपने ! मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल्ह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने मस्जिद से मुल्ह़क़ मदारिस में भी मो'तकिफ़ के लिये बिग़ैर ह़ाजते शर-ई जाने को जाइज़ रखा और इन मदारिस को इस मुआ़-मले में मस्जिद ही का एक क़ित़्आ़ (या'नी हि़स्सा) क़रार दिया।

मस्जिद की छत पर चढ़ना : सह़न मस्जिद का हि़स्सा है लिहाज़ा मो'तकिफ़ को सह़ने मस्जिद में आना जाना बैठना रहना

मुत़्लक़न जाइज़ है। मस्जिद की छत पर भी आ जा सकता है लेकिन येह उस वक़्त है कि छत पर जाने का रास्ता मस्जिद के अन्दर से हो। अगर ऊपर जाने के लिये सीढ़ियां इह़ात़ए मस्जिद से बाहर हों तो मो'तिकफ़ नहीं जा सकता। अगर जाएगा तो ए'तिकाफ़ फ़ासिद हो जाएगा। येह भी याद रहे कि मो'तकिफ़ ग़ैरे मो'तकिफ़ दोनों को मस्जिद की छत पर बिला ज़रूरत चढ़ना मकरूह है कि येह बे अ-दबी है।

मो'तकिफ़ के मस्जिद से बाहर निकलने की सूरतें :

ए'तिकाफ़ के दौरान दो वुजूहात की बिना पर (इह़ात़ए) मस्जिद से बाहर निकलने की इजाज़त है।

(1) ह़ाजते शर-ई (2) ह़ाजते त़ब्ई

(1) ह़ाजते शर-ई : ***ह़ाजते*** शर-ई या'नी जिन अह़काम व उमूर की अदाएगी शर-अ़न ज़रूरी हो। और मो'तकिफ़, ए'तिकाफ़ गाह में इन को अदा न कर सके, उन को ह़ाजाते शर-ई केहते हैं। म-स़लन नमाज़े जुमुआ़ और अज़ान वग़ैरा।

"करम" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से ह़ाजते शर-ई के मु-तअ़ल्लिक़ 3 पैरे

मदीना 1: ***अगर*** मनारे का रास्ता ख़ारिजे मस्जिद (या'नी इह़ात़ए मस्जिद से बाहर) हो तो भी अज़ान के लिये मो'तकिफ़ भी जा सकता है क्यूंकि अब येह मस्जिद से निकलना ह़ाजते शर-ई की वजह से है। (रद्दुल मुह़तार, जिल्द::1, स़-फ़ह़:436)

मदीना 2: ***अगर*** ऐसी मस्जिद में ए'तिकाफ़ कर रहा हो जिस में

जुमुआ़ की नमाज़ न होती हो तो मो'तकिफ़ के लिये उस मस्जिद से निकल कर जुमुआ़ की नमाज़ के लिये ऐसी मस्जिद में जाना जाइज़ है जिस में जुमुआ़ की नमाज़ होती हो। और अपनी ए'तिकाफ़ गाह से अन्दाज़न ऐसे वक़्त में निकले कि ख़ुत्बा शुरूअ़ होने से पहले वहां पहोंच कर चार4 रक्अ़त सुन्नत पढ़ सके और नमाज़े जुमुआ़ के बा'द इतनी देर मज़ीद ठहर सकता है कि चार4 या छे6 रक्अ़त पढ़ ले। और अगर इस से ज़ियादा ठहरा रहा बल्कि बाक़ी ए'तिकाफ़ अगर वहीं पूरा कर लिया तब भी ए'तिकाफ़ नहीं टूटेगा। लेकिन नमाज़े जुमुआ़ के बा'द छे6 रक्अ़त से ज़ियाद ठहरना मकरूह है। (दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:437)

मदीना 3: ***अगर*** अपने मह़ल्ले की ऐसी मस्जिद में ए'तिकाफ़ किया जिस में जमाअ़त न होती हो तो अब जमाअ़त के लिये निकलने की इजाज़त नहीं क्यूंकि अब अफ़्ज़ल येही है कि बिग़ैर जमाअ़त ही इस मस्जिद में नमाज़ अदा की जाए। (जद्दुल मुम्तार, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:222)

(2) ह़ाजते त़ब्ई : ***ह़ाजते*** त़ब्ई या'नी वोह ज़रूरत जिस के बिग़ैर चारा न हो म-स़लन पेशाब, पाख़ाना वग़ैरा।

ह़ाजते त़ब्ई के मु-तअ़ल्लिक़ 6 पैरे

मदीना 1: ***इह़ात़ए*** मस्जिद में अगर पेशाब वग़ैरा के लिये कोई जगह मख़्सूस़ न हो तो फिर इन चीज़ों के लिये मस्जिद से

निकल कर जा सकते हैं।

(दुर्रे मुख़्तार मअ़ रद्दिल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:435)

मदीना 2: ***अगर*** मस्जिद में वुज़ूख़ाना या ह़ौज़ वग़ैरा न हो तो मस्जिद से वुज़ू के लिये जा सकते हैं लेकिन येह इस सूरत में है जब किसी लगन या टब में इस त़रह़ वुज़ू करना मुम्किन न हो कि वुज़ू के पानी की कोई छींट (अस्ल) मस्जिद में न पड़े। (रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:435)

मदीना 3: ***एह़तिलाम*** होने की सूरत में अगर इह़ात़ए मस्जिद में गुस्लख़ाना नहीं और न ही किसी त़रह़ मस्जिद में गुस्ल करना मुम्किन हो तो गुस्ले जनाबत के लिये मस्जिद से निकल कर जा सकते हैं। (रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:435)

मदीना 4: ***क़ज़ाए*** ह़ाजत के लिये अगर घर गए तो त़हारत कर के फ़ौरन चले आइये, ठहरने की इजाज़त नहीं। और अगर आप का मकान मस्जिद से दूर है और आप के दोस्त का मकान क़रीब तो येह ज़रूरी नहीं कि दोस्त के यहां क़ज़ाए ह़ाजत को जाएं। बल्कि अपने मकान पर भी जा सकते हैं। और अगर ख़ुद आप के अपने दो2 मकान हैं एक नज़्दीक, दूसरा2 दूर, तो नज़्दीक वाले मकान में जाइये। बा'ज़ मशाइख़ رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं, दूर वाले मकान में जाने से ए'तिकाफ़ फ़ासिद हो जाएगा। (आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:212)

मदीना 5: ***आ़म*** त़ौर पर नमाज़ियों की सहूलत के लिये मस्जिद के

इह़ाते़ में बैतुल ख़ला, गुस्ल ख़ाना, इस्तिन्जा ख़ाना और वुज़ूख़ाना होता है। लिहाज़ा ***मो'तकिफ़*** इन्हीं को इस्ते'माल करे।

मदीना 6: ***बा'ज़*** मसाजिद में इस्तिन्जा ख़ानों, गुस्ल ख़ानों वग़ैरा के लिये रास्ता इह़ात़ए मस्जिद (या'नी फ़िनाए मस्जिद के भी) बाहर से होता है लिहाज़ा इन इस्तिन्जा ख़ानों और गुस्ल ख़ानों वग़ैरा में ह़ाजते त़ब्ई के इलावा नहीं जा सकते।

ए'तिकाफ़ तोड़ने वाली चीज़ों का बयान : अब उन बातों का बयान किया जाता है जिन के करने से ए'तिकाफ़ टूट जाता है जहां जहां मस्जिद से निकलने पर ए'तिकाफ़ टूटने का हुक्म है वहां इह़ात़ए मस्जिद (या'नी इमारते मस्जिद की बाउन्ड्री वॉल) से निकलना मुराद है। उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत फ़रमाती हैं, "मो'तकिफ़ के लिये स़ह़ीह़ त़रीक़ा येह है कि वोह न किसी मरीज़ की इयादत को जाए, न किसी जनाज़े में शामिल हो, न किसी औ़रत को छूए, न उस के साथ मिलाप करे और न ही ना गुज़ीर ज़रूरियात के सिवा किसी भी ज़रूरत के लिये बाहर निकले।"

(सु-नने अबी दावूद, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:492, ह़दीस़:2473)

"राह़ते क़ल्बो जिगर मदीना" के ***सोलह ह़ुरूफ़ की निस्बत से ए'तिकाफ़ तोड़ने वाली चीज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ 16 पैरे***

मदीना 1: ***जिन*** ज़रूरियात का पीछे ज़िक्र किया गया है उन के सिवा

किसी भी मक़्सद से अगर आप हुदूदे मस्जिद (या'नी इहातए मस्जिद) से बाहर निकल गए, ख़्वाह येह निकलना एक ही लम्हे के लिये हो तो इस से ए'तिकाफ़ टूट जाएगा।

(मराक़िल फ़लाह, स-फ़्हा:179)

मदीना 2: ***वाज़ेह़*** रहे कि मस्जिद से निकलना उस वक़्त कहा जाएगा जब पांव मस्जिद से इस त़रह़ बाहर निकल जाएं कि उसे उ़र्फ़न मस्जिद से निकलना कहा जा सके। लिहाज़ा अगर सिर्फ़ सर मस्जिद से निकाल दिया तो इस से ए'तिकाफ़ फ़ासिद नहीं होगा। (अल बह़्रुर्रहाइक़, जिल्द:2, स-फ़्हा:530)

मदीना 3: ***बिला ज़रूरते*** शर-ई मस्जिद से बाहर निकलना ख़्वाह जान बूझ कर हो या भूल कर, या ग़-लती से, बहर सूरत इस से ए'तिकाफ़ टूट जाता है। अलबत्ता अगर भूल कर या ग़-लती से बाहर निकलेंगे तो इस से ए'तिकाफ़ तोड़ने का गुनाह नहीं होगा। (रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स-फ़्हा:438)

मदीना 4: ***इसी*** त़रह़ आप शर-ई ज़रूरत से (इहातए मस्जिद से) बाहर निकले, लेकिन ज़रूरत से फ़ारिग़ होने के बा'द एक लम्हे के लिये भी बाहर ठहर गए तो इस से भी ए'तिकाफ़ टूट जाएगा। (हाशियतुत्तह़त़ावी अल मराक़ी, स-फ़्हा:703)

मदीना 5: ***ए'तिकाफ़*** के लिये चूंकि रोज़ा शर्त़ है, इस लिये रोज़ा तोड़ देने से भी ए'तिकाफ़ टूट जाता है। ख़्वाह येह रोज़ा

किसी उ़ज़्र से तोड़ा हो या बिला उ़ज़्र, जानबूझ कर तोड़ा हो या ग़-लती से टूटा हो, हर सूरत में ए'तिकाफ़ टूट जाता है। ग़-लती से रोज़ा टूटने का मत़लब येह है कि रोज़ा तो याद था लेकिन बे इख़्तियार कोई ऐसा अ़मल हो गया जो रोज़े के मुनाफ़ी था। म-स़लन सुब्हे स़ादिक़ त़ुलूअ़ होने के बा'द तक खाते रहे, या ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले ही अज़ान शुरूअ़ हो गई या साइरन शुरूअ़ हो गया और इफ़्त़ार कर लिया फिर पता चला कि अज़ान व साइरन वक़्त से पहले ही हो गए थे। इस त़रह़ भी रोज़ा टूट जाएगा। या रोज़ा याद होने के बा वुजूद कुल्ली करते वक़्त बे इख़्तियार पानी ह़ल्क़ में चला गया, तो इन तमाम सूरतों में रोज़ा भी जाता रहा और ए'तिकाफ़ भी टूट गया।

मदीना 6: ***अगर*** रोज़ा ही याद न रहा और भूल कर कुछ खा पी लिया, तो इस से न रोज़ा टूटा और न ही ए'तिकाफ़।

मदीना 7: ***मो'तकिफ़*** इस्लामी भाई और इस्लामी बहन येह ज़ाबित़ा याद रखें कि वोह तमाम उमूर जिन के इर्तिकाब से रोज़ा टूट जाता है, ए'तिकाफ़ भी टूट जाता है।

मदीना 8: ***जिमाअ़*** करने से भी ए'तिकाफ़ टूट जाता है। ख़्वाह येह जिमाअ़ जान बूझ कर करे या भूल कर, दिन में करे या रात में, मस्जिद में करे या मस्जिद से बाहर, इस से इन्ज़ाल हो या न हो, हर सूरत में ***ए'तिकाफ़*** टूट जाता है।

(दुर्रे मुख़्तार मअ़ रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:442)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

मदीना 9: ***बोस*** व कनार ए'तिकाफ़ की ह़ालत में ना जाइज़ है और अगर इस से इन्ज़ाल हो जाए तो ए'तिकाफ़ भी टूट जाता है। लेकिन अगर इन्ज़ाल न हो तो ना जाइज़ होने के बा वुजूद ***ए'तिकाफ़*** नहीं टूटता।(रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:442)

मदीना 10: ***पेशाब*** करने के लिये (इह़ात़ए मस्जिद से बाहर) गया था। क़र्ज़ ख़्वाह ने रोक लिया, ***ए'तिकाफ़*** फ़ासिद हो गया। (आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:212)

मदीना 11: ***मो'तकिफ़*** अगर बेहोश या मज्नून (या'नी पागल) हो गया और येह बेहोशी या जुनून इतना तूल पकड़ जाए कि रोज़ा न हो सके तो ***ए'तिकाफ़*** जाता रहा और क़ज़ा वाजिब है। अगर्चे कई साल के बा'द सिह़्ह़त मन्द हो।

(आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:213)

मदीना 12: ***मो'तकिफ़*** मस्जिद ही में खाए, पिये। इन उमूर के लिये मस्जिद से बाहर जाएगा तो ***ए'तिकाफ़*** टूट जाएगा। (तब्यीनल ह़क़ाइक़, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:229) मगर येह ख़याल रहे कि मस्जिद आलूदा न हो।

मदीना 13: अगर आप के लिये खाना लाने वाला कोई नहीं तो फिर आप खाना लाने के लिये मस्जिद से बाहर जा सकते हैं। लेकिन मस्जिद में ला कर खाना खाइये।

(अल बह़्रुर्राइक़, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:530)

मदीना 14: मरज़ के इ़लाज के लिये मस्जिद से निकले तो ***ए'तिकाफ़*** फ़ासिद हो गया। (रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:438)

मदीना 15: ***अगर*** किसी मो'तकिफ़ को नींद की हालत में चलने की बीमारी हो और वोह नींद में चलते चलते मस्जिद से निकल गया तो ए'तिकाफ़ फ़ासिद हो जाएगा।

मदीना 16: ***कोई*** बद नसीब दौराने ए'तिकाफ़ ***मुरतद*** हो गया (نعوذ باللہ عزوجل) तो ***ए'तिकाफ़*** बातिल है और फिर अगर ***अल्लाह*** عزوجل मुरतद को ईमान की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाए तो फ़ासिद शुदा ए'तिकाफ़ की क़ज़ा नहीं। क्यूंकि इर्तिदाद (या'नी इस्लाम से फिर जाने) से ज़मानए इस्लाम के तमाम आ'माल ज़ाएअ़ हो जाते हैं।

(दुर्रे मुख़्तार मअ़ रद्दुल मुहतार, जिल्द:3, स-फ़ह:437)

मेरी कमर का दर्द चला गया

: ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** ए'तिकाफ़ की अ़-ज़मत के क्या केहने और अगर ए'तिकाफ़ में आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत मुयस्सर आ जाए तो इस की ब-र-कत व मन्फ़अ़त की तो क्या ही बात है ! चुनान्चे ***अ़त्तारआबाद*** (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई ने कुछ इस तरह बयान दिया : मैं आवारा गर्द और गन्दी ज़ेहनिय्यत का मालिक था, दोस्तों की मंडलियों में फ़ोहूश बातें करना फिर ऊपर से ज़ोरदार क़हक़हे मारना मेरा ख़ास मश्ग़ला था। एक ना शाइस्ता गुनाह की नहूसत से मुस्तक़िल तौर पर मेरी ***क़मर में दर्द*** रहने लगा था, जो किसी तरह के इलाज से भी न जाता था। मेरी क़िस्मत का सितारा यूं चमका कि र-मज़ानुल मुबारक (सिने 1426 हिजरी, सिने 2005 इस्वी) बा'ज़ शनासा इस्लामी भाई एक दम मेरे पीछे

पड़ गए कि तुम को हर ह़ाल में हमारे साथ ***इज्तिमाई ए'तिकाफ़*** में शिर्कत करना है । मैं टालता रहा मगर वोह टस से मस न हुए, मजबूरन मुझे "हां" करनी पड़ी । मैं आख़िरी अ़-श-रए र-मज़ानुल मुबारक (सिने 1426 हिजरी) में ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ ***मेमन मस्जिद*** (अ़त्तारआबाद) में मो'तकिफ़ हो गया । मैं गोया किसी नई दुन्या में आ गया था, पांचों[5] नमाज़ों की बहारें, सुन्नतों भरे पुरसोज़ बयानात, रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़एं, सुन्नतों भरे ह़ल्क़े फिर ऊपर से ***आ़शिक़ाने रसूल*** की शफ़्क़तें और इन की ब-र-कतें اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ***दौराने ए'तिकाफ़ मेरी कमर का दर्द बिग़ैर किसी दवा के ख़ुद बख़ुद ठीक हो गया*** और मेरे क़ल्ब में म-दनी इन्क़िलाब बर्पा हो गया । मैं ने गुनाहों से तौबा की, चेहरे को म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की मुबारक निशानी दाढ़ी से आरास्ता किया और सब्ज़ इमामा शरीफ़ से सर भी सर सब्ज़ हो गया । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ***41 दिन का म-दनी क़ाफ़िला कोर्स*** करने की सआ़दत ह़ासिल की और अब दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों की धूमें मचाने के लिये कोशां हूं ।

हो ठीक दर्दे कमर, इन शाء اللہ عزوجل म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मरज़े इ़स्यां से छुटकारा चाहो अगर, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

चुप का रोज़ा : ***हुज़ूरे पुरनूर,*** शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने "सौ़मे विसा़ल" या'नी बिग़ैर स-ह़री व इफ़्त़ार के मुसल्सल रोज़ा

रखने और "स़ौमे सुकूत" या'नी "चुप का रोज़ा" रखने से मन्अ़ फ़रमाया। (मुस्नदे इमामे आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ, स़-फ़ह़ा:110)

अ़वाम में येह ग़लत़ फ़ह्मी पाई ज़ाती है कि मो'तकिफ़ को मस्जिद में पर्दे लगा कर इस के अन्दर बिल्कुल चुपचाप पड़े रहना चाहिये। ह़ालांकि ऐसा नहीं। पर्दे बेशक लगाइये कि ***ए'तिकाफ़*** के लिये ख़ैमा लगाना ***सुन्नत*** है, पर्दे से इ़बादत में यक्सूई ह़ासिल होती है और बिग़ैर पर्दा लगाए भी ***ए'तिकाफ़*** दुरुस्त है। फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى फ़रमाते हैं : ***ए'तिकाफ़*** की ह़ालत में ख़ामोशी को इ़बादत समझ कर अपनाए रखना ***मकरूहे तह़रीमी*** (ना जाइज़) है और अगर चुप रहना स़वाब की बात समझ कर न हो तो कोई मुज़ायक़ा नहीं। और बुरी बात से बचने के लिये चुप रहना तो आ'ला द-रजे की चीज़ है। क्यूंकि बुरी बात ज़बान से न निकालना वाजिब है और निकालना गुनाह। और जिस बात में न स़वाब हो न गुनाह या'नी मुबाह़ बात भी मो'तकिफ़ को मकरूह है। मगर ज़रूरतन इजाज़त है और बिला ज़रूरत मस्जिद में मुबाह़ बात नेकियों को इस त़रह़ खा जाती है जैसे आग लकड़ी को।

(दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:441)

मो'तकिफ़ से गुनाह सरज़द होना : ***बदनिगाही,*** बद गुमानी, बिला इजाज़ते शर-ई किसी की बे इ़ज़्ज़ती करना, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, ह़सद किसी पर तोहमत या बोहतान बांधना किसी का मज़ाक़ उड़ाना, दिल आज़ारी करना, फ़ोह़्श बातें करना,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह तआ़ला उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है।

गाने बाजे सुनना, गालम गलोच करना, ना ह़क़ लड़ाई झगड़ा करना, दाढ़ी मुंडाना या एक मुट्ठी से घटाना येह सब गुनाह है और ***मस्जिद*** में ! वोह भी ह़ालते ***ए'तिकाफ़*** में ! ! ज़ाहिर है कि और भी सख़्त गुनाह है। इन गुनाहों से तौबा, सच्ची तौबा, हमेशा के लिये तौबा करनी चाहिये।

अगर किसीने ह़ालते ***ए'तिकाफ़*** में مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कोई नशा आवर चीज़ रात में इस्ते'माल की तो इस से ***ए'तिकाफ़*** नहीं टूटेगा। नशा करना ह़राम है और ***ए'तिकाफ़*** में तो ज़ियादा गुनाह है। तौबा करनी चाहिये।

"या मुस्त़फ़ा" के सात ह़ुरूफ़ की निस्बत से मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये ए'तिकाफ़ तोड़ने की सात[7] जाइज़ सूरतें

इन तमाम सूरतों में ए'तिकाफ़ फ़ासिद हो जाएगा और इस की क़ज़ा भी लाज़िम होगी लेकिन गुनाह न होगा।

मदीना 1: ***ए'तिकाफ़*** के दौरान कोई ऐसी बीमारी पैदा हो गई जिस का इलाज मस्जिद से बाहर निकले बिग़ैर नहीं हो सकता तो ***ए'तिकाफ़*** तोड़ना जाइज़ है।

(रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:438)

मदीना 2: ***कोई*** आदमी डूब रहा हो या आग में जल रहा हो तो

ए'तिकाफ़ तोड़ कर डूबते हुए को बचाएं और जलते हुए की आग बुझाएं । (रद्दुल मुहतार, जिल्दः3, स-फ़हाः438)

मदीना 3: ***जिहाद*** के लिये ए'लाने आम कर दिया जाए (या'नी जिहाद फ़र्ज़े ऐन हो जाए) तो ***ए'तिकाफ़*** को तोड़ कर जिहाद में शिर्कत करें । (रद्दुल मुहतार, जिल्दः3, स-फ़हाः438)

मदीना 4: ***अगर*** जनाज़ा आ जाए, कोई और नमाज़ पढ़ने वाला नहीं है तो ***ए'तिकाफ़*** तोड़ कर (इहातए मस्जिद से बाहर निकल कर भी) नमाज़े जनाज़ा पढ़ सकते हैं ।

(रद्दुल मुहतार, जिल्दः3, स-फ़हाः438)

मदीना 5: ***कोई*** शख़्स ज़बरदस्ती निकाल कर बाहर ले जाए म-सलन हुकूमत की तरफ़ से गरिफ़्तारी का वॉरन्ट आ जाए तो भी ***ए'तिकाफ़*** तोड़ना जाइज़ है जब कि फ़ौरन दूसरी मस्जिद में जाना मुम्किन न हो ।

(रद्दुल मुहतार, जिल्दः3, स-फ़हाः438)

मदीना 6: ***अगर*** अपने अज़ीज़ महरम या ज़ौजा का इन्तिक़ाल हो जाए तो नमाज़े जनाज़ा के लिये ***ए'तिकाफ़*** तोड़ सकते हैं । (मगर क़ज़ा करना वाजिब हो जाएगा)

(हाशियतुत्तहतावी अलल मराक़ी, स-फ़हाः703)

मदीना 7: ***आप*** अगर किसी मुआ-मले में गवाह हो और आप की गवाही पर फ़ैसला मौक़ूफ़ हो तो आप के लिये येह जाइज़ है कि ए'तिकाफ़ तोड़ कर गवाही देने के लिये जाएं और हक़दार के हक़ को ज़ाएअ होने से बचाएं । (रद्दुल मुहतार, जिल्दः3, स-फ़हाः438)

ह़ाजत रवाई और एक दिन के ए'तिकाफ़ की फ़ज़ीलत : मुह़द्दिसीने किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان ने मह़बूबे रब्बे जुल जलाल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़ाहिरी इन्तिक़ाले पुर मलाल के थोड़े ही अ़रसे के बा'द की एक निहायत ही रिक़्क़त अंगेज़ ह़िकायत नक़्ल की है । चुनान्चे मन्क़ूल है, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ***मस्जिदे न-बविय्यिश्शरीफ़*** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पुरनूर और रह़मत से मा'मूर फ़ज़ाओं में मो'तकिफ़ थे । एक निहायत ही ग़मगीन शख़्स़ आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हुवा । आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने हमदर्दी के साथ वज्हे ग़म दरयाफ़्त की उस ने अ़र्ज़ की, "ऐ ***रसूलुल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचाजान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के लख़्ते जिगर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ! फुलां का मेरे ज़िम्मे कुछ ह़क़ है ।" फिर सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार की त़रफ़ इशारा करते हुए केहने लगा, "इस रोज़ए अन्वर के अन्दर तशरीफ़ फ़रमा नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हुर्मत (या'नी इ़ज़्ज़त) की क़सम ! मैं उस का ह़क़ अदा करने की इस्तित़ाअ़त (या'नी त़ाक़त) नहीं रखता ।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हारी सिफ़ारिश करूं ?" उस ने अ़र्ज़ की, "जिस त़रह़ आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ बेहतर समझें ।" चुनान्चे इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا येह सुन कर फ़ौरन ***मस्जिदे***

नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام से बाहर निकल आए येह देख कर वोह शख़्स मु-तअ़ज्जिब हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा, "आ़लीजाह! क्या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ ***ए'तिकाफ़*** भूल गए ?" जवाबन इर्शाद फ़रमाया, "ना, ***ए'तिकाफ़*** नहीं भूला।" फिर म-दनी ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे नूरबार की त़रफ़ इशारा करते हुए अश्कबार हो गए, क्यूं कि ***सरकारे नामदार*** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जुदा हुए ज़ियादा अ़रसा नहीं हुवा था, ***सरकार*** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ***की याद ने बे क़रार कर दिया, आंखों से टप टप आंसूं गिरने लगे।***

आंसूंओं की झड़ी लग गई है, इस पे दीवानगी छा गई है,
याद आक़ा ﷺ की तड़पा रही है याद आए हैं शाहे मदीना ﷺ

सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार की त़रफ़ इशारा करते हुए रोते हुए फ़रमाने लगे, "कुछ ज़ियादा अ़रसा नहीं गुज़रा कि मैं ने इस मज़ार शरीफ़ में आराम फ़रमाने वाले मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ख़ुद अपने कानों से सुना है कि फ़रमा रहे थे, "जो अपने किसी भाई की ***ह़ाजत रवाई*** के लिये चले और उस को पूरा कर दे तो येह ***दस[10] साल के ए'तिकाफ़*** से अफ़्ज़ल है और जो रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये ***एक दिन का ए'तिकाफ़*** करता है तो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उस के और जहन्नम के दरमियान तीन[3] ख़न्दक़ें (गढ़े) ह़ाइल फ़रमा देगा जिस का फ़ासिला मश्रिक़ व मग़रिब के दरमियानी फ़ासिले से भी ज़ियादा होगा" (शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:424, ह़दीस़:3965)

अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! जब एक दिन के ***ए 'तिकाफ़*** की इतनी फ़ज़ीलत है तो फिर "***दस***[10] साल के ***ए 'तिकाफ़*** से भी अफ़्ज़ल" की ब-र-कतों का कौन अन्दाज़ा कर सकता है ? इस ***ह़िकायत*** से अपने इस्लामी भाइयों की ***ह़ाजत रवाई*** और मुश्किल कुशाई की फ़ज़ीलत भी मा'लूम हुई । मुसल्मानों की दिलजूई की अहम्मिय्यत बहुत ज़ियादा है चुनान्चे ह़दीसे़ पाक में है : "फ़राइज़ के बा'द सब आ'माल में ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ को ज़ियादा प्यारा मुसल्मान का दिल ख़ुश करना है ।" (अल मो'जमुल कबीर, जिल्द:11, स़-फ़ह़ा:59, ह़दीस़:11079) वाके़ई अगर इस गए गुज़रे दौर में हम सब एक दूसरे की ग़म ख़्वारी व ग़म गुसारी में लग जाएं तो आनन फ़ानन दुन्या का नक़्शा ही बदल कर रह जाए । लेकिन आह ! अब तो भाई भाई के साथ टकरा रहा है आज मुसल्मान की इ़ज़्ज़त व आबरू और उस के जानो माल मुसल्मान ही के हाथों पामाल होते नज़र आ रहे हैं । ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हमें नफ़्रतें मिटाने और मह़ब्बते बढ़ाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

"मस्जिदे न-बवी" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से ए'तिकाफ़ में जाइज़ कामों की इजाज़त पर मुश्तमिल 8 म-दनी फूल

मदीना 1: ***खाना,*** पीना, सोना (मगर मस्जिद की दरी पर खाने और सोने के बजाए अपनी चादर या चटाई पर खाएं, सोएं)

मदीना 2: ***ज़रूरतन*** दुन्यवी बात चीत करना । (मगर आहिस्तगी के साथ और फ़ालतू बातें हरगिज़ मत कीजिये)

मदीना 3: ***मस्जिद*** में कपड़े तब्दील करना, इत्र लगाना, सर या दाढ़ी में तेल डालना ।

मदीना 4: ***दाढ़ी*** का ख़त़ बनवाना, ज़ुल्फ़ें तराशना, कंघी करना, मगर इन सब कामों में येह एह़तियात़ ज़रूरी है कि कोई बाल मस्जिद में न गिरे, तेल या खाने वग़ैरा से मस्जिद की सफ़ें और दीवारें वग़ैरा आलूदा न हों । इस की आसान सूरत येह है कि येह काम वुज़ूख़ाना या फ़िनाए मस्जिद में अपनी चादर बिछा कर करें ।

मदीना 5: ***मस्जिद*** में बिला उजरत किसी मरीज़ का ***मुआ़-यना*** करना, दवा बताना बल्कि नुस्ख़ा लिख कर देना ।

मदीना 6: ***मस्जिद*** में बिला उजरत क़ुरआने मजीद या इ़ल्मे दीन पढ़ना, पढ़ाना या सुन्नतें और दुआ़एं सीखना, सिखाना ।

मदीना 7: ***अपनी*** या अहलो इ़याल की ज़रूरत के लिये मस्जिद में

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

ख़रीदो फ़रोख़्त ***मो 'तकिफ़*** के लिये जाइज़ है। मगर तिजारत की कोई चीज़ मस्जिद में नहीं ला सकते। हां अगर थोड़ी सी चीज़ है कि मस्जिद में जगह न घेरे तो ला सकते हैं। ख़रीदो फ़रोख़्त सिर्फ़ ज़रूरत के लिये हो और माल कमाना मक़्सूद हो तो जाइज़ नहीं, चाहे वोह माल मस्जिद के बाहर ही क्यूं न हो। (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स-फ़हा:440)

मदीना 8: ***कपड़े,*** बरतन वग़ैरा मस्जिद के अन्दर धोना जाइज़ है। बशर्ते कि मस्जिद की दरी या फ़र्श पर इस का कोई छींटा न पड़े। इस की सूरत येह है कि किसी बड़े बरतन वग़ैरा में धोएं।

इन बातों के इलावा दीगर तमाम वोह काम जो ए'तिकाफ़ के लिये मुफ़्सिद व मम्नुअ़ नहीं और फ़ी नफ़्सिही जाइज़ भी हैं और उन के करने से मस्जिद की किसी त़रह़ से बे हुर्मती भी नहीं होती वोह सब के सब काम ***मो 'तकिफ़*** के लिये जाइज़ हैं, लेकिन बे जा चीज़ों से बचें। अब ***मो 'तकिफ़*** को चन्द काम करने की इजाज़त से मुतअ़ल्लिक़ दो[2] अह़ादीसे मुबा-रका पेश की जाती हैं।

मो'तकिफ़ मस्जिद से सर निकाल सकता है

मदीना 1: ***उम्मुल मुअ्मिनीन*** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا रिवायत फ़रमाती हैं, "जब सरकारे दो[2] आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ए'तिकाफ़ में होते (तो मस्जिद ही

में से) अपना सरे अक़्दस मेरे (हुजरे की) त़रफ़ निकाल देते और मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सरे अक़्दस में कंघी कर देती थी और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم घर में क़ज़ाए ह़ाजत के सिवा किसी और काम के लिये तशरीफ़ न लाते थे ।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:665, ह़दीस़:2029)

बाहर निकले तो चलते चलते इ़यादत कर सकता है

मदीना 2: ***उम्मुल मुअ्मिनीन*** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं, "सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ***ए'तिकाफ़*** की ह़ालत में मरीज़ के पास से गुज़रते तो बिग़ैर ठहरे और रास्ते से बिग़ैर हटे गुज़रते हुए (चलते चलते) उस का ह़ाल पूछ लेते थे ।"

(सु-नने अबी दावूद, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:492, ह़दीस़:2472)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे मुबारक से येह मा'लूम हुवा कि शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी शर-ई या त़ब्ई ह़ाजत के लिये मस्जिद से बाहर तशरीफ़ लाते और ***सरकार*** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र किसी ***बीमार*** के पास से होता तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم न तो उस की ***इ़यादत*** के लिये अपने रास्ते से हटते और न मरीज़ के पास ठहरते, बल्कि चलते चलते उस की मिज़ाज पुर्सी फ़रमा लेते । कोई मो'तकिफ़ इस्लामी भाई जब किसी शर-ई उ़ज़्र से इह़ात़ए मस्जिद से बाहर निकले तो उसे

ज़रूरत से ज़ाइद एक लम्ह़ा भी न ठहरना चाहिये । हां रास्ते में चलते चलते किसी को सलाम कर लिया, किसी से कोई बात कर ली या चलते चलते बीमार पुर्सी कर ली तो जाइज़ है । लेकिन इस ग़रज़ से रास्ते में रुक गए या रास्ता तब्दील किया तो ए'तिकाफ़ टूट जाएगा .

इस्लामी बहनों का ए'तिकाफ़ : ***उम्मुल मुअ्मिनीन*** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत फ़रमाती हैं, "नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमियान, सरदारे दो2 जहान, मह़बूबे रह़मान عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी दस10 दिनों का ***ए'तिकाफ़*** फ़रमाया करते थे । यहां तक कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वफ़ाते (ज़ाहिरी) अ़त़ा फ़रमाई । फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मु-त़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ ए'तिकाफ़ करती थीं ।"

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:664, ह़दीस़:2026)

इस्लामी बहनें भी ए'तिकाफ़ करें : ***इस्लामी बहनों*** को भी ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल करनी चाहिये । वैसे भी जो बा ह़या इस्लामी बहनें हैं वोह तो अपने घरों के अन्दर पर्दा नशीन ही होती हैं क्यूंकि गलियों और बाज़ारों में बे पर्दा फिरना बे ह़या औ़रतों का काम है । लिहाज़ा बा ह़या इस्लामी बहनों के लिये ए'तिकाफ़ करना शायद ज़ियादा मुश्किल न हो । अगर थोड़ी

सी तकलीफ़ हो भी तो क्या ह़रज है ? र-मज़ानुल मुबारक का महीना कहां रोज़ रोज़ आता है ! फिर दस10 ही दिनों की तो बात है । इस्लामी बहनों को चूंकि मस्जिदे बैत (तफ़्सील आगे आती है) में जो कि निहायत ही मुख़्तसर जगह होती है ***ए'तिकाफ़*** करना होता है तो यूं क़ब्र की भी याद ताज़ा हो जाती है, कि बहू बेटियों और मुन्ने मुन्नियों की रौनक़ों में दस10 दिन कोने में बैठना गिरां गुज़र रहा है तो नाराज़िये ख़ुदा व मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمْ की सूरत में तन्हा क़ब्र में ***हज़ारों साल*** किस त़रह़ गुज़ारा होगा ? अगर आप दस10 दिन र-मज़ानुल मुबारक में अपने घर में ***ए'तिकाफ़*** की ह़ालत में गुज़ारें तो क्या अ़जब कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से और अपनी रह़मत से आप की क़ब्र और मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَكْرِيْماً के दरमियान तमाम पर्दाहाए ह़ाइल उठा दे । हर इस्लामी बहन को ज़िन्दगी में कम अज़ कम एक बार तो इस सआ़दत को ह़ासिल करना ही चाहिये ।

"ताजदारे मुर्सलीन" के बारह12 हुरूफ़ की निस्बत से इस्लामी बहनों के लिये 12 म-दनी फूल

मदीना 1: ***इस्लामी*** बहनें मस्जिद में नहीं सिर्फ़ ***मस्जिदे बैत*** में ए'तिकाफ़ करें । मस्जिदे बैत उस जगह को केहते हैं जो औ़रत घर में अपनी नमाज़ के लिये मुख़्सूस़ कर लेती है । इस्लामी बहनों के लिये येह मुस्तह़ब भी है कि घर में नमाज़ पढ़ने के लिये जगह मुक़र्रर करें और उस जगह को पाक व स़ाफ़ रखें और बेहतर येह है कि

उस जगह को चबूतरे वग़ैरा की त़रह़ बुलन्द कर लें। बल्कि इस्लामी भाइयों को भी चाहिये कि नवाफ़िल के लिये घर में कोई जगह मुक़र्रर कर लें कि नफ़्ल नमाज़ घर में पढ़ना अफ़्ज़ल है। (दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुह़्तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः 429)

मदीना 2: ***अगर*** इस्लामी बहन ने नमाज़ के लिये कोई जगह मुक़र्रर नहीं कर रखी तो घर में ***ए'तिकाफ़*** नहीं कर सकती अलबत्ता अगर उस वक़्त या'नी जब कि ए'तिकाफ़ का इरादा किया किसी जगह को नमाज़ के लिये ख़ास़ कर लिया तो उस जगह ***ए'तिकाफ़*** कर सकती है।

(दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुह़्तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः429)

मदीना 3: ***किसी*** और के घर जा कर इस्लामी बहन ए'तिकाफ़ नहीं कर सकती।

मदीना 4: ***शौहर*** की इजाज़त के बिग़ैर बीवी के लिये ए'तिकाफ़ करना जाइज़ नहीं। (रद्दुल मुह़्तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः429)

मदीना 5: ***अगर*** बीवी ने शौहर की इजाज़त से ए'तिकाफ़ शुरूअ़ कर दिया, बा'द में शौहर मन्अ़ करना चाहता है तो अब मन्अ़ नहीं कर सकता। और अगर मन्अ़ करेगा तो बीवी के ज़िम्मे इस की ता'मील वाजिब नहीं।

(आ़लमगीरी, जिल्दः1, स़-फ़ह़ाः211)

मदीना 6: ***इस्लामी*** बहनों के ए'तिकाफ़ के लिये येह भी ज़रूरी है कि वोह ***हैज़*** और ***नफ़ास*** से पाक हों कि इन दिनों में नमाज़, रोज़ा और तिलावते क़ुरआन ह़राम है। (आ़म्मए कुतुब) (औ़रत को बच्चे की पैदाइश के बा'द जो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रह़मतें भेजता है ।

ख़ून आता रहता है उस को ***नफ़ास*** केहते हैं। इस की ज़ियादा से ज़ियादा मुद्दत चालीस40 दिन और चालीस40 रात है। चालीस40 दिन रात के बा'द अगर ख़ून बन्द न हो तो बीमारी है, ग़ुस्ल कर के नमाज़ रोज़ा शुरूअ़ कर दें। इस्लामी बहनों में येह आ़म ग़लत़ फ़ह्मी है और वोह समझती हैं कि नफ़ास की मुद्दत मुकम्मल चालीस40 दिन है ह़ालांकि ऐसा नहीं। हुक्मे शरीअ़त येह है कि अगर ख़ून एक दिन में बन्द हो गया, बल्कि बच्चा होने के बा'द फ़ौरन ही बन्द हो गया तो नफ़ास ख़त्म हुवा, ग़ुस्ल कर के नमाज़ रोज़ा शुरूअ़ कर दें। ***ह़ैज़*** की मुद्दत कम अज़ कम तीन3 दिन रात और ज़ियादा से ज़ियादा दस10 दिन रात है। तीन3 दिन और तीन3 रात के बा'द जब भी ख़ून बन्द हुवा फ़ौरन ग़ुस्ल कर लें और नमाज़ वग़ैरा शुरूअ़ कर दें। (यहां शौहर वालियों के लिये कुछ तफ़्सील है उसे बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 2 में लाज़िमी मुलाह़ज़ा फ़रमाएं) और अगर दस10 दिन रात के बा'द ख़ून जारी रहा तो ***इस्तिह़ाज़ा*** या'नी बीमारी है। दस10 दिन रात पूरे होते ही ग़ुस्ल कर के नमाज़ रोज़ा शुरूअ़ कर दें)

मदीना 7: ***ए 'तिकाफ़े*** सुन्नत शुरूअ़ करने से क़ब्ल येह देख लेना चाहिये कि इन दिनों में माहवारी की तारीख़ें आनेवाली तो नहीं। अगर तारीख़ें र-मज़ान के आख़िरी अ़-शरह में आने वाली हों तो ए'तिकाफ़ शुरूअ़ ही न करें।

मदीना 8: ***अगर*** ह़ालते ए'तिकाफ़ में औ़रत को ह़ैज़ आ जाए तो उस का ए'तिकाफ़ टूट जाएगा। (बदाएउस्सनाएअ़, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:287, दारे एह़्याइत्तिरासिल अ़-रबी, बैरूत)

इस सूरत में जिस दिन इस का ए'तिकाफ़ टूटा है सिर्फ़ उस एक दिन की क़ज़ा उस के ज़िम्मे वाजिब होगी। (रद्दुल मुह्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:500, दारुल मा'रिफ़ह, बैरूत) माहवारी से पाक होने के बा'द किसी दिन ब निय्यते क़ज़ा ए'तिकाफ़ कर ले। अगर र-मज़ान शरीफ़ के दिन बाक़ी हों तो र-मज़ानुल मुबारक में भी क़ज़ा कर सकती है। इस सूरत में र-मज़ानुल मुबारक का रोज़ा ही काफ़ी हो जाएगा। अगर उन दिनों क़ज़ा करना नहीं चाहती या पाक होने तक र-मज़ानुल मुबारक ख़त्म हो जाए तो किसी और दिन क़ज़ा कर ले। मगर ईदुल फ़ित्र और ज़ुल हिज्जतलु ह़राम की दस्वीं[10] ता तेरहवीं[13] के इलावा कि इन पांच दिनों के रोज़े मकरूहे तह़रीमी हैं। (अद्दुर्रुल मुख़्तार मअ़हू रद्दुल मह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:391) क़ज़ा का त़रीक़ा येह है कि ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त (बल्कि एह़तियात इस में है कि चन्द मिनट मज़ीद क़ब्ल) ब निय्यते क़ज़ा ए'तिकाफ़ मस्जिदे बैत में आ जाए और अब जो दिन आएगा उस के ग़ुरूबे आफ़्ताब तक मो'तकिफ़ रहे। इस में रोज़ा शर्त़ है।

मदीना 9: ***शर-ई*** ज़रूरियात के बिग़ैर जाए ए'तिकाफ़ से निकलना जाइज़ नहीं। वहां से ऊठ कर घर के किसी और हिस्से में भी नहीं जा सकती। अगर जाएगी तो ए'तिकाफ़ टूट जाएगा।

मदीना 10: ***इस्लामी*** बहनों के लिये भी ए'तिकाफ़ की जगह से

हटने के वोही अह्काम हैं जो इस्लामी भाइयों के हैं। या'नी जिन ज़रूरियात की वजह से इस्लामी भाइयों को मस्जिद से निकलना जाइज़ है, इन्हीं के लिये इस्लामी बहनों को भी ***ए'तिकाफ़*** की जगह से हटना जाइज़ और जिन कामों के लिये मर्दों को मस्जिद से निकलना जाइज़ नहीं, इन के लिये ***इस्लामी बहनों*** को भी अपनी जगह से हटना जाइज़ नहीं।

मदीना 11: ***इस्लामी*** बहनें ए'तिकाफ़ के दौरान अपनी जगह बैठे बैठे सीने पिरौने का काम कर सकती हैं। घर के कामों के लिये दूसरों को हिदायात भी दे सकती हैं मगर खुद उठ कर न जाएं।

मदीना 12: ***बेहतर*** येह है कि ए'तिकाफ़ के दौरान सारी तवज्जोह तिलावत, ज़िक्रो दुरूद, तस्बीहात, दीनी मुता-लआ सुन्नतों भरे बयानात की केसेटें सुनने और दीगर इबादात की तरफ़ रहे, दूसरे कामों में ज़ियादा वक़्त सर्फ़ न करें।

ए'तिकाफ़ क़ज़ा करने का तरीक़ा : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** आपने र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ-शरह का ए'तिकाफ़ किया और किसी वजह से टूट गया तो दस[10] दिन की क़ज़ा करना ज़रूरी नहीं। आप के ज़िम्मे सिर्फ़ उस एक दिन की क़ज़ा है जिस दिन ***ए'तिकाफ़*** टूटा है। अगर माहे र-मज़ान शरीफ़ के दिन अभी बाक़ी हैं तो इन में भी क़ज़ा हो सकती है। अगर र-मज़ान शरीफ़ गुज़र गया तो फिर किसी दिन क़ज़ा कर लीजिये और उस

में रोज़ा भी रखिये। मगर ईदुल फ़ित्र और ज़ुल हिज्जतुल ह़राम की दस्वीं[10] ता तेरहवीं[13] के इ़लावा कि इन पांच[5] दिनों के रोज़े मक्रूहे तह़रीमी हैं। क़ज़ा का त़रीक़ा येह है कि किसी दिन ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त (बल्कि एह़तियात़ इस में है कि चन्द मिनट मज़ीद क़ब्ल) ब निय्यते क़ज़ा ए'तिकाफ़ मस्जिद में दाख़िल हो जाइये और अब जो दिन आएगा उस के ग़ुरूबे आफ़्ताब तक मो'तकिफ़ रहिये। इस में रोज़ा शर्त़ है।

ए'तिकाफ़ का फ़िदया : अगर क़ज़ा करने की मोहलत मिलने के बा वुजूद क़ज़ा न की और मौत का वक़्त आ पहुंचा तो वारिसों को वसिय्यत करना वाजिब है कि वोह इस ए'तिकाफ़ के बदले फ़िदया अदा कर दें और अगर वसिय्यत न की और वु–रसा फ़िदये की अदाएगी की इजाज़त दे दें तो भी फ़िदया अदा करना जाइज़ है। (अल फ़तावल हिन्दिया, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:213, कोइटा) ***फ़िदया*** अदा करना ज़ियादा मुश्किल नहीं। ए'तिकाफ़ के फ़िदये की निय्यत से किसी मुस्तह़िक़े ज़कात को ***स़-द-क़ए फ़ित्र*** की मिक़्दार में (या'नी तक़रीबन दो[2] किलो पचास[50] ग्राम) गेहूं या उस की रक़म अदा कर दीजिये।

ए'तिकाफ़ तोड़ने की तौबा : ***अगर*** ए'तिकाफ़ किसी मजबूरी के तह़त तोड़ा था या भूले से टूटा तो गुनाह नहीं और अगर जानबूझ कर बिग़ैर किसी स़ह़ीह़ मजबूरी के तोड़ा था तो येह गुनाह है लिहाज़ा क़ज़ा के साथ साथ ***तौबा*** भी कीजिये। और जब भी कोई गुनाह सरज़द हो जाए उस की ***तौबा*** करना वाजिब है

और ***तौबा*** बिला ताख़ीर करनी चाहिये क्यूंकि ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं। दोनों[2] गालों पर चन्द बार चपत मार लेने का नाम ***तौबा*** नहीं बल्कि उस ख़ास गुनाह का नाम ले कर उस पर शर्मिन्दगी के साथ गिड़गिड़ा कर ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर मुआफ़ी त़लब कीजिये और आइन्दा वोह गुनाह न करने का सच्चा अ़ह्द भी कीजिये। तौबा के लिये येह भी शर्त़ है कि उस गुनाह से दिल में बेज़ारी भी हो।

मश्हूर बेन्ड पार्टी के मालिक की तौबा : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माह़ौल में आ कर बे शुमार बिगड़े हुए अफ़राद राहे रास्त पर आ कर नमाज़ों और सुन्नतों के पाबन्द हो गए इस ज़िम्न में एक मुश्कबार म-दनी बहार मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे ***मन्सोर*** शहर (M.P. अल हिन्द) के एक नौ जवान की ***बेन्ड बाजे*** की पार्टी अपने शहर की मश्हूर ***बेन्डपार्टी*** मानी जाती थी। एक मुबल्लिग़े ***दा'वते इस्लामी*** की ***इन्फ़िरादी कोशिश*** के नतीजे में उस ने आख़िरी अ़-श-रए र-मज़ानुल मुबारक सिने 1426 हिजरी में आ़शिक़ाने रसूल के साथ ए'तिकाफ़ किया। ***तरबिय्यती ह़ल्क़ों*** में गुनाहों की तबाहकारियां सुन कर उस का दिल चोट खा गया। ***आ़शिक़ाने रसूल*** की सोह़बत रंग लाई, उस ने साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली, ***दाढ़ी*** सजाने और ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ 30 दिन के ***म-दनी क़ाफ़िले*** में

सफ़र पर जाने की निय्यत की । اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्होंने ***बेन्डबाजे बजाने का गुनाहों भरा ह़राम रूज़गार तर्क कर दिया ।***

चोट खा जाएगा इक न इक रोज़ दिल, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
फ़ज़्ले रब عَزَّوَجَلَّ से हिदायत भी जाएगी मिल, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मो'तकिफ़ीन के लिये ज़रूरत की अश्या : (1) यक्सूई ह़ासिल करने और ह़िफ़ाज़ते सामान के लिये अगर पर्दा लगाना हो तो ह़स्बे ज़रूरत कपड़ा (सब्ज़ हो तो खूब) डोरी और बक्सूए (सेफ़्टी पिनें) (2) कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ (3) सूई धागा (4) कैंची (5) तस्बीह़ (6) मिस्वाक (7) सुरमा, सलाई (8) तेल की शीशी (9) कंघा (10) आईना (11) इत्र (12) दो[2] जोड़े कपड़े (13) तहबन्द (14) इमामा शरीफ़ बमअ़ टोपी व सरबन्द (15) गिलास (16) रिकाबी (17) पियाला (मिट्टी का हो तो खूब) (18) कप सासर (19) थरमोस (20) दस्तरख़्वान (21) दांतों के ख़िलाल के लिये तिन्के (22) तोलिया (23) (गुस्ल के लिये एह़तियातन) बाल्टी और डोंगा (24) हाथ का रूमाल (25) छुरी (26) क़लम (27) ग़ैर ज़रूरी बातों की आ़दत निकालने की ख़ातिर लिख कर गुफ़्तुगू करने के लिये क़ुफ़्ले मदीना का पेड (28) मुता-लआ़ के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत

और ह़स्बे ज़रूरत इस्लामी किताबें (29) म-दनी इन्आ़मात का फ़ार्म (30) डाइरी (31) जाए इस्तिन्जा ख़ुश्क करने के लिये ज़रूरत हो तो दर्ज़ी की बे क़ीमत कतरन या टिशू पेपर्ज़ (32) सोने के लिये चटाई, ऐसी चटाई का इस्ते'माल मस्जिद में जाइज़ नहीं जिस से मस्जिद में तिन्के झड़ें और कूड़ा हो (33) ज़रूरत हो तो तकया (34) औढ़ने के लिये चादर या कम्बल (35) पर्दे में पर्दा करने के लिये चादर (36) दर्दे सर, नज़्ला, बुख़ार वग़ैरा के लिये टिकियां वग़ैरा ।

म-दनी मश्वरा : अपनी चीज़ों पर कोई निशानी (म-स़लन ☆ ☾ वग़ैरा) बना लें ताकि ख़ल्त़ मल्त़ हो जाने की सूरत में तलाशना आसान हो । चादर वग़ैरा पर नाम बल्कि कोई ह़र्फ़ भी न लिखें कि बे अ-दबी होती रहेगी । (निशानियों के नुमूने इसी बाब ''फ़ैज़ाने ए'तिकाफ़'' के आख़िरी स़-फ़ह़े पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये)

ए'तिकाफ़ के 50 म-दनी फूल

मदीना 1: ***र-मज़ानुल मुबारक*** की बीस[20] तारीख़ को ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले पहले ब निय्यते ए'तिकाफ़ मस्जिद में दाख़िल हो जाएं । अगर ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द एक लम्ह़ा भी ताख़ीर से मस्जिद में दाख़िल होंगे तो र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़-शरह के ए'तिकाफ़ की सुन्नत अदा न होगी ।

मदीना 2: ***अगर*** ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले पहले मस्जिद में ब

नियते ए'तिकाफ़ दाख़िल तो हो गए और फिर फ़िनाए मस्जिद म–स़लन इह़ात़ए मस्जिद में वाक़ेअ़ वुज़ू ख़ाने या इस्तिन्जा ख़ाने में चले गए और बीस्वीं[20] र–मज़ान का सूरज ग़ुरूब हो गया तो कोई ह़रज नहीं इस से ए'तिकाफ़ नहीं टूटता।

मदीना 3: ***इस्तिन्जा*** ख़ाने जाते हुए, चलते चलते सलाम व जवाब, बातचीत करने की इजाज़त है मगर इस के लिये एक लम्ह़ा भी रुक गए तो ए'तिकाफ़ टूट गया। हां अगर इस्तिन्जा ख़ाना इह़ात़ए मस्जिद के अन्दर है तो रुकने में ह़रज नहीं।

मदीना 4: ***अगर*** इस्तिन्जा ख़ाने गए लेकिन कोई पहले से अन्दर गया हुवा है तो मस्जिद में आ कर इन्तिज़ार करना ज़रूरी नहीं बल्कि वहीं पर इन्तिज़ार कर सकते हैं।

मदीना 5: ***पेशाब*** करने के बा'द मस्जिद के बाहर ही ज़रूरतन इस्तिब्राअ भी कर सकते हैं। (पेशाब करने के बा'द जिस को येह एह़तिमाल (या'नी शक) हो कि कोई क़त़रा बाक़ी रह गया है या फिर आएगा, इस के लिये इस्तिब्राअ या'नी पेशाब करने के बा'द ऐसा काम करना कि अगर कोई क़त़रा रुका हुवा हो तो गिर जाए वाजिब है। इस्तिब्रा टहलने से, ज़मीन पर ज़ोर से मारने, सीधा पांव उल्टे पांव पर या उल्टा पांव सीधे पांव पर रख कर ज़ोर करने, बुलन्दी से नीचे उतरने या नीचे से ऊपर चढ़ने से, खंकारने या बाईं करवट लेटने से भी होता

है और इस्तिब्राअ उस वक़्त तक करे कि दिल को इत़्मिनान हो जाए टहलने की मिक़्दार बा'ज़ उ़-लमा ने चालीस[40] क़दम रखी है मगर स़ह़ीह़ येह है कि जितने में इत़्मिनान हो जाए और येह इस्तिब्रा का हुक्म मर्दों के लिये है औ़रत (को अगर क़त़रा रह जाने का शुबा हो तो) बा'द फ़ारिग़ होने के थोड़ी देर वक़्फ़ा कर के त़हारत कर ले । (बहारे शरीअ़त, हिस़्स़ा:2, स़-फ़ह़ा:115) इस्तिब्राअ करते वक़्त ज़रूरतन ढेला बाएं हाथ से आले के सूराख़ पर रखें । इस्तिब्राअ करने वाला पेशाब करने वाले ही के हुक्म में है लिहाज़ा सलाम कलाम वग़ैरा न करे और दौराने इस्तिब्राअ क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ करना या पीठ करना इसी त़रह़ ह़राम है जिस त़रह़ पेशाब या पाख़ाना करते वक़्त ह़राम है)

मदीना 6: ***अगर*** मस्जिद के बाहर इस्तिन्जा ख़ाने में गन्दगी वग़ैरा के सबब त़बीअ़त घबराती हो तो रफ़्ए़ ह़ाजत के लिये घर पर जाने में कोई ह़रज नहीं ।

(रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:435)

मदीना 7: ***मस्जिद*** (की चार दीवारी) से बाहर निकले और अगर किसी क़र्ज़ ख़्वाह ने रोक लिया तो ए'तिकाफ़ टूट जाएगा ।

मदीना 8: ***खाना*** खाते वक़्त अपना दस्तरख़्वान ज़रूर बिछाइये । फ़र्शे मस्जिद या दरियां आलूदा नहीं होनी चाहियें ।

मदीना 9: ***मस्जिद*** की दीवारों या दरयों वग़ैरा पर हरगिज़ मैले या

चिकने हाथ मत लगाएं, थूक न डालिये इसी त़रह़ कान या नाक वग़ैरा से मैल निकाल कर इन पर न लगाइये । बल्कि फ़िनाए मस्जिद की दीवार या फ़र्श वग़ैरा पर भी पान की पीक वग़ैरा न डालिये। मस्जिद की स़फ़ाई में हि़स्सा लीजिये हो सके तो मो'तकिफ़ीन एक शापर जेब में रख लें और बालों के गुच्छे और तिन्के वग़ैरा चुनते रहें आप की तरग़ीब के लिये ह़दीसे़ पाक पेश करता हूं। ***फ़रमाने मुस्त़फ़ा*** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मस्जिद से अज़िय्यत की चीज़ निकाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा। (सु-नने इब्ने माजह, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:419, ह़दीस़:757, मत़्बूआ़ दारुल मारिफ़ह, बैरूत)

मदीना 10: ***मस्जिद*** की दरियों का धागा और चटाइयों के तिन्के नोचने से परहेज़ कीजिये ।

(हर जगह इस बात का ख़याल रखिये)

मदीना 11: ***मस्जिद*** में सुवाल करने वाले को हरगिज़ रक़म वग़ैरा मत दीजिये कि मस्जिद में सुवाल करना ह़राम है और उस को देने की भी इजाज़त नहीं । मुजद्दिदे आ'ज़म ***आ'ला ह़ज़रत*** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि मस्जिद के साइल को अगर कोई एक पैसा दे दे तो उसे चाहिये कि उस के कफ़्फ़ारे में सत्तर[70] पैसे मज़ीद स़-दक़ा करे । (येह स़-दक़ा भी मस्जिद के साइल को न दे)

(फ़तावा र-ज़विय्या जदीद, जिल्द:16, स़-फ़ह़ा:418)

मदीना 12: ***सिर्फ़*** एक पांव मस्जिद से बाहर निकाला तो कोई ह़रज नहीं।

मदीना 13: ***दोनों***[2] हाथ बमअ़ सर भी अगर मस्जिद से बाहर निकाल दिये तो कोई मुज़ा-यक़ा नहीं।

मदीना 14: ***बे*** ख़याली में मस्जिद से बाहर निकल गए और याद आने पर फ़ौरन मस्जिद के अन्दर आ भी गए फिर भी ए'तिकाफ़ टूट चुका।

मदीना 15: ***कोई*** ऐसी बीमारी लाह़िक़ हो गई कि मस्जिद से निकले बिग़ैर इ़लाज मुम्किन नहीं तो इ़लाज के लिये बाहर तो निकल सकते हैं मगर ए'तिकाफ़ टूट जाएगा अलबत्ता ए'तिकाफ़ तोड़ने का गुनाह न होगा, उस एक दिन की क़ज़ा ज़िम्मे रहेगी।

मदीना 16: ***खाना*** और पीने के लिये पानी लानेवाला कोई नहीं तो लेने के लिये बाहर निकल सकते हैं मगर खाएं और पियें मस्जिद ही में।

मदीना 17: مَعَاذَاللهِ عَزَّوَجَلَّ अगर किसी बद नस़ीब ने कलिमए कुफ़्र बका और मुरतद्द हो गया तो ए'तिकाफ़ टूट गया। अब तज्दीदे ईमान करे, या'नी इस कलिमए कुफ़्र से तौबा करे कलिमा पढ़े, तज्दीदे बैअ़त और अगर शादीशुदा था तो तज्दीदे निकाह़ भी करे। ए'तिकाफ़ की क़ज़ा नहीं क्यूंकि मुरतद्द हो जाने से साबिक़ा तमाम नेक आ'माल बरबाद हो जाते हैं।

मदीना 18: ***मो'तकिफ़ ने*** مَعَاذَاللهِ عَزَّوَجَلَّ कोई नशा आवर चीज़ खा ली या खुदा नख़्वास्ता दाढ़ी जैसी पाकीज़ा और मोह़तरम सुन्नत को मूंड डाला अगर्चे येह दोनों[2] काम वैसे ही ह़राम हैं और मस्जिद में और भी सख़्त गुनाह लेकिन ***ए'तिकाफ़*** नहीं टूटेगा।

मदीना 19: ***मो'तकिफ़*** के लिये मस्जिद में दाढ़ी का ख़त़ बनवाने और जुल्फ़ें तराशने या सर और दाढ़ी में तेल डालने में कोई मुज़ा–यक़ा नहीं जबकि अपना कपड़ा वग़ैरा बिछा कर पूरी एह़तियात़ से येह काम किये जाएं। मस्जिद की दरियां तेल से आलूद नहीं होनी चाहियें और बाल वग़ैरा भी उन पर नहीं गिरने चाहियें।

मदीना 20: ***मो'तकिफ़*** दीनी मद्रसे की किताबें पढ़ सकता है।

मदीना 21: ***रात*** के वक़्त जितनी देर तक मस्जिद में बत्ती जलाने का उ़र्फ़ (रवाज) है। उतनी देर तक उस बत्ती की रौशनी में बिला तकल्लुफ़ दीनी मुत़ा–लआ़ किया जा सकता है। ज़ाइद बिजली इस्ते'माल करने के लिये इन्तिज़ामिय्या से त़ै कर लीजिये।

मदीना 22: ***अख़्बारात*** चूंकि जानदारों की तस़ावीर बल्कि फ़िल्मी इश्तिहारात से उ़मूमन पुर होते हैं लिहाज़ा मस्जिद में उन के मुत़ा–लए़ से बचिये।

मदीना 23: ***कोई*** उचक्का अपने या किसी इस्लामी भाई के जूते चुरा कर भागा तो उस को पकड़ने के लिये मस्जिद से बाहर नहीं जा सकते। बाहर गए तो ए'तिकाफ़ टूट गया।

मदीना 24: ***मस्जिद*** अगर कई मन्ज़िला है और सीढ़ियां इह़ात़ए मस्जिद के अन्दर ही बनी हुई हैं तो बिला तकल्लुफ़ ऊपर की तमाम मन्ज़िलों में जा सकता है बल्कि छत पर भी जा सकते हैं। अलबत्ता बिला ज़रूरत मस्जिद की छत पर चढ़ना मक्रूह और बे अ–दबी है।

मदीना 25: ***मस्जिद*** में बयान की या ना'त शरीफ़ की केसेटें सुनना चाहें तो टेप रेकॉर्डर में अपने सेल डाल लीजिये । अगर मस्जिद की बिजली से चलाना चाहें तो बेहतर येह है कि जितनी बिजली आप ने ख़र्च की है उस का अन्दाज़ा कर के उस से कुछ ज़ियादा पैसे इन्तिज़ामिय्या के ह़वाले कर दीजिये और येह भी एह़तियात़ कीजिये कि किसी की इ़बादत या आराम में ख़लल वाके़अ़ न हो ।

मदीना 26: ***मस्जिद*** की छत वगै़रा अगर गिर पड़ी या किसीने ज़बरदस्ती निकाल दिया तो फ़ौरन दूसरी मस्जिद में मो'तकिफ़ हो जाएं ***ए'तिकाफ़*** सह़ीह़ हो जाएगा ।

मदीना 27: ***दौराने*** ए'तिकाफ़ ह़त्तल इम्कान अपना वक़्त नवाफ़िल, तिलावते कु़रआन, ज़िक्रो दुरूद, मुत़ालअ़ए कुतुबे इस्लामिय्या और सुन्नतें और दुआ़एं वगै़रा सीखने सिखाने में गुज़ारिये ।

मदीना 28: ***ए'तिकाफ़*** के लिये अगर मस्जिद में पर्दा लगाएं तो कम से कम जगह घेरें ताकि नमाज़ियों को परेशानी न हो । मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर (मस्जिद में) चीज़ें रखे जिन से नमाज़ की जगह रुके तो सख़्त ना जाइज़ है । (फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:97)

मदीना 29: ***मस्जिद*** को हर क़िस्म की आलूदगी और गर्दो गुबार वगै़रा से बचाएं ।

मदीना 30: ***मस्जिद*** में शोरो गुल, हंसी मज़ाक़ वगै़रा हरगिज़ न करें कि गुनाह है ।

मदीना 31: ***आप*** घर से सूए मस्जिद चले तो नेकियां कमाने मगर कहीं ऐसा न हो कि गुनाहों का ढेर ले कर पलटें। लिहाज़ा ख़बरदार ! मस्जिद में हरगिज़ हरगिज़ बिला ज़रूरत कोई लफ़्ज़ मुंह से न निकले, ज़बान पर मज़्बूत ***कुफ़्ले मदीना*** लगाइये।

मदीना 32: ***मो'तकिफ़ीन*** इस्लामी भाइयों को मस्जिद में ज़रूरी अश्या पहले ही से मुहय्या कर लेनी चाहियें ताकि बा'द में किसी से सुवाल करने की ह़ाजत न रहे और दूसरों से चीज़ें मांगते रहने की आ़दत भी अच्छी नहीं। बा'ज़ स़ह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तो ***सुवाल*** से इस क़दर बचते थे कि अगर उन का ***चाबुक*** भी गिर जाता तो घोड़े पर बैठे होने के बा वुजूद वोह किसी को इतना तक न केहते कि "भाई ! येह ***चाबुक*** तो ज़रा उठा देना" बल्कि खु़द घोड़े से उतर कर उठा लेते।

मदीना 33: ***दूसरे की*** मौजूदगी में तिलावत की आवाज़ इतनी आहिस्ता रखिये कि उस के कानों तक आवाज़ न पहोंचे।

मदीना 34: ***अगर*** आप की मस्जिद में दीगर इस्लामी भाई मो'तकिफ़ हों तो उन के हु़क़ूके़ स़ोह़बत का हर त़रह़ से लिह़ाज़ रखिये दीगर मो'तकिफ़ीन की ख़िदमत को अपनी सआ़दत समझिये, उन की ज़रूरियात पूरी करने की ह़त्तल इम्कान सअ़्य कीजिये और इख़्लास़ व ईस़ार का मुज़ा-हरा करते रहिये। ईस़ार का स़वाब बे शुमार है चुनान्चे ताजदारे रिसालत, माहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश

निशान है, ***"जो शख़्स उस चीज़ को जिस की ख़ुद इसे ह़ाजत हो दूसरे को दे दे तो अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***इसे बख़्श देता है।"*** (इत्तिह़ाफ़ुस्सादतुल मुत्तक़ीन, जिल्द:9, स़-फ़ह़ा:779)

मदीना 35: ***आप*** जो कुछ दुआ़एं और सुन्नतें जानते हैं दूसरे मो'तकिफ़ीन को सिखाने की कोशिश कीजिये कि स़वाब लूटने का ऐसा सुनहरी मौक़अ़ बार बार नहीं मिलता।

मदीना 36: ***ए'तिकाफ़*** के दौरान जितना हो सके ज़ियादा से ज़ियादा सुन्नतों पर अ़मल करने की कोशिश कीजिये। म-स़लन चटाई और मिट्टी के बरतन वग़ैरा इस्ते'माल कीजिये।

मदीना 37: ***म-दनी*** इन्आ़मात पर अ़मल कर के कार्ड पुर कीजिये और इस की हमेशा के लिये आ़दत बनाइये।

मदीना 38: ***मस्जिद*** के फ़र्श, दरी या चटाई पर सोने से परहेज़ कीजिये कि पसीने की बदबू और सर के तेल का धब्बा होने नीज़ एह़्तिलाम की सूरत में नापाक हो जाने का भी ख़त़रा है। लिहाज़ा अपनी चटाई ज़रूर साथ लाइये। इस से चटाई पर सोने की सुन्नत भी अदा करने का मौक़अ़ मिलेगा और मस्जिद की दरियां और चटाइयां भी आलूदगी से मह़फ़ूज़ रहेंगी।

मदीना 39: ***अगर*** अपनी चटाई मुयस्सर न हो तो कम अज़ कम अपनी चादर ही बिछा लीजिये।

मदीना 40: ***घर*** हो या मस्जिद, जहां भी सोएं पर्दे में पर्दा का ख़याल

रखें मुम्किन हो तो पाजामे पर एक चादर तहबन्द की त़रह़ लपेटने और दूसरी ओढ़ने की आ़दत बनाइये कि नींद में बा'ज़ अवक़ात कपड़े पहने हुए भी सख़्त बे पर्दगी हो रही होती है।

मदीना 41: ***हरगिज़*** हरगिज़ दो[2] इस्लामी भाई एक ही तक्ये पर या एक ही चादर में न सोएं ।

मदीना 42: ***इसी*** त़रह़ मह़ल्ले फ़ित्ना में किसी की रान या गोद में सर रख कर लेटने से भी परहेज़ कीजिये ।

मदीना 43: ***जब 29*** र-मज़ानुल मुबारक को ईदुल फ़ित्र के चांद की ख़बर सुनें या 30 र-मज़ान शरीफ़ का सूरज डूब जाए तो मस्जिद से ऐसे न दौड़ पड़िये कि जैसे क़ैद से रिहा हुए, बल्कि होना येह चाहिये कि र-मज़ानुल मुबारक के रुख़्सत होने की ख़बर सुनते ही स़दमे से दिल डूबने लगे कि आह ! मोह़तरम माह हम से जुदा हो गया, ख़ूब रो रो कर माहे र-मज़ान को ***अल वदाअ़*** कीजिये ।

तुम घर को न खींचो नहीं जाता नहीं जाता
मैं छोड़ के मस्जिद को नहीं अब कहीं जाता

मदीना 44: ***इख़्तितामे*** ए'तिकाफ़ के वक़्त ख़ूब रो रो कर अपनी ख़ामियों और कोताहियों और मस्जिद की बे अ-दबियों पर ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी त़लब कीजिये । ख़ूब गिड़गिड़ा कर अपने और तमाम आ़लम के इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उसने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की ।

ए'तिकाफ़ की क़बूलिय्यत और कुल उम्मत की मग़्फ़िरत की दुआ मांगिये ।

मदीना 45: ***आपस*** में एक दूसरे से ह़क़ त-लफ़ियां मुआ़फ़ करवाइये ।

मदीना 46: ***ख़ुद्दामे*** मस्जिद को भी हो सके तो तह़ाइफ़ दे कर राज़ी कीजिये ।

मदीना 47: ***इन्तिज़ामियए*** मस्जिद का भी तआ़वुन के सबब शुक्रिया अदा कीजिये ।

मदीना 48: ***शबे*** ईदुल फ़ित्र हो सके तो इ़बादत में गुज़ारिये । वरना कम अज़ कम इ़शा और फ़ज्र की नमाज़ें बा जमाअ़त अदा कीजिये तो ब हुक्मे ह़दीस़ पूरी रात की इ़बादत का स़वाब मिलेगा ।

मदीना 49: ***कोशिश*** कर के नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत से चांद रात उसी मस्जिद में गुज़ारिये जहां सुन्नते ए'तिकाफ़ किया है । ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं कि सय्यिदुना इब्राहीम बिन अद्हम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया: "कि बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن इस बात को पसन्द फ़रमाते थे कि (ईदुल फ़ित्र की) रात (मस्जिद ही) में गुज़ारें ताकि वहीं से उन के दिन (या'नी ईद के मुबारक दिन) की इब्तिदा हो ।" सय्यिदुना इमामे मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن का येह मा'मूल नक़्ल फ़रमाते हैं कि वोह चांद रात को अपने घरों को नहीं लौटते थे जब तक कि लोगों के साथ ईद की नमाज़ अदा न कर लेते । (अद्दुर्रुल मन्सूर, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:488)

मदीना 50: ***ईद*** की मुक़द्दस साअ़तें बाज़ारों के अन्दर ख़रीदारियों में गुज़ारने से परहेज़ कीजिये। इसी त़रह़ ईद के यौमे सईद को भी مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाहों, सिनेमा घरों और डिरामागाहों में गुज़ार कर यौमे वईद न बनाइये।

आ़शिक़ाने रसूल की स़ोह़बत ने मुझे क्या से क्या बना दिया : जहां तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** की त़रफ़ से इज्तिमाई़ ए'तिकाफ़ की तरकीब होती है वहां चांद रात को या रात मस्जिद ही में गुज़ार कर ईद के रोज़ सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र की तरकीब बनाइये اِنْ شَآءَ اللهعَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कतें ख़ुद ही देख लेंगे। अगर मॉडर्न दोस्तों वग़ैरा के साथ गुनाहों भरे माह़ौल में ईद गुज़ारी तो हो सकता है कि ए'तिकाफ़ की कमाई ज़ाएअ़ हो जाए। आप की तरग़ीब के लिये ईद के म-दनी क़ाफ़िले की एक मुश्कबार व ख़ुश गवार म-दनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं। चुनान्चे लाइन्ज़ एरिया, बाबुल मदीना कराची के एक नौ जवान इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : पहले मैं भी एक आ़म सा मॉडर्न और बे नमाज़ी लड़का था, ज़िन्दगी के शबो रोज़ ग़फ़्लतों और गुनाहों में बसर हो रहे थे। माहे र-मज़ानुल मुबारक सिने 1423 हिजरी में एक इस्लामी भाई ने मुझ पर ***इन्फ़िरादी कोशिश*** करते हुए हमारे ही अ़लाक़े की ***फ़ैज़ाने रज़ा मस्जिद*** (लाइन्ज़ एरिया) में होने वाले सुन्नतों

भरे ***इज्तिमाई ए'तिकाफ़*** में बैठने की तरग़ीब दिलाई, मैं ने ह़ामी भर ली और घर वालों से इजाज़त ले कर र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़-शरह में मो'तकिफ़ हो गया । ***ए'तिकाफ़*** में दस10 दिन तक ***आ़शिक़ाने रसूल*** की सोह़बतों की ब-र-कतों से ख़ूब मालामाल हुवा और ए'तिकाफ़ में उ़म्र भर पंज5 वक़्ता नमाज़ी बने रहने का अ़ज़्म बिल जज़्म कर लिया, दीगर गुनाहों के साथ साथ दाढ़ी मुंडाने से भी तौबा कर ली । हाथों हाथ इ़मामा शरीफ़ भी सजा लिया और सुन्नत के मुत़ाबिक़ म-दनी लिबास की भी निय्यत कर ली । ईद के दूसरे दिन आ़शिक़ाने रसूल के साथ तीन3 रोज़ा ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सुन्नतों भरा सफ़र किया और इस मुबारक सफ़र की ब-र-कत से मैं तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** का हो कर रह गया । ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ करे कि मरते दम तक ***दा'वते इस्लामी का म-दनी माह़ौल*** मुझ से न छूटे । अब मैं फ़ैशनेबल मॉडर्न लड़का न रहा था । ए'तिकाफ़ और हाथों हाथ ***म-दनी क़ाफ़िले*** के सफ़र के दौरान ***आ़शिक़ाने रसूल*** के क़ुर्ब ने اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे क्या से क्या बना दिया । मुझ पर ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का करम बालाए करम है कि मैं येह बयान देते वक़्त अपने अ़लाक़े में म-दनी इन्आ़मात के ज़िम्मादार की ह़ैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत बजा ला रहा हूं ।

फ़ज़्ले रब عَزَّوَجَلَّ ***से गुनाहों की आ़दत छुटे, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़***
नेकियों का तुम्हें ख़ूब जज़्बा मिले, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अपनी चीज़ें संभालने का त़रीक़ा : اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ

तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ''दा'वते इस्लामी'' से वाबस्ता हज़ारों इस्लामी भाई दुन्या की मुख़्तलिफ़ मसाजिद में ***इज्तिमाई ए'तिकाफ़*** करते हैं । इन सब की ख़िदमत में अ़र्ज़ है, शर-ई मस्अला येह है कि अगर दूसरे की कोई चीज़ ग़-लती से तब्दील हो कर आ जाए, चाहे अपनी चीज़ से मिलती जुलती हो तब भी उस का इस्ते'माल ना जाइज़ व गुनाह है । लिहाज़ा मो'तकिफ़ीन (और मद्रसों के मुक़ीम त़-लबा बल्कि हर एक) को चाहिये कि अपनी अपनी उन चीज़ों पर कोई निशानी लगा लें जिन का दूसरों की चीज़ों के साथ ख़ल्त़ मल्त़ हो जाने का अन्देशा हो । रहनुमाई के लिये कुछ निशानियां आगे आ रही हैं ।

(चप्पल, चादर वग़ैरा पर नाम या किसी भी ज़बान का कोई ह़र्फ़ म-स़लन A, B वग़ैरा न लिखें बल्कि हो सके तो कम्पनी का नाम भी मिटा दें । ताकि पांव तले आने पर बे अ-दबी न हो । हर ज़बान के हुरूफ़े तहज्जी (ALPHABET) का अदब कीजिये । इस मस्अले की तफ़्स़ील फ़ैज़ाने सुन्नत के बाब फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह स़-फ़ह़ा:89 ता स़-फ़ह़ा:123 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये)

ए'तिकाफ़ में बीमार पड़ जाने के अस्बाब :

اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ बरस हा बरस से ***मो'तकिफ़ीन*** की ख़िदमतों में ह़ाज़िरियों से मुशर्रफ़ है । ***ए'तिकाफ़*** के दौरान कई

इस्लामी भाइयों को ***बीमार*** पड़ते देखा है। इस का सब से बड़ा सबब जो उभर कर सामने आया वोह है "गिज़ाई बे एहतियातियां"। घर वाले और अहबाब वगैरा उम्दा व लज़ीज़ खाने, खुश्बूदार मीठी मीठी डिशें, ***कबाब समोसे,*** पिज़्ज़े, पकोड़े, खट्टी चटनियां, खिचड़ा और चटपटे आलू छोले और स-हरी में मलाई पराठे, खजला फीनी वगैरा इनायत फ़रमाते हैं और बा'ज़ मो'तकिफ़ीन मग़लूबुल हिर्स हो कर, अन्जाम से बे ख़बर जो कुछ सामने आया उस का खैर मक्दम कर के अच्छी तरह चबाए बिगैर ही झटपट पेट में पहुंचाते चले जाते हैं। नतीजतन क़ब्ज़, गेस, पेट में दर्द, बद हज़्मी, दस्त, कै, जिस्म में सुस्ती, नज़्ला, बुख़ार, सर और बदन में दर्द वगैरा अम्राज़ आ धमकते हैं। हालांकि बे चारे बड़े जज़्बे के साथ खूब इबादत का जेहन ले कर ***ए'तिकाफ़*** के लिये घर से चले होते हैं मगर खा खा कर बीमार पड़ जाते हैं और बा'ज़ अवक़ात तो नौबत यहां तक पहुंचती है कि नमाज़ की जमाअत खड़ी हो जाती है मगर येह ग़रीब सर दर्द व बुख़ार के मारे मस्जिद में लेटे किराह रहे होते हैं।

ना समझ बीमार को अम्रत भी ज़हर आमेज़ है
सच येही है सौ 100 दवा की इक दवा परहेज़ है

खाने की एहतियात का फ़ाइदा : اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم जिसने मुझ पर दस मर्तबा सुब्ह़ और दस मर्तबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे कि़यामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

दा'वते इस्लामी के आ़लमी ***म-दनी*** मर्कज़ ***फ़ैज़ाने मदीना*** बाबुल मदीना कराची में र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़-शरह में हज़ार बल्कि हज़ारों आ़शिक़ाने रसूल मो'तकिफ़ होते हैं। इन को पेश किये जाने वाले खाने में बनास्पती घी का इस्ते'माल बन्द करवाने, तेल और मसा़-लह़ा जात में भी आधों आध कमी लाने और कबाब समोसों और पकोड़ों पर पाबन्दी डलवाने की दरख़्वास्तें करते रहने से कुछ न कुछ अ़मल हुवा और इस त़रह़ दौराने ***ए'तिकाफ़*** मरीज़ों की शर्ह में अच्छी ख़ासी कमी देखी गई। काश ! हर ए'तिकाफ़ वाली मस्जिद बल्कि मुसल्मानों के हर घर में मज़्कूरा एह़तियातें अपना ली जाएं।

मुझे मुसल्मानों की सिह़्ह़त अ़ज़ीज़ है : اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ

मैं मुसल्मानों की रूह़ानी इस्लाह़ के साथ साथ जिस्मानी सिह़्ह़त व फ़लाह़ का भी आरज़ूमन्द हूं। काश ! काश ! काश ! मेरी दरख़्वास्तों के मुत़ाबिक़ ख़्वाहिश से कम खा कर और बे वक़्त मुख़्तलिफ़ चीज़ें खाने से ख़ुद को बचा कर सभी ***मो'तकिफ़ीन*** सिह़्ह़त व आ़फ़िय्यत के साथ इ़बादत व तरबिय्यत में ह़िस्सा ले कर ***इज्तिमाई़ ए'तिकाफ़*** के इख़्तिताम पर चांद रात को हाथों हाथ ***म-दनी क़ाफ़िले*** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र करने के क़ाबिल रहें। अगर मेरी अ़र्ज़ कर्दा ग़िज़ाई एह़तियातों पर उ़म्र भर अ़मल पैरा रहेंगे तो اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

आप की ज़िन्दगी ख़ुश गवार रहेगी । और डॉक्टरों और दवाओं के अख़राजात से भी नजात मिलेगी । (बराए करम ! फ़ैज़ाने सुन्नत के बाब आदाबे त़आ़म स़-फ़ह़ा:440 ता 451 पर खाने का जद्वल और तिब्बी मश्वरों से भरपूर मक्तूबे अ़त्त़ार पढ़ लीजिये) आप की तन्दुरुस्ती में मुझे यूं भी दिलचस्पी है कि इस त़रह़ اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ ***इबादतों*** का ज़ौक़ भी बढ़ेगा और सुन्नतों की तरबिय्यत के ***म-दनी क़ाफ़िलों*** में सफ़र का शौक़ भी बढ़ेगा । आप स़िह़ह़तमन्द होंगे तो ब आसानी नमाज़ों, सुन्नतों, वालिदैन और बाल बच्चों की ख़िदमत के लिये भागदौड़ कर सकेंगे । अगर मेरी दरख़्वास्तों के सबब येह सब नेक आ'माल हुए तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ मुझे भी कस़ीर स़वाब मिलेगा ।

ज़ालिमों के लिये दराज़िये उ़म्र की दुआ़ करना कैसा ? :

नमाज़ों और फ़र्ज़ इबादतों से दूर रहने वाले मुसल्मानों, अपने मुसल्मान भाइयों पर ज़ुल्मो सितम की आंधियां चलाने वालों और गुनाहों का बाज़ार गर्म करने वालों को ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हिदायत इनायत फ़रमाए । आह ! ऐसों की स़िह़ह़त भी अक्स़र अवक़ात गुनाहों में ज़ियादत का सबब बनती है । हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الوالى फ़रमाते हैं : ***"जो ज़ालिमों और फ़ासिक़ों के लिये दराज़िये उ़म्र की दुआ़ करता है, गोया इस बात को पसन्द करता है कि ज़मीन पर अल्लाह तआ़ला की*** (मज़ीद) ***ना फ़रमानी हो ।"***

(अय्युहल वलद मअ़ मज्मूअ़ए रसाइले इमाम ग़ज़ाली, स़-फ़ह़ा:266, दारुल फ़िक्र बैरूत)

हां ज़ालिमों और फ़ासिक़ों के लिये ज़ुल्मो फ़िस्क़ से बाज़ रहते हुए

सिह़्ह़त व इ़बादत के साथ त़वील उ़म्र पाने की दुआ़ की जा सकती है। खाने की एह़तियातों की निराली मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत का बाब ***पेट का कुफ़्ले मदीना*** ज़रूर पढ़ लीजिये ।

मुसल्मान की भलाई चाहना कारे स़वाब है :

ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, "मैं ने हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस बात पर बैअ़त की कि नमाज़ क़ाइम करूंगा और ज़कात अदा करूंगा और आ़म मुसल्मानों की ख़ैरख़्वाही करूंगा "(या'नी भलाई चाहूंगा) (स़ह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:48, ह़दीस़:97) اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ खुद को मुसल्मानों के ख़ैरख़्वाहों में खपाने और स़वाब कमाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त दुआ़ के साथ साथ सिह़्ह़त मन्द रहने के लिये चन्द ***म-दनी फूल*** नज़्रे ह़ाज़िर किये हैं। अगर मह़ज़ दुन्या की रंगीनियों से लुत़्फ़ अन्दोज़ होने के लिये तन्दुरुस्त रहने की आरज़ू है तो बेशक पढ़ना यहीं मौक़ूफ़ कर दीजिये और उ़म्दा सिह़्ह़त के ज़रीए़ इ़बादत और सुन्नतों की ख़िदमत पर कुव्वत ह़ासिल करने का ज़ेह्न है तो स़वाब कमाने की ग़रज़ से अच्छी अच्छी निय्यतें करते हुए दुरूद शरीफ़ पढ़ कर आगे बढ़िये और शौक़ से पढ़िये :-

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ मेरी, आप की, जुम्ला अहले ख़ानदान और सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमाए । हमें सिह़्ह़त व

आ़फ़िय्यत के साथ और दा'वते इस्लामी के ***म-दनी माह़ौल*** में रहते हुए इस्लाम की ख़िदमत पर इस्तिकामत इ़नायत फ़रमाए । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी जिस्मानी बीमारियां दूर कर के हमें ***बीमारे मदीना*** बनाए ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

कबाब समोसे खाने वाले मु-तवज्जेह हों : बाज़ार और दा'वतों के चटपटे कबाब समोसे खाने वाले तवज्जोह फ़रमाएं कबाब समोसे बेचने वाले उ़मूमन ***क़ीमा*** धोते नहीं हैं । उन के ब क़ौल ***क़ीमा*** धो कर डालें तो कबाब समोसे का ज़ाइक़ा मु-तअस्सिर होता है ! बाज़ारी क़ीमा में बा'ज़ अवक़ात क्या क्या होता है येह भी सुन लीजिये ! गाय की ***ओझड़ी*** का छिल्का उतार कर उस की "बट" में ***तिल्ली*** बल्कि مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कभी तो ***जमा हुवा ख़ून*** डाल कर मशीन में पीसते हैं इस त़रह़ सफ़ेद बट के क़ीमे का रंग गोश्त की मानिन्द ***गुलाबी*** हो जाता है । बसा अवक़ात ***कबाब समोसे*** वाले ह़स्बे ज़रूरत अदरक लहसन वग़ैरा भी क़ीमे के साथ ही पिस्वा लेते हैं । अब इस क़ीमे के धोने का सुवाल ही पैदा नहीं होता, उसी क़ीमे में मिर्च मसा़-लह़ा डाल कर भून कर उस के ***कबाब समोसे*** बना कर फ़रोख़्त करते हैं । होटलों में भी इसी त़रह़ के क़ीमे के सालन का अन्देशा रहता है । गन्दे ***कबाब समोसे*** वालों से ***पकोड़े*** वग़ैरा भी न लिये जाएं कि कड़ाही एक और तेल भी वोही गन्दे क़ीमे वाला । ख़ैर मैं येह

नहीं केहता कि مَعَاذَاللّٰه हर गोश्त बेचने वाला इस त़रह़ करता है या ख़ुदा न ख़्वास्ता हर कबाब, समोसे वाला नापाक क़ीमा ही इस्ते'माल करता है। यक़ीनन ख़ालिस़ गोश्त का क़ीमा भी मिलता है। अ़र्ज़ करने का मन्शा येह है कि क़ीमा या ***कबाब समोसे*** क़ाबिले इत़्मिनान मुसल्मान से लेने चाहियें और जो मुसल्मान ऐसी ओछी ह़-र-कतें करते हैं इन को तौबा कर लेनी चाहिये।

कबाब समोसे त़बीबों की नज़र में : ***कबाब,*** समोसे, पकोड़े, शामी कबाब, मछली और मुर्ग़ी वग़ैरा की तली हुई बोटियां, पूरियां, कचोरियां, पिज़्ज़े, पराठे, अन्डा आमलेट वग़ैर हम ख़ूब मज़े ले ले कर खाते हैं। मगर बे ज़रर नज़र आने वाली येह ख़स्ता और करारी ग़िज़ाएं अपने अन्दर कैसे कैसे मोह्लिक अम्राज़ लिये हुए हैं इस का शाज़ो नादिर ही किसी को इल्म होता है। ***तलने*** के लिये जब तेल को ख़ूब गर्म किया जाता है तो त़िब्बी तह़क़ीक़ात के मुत़ाबिक़ इस के अन्दर कई ना ख़ुश गवार नुक़्स़ानदेह माद्दे पैदा हो जाते हैं, तलने के लिये डाली जाने वाली चीज़ भी नमी छोड़ती है जिस के सबब तेल मुश्तइल हो कर चटाख़ चटाख़ का शोर मचाता है जो कि इस के कीमियाई अज्ज़ा की तोड़ फोड़ की अ़लामत है और इस के सबब ग़िज़ाई अज्ज़ा और विटामिन्ज़ तबाह हो जाते हैं।

"या रब ! लज़्ज़ाते नफ़्सानी से बचा" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से तली हुई चीज़ों से होने वाली 19 बीमारियों की निशानदही

(1) बदन का वज़्न बढ़ता है (2) आंतों की दीवारों को नुक़्सान पहुंचता है (3) इजाबत (पेट की स़फ़ाई) में गड़बड़ पैदा होती है (4) पेट का दर्द (5) मतली (6) क़ै या (7) इस्हाल (या'नी पानी जैसे दस्त) हो सकते हैं (8) चरबी के मुक़ाबले में तली हुई चीज़ों का इस्ते'माल ज़ियादा तेज़ी के साथ ख़ून में नुक़्सानदेह कोलेस्ट्रोल या'नी LDL बनाता है (9) मुफ़ीद कोलेस्ट्रोल या'नी HDL में कमी आती है (10) ख़ून में लोथड़े या'नी जमी हुई टुकड़ियां बनती हैं (11) हाज़िमा ख़राब होता है (12) गेस होती है (13) ज़ियादा गर्म कर्दा तेल में एक ज़हरीला माद्दा "एक्रूलीन" पैदा हो जाता है जो कि आंतों में ख़राश पैदा करता है बल्कि مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ (14) केन्सर का सबब भी बन सकता है (15) तेल को ज़ियादा देर तक गर्म करने और इस में चीज़ें तलने के अ़मल से इस में एक और ख़त़रनाक ज़हरीला माद्दा "फ़्री रेडीकल्ज़" पैदा हो जाता है जो कि दिल के अम्राज़ (16) केन्सर (17) जोड़ों में सोज़िश (18) दिमाग़ के अम्राज़ और (19) जल्द बुढ़ापा लाने का सबब बनता है।

"फ़्री रेडीकल्ज़" नामी ख़त़रनाक ज़हरीला माद्दा पैदा करने वाले मज़ीद और भी अ़वामिल हैं म-स़लन ★ तम्बाकूनोशी ★ हवा की आलूदगी (जैसा कि आजकल घरों में हर

वक़्त कमरा बन्द रखा जाता है न धूप आने दी जाती है न ताज़ा हवा) ★ कार का धुवां ★ एक्स रे X RAY ★ माईक्रो वेव ओवन ★ T.V. और ★ कम्प्यूटर के स्क्रीन की शुआ़एं ★ फ़ज़ाई सफ़र की ताबकारी (या'नी हवाई जहाज़ का शुआ़एं फेंकने का अ़मल)

ख़त़रनाक ज़हर का तोड़ : ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने इस ख़त़रनाक ज़हर या'नी "फ़्री रेडीकल्ज़" का तोड़ भी पैदा फ़रमाया है चुनान्चे जिन सब्ज़ियों और फलों का रंग सब्ज़, ज़र्द या नारन्जी या'नी सुर्ख़ी माइल ज़र्द होता है येह इस ख़त़रनाक ज़हर को तबाह कर देते हैं इस त़रह़ के फलों और सब्ज़ियों का रंग जिस क़-दर गहरा होगा उन में विटामिन्ज़ और मा'दनी अज्ज़ा की मिक़्दार भी ज़ियादा होती है वोह इस ज़हर का ज़ियादा क़ुव्वत के साथ तोड़ करते हैं ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तली हुई चीज़ों का नुक़्स़ान कम करने का त़रीक़ा :

दो 2 बातों पर अ़मल करने से तली हुई चीज़ों के नुक़्स़ानात में कमी आ सकती है : (1) कबाब समोसे, पकोड़े, अन्डा आमलेट, मछली वग़ैरा तलने के लिये जो कड़ाही या फ़्राई पैन इस्ते'माल किया जाए वोह नॉन स्टिक (non stick) हो (2) तलने के बा'द एक एक चीज़ को बे ख़ुश्बू टिशू पेपर में अच्छी त़रह़ लपेट लिया जाए ताकि कुछ न कुछ तेल जज़्ब हो जाए ।

बचा हुवा तेल दोबारा इस्ते'माल करने का त़रीक़ा :

माहिरीन का केहना है कि एक बार तलने के लिये इस्ते'माल करने के बा'द तेल को दोबारा गर्म न किया जाए। अगर दोबारा इस्ते'माल करना हो तो इस का त़रीक़ा येह है कि इस को छान कर रेफ़्रिजरेटर में रख दिया जाए, बिग़ैर छाने फ़्रिज में न रखा जाए।

फ़न्ने त़िब्ब यक़ीनी नहीं : ***तली*** हुई चीज़ों के नुक़्स़ानात के तअ़ल्लुक़ से मैं ने जो कुछ अ़र्ज़ किया वोह मेरी अपनी नहीं त़बीबों की तह़क़ीक़ है। येह उसूल याद रखने के क़ाबिल है कि फ़न्ने त़िब्ब सारे का सारा ज़न्नी है यक़ीनी नहीं।

फ़ैशन परस्त "मुबल्लिग़े सुन्नत" बन गए : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** नुक़्स़ानदेह चीज़ें खाने पीने की ह़िर्स़ मिटाने, फ़िरंगी फ़ैशन से जान छुड़ाने, सुन्नतें अपनाने और अपना सीना इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मदीना बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के सदा बहार म-दनी माह़ौल से हर दम वाबस्ता रहिये। आइये ! आप की तरग़ीब के लिये एक ख़ुश गवारो मुश्कबार ***म-दनी बहार*** आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे इन्दौर शहर (M.P. अल हिन्द) के एक मोडर्न नौ जवान ने आख़िरी अ़-श-रए र-मज़ानुल मुबारक सिने 1426 हिजरी में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की

आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** की त़रफ़ से किये जाने वाले ***इज्तिमाई ए'तिकाफ़*** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ ए'तिकाफ़ करने की सआ़दत ह़ासिल की। दा'वते इस्लामी के ***म-दनी माह़ौल*** और आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की ब-र-कत से क़ल्ब में ***म-दनी इन्क़िलाब बरपा*** हो गया, चेहरे पर दाढ़ी की बहारें मुस्कराने लगीं और सब्ज़ इमामा शरीफ़ से सर सब्ज़ हो गया, हाथों हाथ 12 दिन के लिये सुन्नतों की तरबिय्यत के ***म-दनी क़ाफ़िले*** के मुसाफ़िर बन गए ख़ूब म-दनी रंग चढ़ा। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी बन गए। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर अपने शहर के अन्दर ***दा'वते इस्लामी*** की एक ह़ल्क़ा मुशा-वरत के ***निगरान*** की हैसिय्यत से म-दनी कामों की धूमें मचा रहे हैं।

गर चे दिल में है फ़ैशन की उल्फ़त भरी, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
उ़म्र आइन्दा गुज़रेगी सुन्नत भरी म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हर इस्लामी भाई और हर इस्लामी बहन का ***ए'तिकाफ़*** क़बूल फ़रमा और उस की ब-र-कतों से मालामाल कर। या अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ हमें भी ***ए'तिकाफ़*** करने की सआ़दत नसीब फ़रमा।

اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلى الله تعالىٰ عليه واٰله وسلم

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सौ बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सौ साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे।

मस्जिद से महब्बत की फ़ज़ीलत

हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने उल्फ़त निशान है : "जो मस्जिद से उल्फ़त (महब्बत) रखता है अल्लाह तआ़ला उस से उल्फ़त रखता है।" (त़-बरानी अवसत़, ह़दीस़:2379, बैरूत)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی इस की शर्ह़ में लिखते हैं : "मस्जिद से उल्फ़त इस त़रह़ है कि रिज़ाए इलाही के लिये इस में ए'तिकाफ़, नमाज़, ज़िक्रुल्लाह, और शर-ई मसाइल सीखने सिखाने के लिये बैठे रहने की आ़दत बनाना है। और अल्लाह तआ़ला का उस बन्दे से महब्बत रखना इस त़रह़ है कि अल्लाह तआ़ला उस को अपने सायए रह़मत में जगह अ़त़ा फ़रमाता और इस को अपनी ह़िफ़ाज़त में दाख़िल फ़रमाता है।" (फ़ैज़ुल क़दीर, जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:107, दारुल फ़िक्र बैरूत)

मस्जिद की ज़ियारत की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे रह़मत बुन्याद है : बेशक मस्जिदें ज़मीन में अल्लाह तआ़ला के घर हैं और अल्लाह तआ़ला पर ह़क़ है कि वोह (अपने घर की) ज़ियारत करने वाले का इक्राम (इ़ज़्ज़त) करे।" (त़-बरानी कबीर, जिल्द:10, स़-फ़ह़ा:61, ह़दीस़:10324, बैरूत)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی इस की शरह़ में फ़रमाते हैं : या'नी मस्जिदें वोह जगहें हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अपनी रह़मतों को उतारने के लिये चुना है।"

(फ़ैज़ुल क़दीर, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:552, दारुल फ़िक्र, बैरूत)

मस्जिद में हंसने की सज़ा

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, हुज़ूरे पाक, स़ाहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है **اَضَّحِكُ فِى الْمَسْجِدِ ظُلْمَةٌ فِى الْقَبْرِ** या'नी ''मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा (लाता) है।''

(अल फ़िरदौस बिमअ सूरुल ख़ित़ाब, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:431, ह़दीस़:3891, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

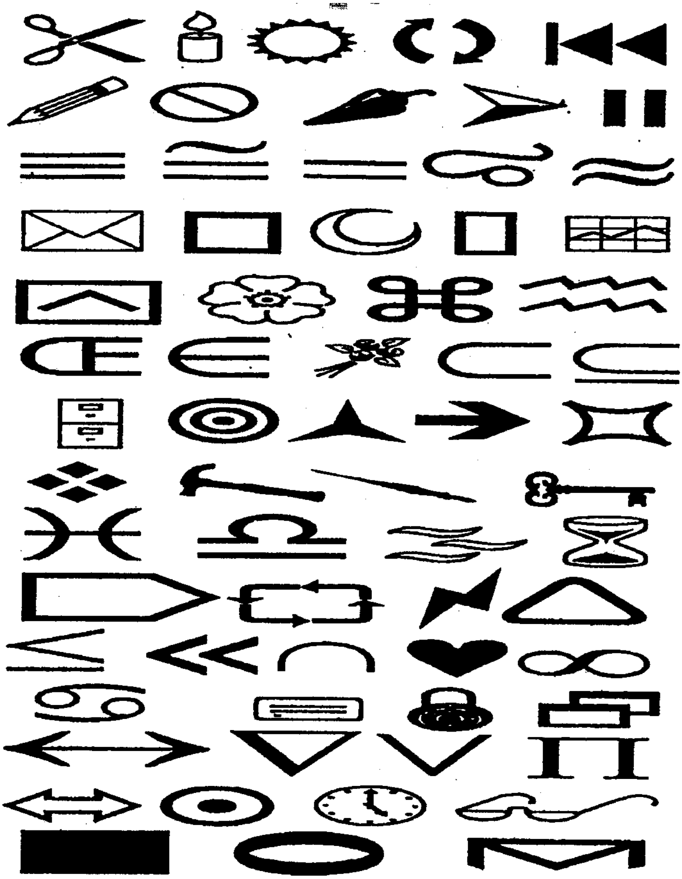
जहन्नम के दरवाज़े पर नाम

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

مَنْ تَرَكَ صَلَاةً مُتَعَمِّدًا كُتِبَ اسْمُهٗ عَلٰى بَابِ النَّارِ فِيْمَنْ يَدْخُلُهَا

या'नी ''जो कोई जानबूझ कर एक नमाज़ भी क़ज़ा कर देता है, उस का नाम जहन्नम के उस दरवाज़े पर लिख दिया जाएगा जिस से वोह जहन्नम में दाख़िल होगा।''

(ह़िल्यतुल औलिया, जिल्द:7, स़-फ़ह़ा:299, ह़दीस़:10590, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या, बैरूत)



जन्नत से मह़रूम

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : لَایَدْخُلُ الْجَنَّۃَ قَتَّاتٌ या'नी "चुग़ल ख़ोर जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।" (स़ह़ीहुल बुख़ारी, स़-फ़ह़ा:512, ह़दीस़:6056)

तौबा की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : **اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ** या'नी ''गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसा कि उस ने गुनाह किया ही नहीं।''

(''सु-नने इब्ने माजह'', ह़दीस़:4250, स़-फ़ह़ा:2735)

मिस्वाक की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : **اَلسِّوَاكُ مَطْهَرَةٌ لِّلْفَمِ مَرْضَاةٌ لِّلرَّبِّ** या'नी ''मिस्वाक मुंह की पाकीज़गी और ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुश्नूदी का सबब है।''

(सु-नने इब्ने माजह, स़-फ़ह़ा:2495, ह़दीस़:289)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

फ़ैज़ाने ईदुल फ़ित्र

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

एक बार किसी भिकारी ने कुफ़्फ़ार से सुवाल किया, उन्हों ने मज़ाक़न अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के पास भेज दिया जो कि सामने तशरीफ़ फ़रमा थे। उस ने ह़ाज़िर हो कर दस्ते सुवाल दराज़ किया। आप كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने ***दस10 बार दुरूद शरीफ़*** पढ़ कर उस की हथेली पर दम कर दिया और फ़रमाया, मुट्ठी बन्द कर लो और जिन लोगों ने भेजा है उन के सामने जा कर खोल दो। (कुफ़्फ़ार हंस रहे थे कि ख़ाली फूंक मारने से क्या होता है !) मगर जब साइल ने उन के सामने जा कर मुट्ठी खोली तो वोह ***सोने के दीनारों*** से भरी हुई थी ! येह ***करामत*** देख कर कई काफ़िर मुसलमान हो गए।

(राह़तुल कुलूब, स़-फ़ह़ा:72)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उसने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह्क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने र-मज़ान के मुबारक महीने के मुत-अ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया है कि इस महीने का पहला अ़-शरह ***रह़मत,*** दूसरा ***मग़्फ़िरत*** और तीसरा[3] अ़-शरह ***जहन्नम*** से आज़ादी का है।

(स़ह़ीह़ इब्ने ख़ुज़ैमा, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:191, ह़दीस़:1887)

मा'लूम हुवा कि र-मज़ानुल मुबारक रह़मत व मग़्फ़िरत और जहन्नम से आज़ादी का महीना है, लिहाज़ा इस ब-र-कतों वाले महीने के फ़ौरन बा'द हमें ईदे सईद की ख़ुशी मनाने का मौक़अ़ फ़राहम किया गया है और ईदुल फ़ित्र के रोज़ ख़ुशी का इज़्हार करना मुस्तह़ब है। लिहाज़ा हमें ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो रह़मत पर ज़रूर इज़्हारे मुसर्रत करना चाहिये कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो रह़मत पर ख़ुशी करने की तरग़ीब तो हमें ख़ुद ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का सच्चा कलाम भी दे रहा है। चुनान्चे पारह 11 सूरए यूनुस की आयत नम्बर 58 में इर्शाद होता है :

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: तुम फ़रमाओ ***अल्लाह*** (عَزَّوَجَلَّ) ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत, इसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें।

(पारह:11, यूनुस:58)

हम ईद क्यूं न मनाएं ? : ***देखिये !*** जब कोई ता़लिबे इ़ल्म इम्तिह़ान में काम्याब हो जाता है तो वोह किस क़-दर ख़ुश होता है । माहे र-मज़ानुल मुबारक की ब-र-कतों और रह़्मतों के तो क्या केहने ! येह तो वोह अ़ज़ीमुश्शान महीना है जिस में बनी नौए इन्सान की फ़लाह़ व बहबूदी, इस्लाह़ व तरक़्क़ी और नजाते उख़्रवी के लिये एक "ख़ुदाई क़ानून" या'नी ***कुरआने मजीद*** नाज़िल हुवा । येह वोह महीना है जिस में हर मुसल्मान की ह़रारते ईमान का इम्तिह़ान लिया जाता है । पस ज़िन्दगी का एक बेह्तरीन दस्तूरुल अ़मल पा कर और एक महीने के सख़्त इम्तिह़ान में काम्याब हो कर एक मुसल्मान का ख़ुश होना फ़ित्री बात है ।

मुआ़फ़ी का ए'लाने आ़म : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का करम बालाए करम है कि उसने माहे र-मज़ानुल मुबारक के फ़ौरन ही बा'द हमें ***ईदुल फ़ित्र*** की ने'मते उ़ज़्मा से सरफ़राज़ फ़रमाया । इस ***ईदे सईद*** की बेह़द फ़ज़ीलत है । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की एक रिवायत में येह भी है : जब ईदुल फ़ित्र की मुबारक रात तशरीफ़ लाती है तो इसे "लैलतुल जाइज़ा' या'नी "इन्आ़म की रात" के नाम से

पुकारा जाता है । जब **ईद** की सुब्ह़ होती है तो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ अपने मा'सूम फ़िरिश्तों को तमाम शहरों में भेजता है, चुनान्चे वोह फ़िरिश्ते ज़मीन पर तशरीफ़ ला कर सब गलियों और राहों के सिरों पर खड़े हो जाते हैं और इस त़रह़ निदा देते हैं, "ऐ ***उम्मते मुह़म्मद !*** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की बारगाह की त़रफ़ चलो ! जो बहुत ही ज़ियादा अ़ता करने वाला और बड़े से बड़ा गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाने वाला है ।" फिर ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों से यूं मुख़ात़िब होता है : "ऐ मेरे बन्दो ! मांगो ! क्या मांगते हो ? मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! आज के रोज़ इस (नमाज़े ईद के) इज्तिमाअ़ में अपनी आख़िरत के बारे में जो कुछ सुवाल करोगे वोह पूरा करूंगा और जो कुछ दुन्या के बारे में मांगोगे उस में तुम्हारी भलाई की त़रफ़ नज़र फ़रमाऊंगा (या'नी इस मुआ़-मले में वोह करूंगा जिस में तुम्हारी बेह़तरी हो) मेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! जब तक तुम मेरा लिह़ाज़ रखोगे मैं भी तुम्हारी ख़त़ाओं पर पर्दा पोशी फ़रमाता रहूंगा । मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तुम्हें ह़द से बढ़ने वालों (या'नी मुजरिमों) के साथ रुस्वा न करूंगा । बस अपने घरों की त़रफ़ ***मग़्फ़िरत याफ़्ता*** लौट जाओ । तुम ने मुझे राज़ी कर दिया और मैं भी तुम से राज़ी हो गया ।"

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:60, ह़दीस़:23)

ईदी मिलने की रात : سُبْحٰنَ الله! (عَزَّوَجَلَّ), سُبْحٰنَ الله! (عَزَّوَجَلَّ) ***प्यारे इस्लामी भाइयो !*** ख़ुदाए रहमान عَزَّوَجَلَّ हम गुनहगारों पर किस क़दर मेहरबान है । एक तो र-मज़ानुल मुबारक में सारा महीना वोह हम पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाता ही रहता है । फिर जूं ही येह मुबारक महीना हम से जुदा होता है, फ़ौरन हमें ***ईदे सईद*** की ख़ुशियां अ़ता फ़रमाता है । गुज़श्ता ह़दीसे मुबारक में शव्वालुल मुकर्रम की चांद रात या'नी शबे ईदुल फ़ित्र को "लैलतुल जाइज़ा" या'नी "इन्आ़म की रात" क़रार दिया गया है । येह रात नेक लोगों को इन्आ़म मिलने की गोया "ईदी" दिये जाने की रात है । इस मुबारक रात की बेहद फ़ज़ीलत है । चुनान्चे

दिल ज़िन्दा रहेगा : ***नबियों*** के सुल्तान, रह़मते आ़लमियान, सरदारे दो जहान मह़बूबे रह़मान عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है, जिस ने ईदैन की रात (या'नी शबे ईदुल फ़ित्र और शबे ईदुल अज़्ह़ा) त़-लबे स़वाब के लिये क़ियाम किया, उस दिन उस का दिल नहीं मरेगा, जिस दिन (लोगों के) दिल मर जाएंगे ।

(सु-नने इब्ने माजह, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:365, ह़दीस़:1782)

जन्नत वाजिब हो जाती है : ***एक*** और मक़ाम पर ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, फ़रमाते हैं,

जो पांच रातों में शब बेदारी करे उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है । ज़ुल हिज्जा शरीफ़ की आठवीं[8], नवीं[9] और दस्वीं रात (इस त़रह़ तीन[3] रातें तो येह हुईं) और चौथी ईदुल फ़ित्र की रात, पांचवीं[5] शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं रात (या'नी शबे बराअत) ।

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:98, ह़दीस़:2)

सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की रिवायत कर्दा त़वील ह़दीसे़ पाक (जो आगे गुज़री) में येह मज़्मून भी है कि ***ईद*** के रोज़ मा'सूम फ़िरिश्ते ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ाओं और बख़्शिशों का ए'लान करते हैं । और ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ख़ुद भी बेह़द करम फ़रमाता है और अपनी इनायत व रह़मत से नमाज़े ईद के लिये जम्अ़ होने वाले मुसल्मानों की ***मग़्फ़िरत*** फ़रमा देता है । मज़ीद बर आं ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से येह भी फ़रमाया जाता है कि जिसे जो कुछ दुन्या व आख़िरत की ख़ैर मांगनी है वोह सुवाल करे, उस पर ज़रूर करम किया जाएगा । काश ! ऐसे मांगने के मवाके़अ़ पर हमें मांगना आ जाए, क्यूं कि ड़मूमन लोग इन मौक़ओं पर सिर्फ़ दुन्या की ख़ैर, रोज़ी में ब-र-कत और न जाने क्या क्या दुन्या के मुआ़-मलात पर सुवाल करते हैं । दुन्या की ख़ैर के साथ साथ आख़िरत की ख़ैर ज़ियादा मांगनी चाहिये । दीन पर इस्तिक़ामत और ***ख़ातिमए बिल ख़ैर*** वोह भी मदीने में वोह भी सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, स़ाह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

के क़दमों में वोह भी ब सूरते शहादत और मदफ़न जुन्नतुल बक़ीअ़ में और बिला ह़िसाबो किताब मग़्फ़िरत और जन्नतुल फ़िरदौस में ***सरकारे मदीना*** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ौस भी मांग लेना चाहिये।

कोई साइल मायूस नहीं जाता : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** ग़ौर तो फ़रमाइये ! ***ईदुल फ़ित्र*** का दिन किस क़-दर अहम्म तरीन दिन है। इस दिन ***अल्लाहु*** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की रह़मत निहायत ही जोश पर होती है, दरबारे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ से कोई साइल मायूस नहीं लौटाया जाता। एक त़रफ़ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की बे पाया रह़मतों और बख़्शिशों पर ख़ुशियां मना रहे होते हैं। तो दूसरी त़रफ़ मोमिनों पर ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की इतनी करम नवाज़ियां देख कर इन्सान का बद तरीन दुश्मन शैत़ान आग बगूला हो जाता है। चुनान्चे

शैत़ान की बद ह़वासी : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, जब भी ईद आती है, शैत़ान चिल्ला चिल्ला कर रोता है। इस की बद ह़वासी देख कर तमाम शयात़ीन उस के गिर्द जम्अ़ हो कर पूछते हैं, ऐ आक़ा ! आप क्यूं ग़ज़बनाक और उदास हैं ? वोह केहता है, हाए अफ़्सोस ! ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने आज के दिन ***उम्मते मुह़म्मद*** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को

बख़्श दिया है। लिहाज़ा तुम इन्हें लज़्ज़ात और नफ़्सानी ख़्वाहिशात में मश्गूल कर दो। (मुका-श-फ़तुल कुलूब, स-फ़हा:308)

क्या शैतान काम्याब है : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** देखा आपने ? शैतान पर ***ईद*** का दिन किस क़-दर गिरां गुज़रता है। लिहाज़ा वोह अपनी ज़ुर्रियत को हुक्म सादिर कर देता है कि तुम मुसल्मानों को लज़्ज़ाते नफ़्सानी में मश्गूल कर दो। आह ! फ़ी ज़माना शैतान अपने इस वार में काम्याब होता नज़र आ रहा है। आह ! सद आह !! ***ईद*** की आमद पर होना तो येह चाहिये था कि इबादात व ह-सनात की कसरत व बोहतात कर के ***अल्लाह*** रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ का ज़ियादा से ज़ियादा शुक्र अदा किया जाता। मगर अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! अब मुसल्मान ***ईदे सईद*** का हक़ीक़ी मक़्सद ही भुला बैठे हैं। ***वा हसरता !*** अब तो ***ईद*** मनाने का येह अन्दाज़ हो गया है कि बेहूदा क़िस्म के उल्टे सीधे डिज़ाइन वाले बल्कि مَعَاذَاللهِ عَزَّوَجَلَّ जानदारों तक की तसावीर वाले भड़कीले कपड़े पहने जाते हैं (बहारे शरीअ़त में है कि जानवर या इन्सान की तसवीर वाला लिबास पहन कर नमाज़ पढ़ना मकरूहे तहरीमी (या'नी क़रीब ब हराम) है ऐसे कपड़े तब्दील कर के या ऊपर दूसरा कोई लिबास पहन कर नमाज़ दोबारा अदा करना वाजिब है। नमाज़ के इलावा भी जानदार की तस्वीर वाला कपड़ा पहनना ना जाइज़ है। (ख़ुलासा अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा:3, स-फ़हा:141 ता 142)

रक़्स व सुरूद की मह़फ़िलें गर्म की जाती हैं, बे ढंगे मेलों, गन्दे खेलों, नाचगानों, और फ़िल्मों डिरामों का एहतिमाम किया जाता है। और जी खोल कर वक़्त व दौलत दोनों[2] को ख़िलाफ़े सुन्नत व शरीअ़त अफ़आ़ल में बरबाद किया जाता है। अफ़्सोस ! स़द हज़ार अफ़्सोस ! अब इस मुबारक दिन को किस क़-दर ग़लत़ कामों में गुज़ारा जाने लगा है। मेरे ***इस्लामी भाइयो !*** इन ख़िलाफ़े शर-अ़ बातों के सबब हो सकता है कि येह ***ईदे सईद*** ना शुक्रों के लिये "यौमे वईद" बन जाए। लिल्लाह ! अपने ह़ाल पर रह़्म कीजिये ! फ़ैशन परस्ती और फ़ुज़ूल ख़र्ची से बाज़ आ जाइये ! देखिये तो सही ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़ुज़ूल ख़र्चों को कुरआने पाक में शैत़ानों का भाई क़रार दिया है। चुनान्चे पारह 15 सूरए बनी इस्राईल की आयत नम्बर 26 और 27 में इर्शाद होता है :-

وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿۲۶﴾ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ﴿۲۷﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: और फ़ुज़ूल न उड़ा बेशक उड़ाने वाले शैत़ानों के भाई हैं और शैत़ान अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) का बड़ा ना शुक्रा है।

(पारह:15, बनी इस्राईल, 26,27)

इन्सान व हैवान में फ़र्क़ : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** देखा आपने ? फ़ुज़ूल ख़र्ची करने की किस क़-दर मज़म्मत कुरआने पाक में वारिद हुई है। ***याद रखिये !*** इन फ़ुज़ूल ख़र्चियों से हरगिज़ हरगिज़ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ख़ुश नहीं होता। याद

रखिये ! इन्सान और हैवान में जो मा बिहिल इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़ करने वाली चीज़) है वोह अक़्ल व तदबीर, दूर बीनी और दूर अन्देशी है । उ़मूमन हैवान को "कल" की फ़िक्र नहीं होती, और आ़म तौ़र पर उस की कोई ह़-र-कत किसी ह़िक्मते अ़-मली के मा तह़्त नहीं होती । बर ख़िलाफ़ इन्सानों के, कि उन्हें न सिर्फ़ कल ही की बल्कि मुसल्मान को तो इस दुन्यवी ज़िन्दगी के बा'द वाली उख़्रवी ज़िन्दगी की भी फ़िक्र होती है । पस समझदार इन्सान वोही है बल्कि ह़क़ीक़तन इन्सान ही वोह है जो "कल" या'नी आख़िरत की भी फ़िक्र करे और ह़िक्मते अ़मली से काम ले मगर ***अफ़्सोस !*** आज कल ह़िक्मते अ़-मली का तो नाम तक नहीं रहा, इस फ़ानी ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुए आख़िरत के लिये कोई इन्तिज़ाम नहीं किया जाता । आह ! अब तो लोग अपनी ज़िन्दगी का मक़्स़द माल कमाना, ख़ूब डट कर खाना और फिर ग़फ़्लत की नींद सो जाना ही समझते हैं ।

क्या कहूं अह़बाब क्या कारे नुमायां कर गए !

B.A. किया, नौकर हुए, पेन्शन मिली फिर मर गए !!

ज़िन्दगी का मक़्स़द क्या है ? : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** ज़िन्दगी का मक़्स़द सिर्फ़ बड़ी बड़ी डिग्रियां ह़ासिल करना, खाना पीना, और मज़े उड़ाना नहीं है । ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने आख़िर हमें ज़िन्दगी क्यूं मर्ह़मत फ़रमाई ? आइये ! क़ुरआने पाक की ख़िदमत में अर्ज़ करें कि ए ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की सच्ची

किताब ! तू ही हमारी रहनुमाई फ़रमा कि हमारे जीने का और मरने का मक़्सद क्या है ? कुरआने अ़ज़ीम से जवाब मिल रहा है कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :-

خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: मौत और ज़िन्दगी पैदा की कि तुम्हारी जांच हो (दुन्यावी ज़िन्दगी में) तुम में किस का काम ज़ियादा अच्छा है।

(पारह:29, अल मुल्क:2)

या'नी इस मौतो ह़यात को इस लिये तख़्लीक़ (पैदा) किया गया ताकि आज़्माया जाए कि कौन ज़ियादा मुत़ीअ़ (फ़रमां बरदार) और मुख़्लिस़ है।

घर ही पर विलादत हो गई : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** शैत़ान के वार से बचने की कोशिश के ज़िम्न में ईद की ह़सीन साअ़तें आ़शिक़ाने रसूल के साथ म-दनी क़ाफ़िले में गुज़ारिये। आप की तरग़ीब के लिये एक सच्चा वाक़ेआ़ अ़र्ज़ करता हूं : जहलम (सूबए पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई ने कुछ इस त़रह़ बताया कि शादी के कमो बेश 6 माह बा'द घर में ''उम्मीद'' के आसार ज़ाहिर हुए। डॉक्टर ने बताया कि आप का केस पेचीदा है, ख़ून की भी काफ़ी कमी है, हो सकता है ऑपरेशन करना पड़े ! मैं ने उसी वक़्त ***30 दिन के*** लिये ***म-दनी क़ाफ़िले*** का मुसाफ़िर बनने की निय्यत कर ली और चन्द रोज़ के बा'द ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ सफ़र पर रवाना हो गया।

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत से ऐसा करम हो गया कि न अस्पताल जाने की नौबत आई और न ही किसी डॉक्टर को दिखाना पड़ा, घर ही में ख़ैरिय्यत के साथ ***म-दनी मुन्ने*** की विलादत हो गई।

घर में "उम्मीद" हो, इस की तम्हीद हो — जल्द ही चल पड़ें, क़ाफ़िले में चलो
ज़च्चा की ख़ैर हो, बच्चे की ख़ैर हो — उठिये हिम्मत करें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हि़फ़ाज़ते ह़म्ल के 2 रूह़ानी इलाज : (1) لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ 11 बार किसी रिकाबी (या काग़ज़) पर लिख कर धो कर औ़रत को पिला दीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ***ह़म्ल*** की हि़फ़ाज़त होगी। जिस औ़रत को दूध न आता हो या कम आता हो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस के लिये भी येह अ़मल मुफ़ीद है। चाहें तो एक ही दिन पिलाएं या कई रोज़ तक रोज़ाना ही लिख कर पिलाएं हर त़रह़ से इख़्तियार है।

(2) **یا حَیُّ یا قَیُّومُ** 111 बार किसी काग़ज़ पर लिख कर ***ह़ामेला*** के पेट पर बांध दीजिये और विलादत के वक़्त तक बांधे रहिये। (ज़रू-रतन कुछ देर के लिये खोलने में ह़-रज नहीं) اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ***ह़म्ल*** भी मह़फ़ूज़ रहेगा और बच्चा भी सिह़्ह़त मन्द पैदा होगा।

ईद या वई़द : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** लाइक़े अ़ज़ाब कामों का इर्तिकाब कर के "यौमे ईद" को अपने लिये "यौमे वई़द" न बनाइये। और याद रखिये !

لَيْسَ الْعِيدُ لِمَنْ لَّبِسَ الْجَدِيْد اِنَّمَا الْعِيدُ لِمَنْ خَافَ الْوَعِيد

(या'नी ईद उस की नहीं जिसने नए कपड़े पहन लिये। ईद तो उस की है जो अ़ज़ाबे इलाही (عَزَّوَجَلَّ) से डर गया)

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى भी तो ईद मनाते रहे हैं :

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आजकल गोया लोग सिर्फ़ नए नए कपड़े पहनने और उ़म्दा खाने तनावुल करने को ही مَعَاذَالله ***ईद*** समझ बैठे हैं। ज़रा ग़ौर तो कीजिये ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن भी तो आख़िर ईद मनाते रहे हैं। मगर इन के ***ईद*** मनाने का अन्दाज़ ही निराला रहा है। वोह दुन्या की लज़्ज़तों से कोसों दूर भागते रहे हैं और हर ह़ाल में अपने नफ़्स की मुख़ा-लफ़त करते रहे हैं। चुनान्चे

ईद का अनोखा खाना : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ***दस[10] बरस*** तक कोई लज़ीज़ खाना तनावुल न फ़रमाया, नफ़्स चाहता रहा और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नफ़्स की मुख़ा-लफ़त फ़रमाते रहे, एक बार ***ईद मुबारक*** की मुक़द्दस रात को दिल ने मश्वरा दिया कि कल अगर ***ईदे सईद*** के रोज़ कोई लज़ीज़ खाना खा लिया जाए तो क्या ह़-रज है ? इस मश्वरे पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने भी दिल को आज़्माइश में मुब्तला करने की ग़रज़ से फ़रमाया, ''मैं अव्वलन दो रक्अ़त नफ़्ल में पूरा क़ुरआने पाक ख़त्म करूंगा, ऐ मेरे दिल ! तू अगर इस बात में मेरा

साथ दे तो कल लज़ीज़ खाना मिल जाएगा ।" लिहाज़ा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दो[2] रक्अ़त अदा की और इन में पूरा कुरआने मजीद ख़त्म किया । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दिल ने इस अम्र में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का साथ दिया । (या'नी दोनों[2] रक्अ़तें दिल जम्ई के साथ अदा कर ली गईं) आप ने ***ईद*** के दिन लज़ीज़ खाना मंगवाया । निवाला उठा कर मुंह में डालना ही चाहते थे कि बे क़रार हो कर फिर रख दिया और न खाया । लोगों ने इस की वजह पूछी तो फ़रमाया, जिस वक़्त मैं निवाला मुंह के क़रीब लाया तो मेरे नफ़्स ने कहा, देखा ? मैं आख़िर अपनी दस[10] साल पुरानी ख़्वाहिश पूरी करने में काम्याब हो गया ना ! मैं ने उसी वक़्त कहा, कि अगर येह बात है तो मैं तुझे हरगिज़ काम्याब न होने दूंगा और हरगिज़ हरगिज़ लज़ीज़ खाना न खाऊंगा । चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने लज़ीज़ खाना खाने का इरादा तर्क कर दिया । इतने में एक शख़्स लज़ीज़ खाने का त़बाक़ उठाए हुए ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की, येह खाना मैं ने रात को अपने लिये तैयार किया था । रात जब सोया तो क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, ख़्वाब में ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की सआ़दत ह़ासिल हुई । मेरे प्यारे प्यारे और मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया, अगर तू कल क़ियामत के रोज़ भी मुझे देखना चाहता है तो येह खाना ज़ुन्नून (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) के पास ले जा और उन से जा कर केह कि

"हज़रत मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم وَرَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) फ़रमाते हैं, कि दम भर के लिये नफ़्स के साथ सुल्ह कर लो और चन्द निवाले इस लज़ीज़ खाने से खा लो ।" हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه येह पैग़ामे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुन कर झूम उठे, और केहने लगे ! "मैं फ़रमां बरदार हूं, मैं फ़रमां बरदार हूं ।" और लज़ीज़ खाना खाने लगे । (तज़्किरतुल औलिया, स़-फ़ह़ा:117) ***अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दके़ हमारी मग़्फ़िरत हो ।***

रब عَزَّوَجَلَّ है मुअ़्ती येह हैं क़ासिम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم रिज़्क़ उस का है खिलाते येह हैं
ठन्डा ठन्डा मीठा मीठा पीते हम हैं पिलाते येह हैं

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم खिलाते हैं सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पिलाते हैं :

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ? ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे ईद के रोज़े सईद भी नफ़्स की पैरवी से किस क़-दर दूर रहते हैं, यक़ीनन यक़ीनन ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल बन्दे नफ़्सानी ख़्वाहिशात की कुछ भी परवाह नहीं करते और हर आन ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ही में राज़ी रहते हैं और

उन की येह शान होती है कि अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ातिर वोह लज़ाइज़े दुन्यवी से ***मुज्तनिब*** रहते हैं। ऐसे ख़ुश बख़्तों को ख़ुसूसिय्यत के साथ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खिलाते हैं। येह भी मा'लूम हुवा कि मदीने के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत के ह़ालात से आज भी बा ख़बर हैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने मह़बूब गुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ह़ालात मुला-ह़ज़ा फ़रमा रहे थे जभी तो अपने एक गुलाम को हुक्म फ़रमा कर ह़ज़रत को पैग़ाम भिजवाया और अपने करम से खाना खिलाया।

सरकार ﷺ खिलाते हैं सरकार ﷺ पिलाते हैं
सुल्तानो गदा सब को सरकार ﷺ निभाते हैं

रूह़ को भी सजाइये : ***प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !*** इस में कोई शक नहीं कि ***ईद*** के दिन गुस्ल करना, नए या धुले हुए कपड़े पहनना और इ़त्र लगाना सुन्नत है। येह सुन्नतें हमारे ज़ाहिरी बदन की स़फ़ाई के लिये हैं। लेकिन हमारे इन स़ाफ़, उजले और नए कपड़ों और नहाए हुए और ख़ुश्बू मले हुए जिस्म के साथ साथ हमारी ***रूह़*** भी, हम पर हमारे मां बाप से भी ज़ियादा मेहरबान ***ख़ुदाए रह़मान*** عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत व इत़ाअ़त और सरकारे वाला

तबार, बि इज़्ने परवर्द गार दो[2] जहां मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उल्फ़त व सुन्नत से ख़ूब ख़ूब सजी हुई होनी चाहिये ।

नजासत पर चांदी का वरक़ : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** सोचिये तो सही ! रोज़ा एक भी न रखा हो, सारा माहे र-मज़ान ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानियों में गुज़ारा हो, बजाए मस्जिद में या इबादात में गुज़ारने के सारी रातें ऊधम बाज़ी, ऊछल कूद, क्रिकेट खेलने या उस का तमाशा देखने, टेबल फ़ुटबॉल और विडियो गेम्ज़ खेलने या आवारा गर्दी करने में गुज़री हों । बजाए तिलावते कलामे पाक के रूमानी नॉविलें पढ़ी हों और बजाए ना'तें सुनने के टेप रेकॉर्डर पर ख़ूब फ़िल्मी गाने सुने हों और यूं अपने जिस्म व रूह़ को दिन रात गुनाहों में मुलव्वस रखा हो और आज ***ईद*** के दिन फ़िरंगी त़र्ज़ के इंग्लिश फ़ैशन वाले बे ढंगे कपड़े पहन भी लिये तो उसे यूं समझिये कि गोया एक नजासत थी जिस पर चांदी का वरक़ चस्पां कर के उस की नुमाइश कर दी गई ।

ईद किस के लिये है ? : ***सरकार*** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत से सरशार दीवानो ! सच्ची बात तो येही है कि ईद उन ख़ुशबख़्त मुसल्मानों का ह़िस्सा है जिन्हों ने माहे मोह़तरम, ***र-मज़ानुल मुअ़ज़्ज़म*** को रोज़ों, नमाज़ों और दीगर इबादतों में गुज़ारा । तो येह ***ईद*** उन के लिये ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़

से मज़्दूरी मिलने का दिन है । हमें तो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***से डरते रहना चाहिये कि आह ! मोह़तरम माह का हम ह़क़ अदा ही न कर सके ।***

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ईद :

ईद के दिन चन्द ह़ज़रात मकाने आ़लीशान पर ह़ाज़िर हुए तो क्या देखा कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ दरवाज़ा बन्द कर के ज़ारो क़ितार रो रहे हैं । लोगों ने हैरान हो कर अ़र्ज़ की, या ***अमीरल मुअमिनीन*** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ! आज तो ***ईद*** है जो कि ख़ुशी मनाने का दिन है, ख़ुशी की जगह येह रोना कैसा ? आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने आंसू पूंछते हुए फ़रमाया, "**هٰذَا يَوْمُ الْعِيْدِ وَ هٰذَا يَوْمُ الْوَعِيْد**" या'नी ऐ लोगो ! येह ईद का दिन भी है और वई़द का दिन भी । आज जिस के नमाज़ रोज़े मक़्बूल हो गए बिलाशुबा उस के लिये आज ईद का दिन है । लेकिन आज जिस के नमाज़ व रोज़े को रद्द कर के उस के मुंह पर मार दिया गया हो उस के लिये तो आज वई़द ही का दिन है। और मैं तो इस ख़ौफ़ से रो रहा हूं कि आह !

"**اَنَا لَا اَدْرِىْ اَمِنَ الْمَقْبُوْلِيْنَ اَمْ مِنَ الْمَطْرُوْدِيْنَ**"

या'नी मुझे येह मा'लूम नहीं कि मैं मक़्बूल हुवा हूं या रद्द कर दिया गया हूं।

رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ

ईद के दिन उ़मर येह रो रो कर
बोले नेकों की ईद होती है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।***

हमारी खुश फ़हमी : ***अल्लाहु अक्बर !*** (عَزَّوَجَلَّ) ***महब्बत वालो !*** ज़रा सोचिये ! खूब ग़ौर फ़रमाइये ! वोह फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जिन को मालिके जन्नत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते ज़ाहिरी ही में जन्नत की बिशारत इनायत फ़रमा दी थी। ख़ौफ़े खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ का आप पर किस क़-दर ग़-लबा था कि सिर्फ़ येह सोच सोच कर थर्रा रहे थे कि न मा'लूम मेरी र-मज़ानुल मुबारक की त़ाअ़तें क़बूल हुई या नहीं। سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ! ईदुल फ़ित्र की खुशी मनाना जिन का ह़क़ीक़ी ह़क़ था उन के ख़ौफ़ व ख़सिय्यत का तो येह आ़लम हो और हम जैसे निकम्मे और बातूनी लोगों की येह ह़ालत है कि नेकी के "ن" के नुक़्ते तक तो पहुंच नहीं पाते मगर खुश फ़ह्मी का ह़ाल येह है कि हम जैसा नेक और पारसा तो शायद अब कोई रहा ही न हो। इस रिक़्क़त अंगेज़ ह़िकायत से उन नादानों को खुसूस़न दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करना चाहिये जो अपनी इ़बादात पर नाज़ करते हुए फूले नहीं समाते और अपने नेक आ'माल म-स़लन नमाज़, रोज़ा, ह़ज, मसाजिद की खि़दमत, ख़ल्के़ खुदा की मदद और समाजी फ़लाह़ व बह्बूद वग़ैरा वग़ैरा कामों का हर जगह ए'लान करते फिरते, ढंडोरा पिटते नहीं थकते, बल्कि अपने नेक कामों की مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ अख़बारात व रसाइल में तस़ावीर तक छपवाने से गुरेज़ नहीं करते। ***आह !*** इन का ज़ेह्न किस त़रह़ बनाया जाए। इन को ता'मीरी व अख़्लाक़ी सोच किस त़रह़ फ़राहम की जाए ! इन्हें किस त़रह़ बावर कराया जाए कि इस त़रह़ बिला ज़रूरत अपनी नेकियों का

ए'लान करने में रियाकारी की आफ़त में पड़ने का ख़दशा है। ऐसा करने से बा'ज़ सूरतों में न सिर्फ़ आ'माल बरबाद होते हैं बल्कि ***रियाकारी*** में सरासर जहन्नम की ह़क़दारी है। और अपना फ़ोटो छपवाना ? तौबा ! तौबा ! रियाकारी पर सीना ज़ोरी ! अपने आ'माल की नुमाइश का इतना शौक़ कि फ़ोटो जैसे ह़राम ज़रीए़ को भी न छोड़ा गया। ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ रियाकारी की तबाहकारी, "मैं मैं" की मुसीबत और अनानिय्यत की आफ़त से हम सब मुसलमानों की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

शहज़ादे की ईद : ***अमीरुल मुअमिनीन*** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक मरतबा ***ईद*** के दिन अपने ***शहज़ादे*** को पुरानी क़मीस़ पहने देखा तो रो पड़े, बेटे ने अ़र्ज़ की, ***प्यारे अब्बा जान !*** क्यूं रो रहे हैं ? फ़रमाया : ***मेरे लाल ! मुझे*** अन्देशा है कि आज ***ईद*** के दिन जब लड़के तुझे इस पुरानी क़मीस़ में देखेंगे तो तेरा दिल टूट जाएगा। बेटे ने जवाबन अ़र्ज़ की, दिल तो उस का टूटे जो रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के काम में नाकाम रहा हो या जिस ने मां या बाप की ना फ़रमानी की हो। मुझे उम्मीद है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रिज़ामन्दी के तुफ़ैल ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ भी मुझ से राज़ी हो जाएगा। येह सुन कर ह़ज़रते ***उ़मर फ़ारूक़*** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने शहज़ादे को गले लगाया और उस के लिये दुआ़ फ़रमाई। (मुलख़्ख़स़न मुका-श-फ़तुल कुलूब, स़-फ़ह़ा:308) ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

शहज़ादियों की ईद : ***अमीरुल मुअमिनीन*** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में ईद से एक दिन क़ब्ल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ***शहज़ादियां*** ह़ाज़िर हुईं और बोलीं, ***"बाबा जान !*** कल ईद के दिन हम कौन से कपड़े पहनेंगी ?" फ़रमाया, "येही कपड़े जो तुम ने पहन रखे हैं, इन्हें धो लो, कल पहन लेना !" "नहीं ! बाबा जान ! आप हमें नए कपड़े बनवा दीजिये," बच्चियों ने ज़िद करते हुए कहा । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, "मेरी बच्चियो ! ईद का दिन ***अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त*** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करने, उस का शुक्र बजा लाने का दिन है, नए कपड़े पहनना ज़रूरी तो नहीं !" ***"बाबा जान !*** आप का फ़रमाना बेशक दुरुस्त है लेकिन हमारी सहेलियां हमें त़ा'ने देंगी कि तुम अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की लड़कियां हो और ईद के रोज़ भी वोही पुराने कपड़े पहन रखे हैं !" येह केहते हुए बच्चियों की आंखों में ***आंसू*** भर आए । बच्चियों की बातें सुन कर ***अमीरुल मुअमिनीन*** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का दिल भी भर आया । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ***ख़ाज़िन*** (वज़ीरे मालियात) को बुला कर फ़रमाया : "मुझे मेरी एक माह की तनख़्वाह पेशगी ला दो ।" ख़ाज़िन ने अ़र्ज़ की, ***"हुज़ूर !*** क्या आप को यक़ीन है कि आप एक माह तक ज़िन्दा रहेंगे ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "جَزَاكَ الله ! तू ने बेशक उ़म्दा और स़ह़ीह़ बात कही ।" ***ख़ाज़िन*** चला गया । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बच्चियों से फ़रमाया, "प्यारी बेटियो !

अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा पर अपनी ख़्वाहिशात को कुरबान कर दो ।" (मा'दने अख़्लाक़, हिस़्स़ए अव्वल, स़-फ़ह़ा:257 ता 258) ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।***

ईद सिर्फ़ उजले लिबास पहनने का नाम नहीं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ? गुज़श्ता दोनों[2] ह़िकायात से हमें येही ***दर्स*** मिला कि उजले कपड़े पहन लेने का नाम ही ***ईद*** नहीं। इस के बिग़ैर भी ***ईद*** मनाई जा सकती है। ***अल्लाहु अक्बर*** عَزَّوَجَلَّ ! ***अमीरुल मुअमिनीन*** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ किस क़-दर ग़रीब व मिस्कीन ख़लीफ़ा थे इतनी बड़ी सल्त़नत के ह़ाकिम होने के बा वुजूद आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कोई रक़म जम्अ़ न की थी। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के ***ख़ाज़िन*** भी किस क़-दर दियानत दार थे और उन्हों ने कैसे ख़ूबसूरत अन्दाज़ में पेशगी तनख़्वाह देने से इन्कार कर दिया। इस ***ह़िकायत*** से हम सब को इब्रत ह़ासिल करनी चाहिये और पेशगी तनख़्वाह या उजरत लेने से पहले ख़ूब अच्छी त़रह़ ग़ौर कर लेना चाहिये कि हम जितनी मुद्दत की पेशगी तनख़्वाह ले रहे हैं आया उतनी मुद्दत तक ज़िन्दा भी रहेंगे या नहीं और अगर ज़िन्दा रह भी गए तो कामकाज के क़ाबिल भी रहेंगे या नहीं ! ज़ाहिर है इन्सान ह़ादिस़ा या बीमारी के सबब नाकारा भी हो सकता है। एह़तियातों भरा म-दनी ज़ेहन बनाने के लिये ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र की सआ़दत

ह़ासिल कीजिये । म-दनी क़ाफ़िलों की ब-र-कतों के क्या केहने ! आप का ईमान ताज़ा करने के लिये म-दनी क़ाफ़िले की एक ख़ुश गवार व मुश्कबार ***म-दनी बहार*** पेश करता हूं चुनान्चे

वालिदे मर्हूम पर करम : ***निश्तर बस्ती*** (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई ने जो कुछ बयान किया वोह बित्तसर्रुफ़ अ़र्ज़ करता हूं : मैं ने अपने वालिदे मर्हूम को ख़्वाब में इन्तिहाई कमज़ोरी की ह़ालत में बरह्ना किसी के सहारे पर चलता हुवा देखा । मुझे तश्वीश हुई । मैं ने ***ईस़ाले स़वाब*** की निय्यत से हर माह तीन[3] दिन के ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र की निय्यत कर ली और सफ़र शुरूअ़ भी कर दिया । तीसरे माह म-दनी क़ाफ़िले से वापसी के बा'द जब घर पर सोया तो मैं ने ख़्वाब में येह दिलकश मन्ज़र देखा कि वालिदे मर्हूम सब्ज़ सब्ज़ लिबास ज़ेबे तन किये बैठे मुस्करा रहे हैं और उन पर बारिश की हल्की फुल्की फुवार बरस रही है । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र की अहम्मिय्यत मुझ पर ख़ूब उजागर हुई और अब पक्की निय्यत है कि اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ ***हर माह तीन दिन के लिये आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ सफ़र जारी रखूंगा ।

मांगो आ कर दुआ़, क़ाफ़िले में चलो — पाओगे मुद्दआ़, क़ाफ़िले में चलो
ख़ूब होगा स़वाब, और टलेगा अ़ज़ाब — अज़ पए मुस्त़फ़ा ﷺ, क़ाफ़िले में चलो
फ़ौतगी हो गई, गुम गया है कोई — मांगने को दुआ़, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! सआ़दत मन्द बेटे ने वालिदे मर्ह़ूम की हमदर्दी में ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र की बर वक़्त निय्यत करने का कैसा प्यारा फ़ैस़ला किया ! और उस को म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कतों का कितना ज़बरदस्त नतीजा दिखाया गया । मुअ़ब्बिरीन या'नी ता'बीर बयान करने वाले उ़-लमा फ़रमाते हैं : बरज़ख़ में झूट नहीं है, मुर्दा ख़्वाब में आ कर कभी झूटी ख़बर नहीं सुना सकता । नीज़ केहते हैं, मरने वाले को ख़्वाब में बीमार या कमज़ोर या गुस़्स़ा करता हुवा देखना उस के अ़ज़ाब में मुब्तला होने की निशानी है जब कि ***सफ़ेद या सब्ज़ लिबास*** में देखना राह़त में होने की अ़लामत है ।

क्या ख़्वाब से यक़ीनी इ़ल्म ह़ासिल हो जाता है ? :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अच्छे ख़्वाब बेशक अच्छे होते हैं । याद रखिये ! ***नबी*** का ख़्वाब वह्य पर मुश्तमिल होता है जब कि ***ग़ैरे नबी*** के ख़्वाब की येह ह़ैसिय्यत नहीं और उस का ख़्वाब हुज्जत या'नी दलील नहीं होता । म-सलन आप ने ख़्वाब में बारगाहे रिसालत से येह बिशारत सुनी है कि "आप जन्नती हैं ।" इस से ***क़त़ई़ जन्नती*** होना मुराद नहीं लिया जाएगा क्यूं कि मुआ़मला ख़्वाब का है । बेशक ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जिस ने ख़्वाब में देखा उस ने ह़क़ देखा कि शैत़ान आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सूरते मुबारका में नहीं आ सकता । जो बात इर्शाद फ़रमाएं वोह भी ह़क़ ह़क़ और ह़क़ के सिवा कुछ नहीं हो सकता । ताहम ख़्वाब में

चूंकि ह़वास मुज़्महि़ल (या'नी कमज़ोर) होते हैं इस लिये यक़ीन के साथ येह नहीं कहा जा सकता कि जो कुछ फ़रमाया गया वोह ख़्वाब देखने वाले ने ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ दुरुस्त सुना, सुनने और समझने में ग़लत़ फ़ह्मी का हर इम्कान मौजूद है, लिहाज़ा ख़्वाब में दिये हुए हुक्म पर अ़मल करने से पहले हुक्मे शरीअ़त को देखना होगा। अगर ख़्वाब वाली बात शरीअ़त से नहीं टकराती तो बेशक उस पर अ़मल किया जा सकता है ताहम ख़्वाब में मिले हुए हुक्म पर अ़मल करना शर-अ़न ***वाजिब*** नहीं और अगर वोह बात ही ख़िलाफ़े शर-अ़ है तो अ़मल नहीं किया जाएगा। इस बात को इस मिसा़ल से समझिये जिस में........

ख़्वाब में शराब नोशी का हुक्म दिया या मन्अ़ फ़रमाया ?

: **मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माहि़ये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल्ह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं, एक शख़्स़ ने ख़्वाब देखा कि जनाबे रिसालते मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (مَعَاذَ الله) उसे ***शराब नोशी*** का हुक्म दे रहे हैं। सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सा़दिक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّازِق की ख़िदमत में मुआ़-मला पेश किया गया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ने तुझे शराब पीने से रोका है, तेरे सुनने में उल्टा आया ।" और येह भी याद रखा जाए कि इस मुआ़-मले में फ़ासिक़ व मुत्तक़ी बराबर हैं । चुनान्चे न तो मुत्तक़ी का ख़्वाब में किसी का हुक्म सुनना, उस हुक्म के स़ह़ीह़ होने की दलील है और न ही फ़ासिक़ का बयान यक़ीनी त़ौर पर झूटा, बल्कि ज़ाबित़ा येही है जो मज़्कूर हुवा ।

(माखूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ जदीद, जिल्द:5,स़-फ़ह़ा:100)

हुज़ूर ग़ौसे़ आ'ज़म عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَکْرَم की ईद :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल बन्दों की एक एक अदा हमारे लिये मूजिबे स़द दर्से इ़ब्रत होती है । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारे हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे़ आ'ज़म عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَکْرَم की शान बेह़द अरफ़अ़ व आ'ला है, इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ हमारे लिये क्या चीज़ पेश फ़रमाते हैं ! सुनिये और इ़ब्रत ह़ासिल कीजिये ।

ख़ल्क़ गोयद कि फ़र्दा रोज़े ईद अस्त — ख़ुशी दर रूह़े हर मोमिन पदीद अस्त
दरां रोज़े कि बा ईमां ब मीरम — मेरा दर मुल्क ख़ुद आं रोज़े ईद अस्त

या'नी "लोग केह रहे हैं, "कल ईद है ! कल ईद है !" और सब ख़ुश हैं । लेकिन मैं तो जिस दिन इस दुन्या से अपना ईमान सलामत ले कर गया, मेरे लिये तो वोही दिन ***ईद*** होगा ।"

سُبْحٰنَ الله (عَزَّوَجَلَّ) سُبْحٰنَ الله ! (عَزَّوَجَلَّ) ! क्या शाने तक़्वा है ! इतनी बड़ी शान कि औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के सरदार ! और इस क़-दर तवाज़ोअ़

व इन्किसार !! इस में हमारे लिये भी दर्से इ़ब्रत है और हमें समझाया जा रहा है कि ख़बरदार ! ईमान के मुआ़-मले में ग़फ़्लत न करना, हर वक़्त ईमान की हि़फ़ाज़त की फ़िक्र में लगे रहना, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी ग़फ़्लत और मा'सि़य्यत के सबब ईमान की दौलत तुम्हारे हाथ से निकल जाए ।

رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه
रज़ा का ख़ातिमा बिल्ख़ैर होगा
رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه
अगर रह़मत तेरी शामिल है या ग़ौस़

(ह़दाइके़ बख़्शिश)

एक वली की ईद : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना शैख़ नजीबुद्दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मु-तवक्किल, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के भाई और ख़लीफ़ा हैं, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का लक़ब ***मु-तवक्किल*** है । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه सत्तर[70] बरस शहर में रहे मगर कोई ज़ाहिरी ज़रीअ़ए मआ़श न होने के बा वुजूद इनके अहलो इ़याल निहायत इत़्मीनान से ज़िन्दगी बसर करते रहे । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने मौला عَزَّوَجَلَّ की याद में इस क़-दर मुस्तग़रक़ रहते थे कि येह भी नहीं जानते थे कि आज कौन सा दिन है ? और येह कौन सा महीना है ? और सिक्का कितनी मालिय्यत का है ? एक बार ***ईद*** के दिन आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के घर में बहुत से मेहमान जम्अ़ हो गए ।

इत्तिफ़ाक़ से उस रोज़ आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के घर में खुर्दो नोश (या'नी खाने पीने) का कोई सामान नहीं था। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बालाख़ाने पर जा कर ***यादे इलाही*** عَزَّوَجَلَّ में मश्गूल हो गए और दिल ही दिल में येह केह रहे थे, "या ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ आज ईद का दिन है और मेरे घर ***मेहमान*** आए हुए हैं।" अचानक एक शख़्स़ छत पर ज़ाहिर हुवा, उस ने खानों से भरा हुवा एक ख़्वान पेश किया और कहा, ***ऐ नजीबुद्दीन !*** तुम्हारे ***तवक्कुल*** की धूम मलाए आ'ला (या'नी फ़िरिश्तों) में मची हुई है और तुम्हारा ह़ाल येह है कि तुम ऐसे ख़याल (या'नी खाना त़लबी) में मश्गूल हो ? आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया, ह़क़ तआ़ला عَزَّوَجَلَّ खूब जानता है कि मैं ने अपनी ज़ात के लिये येह ख़याल नहीं किया, बल्कि अपने मेहमानों के बाइस़ इस त़रफ़ मु-तवज्जेह हो गया था। ह़ज़रते सय्यिदुना नजीबुद्दीन ***मु-तवक्किल*** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ स़ाह़िबे करामत होने के बा वुजूद इन्तिहाई मुन्कसिरुल मिज़ाज थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की इन्किसारी का येह आ़लम था कि एक रोज़ एक फ़क़ीर बहुत दूर से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मु-लाक़ात के लिये आया और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा कि क्या नजीबुद्दीन मु-तवक्किल (या'नी तवक्कुल करने वाला) आप ही हैं ? तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इन्किसारन फ़रमाया कि भाई ! मैं तो नजीबुद्दीन मुतअक्किल (या'नी बहुत ज़ियादा खाने वाला) हूं। (अख़्बारुल अख़्यार, स़-फ़ह़ा:60) ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

करामत का एक शो'बा : *मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !* देखा आपने ? ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों और वलियों की ***ईद*** किस क़-दर सादा हुवा करती है । इस ***ह़िकायत*** से येह भी मा'लूम हुवा कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ अपने दोस्तों की ज़रूरियात का ग़ैब से इन्तिज़ाम फ़रमा देता है । येह सब उस के करम के करिश्मे हैं । ब वक़्ते ज़रूरत खाना, पानी वग़ैरा ज़रूरियाते ज़िन्दगी का अचानक ह़ाज़िर हो जाना बुज़ुर्गों से ***करामत*** के त़ौर पर वुक़ूअ़ में आता है । चुनान्चे "शरहे़ अ़क़ाइदे नसफ़िय्या" में जहां करामत की चन्द अक़्साम का बयान है वहां येह भी मज़्कूर है कि ज़रूरत के वक़्त खाने पानी का ह़ाज़िर हो जाना भी करामत ही का एक शो'बा है । बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين के ख़ुदा दाद तसर्रुफ़ात व करामात का क्या केहना ? येह ऐसे मक़्बूलाने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ होते हैं कि उन की ज़बाने पाक से निकली हुई बात और दिल में पैदा होने वाली ख़्वाहिशात रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ की इनायात से पूरी हो कर रहती हैं ।

एक सख़ी की ईद : *सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़म्रि वल औज़ाई* رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि ***ईदुल फ़ित्र*** की शब दरवाज़े पर दस्तक हुई, देखा तो मेरा हमसाया खड़ा था । मैं ने कहा, कहो भाई ! कैसे आना हुवा ? उस ने कहा, "कल ***ईद*** है

लेकिन ख़र्च के लिये कुछ नहीं, अगर आप कुछ इनायत फ़रमा दें तो इ़ज़्ज़त के साथ हम ***ईद*** का दिन गुज़ार लेंगे।" मैं ने अपनी बीवी से कहा, हमारा फ़ुलां पड़ौसी आया है उस के पास ***ईद*** के लिये एक पैसा तक नहीं, अगर तुम्हारी राय हो तो जो ***पच्चीस[25] दिरहम*** हमने ईद के लिये रख छोड़े हैं वोह हमसाया को दे दें हमें अल्लाह तआ़ला और दे देगा। नेक बीवी ने कहा, बहुत अच्छा। चुनान्चे मैं ने वोह सब दिरहम अपने हमसाया के ह़वाले कर दिये और वोह दुआ़एं देता हुवा चला गया। थोड़ी देर के बा'द फिर किसी ने दरवाज़ा खट-खटाया। मैं ने जूंही दरवाज़ा खोला, एक आदमी आगे बढ़ कर मेरे क़दमों पर गिर पड़ा और रो रो कर केहने लगा, मैं आप के वालिद का भागा हुवा ग़ुलाम हूं, मुझे अपनी ह-र-कत पर बहुत नदामत लाह़िक़ हुई तो ह़ाज़िर हो गया हूं, येह ***पच्चीस[25] दीनार*** मेरी कमाई के हैं आप की ख़िदमत में पेश करता हूं क़बूल फ़रमा लीजिये, आप मेरे आक़ा हैं और मैं आप का ग़ुलाम। मैं ने वोह दीनार ले लिये और ग़ुलाम को आज़ाद कर दिया। फिर मैं ने अपनी बीवी से कहा, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की शान देखो! उस ने हमें ***दिरहम*** के बदले ***दीनार*** अ़त़ा फ़रमाए (पहले दिरहम चांदी के और दीनार सोने के होते थे) ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

सलाम उस पर कि जिस ने बे कसों की दस्तगीरी की : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** देखा आपने ? ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की शान भी कितनी निराली है कि उस ने पच्चीस25 दिरहम (चांदी के सिक्के) देने वाले को आन की आन में ***पच्चीस25 दीनार*** (सोने के सिक्के) अ़ता फ़रमा दिये । और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن का ईसा़र भी खूब था कि वोह अपनी तमाम तर आसाइशों को दूसरे मुसल्मानों की ख़ातिर कुरबान कर देते थे । इन्हें ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से वा-लहाना मह़ब्बत थी । उन्हें मा'लूम था कि इस्लाम हमें बा-हमी हमदर्दी का पैग़ाम देता है । हमारे हुज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रह़मते आ़लम हैं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रह़मत से कोई मह़रूम नहीं रहा । हमारे प्यारे सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गु-रबा व मसाकीन और यतीमों की त़रफ़ नज़रे ख़ास़ रखते और हर त़रह़ से उन की दिलजूई फ़रमाया करते थे ।

सलाम उस पर कि जिस ने बे कसों की दस्त-गीरी की
सलाम उस पर कि जिस ने बादशाही में फ़क़ीरी की

سُبْحٰنَ الله ! (عَزَّوَجَلَّ) इतनी बड़ी शान कि ''बा'द अज़ ख़ुदा तू ही क़िस़्स़ा मुख़्तस़र'' और इस क़-दर ***तवाज़ोअ़*** कि जिस का कोई नहीं उस के हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं । क्या खूब फ़रमाया मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ने,

कन्ज़े हर बे कसो बे नवा पर दुरूद   हिर्ज़े हर रफ़्ता ताक़त पे लाखों सलाम

मुझ से बे कस की दौलत पर लाखों दुरूद   मुझ से बे कस की कुव्वत पे लाखों सलाम

ख़ल्क़ के दाद रस सब के फ़रयाद रस

कह्फ़े रोज़े मुसीबत पे लाखों सलाम

कुव्वते समाअ़त बहाल हो गई : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** अपने दिल में अ-ज़मते मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बढ़ाने, सीने में शम्ए उल्फ़ते मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जलाने और ईदे सईद की ह़क़ीक़ी खुशियां पाने के लिये हो सके तो चांद रात ही को हाथों हाथ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कीजिये । म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कतें तो देखिये ! बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है, कोइटा में होने वाले तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तीन[3] रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक एक बहरे इस्लामी भाई ने हाथों हाथ तीन[3] दिन के सुन्नतों की तरबिय्यत के ***म-दनी क़ाफ़िले*** में ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दौराने सफ़र ही उन की ***कुव्वते समाअ़त*** बहाल हो गई और वोह आ़म लोगों की त़रह़ सुनने लगे ।

कान बेहरे हैं गर, रख्खो रब عَزَّوَجَلَّ पर नज़र　होगा लुत्फ़े खुदा, عَزَّوَجَلَّ क़ाफ़िले में चलो

दुन्यवी आफ़तें, उख़रवी शामतें　दूर होंगी ज़रा, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

स़-द-क़ए फ़ित्र वाजिब है : ***सरकारे*** मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स़ को हुक्म दिया कि जा कर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा के गली कूचों में ए'लान कर दो, स़-द-क़ए फ़ित्र वाजिब है ।" (जामेए़ तिरमिज़ी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:151, ह़दीस़:674)

स़-द-क़ए फ़ित्र लग़्व बातों का कफ़्फ़ारा है : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं, म-दनी सरकार, ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने स़-द-क़ए फ़ित्र मुक़र्रर फ़रमाया ताकि फ़ुज़ूल और बेहूदा कलाम से रोज़ों की त़हारत (या'नी स़फ़ाई) हो जाए। नीज़ मसाकीन की ख़ूरिश (या'नी खुराक) भी हो जाए।

(सु-नने अबी दावूद, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:158, ह़दीस़:1609)

रोज़ा मुअ़ल्लक़ रहता है : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ केहते हैं सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर्द गार, दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, जब तक स़-दक़ए फ़ित्र अदा नहीं किया जाता, बन्दे का ***रोज़ा*** ज़मीनो आस्मान के दरमियान मुअ़ल्लक़ (या'नी लटका हुवा) रहता है।

(कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:253, ह़दीस़:24124)

"ईद की ख़ुशियां मुबारक" के 16 हुरूफ़ की निस्बत से फ़ित्रा के 16 म-दनी फूल

मदीना 1: ***स़-दक़-ए फ़ित्र*** उन तमाम मुसल्मान मर्दो औ़रत पर वाजिब है जो "स़ाहि़बे निस़ाब" हों और उन का निस़ाब "ह़ाजाते अस्लिय्या (या'नी ज़रूरियाते ज़िन्दगी से)" फ़ारिग़ हो। (आ़लमगीरी, जिल्दः1, स़-फ़ह़ाः191)

मदीना 2: ***जिस*** के पास साढ़े सात तोले सोना या साढ़े बावन तोला चांदी या साढ़े बावन तोला चांदी की रक़म या इतनी मालिय्यत का माले तिजारत हो (और येह सब ह़ाजाते अस्लिय्या से फ़ारिग़ हों) उस को ***स़ाहि़बे निस़ाब*** कहा जाता है।[1]

मदीना 3: स़-दक़ए फ़ित्र वाजिब होने के लिये, "आ़क़िल व बालिग़" होना शर्त़ नहीं। बल्कि बच्चा या ***मज्नून*** (या'नी पागल) भी अगर ***स़ाहि़बे निस़ाब*** हो तो उस के माल में से उन का वली (या'नी सरपरस्त) अदा करे। (रद्दुल मुह़्तार, जिल्दः3, स़-फ़ह़ाः312) "***स़-दक़ए फ़ित्र***" के लिये मिक़्दारे निस़ाब तो वोही है जो ज़कात का है जैसा कि मज़्कूर हुवा लेकिन फ़र्क़ येह है कि ***स़-द-क़ए फ़ित्र*** के लिये माल के नामी (या'नी इस में बढ़ने की स़लाहि़य्यत) होने और साल गुज़रने

---

1. "स़ाहि़बे निस़ाब","ग़नी", "फ़क़ीर", "ह़ाजाते अस्लिय्या" वग़ैरा इस्तिलाह़ात की तफ़्स़ीली मा'लूमात फ़िक़्हे ह़नफ़ी की मशहूर किताब "बहारे शरीअ़त" हि़स्स़ा पन्जुम में मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

की शर्त़ नहीं । इसी त़रह़ जो चीज़ें ज़रूरत से ज़ियादा हैं (म–स़लन वोह घरेलू सामान जो रोज़ाना काम में नहीं आता) और उन की क़ीमत निस़ाब को पहुंचती हो तो उन अश्या की वजह से ***स़–द–क़ए फ़ित्र*** वाजिब है । ज़कात और स़–द–क़ए फ़ित्र के निस़ाब में येह फ़र्क़ कैफ़िय्यत के ए'तिबार से है । (वक़ारुल फ़तावा, जिल्द:2, स़–फ़ह़ा:385)

मदीना 4: ***मालिके*** निस़ाब मर्द पर अपनी त़रफ़ से, अपने छोटे बच्चों की त़रफ़ से और अगर कोई ***मज्नून*** (या'नी पागल) औलाद है (चाहे फिर वोह पागल औलाद बालिग़ ही क्यूं न हो) तो उस की त़रफ़ से भी ***स़–द–क़ए*** फ़ित्र वाजिब है, हां अगर वोह बच्चा या ***मज्नून*** ख़ुद स़ाहि़बे निस़ाब है तो फिर उस के माल में से फ़ित्रा अदा कर दे । (आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़–फ़ह़ा:192)

मदीना 5: ***मर्द*** स़ाहि़बे निस़ाब पर अपनी बीवी या मां बाप या छोटे भाई बहन और दीगर रिश्तेदारों का ***फ़ित्रा*** वाजिब नहीं ।

(आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़–फ़ह़ा:193)

मदीना 6: ***वालिद*** न हो तो दादाजान वालिद स़ाहि़ब की जगह हैं । या'नी अपने फ़क़ीर व यतीम पोते पोतियों की त़रफ़ से उन पे ***सदक़ए फ़ित्र*** देना वाजिब है । (दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुह़तार, जिल्द:2, स़–फ़ह़ा:315)

मदीना 7: ***मां*** पर अपने छोटे बच्चों की त़रफ़ से ***स़–द–क़ए*** फ़ित्र देना वाजिब नहीं । (रद्दुल मुह़तार,, जिल्द:3, स़–फ़ह़ा:315)

मदीना 8: ***बाप*** पर अपनी आ़क़िल बालिग़ औलाद का ***फ़ित्रा*** वाजिब नहीं । (दुर्रे मुख़्तार मअ़ रद्दिल मुह़तार, जिल्द:3, स़–फ़ह़ा:317)

मदीना 9: ***किसी*** स़ह़ीह़ शर-ई मजबूरी के तह़्त रोज़े न रख सका या مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ किसी बद नस़ीब ने बिग़ैर मजबूरी के र-मज़ानुल मुबारक के रोज़े न रखे उस पर भी ***स़ाह़िबे निस़ाब*** होने की सूरत में ***स़-द-क़ए फ़ित्र*** वाजिब है।

(रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:315)

मदीना 10: ***बीवी*** या बालिग़ औलाद जिन का न-फ़क़ा वग़ैरा (या'नी रोटी कपड़े वग़ैरा का ख़र्च) जिस शख़्स़ के ज़िम्मे है वोह अगर इन की इजाज़त के बिग़ैर ही इन का ***फ़ित्रा*** अदा कर दे तो अदा हो जाएगा। हां अगर न-फ़क़ा उस के ज़िम्मे नहीं है। म-स़लन बालिग़ बेटे ने शादी कर के घर अलग बसा लिया और अपना गुज़ारा ख़ुद ही कर लेता है तो अब अपने नान न-फ़क़ा (या'नी रोटी कपड़े वग़ैरा) का ख़ुद ही ज़िम्मादार हो गया है। लिहाज़ा ऐसी औलाद की त़रफ़ से बिग़ैर इजाज़त ***फ़ित्रा*** दे दिया तो अदा न होगा।

मदीना 11: ***बीवी*** ने बिग़ैर हुक्मे शौहर अगर शौहर का ***फ़ित्रा*** अदा कर दिया तो अदा न होगा। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्स़ए पन्जुम, स़-फ़ह़ा:69)

मदीना 12: ***ईदुल फ़ित्र*** की सुब्ह़े स़ादिक़ तुलूअ़ होते वक़्त जो ***स़ाह़िबे निस़ाब*** था उसी पर ***स़-द-क़ए फ़ित्र*** वाजिब है। अगर सुब्ह़े स़ादिक़ के बा'द ***स़ाह़िबे निस़ाब*** हुवा तो अब वाजिब नहीं। (आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:192)

मदीना 13: स़-दक़ए फ़ित्र अदा करने का अफ़्ज़ल वक़्त तो येही है कि ईद को सुब्हे स़ादिक़ के बा'द ईद की नमाज़ अदा करने से पहले पहले अदा कर दिया जाए। अगर चांद रात या र-मज़ानुल मुबारक के किसी भी दिन बल्कि र-मज़ान शरीफ़ से पहले भी अगर किसीने अदा कर दिया तब भी फ़ित्रा अदा हो गया और ऐसा करना बिल्कुल जाइज़ है।

(आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:192)

मदीना 14: अगर ईद का दिन गुज़र गया और फ़ित्रा अदा न किया था तब भी फ़ित्रा साक़ित़ न हुवा। बल्कि उ़म्र भर में जब भी अदा करें अदा ही है। (ऐज़न)

मदीना 15: स़-द-क़ए फ़ित्र के मस़ारिफ़ वोही हैं जो ज़कात के हैं। या'नी जिन को ज़कात दे सकते हैं उन्हें ***फ़ित्रा*** भी दे सकते हैं और जिन को ज़कात नहीं दे सकते उन को ***फ़ित्रा*** भी नहीं दे सकते। (आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:194)

मदीना 16: ***सादाते*** किराम को ***स़-द-क़ए फ़ित्र*** नहीं दे सकते।

स़-द-क़ए फ़ित्र की मिक़्दार आसान लफ़्ज़ों में :

"***एक*** सौ पछत्तर रूपै अठन्नी भर" (या'नी दो2 सेर तीन3 छटांक आधा तोला, या दो2 किलो और तक़रीबन पचास50 गिराम) वज़्न गेहूं या उस का आटा या इतने गेहूं की क़ीमत एक ***स़-दक़ए फ़ित्र*** की मिक़्दार है।

क़ब्र में एक हज़ार अन्वार दाख़िल हों : ***मन्क़ूल*** है कि जो शख़्स़ ईद के दिन तीन[3] सौ मरतबा **"سُبْحٰنَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ"** पढ़े और फ़ौत शुदा मुसल्मानों की अरवाह़ को इस का ईस़ाले स़वाब करे तो हर मुसल्मान की क़ब्र में ***एक हज़ार अन्वार*** दाख़िल होते हैं और जब वोह पढ़ने वाला ख़ुद मरेगा, अल्लाह तआ़ला عَزَّوَجَلَّ उस की क़ब्र में भी ***एक हज़ार अन्वार*** दाख़िल फ़रमाएगा। (येह विर्द दोनों[2] ईदैन में किया जा सकता है)

(मुका-श-फ़तुल क़ुलूब, स़-फ़ह़ा:308)

नमाज़े ईद से क़ब्ल की एक सुन्नत : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** अब उन बातों का बयान किया जाता है जो ईदैन (या'नी ईदुल फ़ित्र और बक़र ईद दोनों[2] ही) में सुन्नत हैं। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सख़ावत, सरापा रह़मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ***ईदुल फ़ित्र*** के दिन कुछ खा कर नमाज़ के लिये तशरीफ़ ले जाते थे। और ***ईदुल अज़्हा*** के रोज़ उस वक़्त तक नहीं खाते थे जब तक नमाज़ से फ़ारिग़ न हो जाते। (जामेए तिरमिज़ी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:70, ह़दीस़:542) और "बुख़ारी" की रिवायत ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से है कि ईदुल फ़ित्र के दिन (नमाज़े ईद के लिये) तशरीफ़ न ले जाते जब तक चन्द ***खजूरें***

न तनावुल फ़रमा लेते और वोह ताक़ होतीं । (सहीहुल बुख़ारी, जिल्द:1, स-फ़हा:328, हदीस:953) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ईद को (नमाज़े ईद के लिये) एक रास्ते से तशरीफ़ ले जाते और दूसरे रास्ते से वापस तशरीफ़ लाते ।

(जामेए तिरमिज़ी, जिल्द:2, स-फ़हा:69, हदीस:541)

नमाज़े ईद का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी) : ***पहले*** इस त़रह़ निय्यत कीजिये : "मैं निय्यत करता हूं दो[2] रक्अ़त नमाज़ ***ईदुल फ़ित्र*** (या ***ईदुल अज़्हा***) की, साथ छे ज़ाइद तक्बीरों[6] के, वासिते अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के, पीछे इस इमाम के" फिर कानों तक हाथ उठाइये और अल्लाहु अक्बर केह कर ह़स्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध लीजिये और ***सना*** पढ़िये । फिर कानों तक हाथ उठाइये और अल्लाहु अक्बर केहते हुए लटका दीजिये । फिर हाथ कानों तक उठाइये और अल्लाहु अक्बर केह कर लटका दीजिये । फिर कानों तक हाथ उठाइये और अल्लाहु अक्बर केह कर बांध लीजिये या'नी पहली तक्बीर के बा'द हाथ बांधिये उसके बा'द दूसरी[2] और तीसरी[3] तक्बीर में लटकाइये और चौथी[4] में हाथ बांध लीजिये । इसको यूं याद रखिये के ***जहां क़ियाम में तक्बीर के बा'द कुछ पढ़ना है वहां हाथ बांधने हैं और जहां नहीं पढ़ना वहां हाथ लटकाने हैं ।*** (माख़ूज़ अज़ दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स-फ़हा:66)

फिर इमाम ***तअ़व्वुज़*** और ***तस्मिया*** आहिस्ता पढ़ कर अल ह़म्द शरीफ़ और सूरह जह्र (या'नी बुलन्द आवाज़) के साथ पढ़े, फिर रुकूअ़ करे। दूसरी रक्अ़त में पहले अल ह़म्द शरीफ़ और सूरह जह्र के साथ पढ़े, फिर तीन[3] बार कान तक हाथ उठा कर अल्लाहु अक्बर कहिये और हाथ न बांधिये और चौथी[4] बार बिग़ैर हाथ उठाए अल्लाहु अक्बर केहते हुए रुकूअ़ में जाइये और क़ाइदे के मुत़ाबिक़ नमाज़ मुकम्मल कर लीजिये । हर दो[2] तक्बीरों के दरमियान तीन बार "سُبْحٰنَ الله" केहने की मिक़्दार चुप खड़ा रहना है।

(फ़तावा आ़लमगीरी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:150)

ईद की अधूरी जमाअ़त मिली तो.....?: ***पहली*** रक्अ़त में इमाम के तक्बीरें केहने के बा'द मुक़्तदी शामिल हुआ तो उसी वक़्त (तक्बीरे तह़रीमा के इ़लावा मज़ीद) तीन[3] तक्बीरें केह ले अगर्चे इमाम ने क़िराअत शुरूअ़ कर दी हो और तीन[3] ही कहे अगर्चे इमाम ने तीन[3] से ज़ियादा कही हों और अगर इसने तक्बीरें न कहीं के इमाम रुकूअ़ में चला गया तो खड़े खड़े न कहे बल्कि इमाम के साथ रुकूअ़ में जाए और रुकूअ़ में तक्बीरें केह ले और अगर इमाम को रुकूअ़ में पाया और ग़ालिब गुमान है कि तक्बीरें केह कर इमाम को रुकूअ़ में पा लेगा तो खड़े खड़े तक्बीरें कहे फिर रुकूअ़ में जाए वरना अल्लाहु अक्बर केह कर रुकूअ़ में जाए और रुकूअ़ में तक्बीरें कहे फिर अगर उसने रुकूअ़ में तक्बीरें पूरी न की थीं कि इमाम ने सर उठा लिया

तो बाक़ी साक़ित हो गईं (या'नी बक़िय्या तक्बीरें अब न कहे) और अगर इमाम के रुकूअ़ से उठने के बा'द शामिल हुआ तो अब तक्बीरें न कहे बल्कि (इमाम के सलाम फेरने के बा'द) जब अपनी (बक़िय्या) पढ़े उस वक़्त कहे। और रुकूअ़ में जहां तक्बीर केहना बताया गया उस में हाथ न उठाए और अगर दूसरी रक्अ़त में शामिल हुआ तो पहली रक्अ़त की तक्बीरें अब न कहे बल्कि जब अपनी फ़ौतशुदा पढ़ने खड़ा हो उस वक़्त कहे। दूसरी रक्अ़त की तक्बीरें अगर इमाम के साथ पा जाए फ़बिहा (या'नी तो बेहतर)। वरना उस में भी वोही तफ़्सील है जो पहली रक्अ़त के बारे में मज़्कूर हुई।

(माख़ूज़ अज़ दुर्रे मुख़्तार व रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स-फ़ह़ा:55,56,57)

ईद की जमाअ़त न मिली तो क्या करे ?: ***इमाम*** ने नमाज़ पढ़ ली और कोई शख़्स बाक़ी रह गया ख़्वाह वोह शामिल ही न हुवा था या शामिल तो हुवा मगर उस की नमाज़ फ़ासिद हो गई तो अगर दूसरी जगह मिल जाए तो पढ़ ले वरना (बिग़ैर जमाअ़त के) नहीं पढ़ सकता। हां बेहतर येह है के येह शख़्स चार रक्अ़त चाश्त की नमाज़ पढ़े।

(दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स-फ़ह़ा:58,59)

ईद के ख़ुत्बे के अह़काम : ***नमाज़*** के बा'द इमाम दो[2] ख़ुत्बे पढ़े और ख़ुत्बए जुमुआ में जो चीज़ें सुन्नत हैं इस में भी सुन्नत हैं और जो वहां मकरूह यहां भी मकरूह। सिर्फ़ दो बातों में फ़र्क़ है एक येह कि

जुमुआ के पहले खुत्बे से पेशतर ख़तीब का बैठना सुन्नत था और इस में न बैठना सुन्नत है। दूसरे येह कि इस में पहले खुत्बे से पेशतर 9 बार और दूसरे के पहले 7 बार और मिम्बर से उतरने के पहले 14 बार अल्लाहु अक्बर केहना सुन्नत है और जुमुआ में नहीं। (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:57, 58 बहारे शरीअ़त, हिस्सा:4, स़-फ़ह़ा:109 मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़)

"ईद में ग़रीबों को मत भूलो" के 21 हुरूफ़ की निस्बत से ईद के इक्कीस मुस्तह़ब्बात

(1) हजामत बनवाना, (मगर ज़ुल्फ़ें बनवाइये न कि इंग्रेज़ी बाल) (2) नाखुन तरश्वाना (3) गुस्ल करना (4) मिस्वाक करना (येह उस के इ़लावा है जो वुज़ू में की जाती है) (5) अच्छे कपड़े पहनना, नए हों तो नए वरना धुले हुवे (6) खुश्बू लगाना (7) अंगूठी पहनना (इस्लामी भाई जब कभी अंगूठी पहनें तो इस बात का ख़ास़ ख़याल रखें कि सिर्फ़ साढ़े चार माशा से कम वज़्न चांदी की एक ही अंगूठी पहनें। एक से ज़ियादा न पहनें और उस एक अंगूठी में भी नगीना एक ही हो एक से ज़ियादा नगीने न हों और बिग़ैर नगीने की भी न पहनें। नगीने के वज़्न की कोई क़ैद नहीं। चांदी या किसी और धात का छल्ला या चांदी के बयान कर्दा वज़्न वग़ैरा के इ़लावा किसी भी धात की अंगूठी या छल्ला मर्द नहीं पहन सकता) (8) नमाज़े ***फ़ज्र*** मस्जिदे महल्ला में पढ़ना (9) ईदुल फ़ित्र की नमाज़ को जाने से पहले चन्द खजूरें

खा लेना। तीन3, पांच5, सात7 या कमो बेश मगर ताक़ हों। खजूरें न हों तो कोई मीठी चीज़ खा लीजिये। अगर नमाज़ से पहले कुछ भी न खाया तो गुनाह न हुआ। मगर इशा तक न खाया तो इताब (मलामत) किया जाएगा। (10) नमाज़े ईद, ईदगाह में अदा करना (11) ईदगाह पैदल जाना (12) सुवारी पर भी जाने में ह़रज नहीं मगर जिस को पैदल जाने पर कुदरत हो उस के लिये पैदल जाना अफ़्ज़ल है और वापसी पर सुवारी पर आने में ह़रज नहीं। (13) नमाज़े ईद के लिये एक रास्ते से जाना और दूसरे रास्ते से वापस आना (14) ईद की नमाज़ से पहले स़-द-क़ए फ़ित्र अदा करना। (अफ़्ज़ल तो येही है मगर ईद की नमाज़ से क़ब्ल न दे सके तो बा'द में दे दे) (15) खुशी ज़ाहिर करना (16) कस़रत से स़-दक़ा देना (17) ईदगाह को इत्मीनान व वक़ार और नीची नीगाह किये जाना (18) आपस में मुबारक बाद देना (19) बा'दे नमाज़े ईद मुस़ा-फ़ह़ा (या'नी हाथ मिलाना) और मुआ़नक़ा (या'नी गले मिलना) जैसा के उ़मूमन मुसल्मानों में राइज है बेहतर है कि इस में इज़्हारे मुसर्रत है (बहारे शरीअ़त, हिस़्स़ा:4, स़-फ़ह़ा:17) मगर ***अम्रदे*** खूबसूरत से गले मिलना मह़ल्ले फ़ित्ना है (20) ***ईदुल अज़्ह़ा*** (या'नी बक़र ईद) तमाम अह़काम में ईदुल फ़ित्र (या'नी मीठी ईद) की त़रह़ है। सिर्फ़ बा'ज़ बातों में फ़र्क़ है। म-स़लन इस में (या'नी बक़र ईद में) मुस्तह़ब येह है कि नमाज़ से पहले कुछ न खाए चाहे कुरबानी करे या न करे और अगर खा लिया तो

कराहत भी नहीं (21) ***ईदुल फ़ित्र*** (या'नी मीठी ईद) की नमाज़ के लिये जाते हुए रास्ते में आहिस्ता से ***तक्बीर*** कहिये और नमाज़े ***ईदुल अज़्हा*** के लिये जाते हुए रास्ते में बुलन्द आवाज़ से ***तक्बीर*** कहिये। तक्बीर येह है :-

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ ط اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ ط

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है और ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ही के लिये तमाम ख़ूबियां हैं।

मैं ईद की नमाज़ भी नहीं पढ़ता था : *मीठे मीठे* ***इस्लामी भाइयो !*** हर साल ***र-मज़ानुल मुबारक*** में ए'तिकाफ़ की सआदत और माहे र-मज़ानुल मुबारक की ख़ूब ब-रकतें लूटिये फिर ईद की ख़ुशियां दोबाला करने के लिये और ईद के दिनों में مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आजकल किये जाने वाले त़रह़ त़रह़ के गुनाहों से बचने के लिये अय्यामे ईद में ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार कीजिये। तरग़ीब व तह़रीस़ की ख़ात़िर एक निहायत ही ख़ुश गवार ***म-दनी बहार*** आप के गोशगुज़ार कर रहा हूं। चुनान्चे बाबुल मदीना कराची के मैन कोरंगी रोड़ के क़रीब मुक़ीम एक इस्लामी भाई (उ़म्र तक़्रीबन 52 बरस) के बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं एक गेराज **(GARAGE)** पर काम करता था।

अगर्चे फ़ी नफ़्सिही गेराज या'नी गाड़ियों की मरम्मत का काम ग़लत़ नहीं, मगर आजकल गुनाहों भरे ह़ालात हैं। जिन को वासित़ा पड़ा होगा वोह जानते होंगे कि अक्सर गेराज का माह़ौल किस क़दर गन्दा होता है, फ़ी ज़माना गेराज में काम करने वालों के लिये ह़लाल रोज़ी का ह़ुसूल जूए शीर लाने के मु-तरादिफ़ है। गन्दे माह़ौल गन्दी रोज़ी की नह़ूसत का आ़लम तो देखिये कि मुझ बद नस़ीब को पंज वक़्ता नमाज़ क़ुज़ा जुमुआ़ बल्कि ***ईदैन*** की नमाज़ों की भी तौफ़ीक़ नहीं थी, रात गए तक **T.V.** पर मुख़्तलिफ़ फ़िल्मे डिरामे देखने में मश्ग़ूल रहता बल्कि हर क़िस्म की छोटी बड़ी बुराइयां मेरे अन्दर मौजूद थीं। मेरी इस्लाह़ के अस्बाब यूं हुए कि ***मक्त-बतुल मदीना*** से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयान ***"अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***की ख़ुफ़िया तदबीर"*** की केसेट सुनी जिस ने मुझे सर ता पा हिला कर रख दिया। इस के बा'द ***र-मज़ानुल मुबारक*** में ***ए'तिकाफ़*** की सआ़दत ह़ासिल हुई और आ़शिक़ाने रसूल के साथ तीन दिन के ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र का शरफ़ मिला। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माह़ौल से वाबस्ता हो चुका हूं, पांचों5 वक़्त नमाज़ों की पाबन्दी है, ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ का करोड़ हा करोड़ एह़सान के मुझ जैसा गुनहगार बे नमाज़ी इन्सान जो ***ईद*** के बहाने भी मस्जिद का रुख़ नहीं करता था येह बयान देते वक़्त तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** की तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ एक मस्जिद की ज़ैली मुशा-वरत के

निगरान की हैसिय्यत से बे नमाज़ियों को नमाज़ी बनाने की जुस्तुजू में रहता हूं ।

भाई गर चाहते हो नमाज़ें पढ़ूं, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
नेकियों में तमन्ना है आगे बढ़ूं, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمْ ! हमें ***ईदे सईद*** की खुशियां सुन्नतों के मुत़ाबिक़ मनाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा । और हमें ह़ज शरीफ़ और दियारे मदीना व ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ***दीद की म-दनी ईद*** बार बार नस़ीब फ़रमा ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

तेरी जब के दीद होगी जभी मेरी ईद होगी ﷺ
मेरे ख़्वाब में तुम आना म-दनी मदीने वाले

मुझ गुनहगार पर भी करम के छींटे पड़े : कोरंगी बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई (उ़म्र 22 साल) की तह़रीर का खुलास़ा है : अफ़्सोस ! मैं एक बे नमाज़ी और फ़िल्मों डिरामों का शौक़ीन बिगड़ा हुवा नौ जवान था । बुरे हम नशीनों के साथ फ़ैशन की अंधेरियों में भटक रहा था, बुरी स़ोह़बत की वजह से ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुनाहों में बसर हो रहे थे । हिलाले माहे

र-मज़ानुल मुबारक (सिने 1426 हिजरी) आस्माने दुन्या पर ज़ाहिर हुआ रह़मते खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ की छमाछम बारीशें बरसने लगीं, ***मुझ पापी व बदकार पर भी करम के छींटे पड़े*** और मैं करीमिया क़ादिरिय्या मस्जिद कोरंगी नम्बर ढाई, बाबुल मदीना कराची में होने वाले ***इज्तिमाई ए'तिकाफ़*** में र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़-शरह में मो'तकिफ़ हो गया। मेरी ख़ज़ां रसीदा ज़िन्दगी की शाम में सुब्ह़े बहारां के म-दनी फूल खिलने लगे, मुझ गुनहगार को तौबा की तौफ़ीक़ नसीब हुई, اَلْحَمْدُلِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं नमाज़ी बन गया, दाढ़ी और इमामा शरीफ़ सजाने की सआदत मिल गई, तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के सुन्नतों की तरबिय्यत के 30 दिन के ***म-दनी क़ाफ़िले*** में ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र नसीब हुवा, اَلْحَمْدُلِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ येह बयान देते वक़्त एक मस्जिद के अन्दर ज़ैली क़ाफ़िला ज़िम्मादार की हैसिय्यत से **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों में हिस्सा लेने की सआदत हासिल है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे मेरी प्यारी प्यारी **दा'वते इस्लामी** में आख़िरी दम तक इस्तिक़ामत नसीब फ़रमाए।

اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلى الله تعالى عليه واله وسلم

मर्ज़े इ़स्यां से छुटकारा गर चाहिये, मदनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
बन्दगी की भी लज़्ज़त अगर चाहिये, मदनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दिल बाग़ बाग़ हो जाता है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, मैं ने अ़र्ज़ की, ***या रसूलल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब मैं आप को देखता हूं तो मेरा दिल बाग़ बाग़ हो जाता है और आंखें ठन्डी होती हैं। (आक़ा) صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे हर चीज़ की मा'लूमात अ़त़ा फ़रमा दीजिये! इर्शाद हुआ, "हर शै पानी से बनी है" मैं ने अ़र्ज़ की, उस चीज़ पर मुत्त़लअ़ फ़रमा दीजिये, जिसे अपना कर मैं जन्नत को पा सकूं। फ़रमाया, "***खाना खिलाओ*** और सलाम को फैलाओ और सिलए रेह़्मी करो और रात में (नफ़्ली) नमाज़ पढ़ो जब लोग सोए हों, तुम सलामती से दाख़िले जन्नत हो जाओगे।"

(मुस्नदे इमाम अह़मद, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:174, ह़दीस़:7919)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नफ़्ल रोज़ों के फ़ज़ाइल

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, रहमते आलम, शाहे बनी आदम, रसूले मोहतशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रहमत निशान है : ***क़ियामत*** के रोज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन[3] शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए में होंगे। अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह कौन लोग होंगे ? इर्शाद फ़रमाया (1) वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की परेशानी को दूर करे (2) मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करने वाला (3) मुझ पर कस्रत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला। (अल बुदूरस्साफ़िरह फी उमूरिल आजिररह लिस्सुयूती رحمة الله, हदीस:366, स-फ़हा:131)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नफ़्ल रोज़ों के दीनी व दुन्यवी फ़वाइद : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** फ़र्ज़ रोज़ों के इलावा ***नफ़्ल रोज़ों*** की भी आदत बनानी चाहिये कि इस में बे शुमार दीनी व दुन्यवी फ़वाइद हैं। और सवाब

तो इतना है कि जी चाहता है बस रोज़े रखते ही चले जाएं। मज़ीद ***दीनी फ़वाइद*** में ईमान की हि़फ़ाज़त, जहन्नम से नजात और जन्नत का हुसूल शामिल हैं और जहां तक दुन्यवी फ़वाइद का तअ़ल्लुक़ है तो रोज़े में दिन के अन्दर खाने पीने में स़र्फ़ होने वाले वक़्त और अख़्राजात की बचत, पेट की इस़्लाह़ और बहुत सारे अम्राज़ से हि़फ़ाज़त का सामान है। और तमाम फ़वाइद की अस़्ल येह है कि इस से ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ राज़ी होता है।

रोज़ादारों के लिये बख़्शिश की बिशारत : ***अल्लाह तबा-रक व तआ़ला*** पारह 22 सू-र-तुल अह़ज़ाब की आयत नम्बर 35 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَالصّٰٓىِٕمِيْنَ وَالصّٰٓىِٕمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۳۵﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियां और अल्लाह को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सब के लिये अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ने बख़्शिश और बड़ा स़वाब तैयार कर रखा है। (पारह:22, अल अह़ज़ाब:35)

अल्लाह तबार-क व तआ़ला पारह 29 सू-र-तुल ह़ाक़्क़ह की आयत नम्बर 24 में इर्शाद फ़रमाता है :

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿۲۴﴾ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान:*** खाओ और पियो रचता हुवा स़िला उस का जो तुमने गुज़रे दिनों में आगे भेजा।

(पारह:29, अल ह़ाक़्क़ह:24)

ह़ज़रते सय्यिदुना वकीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ السَّمِيْع फ़रमाते हैं, इस आयते करीमा में ''गुज़रे हुए दिनों से मुराद रोज़ों के दिन हैं कि लोग इन में खाना पीना छोड़ देते हैं।''

(अल मुतजर्रबेह़ फ़िस्स़वाब अल अ़मलिस्स़ालेह़, स़-फ़ह़ा:335, दारे ख़िज़्र बैरूत)

''या अल्लाह हमें नेक बना दे'' के अठ्ठारह हुरूफ़ की निस्बत से नफ़्ली रोज़ों के 18 फ़ज़ाइल

जन्नत का अनोखा दरख़्त

मदीना 1: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना क़ैस बिन ज़ैद जुहन्नी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, ***अल्लाह*** के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है: ''जिसने एक ***नफ़्ली रोज़ा*** रखा ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये ***जन्नत*** में एक दरख़्त लगाएगा जिस का फल ***अनार*** से छोटा और सेब से बड़ा होगा। वोह (मोम से अलग न किये हुए)

शहद जैसा मीठा और (मोम से अलग किये हुए ख़ालिस़ शहद की त़रह़) खु़श ज़ाइक़ा होगा। ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत रोज़ादार को उस दरख़्त का फल खिलाएगा।" (त़बरानी कबीर, जिल्द:18, स़-फ़ह़ा:366, ह़दीस़:935)

40 साल का फ़ासि़ला दोज़ख़ से दूरी

मदीना 2: ***ताजदारे*** रिसालत, शफ़ीए रोज़े क़ियामत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान ढारस निशान है : "जिसने स़वाब की उम्मीद रखते हुए ***एक नफ़्ल रोज़ा*** रखा ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उसे दोज़ख़ से ***चालीस40 साल*** (का फ़ासि़ला) दूर फ़रमा देगा।" (कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:255, ह़दीस़:24148)

दोज़ख़ से 50 साल मसाफ़त दूरी

मदीना 3: ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे नबी, मक्की म-दनी صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आफ़िय्यत निशान है : "जिसने रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये ***एक दिन का नफ़्ल रोज़ा रखा*** तो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उसके और दोज़ख़ के दरमियान एक तेज़ रफ़्तार सुवार की ***पचास50 साला*** मसाफ़त का फ़ासि़ला फ़रमा देगा।" (कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:255, ह़दीस़:24149)

ज़मीन भर सोने से भी ज़ियादा स़वाब

मदीना 4: ***अल्लाह*** के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, हम गुनाहों

के मरीज़ों के त़बीब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रग़बत निशान है : "अगर किसीने ***एक दिन नफ़्ल रोज़ा*** रखा और ***ज़मीन भर सोना*** उसे दिया जाए जब भी उस का स़वाब पूरा न होगा उस का स़वाब तो क़ियामत ही के दिन मिलेगा।"

(अबू या'ला, जिल्द:5, स़-फ़ह़ा:353, ह़दीस़:6104)

जहन्नम से बहुत ज़ियादा दूरी

मदीना 5: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना उ़त्बा बिन अ़ब्दि सु-लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ***अल्लाह*** के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदा आमेना के गुलशन के महक्ते फूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم وَ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का फ़रमाने रह़मत निशान है : "जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में ***एक दिन का फ़र्ज़ रोज़ा*** रखा, ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना सातों ज़मीनों और आस्मानों के मा बैन (या'नी दरमियानी) फ़ासि़ला है। और जिसने ***एक दिन का नफ़्ल रोज़ा*** रखा ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना ज़मीनो आस्मान का दरमियानी फ़ासि़ला है।"

(त़-बरानी मो'जमे कबीर, जिल्द:17, स़-फ़ह़ा:120, ह़दीस़:295)

एक रोज़ा रखने की फ़ज़ीलत

मदीना 6: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है

कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम, मह़बूबे रब्बे अ़ज़ीम عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : जो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये एक दिन का रोज़ा रखता है ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देता है जितना फ़ासिला एक कव्वा बचपन से बूढ़ा हो कर मरने तक मुसल्सल उड़ते हुए तै कर सकता है । (मुस्नदे इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:619, ह़दीस़:10810)

बेह़तरीन अ़मल

मदीना 7: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं मैं ने अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे कोई अ़मल बताइये ।'' इर्शाद फ़रमाया : रोज़े रखा करो क्यूंकि इस जैसा अ़मल कोई नहीं ।'' मैं ने फिर अ़र्ज़ की, ''मुझे कोई अ़मल बताइये ।'' फ़रमाया : ''रोज़े रखा करो क्यूंकि इस जैसा कोई अ़मल नहीं ।'' मैं ने फिर अर्ज की, ''मुझे कोई अ़मल बताइये ।'' फरमाया : ''रोज़े रखा करो क्यूं कि इस का कोई मिस्ल नहीं ।''

(नसाई, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:166)

मदीना 8: ***एक*** रिवायत में है कि मैं ने रसूले अकरम, रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, ***रसूले मोह़तशम*** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे मुकर्रम में

ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे किसी ऐसे काम का हुक्म दीजिये जिस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे नफ़्अ़ दे।'' फ़रमाया : रोज़े को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूंकि इस की कोई मिस्ल नहीं। (ऐज़न)

मदीना 9: ***एक*** रिवायत में है कि मैं ने अ़र्ज़ की, ''या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे ऐसा अ़मल बताइये जिस के सबब जन्नत में दाख़िल हो जाऊं।'' फ़रमाया : ''रोज़े को ख़ुद पर लाज़िम कर लो क्यूंकि इस की मिस्ल कोई नहीं।'' (अल एह़सान बितरतीब स़ह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान, जिल्द:5, स़-फ़ह़ा:179, ह़दीस़:3416)

रावी केहते हैं, ''ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के घर दिन के वक़्त मेहमान की आमद के इ़लावा कभी धुवां न देखा गया।'' (या'नी आप दिन को खाना खाते ही न थे रोज़ा रखते थे)

(अल मुतजर्रबेह़ फ़ी स़वाबिल अ़मलिस्स़ालेह़, स़-फ़ह़ा:338)

सफ़र करो मालदार हो जाओगे

मदीना 10: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गंजीना, स़ाह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिहाद किया करो ख़ुद कफ़ील हो जाओगे, रोज़े रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे और सफ़र किया करो ग़नी (या'नी मालदार) हो जाओगे।''

(अल मो'जमुल अवसत़, जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:1460, ह़दीस़:8312)

महृशर में रोज़ादारों के मजे़

मदीना 11: ***हृज़रते*** सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन रोजे़दार क़ब्रों से निकलेंगे तो वोह रोजे़ की बू से पहचाने जाएंगे और पानी के कूजे़ जिन पर मुश्क से मोहर होगी उन्हें कहा जाएगा खाओ कल तुम भूके थे, पियो कल तुम प्यासे थे, आराम करो कल तुम थके हुए थे पस वोह खाएंगे और आराम करेंगे हालांकि लोग हि़साब की मशक़्क़त और प्यास में मुब्तला होंगे।

(कन्जु़ल उ़म्माल, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:313, ह़दीस़:23639, वत्तदवीन फ़ी अख़्बारि क़ज़्वीन, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:326)

सोने के दस्तरख़्वान

मदीना 12: ***हृज़रते*** सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : रोज़ादार का हर बाल उस के लिये तस्बीह़ करता है, बरोजे़ क़ियामत अ़र्श के नीचे रोजे़दारों के लिये मोतियों और जवाहिर से जड़ा हुआ सोने का ऐसा दस्तरख़्वान बिछाया जाएगा जो इह़ात़ए दुन्या के बराबर होगा, इस पर क़िस्म क़िस्म के जन्नती खाने, मशरूब और फल फ्रूट होंगे वोह खाएं पियेंगे और ऐ़शो इ़श्रत में होंगे ह़ालांकि लोग सख़्त हि़साब में होंगे। (अल फ़िरदौस बिमअ़्सूरुल ख़ित़ाब, जिल्द:5, स़-फ़ह़ा:490, ह़दीस़:8853)

क़ियामत में रोज़ादार खाएंगे

मदीना 13: ***हृज़रते*** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रबाह़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ

फ़रमाते हैं कि (क़ियामत में) दस्तरख़्वान बिछाए जाएंगे, सब से पहले रोज़ेदार इन पर से खाएंगे।

(मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा, जिल्द:2, स-फ़हा:424, हदीस:10)

रोज़ा रखे वोह जन्नती है

मदीना 14: ***हज़रते*** सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, ***रसूलुल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: "जिसने महज़ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये ***कलिमा*** पढ़ा वोह जन्नत में दाख़िल होगा और उसका ख़ातिमा भी ***कलिमे*** पर होगा। और जिसने किसी दिन ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये ***रोज़ा*** रखा तो उसका ख़ातिमा भी इसी पर होगा और वोह दाख़िले जन्नत होगा। और जिसने ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये ***स-दक़ा*** किया उसका ख़ातिमा भी इसी पर होगा और वोह दाख़िले जन्नत होगा।"

(मुस्नदे इमाम अहमद, जिल्द:9, स-फ़हा:90, हदीस:23384)

सख़्त गरमी में रोज़े की फ़ज़ीलत

मदीना 15: ***हज़रते*** सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ को एक समुन्दरी जिहाद में भेजा। एक अंधेरी रात में जब किश्ती के बादबान उठा दिये गए तो हातिफ़े ग़ैब से एक आवाज़ आई, "ऐ सफ़ीने वालो! रुको मैं तुम्हें बताऊं कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ज़िम्मए

करम पर क्या लिया है ? ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा, "अगर तुम बता सकते हो तो ज़रूर बताओ । उसने कहा, ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ज़िम्मए करम पर ले लिया है कि जो शदीद गरमी के दिन अपने आप को ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के लिये प्यासा रखे ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उसे सख़्त प्यास वाले दिन (या'नी क़ियामत) में सैराब करेगा ।"

इमाम अबू बक्र अब्दुल्लाह अल मा'रूफ़ इब्ने अबिद्दुन्या "किताबुल जूअ़" में फ़रमाते हैं कि उस दिन के बा'द से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़ास़ उस दिन भी रोज़ा रखा करते कि इतनी गरमी होती कि इन्सान अपने फ़ाज़िल कपड़े भी गरमी की वजह से उतारने पर मजबूर हो जाए । (अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:51, ह़दीस़:18)

दूसरों को खाता देख देख कर स़ब्र करने वाले रोज़ादार का स़वाब

मदीना 16: ***ह़ज़रते*** सय्यिदतुना उम्मे अन्सारिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं, सुल्त़ाने दो[2] जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमियान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए तो मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में खाना पेश किया तो इर्शाद फ़रमाया: "तुम भी खाओ ।" मैं ने अ़र्ज़ की, "मैं रोज़े से हूं ।" तो रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: "जब तक रोज़ेदार के सामने खाना खाया जाता है फ़िरिश्ते उस

रोज़ादार के लिये दुआए मग़्फ़िरत करते रहते हैं ।'' एक रिवायत में है, ''खानेवाला जब तक पेट भर ले ।''

(अल एह़सान बि तरतीब स़ह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान, जिल्द:5, स़-फ़ह़ा:181, ह़दीस़:3421)

मदीना 17: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत, मालिके जन्नत, मह़बूबे ***रब्बुल इ़ज़्ज़त*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمْ ने (ह़ज़रते सय्यिदुना) बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया, ''ऐ बिलाल ! आओ नाश्ता करें ।'' तो (ह़ज़रते सय्यिदुना) बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की, ''मैं रोज़े से हूं । तो रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمْ ने फ़रमाया : ''हम अपना रिज़्क़ खा रहे हैं और बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) का रिज़्क़ जन्नत में बढ़ रहा है ।'' फिर फ़रमाया, ऐ बिलाल ! क्या तुम्हें मा'लूम है कि जितनी देर तक रोज़ादार के सामने खाना खाया जाता है तो उस की हड्डियां तस्बीह़ करती हैं और मलाइका उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहते हैं ।'' (इब्ने माजह, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:348, ह़दीस़:1749)

रोज़े की ह़ालत में मरने की फ़ज़ीलत

मदीना 18: ***उम्मुल मुअ्मिनीन*** ह़ज़रते सय्यिद-तुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, सरकारे ***मदीनए मुनव्वरा,*** सुल्ताने ***मक्कए मुकर्रमा*** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ने फ़रमाया, जो रोज़े की ह़ालत में मरा, अल्लाह तआ़ला क़ियामत तक के लिये उस के ह़िसाब में रोज़े लिख देगा।

(अल फ़िरदौस बिमअ सूरुल ख़ित़ाब, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:504, ह़दीस़:5557)

नेक काम के दौरान मौत की सआ़दत : سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ !

ख़ुश नस़ीब है वोह मुसलमान जिसे रोज़े की ह़ालत में मौत आए । बल्कि किसी भी नेक काम के दौरान मौत आना निहायत ही अच्छी अ़लामत है । म-स़लन बा वुज़ू या दौराने ***नमाज़*** मरना, ***सफ़रे मदीना*** के दौरान बल्कि ***मदीनए मुनव्वरा*** में रूह़ क़ब्ज़ होना, दौराने ह़ज ***मक्कए मुकर्रमा,*** मिना, मुज़्दलिफ़ा या अ़-रफ़ात शरीफ़ में फ़ौतगी, ***दा'वते इस्लामी*** के सुन्नतों की तरबिय्यत के ***म-दनी क़ाफ़िले*** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरे सफ़र के दौरान दुन्या से रुख़्स़त होना, येह सब ऐसी अ़ज़ीम सआ़दतें हैं कि सिर्फ़ ख़ुश नस़ीबों ही को ह़ासिल होती हैं । इस सिल्सिले में स़ह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की नेक तमन्नाएं बयान करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ैस़मा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : स़ह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان इस बात को पसन्द करते थे कि इन्तिक़ाल किसी अच्छे काम म-स़लन ह़ज, उ़म्रह, ग़ज़्वह (जिहाद), र-मज़ान के रोज़े वग़ैरा के बा'द हो ।

कालू चाचा की ईमान अफ़्रोज़ वफ़ात : ***अच्छे*** काम के दौरान मौत से हम आग़ोश होने की सआ़दत मुक़द्दर वालों ही का हिस्सा है । इस ज़िम्न में तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की एक ***म-दनी बहार*** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये और ज़िन्दगी भर के लिये दा'वते इस्लामी के ***म-दनी माह़ौल*** से वाबस्ता रहने का अ़ज़्मे मुसम्मम कर लीजिये । चुनान्चे मदीनतुल औलिया अह़मदआबाद शरीफ़ (गुजरात, अल हिन्द) के ***कालू चाचा*** (उ़म्र तक़रीबन 60 बरस) र-मज़ानुल मुबारक (सिने 1425 हिजरी, 2004) के आ-ख़िरी अ़शरे में शाही मस्जिद (शाहे आ़लम, अह़मदआबाद शरीफ़) में होने वाले तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के ***इज्तिमाई ए'तिकाफ़*** में ***मो'तकिफ़*** हो गए । यूं तो येह पहले ही से ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माह़ौल से वाबस्ता थे मगर ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ इज्तिमाई ***ए'तिकाफ़*** में शुमूलिय्यत पहली ही बार नसीब हुई थी । ***ए'तिकाफ़*** में बहुत कुछ सीखने का मौक़अ़ मिला और साथ ही साथ ***दा'वते इस्लामी*** के ***72 म-दनी इन्आमात*** में से ***पहली स़फ़ में नमाज़*** पढ़ने की तरग़ीब वाले दूसरे ***म-दनी इन्आम*** का खूब जज़्बा मिला । चुनान्चे उन्हों ने ***पहली स़फ़ में नमाज़*** पढ़ने की आ़दत बना ली । 2 शव्वालुल मुकर्रम या'नी ***ईदुल फ़ित्र*** के दूसरे रोज़ तीन[3] दिन के म-दनी क़ाफ़िले में ***आ़शिक़ाने रसूल*** के हमराह सुन्नतों भरा

सफ़र किया। ***म-दनी क़ाफ़िले*** से वापसी के पांच[5] या छे[6] दिन के बा'द या'नी 11 शव्वालुल मुकर्रम सिने 1425 हिजरी (2004) को किसी काम से बाज़ार जाना हुवा, मस्रूफ़िय्यत भी थी मगर ताख़ीर की सूरत में ***पहली सफ़*** फ़ौत हो जाने का ख़दशा था। लिहाज़ा सारा काम छोड़ कर ***मस्जिद*** का रुख़ किया और अज़ान से क़ब्ल ही मस्जिद में पहुंच गए, वुज़ू कर के जूं ही खड़े हुए कि गिर पड़े, ***कलिमा शरीफ़*** और ***दुरूदे पाक*** पढ़ते हुए उन की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْن। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ***इज्तिमाई ए'तिकाफ़*** की ब-र-कत से ***म-दनी इन्आमात*** के दूसरे म-दनी इन्आ़म ***पहली सफ़ में नमाज़*** पढ़ने के मिले हुए जज़्बे ने ***कालू चाचा*** को इन्तिक़ाल के वक़्त बाज़ार की ग़फ़्लत भरी फ़ज़ाओं से उठा कर मस्जिद की रह़मत भरी फ़ज़ाओं में पहुंचा दिया और कैसी ख़ुश नसीबी कि आख़िरी वक़्त ***कलिमा व दुरूद*** नसीब हो गया। سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! और जिस को मरते वक़्त कलिमा शरीफ़ नसीब हो जाए उस का क़ब्रो ह़श्र में बेड़ा पार है। चुनान्चे नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, मालिके जन्नत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस का आख़िरी कलाम لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ हो, वोह दाख़िले जन्नत होगा। (अबू दावूद, जिल्द:3, स-फ़ह़ा:132, ह़दीस़:3116) मजीद दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ौल की ब-र-कत सुनिये : चुनान्चे इन्तिक़ाल के चन्द रोज़ बा'द उन के फ़रज़न्द ने ख़्वाब में देखा कि ***मर्ह़ूम कालू चाचा***

सफ़ेद लिबास में मल्बूस सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए मुस्कराते हुए फ़रमा रहे हैं : ***बेटा ! दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों में लगे रहो कि इसी म-दनी माह़ौल की ब-र-कत से मुझ पर करम हुवा है ।***

मौत फ़ज़्ले ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से हो ईमान पर, मदनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रब عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से पाओगे जन्नत में घर, मदनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आ़शूरा के रोज़े के फ़ज़ाइल

''या शहीदे करबला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ हो दूर हर रंजो बला'' के पच्चीस हुरूफ़ की निस्बत आ़शूरा की 25 ख़ुसूसिय्यात

(1) 10 ***मुह़र्रमुल ह़राम*** आ़शूरा के रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना आदम स़फ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तौबा क़बूल की गई (2) इसी दिन उन्हें पैदा किया गया (3) इसी दिन उन्हें जन्नत में दाख़िल किया गया (4) इसी दिन अ़र्श (5) कुर्सी (6) आस्मान (7) ज़मीन (8) सूरज (9) चांद (10) सितारे और (11) जन्नत पैदा किये गए (12) इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पैदा हुए (13) इसी दिन उन्हें आग से नजात मिली (14) इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और आप की उम्मत को नजात मिली और फ़िरऔन अपनी क़ौम समेत

ग़रक़ हुआ (15) ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام पैदा किये गए (16) इसी दिन उन्हें आस्मानों की त़रफ़ उठाया गया (17) इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام की किश्ती कोहे जूदी पर ठहरी (18) इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام को मुल्के अ़ज़ीम अ़त़ा किया गया (19) इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام मछली के पेट से निकाले गए (20) इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام की बीनाई का ज़ो'फ़ दूर हुवा (21) इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام गहरे कूंवें से निकाले गए (22) इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام की तक्लीफ़ रफ़्अ़ की गई (23) आस्मान से ज़मीन पर सब से पहली बारिश इसी दिन नाज़िल हुई और (24) इसी दिन का रोज़ा उम्मतों में मशहूर था यहां तक कि येह भी कहा गया कि इस दिन का रोज़ा माहे र-मज़ानुल मुबारक से पहले फ़र्ज़ था फिर मन्सूख़ कर दिया गया (मुका-श-फ़तलु क़ुलूब, स़-फ़ह़ा:311) (25) ***इमामुल*** हुमाम, इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे अ़र्श मक़ाम, इमामे तिश्नाकाम सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बमअ़ शहज़ादगान व रु-फ़क़ा तीन[3] दिन भूका रखने के बा'द इसी आ़शूरा के रोज़ दश्ते करबला में इन्तिहाई सफ़्फ़ाकी के साथ शहीद किया गया ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"या हुसैन" के छे हुरूफ़ की निस्बत से मुहर्रमुल ह़राम और आ़शूरा के रोज़ों के 6 फ़ज़ाइल

मदीना 1: ***हज़रते*** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़तशम, शाफ़ेए उमम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "र-मज़ान के बा'द मुहर्रम का रोज़ा अफ़्ज़ल है और फ़र्ज़ के बा'द अफ़्ज़ल नमाज़ ***सलातुल्लैल*** (या'नी रात के नवाफ़िल) है। (स़ह़ीह़ मुस्लिम, स-फ़ह़ा:891, ह़दीस़:1163)

मदीना 2: ***त़बीबों*** के त़बीब, अल्लाह के ह़बीब, ह़बीबे लबीब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : ***मुहर्रम*** के हर दिन का रोज़ा एक महीने के रोज़ों के बराबर है।

(त़-बरानी फ़ि स़ग़ीर, जिल्द:2, स-फ़ह़ा:87, ह़दीस़:1580)

यौमे मूसा عَلَيْهِ السَّلَام

मदीना 3: ***हज़रते*** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا का इर्शादे गिरामी है, "रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब ***मदीनतुल मुनव्वरा*** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में तशरीफ़ लाए, यहूद को ***आ़शूरा*** के दिन रोज़ादार पाया तो इर्शाद फ़रमाया : येह क्या दिन है कि तुम रोज़ा रखते हो ? अ़र्ज़ की, येह

अ़ज़्मत वाला दिन है कि इस में ***मूसा*** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम को अल्लाह तआला ने नजात दी और फ़िरऔन और उस की क़ौम को डबो दिया । लिहाज़ा मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बतौरे शुक्राना इस दिन का ***रोज़ा*** रखा, तो हम भी ***रोज़ा*** रखते हैं । इर्शाद फ़रमाया : ***मूसा*** (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) की मुवाफ़क़त करने में ब निस्बत तुम्हारे हम ज़ियादा ह़क़दार और ज़ियादा क़रीब हैं । तो ***सरकार*** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद भी रोज़ा रखा और इस का हुक्म भी फ़रमाया ।"

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:656, ह़दीस़:2004)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे़ पाक से मा'लूम हुआ कि जिस रोज़ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ कोई ख़ास़ ने'मत अ़ता फ़रमाए उस की यादगार क़ाइम करना दुरुस्त व मह़बूब है कि इस त़रह़ उस ने'मते उ़ज़्मा की याद ताज़ा होगी । और उस का शुक्र अदा करने का सबब भी होगा ख़ुद क़ुरआने अ़ज़ीम में इर्शाद फ़रमाया :-

وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान:*** और उन्हें अल्लाह के दिन याद दिला ।

(पारह:3, इब्राहीम:5)

स़दरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस आयत के तह़त फ़रमाते हैं कि अय्यामिल्लाह से वोह दिन मुराद हैं जिन में ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दों पर इन्आ़म किये जैसे कि बनी इस्राईल के लिये मन्न व

सल्वा उतारने का दिन, ***ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा*** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام के लिये दरिया में रास्ता बनाने का दिन । इन अय्याम में सब से बड़ी ने'मत के दिन ***सय्यिदे आ़लम*** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ***विलादत व मे'राज*** के दिन हैं उन की याद क़ाइम करना भी इस आयत के हुक्म में दाख़िल है ।'' (मुलख़्ख़स़न ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स़-फ़ह़ा:409)

ईदे मीलादुन्नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **और दा'वते इस्लामी :** ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** हम मुसल्मानों के लिये सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरा, शहन्शाहे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ***यौमे विलादत*** से बढ़ कर कौन सा दिन ''यौमे इन्आ़म'' होगा ? तमाम ने'मतें उन्हीं के तुफ़ैल तो हैं और येह दिन ***ईद*** से भी बेहतर कि उन्हीं के स़दक़े में ***ईद*** भी ***ईद*** हुई । इसी वजह से ***पीर शरीफ़*** के दिन ***रोज़ा*** रखने का सबब इर्शाद फ़रमाया : ***فِیْہِ وُلِدتُّ या'नी*** इस दिन मेरी विलादत हुई ।

(स़ह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:591, ह़दीस़:1162)

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** की त़रफ़ से दुन्या के बे शुमार मुमालिक के ला ता'दाद मक़ामात पर हर साल ***ईदे मीलादुन्नबी*** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शानदार त़रीक़े पर मनाई जाती है । रबीउ़न्नूर शरीफ़ की 12वीं शब को अ़ज़ीमुश्शान ***इज्तिमाए़ मीलाद*** का इन्इ़क़ाद होता है और बिल ख़ुसूस़ मेरे हुस्ने ज़न के मुत़ाबिक़ उस रात दुन्या का सब से बड़ा इज्तिमाए़ मीलाद

बाबुल मदीना कराची में मुन्अ़क़िद होता है । और ईद के रोज़ मरहबा या मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की धूमें मचाते हुए बे शुमार जुलूसे मीलाद निकाले जाते हैं जिन में लाखों आ़शिक़ाने रसूल शरीक होते हैं ।

ईदे मीलादुन्नबी तो ईद की भी ईद है ﷺ

बिल यक़ीं है ईदे ईदां ईदे मीलादुन्नबी ﷺ

आ़शूरा का रोज़ा

मदीना 4: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं, "मैं ने सुल्त़ाने दो[2] जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमियान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को किसी दिन के ***रोज़े*** को और दिन पर फ़ज़ीलत दे कर जुस्तुजू फ़रमाते न देखा मगर येह कि ***आ़शूरा*** का दिन और येह कि ***र-मज़ान*** का महीना ।"

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:657, ह़दीस़:2006)

यहूदिय्यों की मुख़ा-लफ़त करो

मदीना 5: ***नबिय्ये*** रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया: ***यौमे आ़शूरा*** का ***रोज़ा*** रखो और इस में यहूदिय्यों की मुख़ा-लफ़त करो, इस से पहले या बा'द में भी एक दिन का रोज़ा रखो ।

(मुस्नदे इमाम अह़मद, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:518, ह़दीस़:2154)

आ़शूरा का रोज़ा जब भी रखें तो साथ ही नवीं[9] या ग्यारहवीं[11] ***मुहर्रमुल ह़राम*** का रोज़ा भी रख लेना बेहतर है।

मदीना 6: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, ***रसूलुल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمْ फ़रमाते हैं : मुझे ***अल्लाह*** पर गुमान है कि ***आ़शूरा का रोज़ा*** एक साल क़ब्ल के गुनाह मिटा देता है।

(स़ह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:590, ह़दीस़:1162)

सारा साल आंखें दुखें न बीमार हो : ***मुफ़स्सिरे*** शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنّان फ़रमाते हैं, मुह़र्रम की ***नवीं[9]*** और ***दस्वीं[10]*** को रोज़ा रखे तो बहुत स़वाब पाएगा। बाल बच्चों के लिये दस्वीं[10] मुह़र्रम को ख़ूब अच्छे अच्छे खाने पकाए तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ साल भर तक घर में ब-र-कत रहेगी। बेहतर है कि खिचड़ा पका कर ह़ज़रते शहीदे करबला सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की फ़ातेह़ा करे बहुत मुजर्रब (या'नी मुअस्सर व आज़्मूदा) है। इसी तारीख़ या'नी 10 ***मुह़र्रमुल ह़राम*** को ***ग़ुस्ल*** करे तो तमाम साल اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बीमारियों से अम्न में रहेगा क्यूंकि इस दिन ***आबे ज़मज़म*** तमाम पानियों में पहुंचता है (तफ़्सीरे रूहुल बयान, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:142, कोइटा, इस्लामी ज़िन्दगी, स़-फ़ह़ा:93) सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, जो शख़्स़ यौमे आ़शूरा इस्मद सुरमा आंखों में लगाए तो उस

की आंखें कभी भी न दुखेंगी ।

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:367, ह़दीस़:3797)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

र-जबुल मुरज्जब के रोज़े : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक चार महीने ख़ुसूसिय्यत के साथ ह़ुरमत वाले हैं । चुनान्चे सू-रतुत्तौबा में इर्शाद होता है,

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِیْ كِتٰبِ اللّٰهِ یَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ مِنْهَاۤ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌؕ ذٰلِكَ الدِّیْنُ الْقَیِّمُ ﳔ فَلَا تَظْلِمُوْا فِیْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَ قَاتِلُوا الْمُشْرِكِیْنَ كَآفَّةً كَمَا یُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةًؕ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِیْنَ ۝۳۶

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: बेशक महीनों की गिनती अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के नज़्दीक बारह महीने हैं अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की किताब में, जब से उसने आस्मान और ज़मीन बनाए उन में से चार[4] ह़ुर्मतवाले हैं, येह सीधा दीन है तो इन महीनों में अपनी जान पर ज़ुल्म न करो और मुश्रिकों से हर वक़्त लड़ो जैसा वोह तुम से हर वक़्त लड़ते हैं और जान लो कि अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) परहेज़गारों के साथ है ।

(पारह:10, अत्तौबा:36)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आयते मुबा-रका में क़-मरी महीनों का ज़िक्र है जिन का ह़िसाब चांद से होता है, अह़कामे शर-अ़ की बिना भी क़-मरी महीनों पर है । म-स़लन

र-मज़ानुल मुबारक के रोज़े, ज़कात, मनासिके ह़ज शरीफ़ वग़ैरा नीज़ इस्लामी तेहवार म-स़लन ***ईदे मीलादुन्नबी*** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم, ***ईदुल फ़ित्र, ईदुल अज़्ह़ा,*** शबे मे'राज, शबे बराअत, ग्यारहवीं शरीफ़, ए'रासे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين वग़ैरा भी क़-मरी महीनों के ह़िसाब से मनाए जाते हैं । अफ़्सोस ! आजकल जहां मुसलमान बे शुमार सुन्नतों से दूर जा पड़ा है वहां इस्लामी तारीख़ों से भी बिल्कुल ना आशना होता जा रहा है । ग़ालिबन एक लाख मुसलमानों के इज्तिमाअ़ में अगर येह सुवाल किया जाए कि ''बताओ आज किस हिजरी सिन के कौन से महीने की कितनी तारीख़ है ?'' तो शायद ब मुश्किल सौ[100] मुसल्मान ऐसे होंगे जो स़ह़ीह़ जवाब दे सकेंगे । आयते गुज़श्ता के तह़त ह़ज़रते सय्यिदुना स़द्रुल अफ़ज़िल मौलाना नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْهَادِى ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में फ़रमाते हैं : (चार[4] हुर्मत वाले महीनों से मुराद) तीन मुत्तसि़ल (या'नी यके बा'द दीगरे) ज़ुलक़ा'दह, ज़ुल ह़िज्जह, मुह़र्रम और एक जुदा ***रजब ।*** अ़रब लोग ज़मानए जाहिलिय्यत में भी इन में क़िताल (या'नी जंग) ह़राम जानते थे । इस्लाम में इन महीनों की हुर्मत व अ-ज़मत और ज़ियादा की गई ।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स़-फ़ह़ा:309)

ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दौर का वाक़ेआ़ है कि एक शख़्स़ मुद्दत से किसी औ़रत पर आ़शिक़ था । एक बार उस ने अपनी मा'शूक़ा पर क़ाबू

पा लिया। लोगों की हलचल से उसने अन्दाज़ा लगाया कि लोग चांद देख रहे हैं, उसने उस औ़रत से पूछा, लोग किस माह का चांद देख रहे हैं ? उसने कहा, "रजब का।" येह शख़्स़ ह़ालांकि काफ़िर था मगर रजब शरीफ़ का नाम सुनते ही ता'ज़ीमन फ़ौरन अलग हो गया और ज़िना से बाज़ रहा । ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को हुक्म हुवा कि हमारे फ़ुलां बन्दे की ज़ियारत को जाओ । आप علیہ الصلوٰۃ والسلام तशरीफ़ ले गए और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का हुक्म और अपनी तशरीफ़ आ-वरी का सबब इर्शाद फ़रमाया। येह सुनते ही उस का दिल नूरे इस्लाम से जगमगा उठा और उसने फ़ौरन इस्लाम क़बूल कर लिया। (अनीसुल वाइज़ीन, स़-फ़ह़ा:177)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखी आपने ***रजब की बहारें !*** ***र-जबुल मुरज्जब*** की ता'ज़ीम कर के एक काफ़िर को ईमान की दौलत नस़ीब हो गई। तो जो मुसलमान हो कर र-जबुल मुरज्जब का एह़तिराम करेगा उस को न जाने क्या क्या इन्आ़म मिलेंगे। मुसलमानों को चाहिये कि रजब शरीफ़ का ख़ूब एह़तिराम किया करें। क़ुरआने पाक में भी ह़ुर्मत वाले महीनों में अपनी जानों पर ज़ुल्म करने से रोका गया है।

नूरुल इरफ़ान में فَلَا تَظْلِمُوْا فِیْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ (***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान:*** तो इन महीनों में अपनी जान पर ज़ुल्म न करो) के तह़्त है। "या'नी ख़ुसूसिय्यत से इन चार[4] महीनों में गुनाह न करो कि इन में गुनाह

करना अपने ऊपर ज़ुल्म है या आपस में एक दूसरे पर ज़ुल्म न करो।"

(नूरुल इरफ़ान, स़-फ़ह़ा:306)

दो[2] साल का स़वाब : *ह़ज़रते* सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबियों के सालार, शहन्शाहे अबरार, दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : ***"जिसने माहे ह़राम में तीन[3] दिन जुमा'रात, जुमुआ़ और हफ़्ते का रोज़ा रखा उसके लिये दो[2] साल की इ़बादत का स़वाब लिखा जाएगा।"***

(मज्मउ़ज़्ज़वाइद, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:438, ह़दीस़:5151)

तेरे करम से ऐ करीम मुझे कौन सी शै मिली नहीं
झोली ही मेरी तंग है तेरे यहां कमी नहीं

रजब की बहारें : *ह़ुज्जतुल इस्लाम* ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ***"मुका-श-फ़तुल क़ुलूब"*** में फ़रमाते हैं : "रजब" दर अस़्ल तरजीब से मुश्तक़ (या'नी निकला) है इस के मा'ना हैं, "ता'ज़ीम करना।" इस को ***अल अस़ब*** (या'नी सब से तेज़ बहाव) भी केहते हैं इस लिये कि इस माहे मुबारक में तौबा करने वालों पर रह़मत का बहाव तेज़ हो जाता है और इ़बादत करने वालों पर क़बूलिय्यत के अन्वार का फ़ैज़ान होता है। इसे ***अल अस़म्म*** (या'नी ख़ूब बहरा)

भी केहते हैं क्यूंकि इस में जंग व जदल की आवाज़ बिल्कुल सुनाई नहीं देती। इसे रजब भी कहा जाता है कि जन्नत की एक नहर का नाम ***"रजब"*** है जिस का पानी दूध से ज़ियादा सफ़ेद, शहद से ज़ियादा मीठा और बर्फ़ से ज़ियादा ठंडा है, इस नहर से वोही पियेगा जो ***रजब*** के महीने में रोज़े रखेगा।

(मुका-श-फ़तुल कुलूब, स़-फ़ह़ा:301, दारुल कुतुबुल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

गुन्यतुत्त़ालिबीन में है कि इस माह को ***"शहरे रजम"*** भी केहते हैं क्यूंकि इस में शैत़ानों को रजम या'नी संगसार किया जाता है ताकि वोह मुसल्मानों को ईज़ा न दें। इस माह को ***असम्म*** (या'नी खूब बहरा) भी केहते हैं क्यूंकि इस माह में किसी क़ौम पर अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब के नाज़िल होने के बारे में नहीं सुना गया कि अल्लाह तआ़ला ने गुज़श्ता उम्मतों को हर महीने में अ़ज़ाब दिया और इस माह में किसी क़ौम को अ़ज़ाब न दिया। (गुन्यतुत्त़ालिबीन, स़-फ़ह़ा:229)

रजब के तीन³ हुरूफ़ : سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** माहे र-जबुल मुरज्जब की बहारों की तो क्या बात है ! ***"मुका-श-फ़तुल कुलूब"*** में है, बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं, "र-जब" में तीन³ हुरूफ़ हैं। 'ر، ج، ب', "ر" से मुराद रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ, "ج" से मुराद बन्दे का जुर्म, "ب" से मुराद बिर्र या'नी एह़सान व भलाई। गोया ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, मेरे बन्दे के जुर्म को मेरी रह़मत और भलाई के

दरमियान कर दो । (मुकाशफ़तुल कुलूब, स़-फ़्हा:301)

इस्यां से कभी हम ने कनारा न किया पर तूने दिल आज़ुर्दा हमारा न किया

हम ने तो जहन्नम की बहुत की तज्वीज़ लेकिन तेरी रह़मत ने गवारा न किया

बीज बोने का महीना : ***हज़रते*** सय्यिदुना अ़ल्लामा स़फ़्फ़ौरी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : ***र-जबुल मुरज्जब*** बीज बोने का, ***शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म*** आबपाशी का और र-मज़ानुल मुबारक फ़स्ल काटने का महीना है । लिहाज़ा जो ***र-जबुल मुरज्जब*** में इ़बादत का बीज नहीं बोता और शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में आंसूओं से सैराब नहीं करता वोह र-मज़ानुल मुबारक में फ़स्ले रह़मत क्यूं कर काट सकेगा ? मजीद फ़रमाते हैं, ***र-जबुल मुरज्जब*** जिस्म को, ***शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म*** दिल को और र-मज़ानुल मुबारक रूह़ को पाक करता है ।

(नुज़्हतुल मजालिस, जिल्द:1, स़-फ़्हा:155)

जो सारी ज़िन्दगी न सीख सका वोह दस[10] दिन में सीख लिया : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** र-जबुल मुरज्जब में इ़बादत और रोज़ों का ज़ेह्न बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ौल से मरबूत़ रहिये । सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनिये और दा'वते इस्लामी की जानिब से किये जाने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में हि़स्सा लीजिये اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ आप की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब आ जाएगा । तरग़ीबन एक ख़ुश गवार म-दनी बहार आप के

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो शख़्स़ मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे सईदआबाद बल्दिया टाऊन बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई की तह़रीर कुछ इस त़रह़ थी, मैं उन दिनों मेट्रिक का त़ालिबे इ़ल्म था, अपने मकान मालिक जो कि दा'वते इस्लामी वाले थे की ***इन्फ़िरादी कोशिश*** से उन के साथ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के तह़त ग़ौसिय्या मस्जिद न्यू सईदआबाद मेमन कोलोनी में होने वाले र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़-शरे के ***ए'तिकाफ़*** में बैठ गया। ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ ए'तिकाफ़ करने की ब-र-कतें बयान से बाहर हैं। ***अल मुख़्तस़र मैं ने उन दस[10] दिनों में वोह कुछ सीखा जो पिछली तमाम ज़िन्दगी में न सीख पाया था।*** मैं ने ***ए'तिकाफ़*** ही में दा'वते इस्लामी के ***म-दनी माह़ौल*** को मज़्बूत़ी से अपना लिया, वहीं से मुस्तक़िल ***इ़मामा शरीफ़*** सजा लिया, ***ई़द*** के दूसरे दिन ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सुन्नतों भरा सफ़र किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मुझ पर म-दनी रंग चढ़ता चला गया और येह बयान क़लम बन्द करते वक़्त तन्ज़ीमी त़ौर पर ***म-दनी इन्आ़मात*** का ज़िम्मादार हूं।

रह़मतें लूटने के लिये आओ तुम, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
सुन्नतें सीखने के लिये आओ तुम, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पांच बा ब-र-कत रातें : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है, "पांच[5] रातें ऐसी हैं जिस में दुआ़ रद नहीं की जाती (1) रजब की पहली रात (2) पन्दरह[15] शा'बान (3) ***जुमा'रात*** और ***जुमुआ़*** की दरमियानी रात (4) ***ईदुल फ़ित़्र*** की रात (5) ***ईदुल अज़्ह़ा*** की रात ।"

(अल जामेउ़स्स़ग़ीर, स़-फ़ह़ा:241, ह़दीस़:3952)

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मे'दान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "साल में पांच[5] रातें ऐसी हैं जो इन की तस्दीक़ करते हुए ब निय्यते स़वाब इन को इ़बादत में गुज़ारे तो अल्लाह तआ़ला उसे ***दाख़िले जन्नत*** फ़रमाएगा (1) रजब की पहली रात कि इस रात में इ़बादत करे और इस के दिन में रोज़ा रखे (2,3) ई़दैन (या'नी ई़दुल फ़ित़्र और ई़दुल अज़्ह़ा) की रातें कि इन रातों में इ़बादत करे और दिन में रोज़ा न रखे (ई़दैन के दिन रोज़ा रखना ना जाइज़ है) (4) शा'बान की पन्दरहवीं[15] रात कि इस रात में इ़बादत करे और दिन में रोज़ा रखे (5) और शबे आ़शूरा (या'नी मुह़र्रमुल ह़राम की दस्वीं शब) कि इस रात में इ़बादत करे और दिन में रोज़ा रखे ।"

(ग़ुन्यतुत्त़ालिबीन, स़-फ़ह़ा:236, दारे एह़्याउत्तुरास़िल अ़-रबी, बैरूत)

पहला रोज़ा तीन[3] साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा :

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि बे चैन दिलों के चैन, सरवरे कोनैन, नबिय्युल ह़-रमैन, सय्यिदुस्सक़लैन, इमामुल क़िब्लतैन, साहिबे क़ा'ब क़ौसैन, नानाए ह़सनैन, صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم و رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का फ़रमाने रह़मत निशान है, ''***र-जब*** के पहले दिन का रोज़ा तीन[3] साल का कफ़्फ़ारा है, और ***दूसरे***[2] दिन का रोज़ा दो[2] सालों का और ***तीसरे***[3] दिन का एक साल का कफ़्फ़ारा है, फिर हर दिन का रोज़ा एक माह का कफ़्फ़ारा है।''

(अल जामेउ़स्सग़ीर, ह़दीस़:5051, स़-फ़ह़ा:311)

एक जन्नती नहर का नाम रजब है : ***हज़रते*** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, कि रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जन्नत में एक नहर है जिसे ''रजब'' कहा जाता है जो दूध से ज़ियादा सफ़ेद और शहद से ज़ियादा मीठी है तो जो कोई रजब का एक रोज़ा रखे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे इस नहर से सैराब करेगा।''

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:367, ह़दीस़:3800)

नूरानी पहाड़ : ***एक*** बार ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का गुज़र एक जगमगाते नूरानी पहाड़ पर हुवा। आप عَلَیْهِ السَّلَام ने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की, ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ! इस

पहाड़ को ***क़ुव्वते*** गोयाई अ़ता फ़रमा । वोह पहाड़ बोल पड़ा, या रूहल्लाह ! (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام) आप क्या चाहते हैं ? फ़रमाया, अपना ह़ाल बयान कर। पहाड़ बोला, "मेरे अन्दर एक आदमी रहता है।" सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की, ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उस को मुझ पर ज़ाहिर फ़रमा दे । यकायक पहाड़ शक़ हो गया और उस में से चांद सा चेहरा चमकाते हुए एक बुज़ुर्ग बर आमद हुए । उन्हों ने अ़र्ज़ की, "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام) का उम्मती हूं, मैं ने ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ से येह दुआ़ की हुई है कि वोह मुझे अपने प्यारे मह़बूब, नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बिअ़्सते मुबा-रका तक ज़िन्दा रखे ताकि मैं उन की ज़ियारत भी करूं और उन का उम्मती बनने का श-रफ़ भी ह़ासिल करूं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं इस पहाड़ में छे सौ[600] साल से ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मश्ग़ूल हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की, ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ! क्या रूए ज़मीन पर कोई बन्दा इस शख़्स से बढ़ कर भी तेरे यहां मुकर्रम है ? इर्शाद हुवा, ऐ ईसा (عَلَیْہِ السَّلَام) ! ***उम्मते मुह़म्मदी में से जो माहे रजब का एक रोज़ा रख ले वोह मेरे नज़्दीक इस से भी ज़ियादा मुकर्रम है ।*** (नुज़्हतुल मजालिस, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:155) ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।***

एक रोज़े की फ़ज़ीलत : ***मुहक़्क़िक़*** अ़लल इत़्लाक़ ह़ज़रते शैख़ मुह़द्दिस़ देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल करते हैं कि सुल्त़ाने मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : ***माहे रजब*** हुर्मत वाले महीनों में से है और छटे6 आस्मान के दरवाज़े पर इस महीने के दिन लिखे हुए हैं। अगर कोई शख़्स़ ***रजब*** में एक रोज़ा रखे और उसे परहेज़गारी से पूरा करे तो वोह दरवाज़ा और वोह (रोज़ेवाला) दिन उस बन्दे के लिये ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत त़लब करेंगे और अ़र्ज़ करेंगे, ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ! इस बन्दे को बख़्श दे और अगर वोह शख़्स़ बिग़ैर परहेज़गारी के रोज़ा गुज़ारता है तो फिर वोह दरवाज़ा और दिन उस की बख़्शिश की दरख़्वास्त नहीं करेंगे और उस शख़्स़ से केहते हैं, "ऐ बन्दे ! तेरे नफ़्स ने तुझे धोका दिया।"

(मा स़-ब-त बिस्सुन्नह, स़-फ़ह़ा:342)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि रोज़े से मक़्सूद सिर्फ़ भूक प्यास नहीं, तमाम आ'ज़ा को गुनाहों से बचाना भी ज़रूरी है, अगर रोज़ा रखने के बा वुजूद भी गुनाहों का सिल्सिला जारी रहा तो फिर सख़्त मह़रूमी है।

किश्तिये नूह़ में रजब के रोज़े की बहार : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, कि रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने ***रजब का एक रोज़ा*** रखा

तो वोह ***एक साल के रोज़ों*** की त़रह़ होगा। जिस ने ***सात रोज़े*** रखे उस पर ***जहन्नम*** के सात दरवाज़े बन्द कर दिये जाएंगे, जिस ने ***आठ रोज़े*** रखे उस के लिये ***जन्नत*** के आठ दरवाज़े खोल दिये जाएंगे, जिस ने ***दस[10] रोज़े*** रखे वोह ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ से जो कुछ मांगेगा ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उसे अ़त़ा फ़रमाएगा। और जिस ने ***पन्दरह[15] रोज़े*** रखे तो आस्मान से एक मुनादी निदा करता है कि तेरे पिछले गुनाह बख़्श दिये गए पस तू अज़ सरे नौ अ़मल शुरूअ़ कर कि तेरी बुराइयां नेकियों से बदल दी गई। और जो ज़ाइद करे तो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़ियादा दे। और ***रजब*** में नूह़ (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) किश्ती में सुवार हुए तो ख़ुद भी ***रोज़ा*** रखा और हमराहियों को भी ***रोज़े*** का हुक्म दिया। इन की किश्ती ***दस[10] मुह़र्रम*** तक छे[6] माह बर सरे सफ़र रही।

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:368, ह़दीस़:3801)

जन्नती मह़ल : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं ***रजब*** के ***रोज़ादारों*** के लिये जन्नत में एक ***मह़ल*** है।"

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:368, ह़दीस़:3802)

परेशानी दूर करने की फ़ज़ीलत : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं, "जो माहे ***रजब*** में किसी मुसल्मान की परेशानी दूर करे तो अल्लाह तआ़ला उस को जन्नत

में एक ऐसा महल अ़ता फ़रमाएगा जो ह़द्दे नज़र तक वसीअ़ होगा। तुम रजब का इकराम करो अल्लाह तआ़ला तुम्हारा हज़ार करामतों के साथ इकराम फ़रमाएगा।" (ग़ुन्यतुत्त़ालिबीन, स़-फ़ह़ा:234)

सौ[100] बरस के रोज़ों का स़वाब :

27 वीं र-जबुल मुरज्जब की अ़ज़्मतों के क्या केहने ! इसी तारीख़ को हमारे प्यारे प्यारे, *मीठे मीठे आक़ा* صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर पहली बार वह़्य नाज़िल हुई और इसी तारीख़ को मे'राज का अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ा रूनुमा हुवा। चुनान्चे 27वीं रजब शरीफ़ के रोजे़ की बड़ी फ़ज़ीलत है। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना सल्मान फ़ारसी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि : सरकारे नामदार, दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : *रजब* में एक दिन और रात है, जो उस दिन का रोज़ा रखे और वोह रात नवाफ़िल में गुज़ारे, येह सौ[100] बरस के रोज़ों के बराबर हो। और वोह 27वीं रजब है। इसी तारीख़ को *अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ ने *मुह़म्मद* (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को मब्ऊ़स फ़रमाया।

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:373, ह़दीस:3811)

एक नेकी सौ[100] साल की नेकियों के बराबर ! :

रजब में एक रात है कि इस में नेक अ़मल करने वाले को सौ[100] बरस की नेकियों का स़वाब है और वोह रजब की *सताईस्वीं[27] शब* है। जो इस में बारह[12] रक्अ़त इस त़रह़ पढ़े कि हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा और कोई सी एक सूरत

और हर दो[2] रक्अ़त पर अत्तहि़य्यात पढ़े और बारह[12] पूरी होने पर सलाम फेरे. इस के बा'द 100 बार येह पढे : سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُلِلّٰهِ وَلَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر इस्तिग़फ़ार सौ[100] बार, दुरूद शरीफ़ सौ[100] बार पढ़े और अपनी दुन्या व आख़िरत से जिस चीज़ की चाहे दुआ़ मांगे और सुब्ह़ को ***रोज़ा*** रखे तो अल्लाह तआ़ला उस की सब दुआ़एं क़बूल फ़रमाए सिवाए उस दुआ़ के जो गुनाह के लिये हो। (शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:374, ह़दीस़:3812)

27 वीं का रोज़ा दस बरस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा : ***मेरे*** आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिए सुन्नत, माहि़ये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे़ ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल्ह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं कि फ़वाइदे हनाद में ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : "सताईस[27] ***रजब*** को मुझे नुबुव्वत अ़त़ा हुई जो इस दिन का रोज़ा रखे और इफ़्त़ार के वक़्त दुआ़ करे दस[10] बरस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो।" (फ़तावा र-ज़विय्या तख़्रीज शुदा, जिल्द:10, स़-फ़ह़ा:648)

60 माह के रोज़ों का स़वाब : ***ह़दीसे़*** पाक में है, जो ***सताईस्वीं[27] रजब*** का रोज़ा रखे अल्लाह तआ़ला उस के लिये

साठ महीने के रोज़ों का स़वाब लिखे और येह वोह दिन है जिस में जिब्रईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام (ह़ज़रत) ***मुह़म्मद*** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये पैग़म्बरी ले कर नाज़िल हुए।

(तन्ज़ीहुश्शरीअ़ह, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:161, ह़दीस़:41)

सौ100 साल के रोज़े का स़वाब : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना सल्मान फ़ारसी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, ***अल्लाह*** के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : “***रजब*** में एक दिन और रात है जो उस दिन रोज़ा रखे और रात को क़ियाम (इ़बादत) करे तो गोया उस ने सौ100 साल के रोज़े रखे और येह ***रजब*** की सताईस तारीख़ है। इसी दिन मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने मब्ऊ़स़ फ़रमाया।” (शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:374, ह़दीस़:3811)

दा'वते इस्लामी और जश्ने मे'राजुन्नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** र-जबुल मुरज्जब को एक ख़ुसूसिय्यत येह भी ह़ासिल है कि इस की सताईस्वीं27 शब को हमारे मीठे मीठे मक्की म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रब्बुल उ़ला की त़रफ़ से मे'राज का मो'जिज़ा अ़त़ा हुवा, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सताईस्वीं27 रात मस्जिदुल ह़राम से मस्जिदे अक़्स़ा (बैतल मुक़द्दस) और फिर वहां से आस्मानों की सैर फ़रमाई। जन्नत व दोज़ख़ के अ़जाइबात मुला-ह़ज़ा फ़रमाए।

अ़र्श को अपनी क़दम बोसी का शरफ़ बख़्शा और ऐन बेदारी के आ़लम में खुली आंखों से अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ का दीदार किया। येह सारा सफ़र आन की आन में तै फ़रमा कर वापस तशरीफ़ ले आए। र-जबुल मुरज्जब की सताईस्वीं[27] शब बेह़द अ़-ज़मत वाली है। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** की त़रफ़ से हर साल सताईस्वीं[27] शब को ***जश्ने मे'राजुन्नबी*** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सिलिसले में दुन्या के मु-तअ़द्दद मुमालिक में बे शुमार मक़ामात पर ***इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त*** का इन्एक़ाद किया जाता है, जिन से लाखों लाख ***आ़शिक़ाने रसूल*** फ़ैज़याब होते हैं। मेरे हुस्ने ज़न के मुत़ाबिक़ जश्ने मे'राज का दुन्या का सब से बड़ा इज्तिमाअ़ सालहा साल से اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बाबुल मदीना कराची में होता है जो कि तक़्रीबन सारी रात जारी रहता है।

खु़दा عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत से चांद ह़क़ के, करोड़ों मन्ज़िल में जल्वा कर के
अभी न तारों की छांव बदली, कि नूर के तड़के आ लिये थे

कफ़न की वापसी : ***बस़रा*** की एक नेक ख़ातून ने ब वक़्ते वफ़ात अपने बेटे को ***वसिय्यत*** की कि मुझे उस कपड़े का ***कफ़न*** देना जिसे पहन कर मैं र-जबुल मुरज्जब में इ़बादत किया करती थी। बा'द अज़ वफ़ात बेटे ने किसी और कपड़े में कफ़्ना कर दफ़्ना दिया। जब वोह क़ब्रिस्तान से घर आया तो येह देख कर थर्रा उठा

कि जो कफ़न उस ने पहनाया था वोह घर में मौजूद था ! जब उस ने घबरा कर मां की ***वसिय्यत वाले कपड़े*** तलाश किये तो वोह अपनी जगह से ग़ाइब थे । इतने में एक ग़ैबी आवाज़ गूंज उठी, "अपना कफ़न वापस ले लो हम ने उस को उसी कपड़े में कफ़्नाया है (जिस की उस ने वसिय्यत की थी) जो ***रजब के रोज़े*** रखता है हम उस को ***क़ब्र में रन्जीदा*** नहीं रहने देते ।" (नुज़्हतुल मजालिस, जिल्द:1, स़-फ़हा:208) ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के स़दके़ हमारी मग़्फ़िरत हो ।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

लाड प्यार ने मुझे ढीट बना दिया था : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** र-जबुल मुरज्जब के रोज़ों की म-दनी सोच बनाने, गुनाहों की आ़दत छुड़ाने और इबादत की लज़्ज़त पाने के लिये तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के ***म-दनी क़ाफ़िले*** में ***आ़शिक़ाने रसूल*** के हमराह सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये । आप की तरग़ीब के लिये म-दनी क़ाफ़िले की एक ***म-दनी बहार*** आप के गोश गुज़ार की जाती है चुनान्चे शाहदरा (मर्कज़ुल औलिया, लाहौर) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है, मैं अपने वालिदैन का इकलौता बेटा था, ज़ियादा लाड प्यार ने मुझे ह़द द-रजा ***ढीट*** और मां बाप का सख़्त ना फ़रमान बना दिया था, रात गए तक आवारागर्दी करता और सुब्ह़ देर तक सोया रहता । मां बाप समझाते तो उन को झाड़ देता । वोह बेचारे बा'ज़ अवक़ात रो पड़ते । दुआ़एं

मांगते मांगते मां की पल्कें भीग जातीं । उस अ़ज़ीम लम्हे पर लाखों सलाम जिस ''लम्हे'' में मुझे ***दा'वते इस्लामी*** वाले एक ***आ़शिक़े रसूल*** से मुलाक़ात की सआ़दत मिली और उस ने महब्बत और प्यार से ***इन्फ़िरादी कोशिश*** करते हुए मुझ पापी व बदकार को म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये तैयार किया । चुनान्चे मैं ***आ़शिक़ाने रसूल*** के हमराह तीन3 दिन के ***म-दनी क़ाफ़िले*** का मुसाफ़िर बन गया । न जाने इन आ़शिक़ाने रसूल ने तीन3 दिन के अन्दर क्या घोल कर पिला दिया कि मुझ जैसे ढीट इन्सान का ***पत्थर नुमा दिल*** जो मां बाप के आंसूओं से भी न पिघलता था मोम बन गया, मेरे क़ल्ब में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया और मैं म-दनी क़ाफ़िले से ***नमाज़ी*** बन कर लौटा । घर आ कर मैं ने सलाम किया, वालिद स़ाहिब की दस्तबोसी की और ***अम्मीजान*** के क़दम चूमे । घरवाले हैरान थे ! इस को क्या हो गया है कि कल तक जो किसी की बात सुनने के लिये तैयार नहीं था वोह आज इतना बा अदब बन गया है ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ***म-दनी क़ाफ़िले*** में ***आ़शिक़ाने रसूल*** की सोह़बत ने मुझे यक्सर बदल कर रख दिया और येह बयान देते वक़्त मुझ साबिक़ा बे नमाज़ी को मुसल्मानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने की या'नी ***स़दाए मदीना*** लगाने की ज़िम्मादारी मिली हुई है । (***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माह़ौल में मुसल्मानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये उठाने को स़दाए मदीना लगाना केहते हैं)

गर्चे आ'माले बद, और अफ़्आ़ले बद ने है रुस्वा किया, क़ाफ़िले में चलो
कर सफ़र आओगे, तुम सुधर जाओगे मांगो चल कर दुआ़ क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सोह़बत के मु-तअ़ल्लिक़ तीन रिवायात : *मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !* देखा आपने ! *आ़शिक़ाने रसूल* की सोह़बत ने किस त़रह़ एक बे नमाज़ी नौ जवान को दूसरों को नमाज़ की दा'वत देने वाला बना दिया ! इस में कोई शक नहीं कि सोह़बत ज़रूर रंग लाती है, अच्छी सोह़बत अच्छा और बुरी सोह़बत बुरा बनाती है। लिहा़ज़ा हमेशा *आ़शिक़ाने रसूल* की सोह़बत इख़्तियार करनी चाहिये। इस ज़िम्न में तीन[3] अह़ादीसे़ मुबा-रका ज़िक्र की जाती हैं : (1) अच्छा साथी वोह है कि जब तू ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को याद करे तो वोह तेरी मदद करे और जब तू भूले तो वोह याद दिलाए। (अल जामेउ़स्सग़ीर लिस्सुयूती़, स़-फ़ह़ा:244, ह़दीस़:3999) (2) अच्छा हम नशीन (या'नी अच्छा साथी) वोह है कि उस को देखने से तुम्हें *अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ याद आ जाए और उस का अ़मल तुम्हें आख़िरत की याद दिलाए। (ऐज़न,स़-फ़ह़ा:247, ह़दीस:4063) (3) अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया, ऐसी चीज़ में न पड़ो जो तुम्हारे लिये मुफ़ीद न हो और दुश्मन से अलग रहो और दोस्त से बचते रहो मगर जबकि वोह अमीन (या'नी अमानत दार) हो कि अमीन की बराबरी का कोई नहीं और अमीन वोही है जो *अल्लाह* से डरे। और फ़ाजिर (या'नी *अल्लाह* व रसूल का ना फ़रमान) के साथ न रहो कि वोह तुम्हें फुजूर (ना फ़रमानी) सिखाएगा और उस के सामने भेद की बात न कहो और अपने काम में उन से मश्वरा लो जो *अल्लाह* से डरते हैं। (कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:9, स़-फ़ह़ा:75, अल ह़दीस़:25565)

बुरी स़ोह़बत की मुमा-न-अ़त : ***बे नमाज़ियों,*** गा़लियां बकने वालों, फ़िल्में डिरामे देखने और गाने बाजे सुनने वालों, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, वा'दा ख़िलाफ़ी करने वालों, चोरों, रिश्वत ख़ोरों, शराबियों, फ़ासिक़ों और फ़ाजिरों नीज़ बद मज़हबों और काफ़िरों की स़ोह़बतों की शरीअ़त में मुमा-न-अ़त है बिला किसी मस्लह़ते शर-ई बिला उ़ज़्रे स़ह़ीह़ जान बूझ कर उन की स़ोह़बत में बैठने वाला गुनहगार है । फ़तावा र-ज़विय्या जिल्दः22, स़-फ़ह़ाः237 पर है, मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में इस्तिफ़्सार किया गया : ज़ानी और दय्यूस़ (या'नी जो अपनी बीवी या किसी भी मह़रमा की बे पर्दगी पर गै़रत न खाता हो, ह़त्तल वस्अ़ मन्अ़ न करता हो) से कहां तक एह़तिराज़ करना चाहिये ? जवाबन इर्शाद फ़रमायाः ज़ानी व दय्यूस़ फ़ासिक़ हैं उन के पास उठने बैठने मैल जूल से एह़तिराज़ चाहिये ।" येह जवाब देने के बा'द आपने पारह 7 सूर-तुल अन्आ़म की आयत नम्बर 68 तह़रीर फ़रमाई जिस में इर्शादे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ होता है :

وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۶۸﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमानः और जो कहीं तुझे शैत़ान भुला दे तो याद आए, पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

(पारहः7, अल अन्आ़मः68)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस आयते मुबा-रका के तह़त फ़रमाते हैं, इस से मा'लूम हुवा कि बुरी स़ोह़बत से बचना निहायत ज़रूरी है ।

बुरा यार बुरे सांप से बदतर है कि बुरा सांप जान लेता है और बुरा यार ईमान बरबाद करता है । (नूरुल इरफ़ान, स़-फ़ह़ा:215)

रजब का वासित़ा हम सब की मग़्फ़िरत फ़रमा
इलाही عَزَّوَجَلَّ जन्नते फ़िरदौस मर्हमत फ़रमा

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के रोज़े

आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का महीना : ***रसूले*** अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, शाफ़ेए उमम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ***शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म*** के बारे में फ़रमाने मुकर्रम है, ***शा'बान मेरा महीना है और र-मज़ानुल मुबारक, अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***का महीना है ।***

(अल जामेउ़स्स़ग़ीर, अल ह़दीस़:4779, स़-फ़ह़ा:301)

शा'बान की तजल्लियात व ब-रकात : लफ़्ज़े शा'बान में पांच[5] हुरूफ़ हैं, ش،ع،ب،ا،ن- " ش से मुराद शरफ़ या'नी बुज़ुर्गी, ع से मुराद उ़लुव्व या'नी बुलन्दी, ب से मुराद बिर्र या'नी भलाई व एहसान, ا से मुराद उल्फ़त और ن से मुराद ***नूर*** है तो येह तमाम चीज़ें अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को इस महीने में अ़ता फ़रमाता है, येह वोह महीना है जिस में नेकियों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, ब-रकात का नुज़ूल होता है, ख़त़ाएं तर्क कर दी जाती हैं और

गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा किया जाता है, और ***ख़ैरुल बरिय्या सय्यिदुल वरा*** जनाबे मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक की कस्रत की जाती है, और येह नबिय्ये मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजने का महीना है ।" (गुन्यतुत्त़ालिबीन, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:246)

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का जज़्बा : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "माहे शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म का चांद नज़र आते ही स़ह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तिलावते कु़रआने पाक में मश्गू़ल हो जाते, अपने अम्वाल की ज़कात निकालते ताकि कमज़ोर व मिस्कीन लोग माहे र-मज़ानुल मुबारक के रोज़ों के लिये तैयारी कर सकें, हुक्काम कै़दियों को त़लब कर के जिस पर "ह़द" (सज़ा) क़ाइम करना होती उस पर ह़द क़ाइम करते बकि़य्या को आज़ाद कर देते, ताजिर अपने क़र्ज़े अदा कर देते, दूसरों से अपने क़र्ज़े वुसूल कर लेते । (यूं माहे र-मज़ानुल मुबारक का चांद नज़र आने से क़ब्ल ही अपने आप को फ़ारिग़ कर लेते) और र-मज़ान शरीफ़ का चांद नज़र आते ही गुस्ल कर के (बा'ज़ ह़ज़रात सारे माह के लिये) ए'तिकाफ़ में बैठ जाते ।"

(गुन्यतुत्त़ालिबीन, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:246)

मौजूदा मुसल्मानों का जज़्बा : سُبْحٰنَ الله عَزَّوَجَلَّ ! पहले के मुसल्मानों को इबादत का किस क़दर ज़ौक़ था ! मगर अफ़्सोस ! आजकल के मुसल्मानों को ज़ियादातर हुसूले माल ही का शौक़ है । पहले के

म-दनी सोच रखने वाले मुसल्मान मु-तबर्रिक अय्याम में रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ की ज़ियादा से ज़ियादा इबादत कर के उस का क़ुर्ब ह़ासिल करने की कोशिश करते थे और आजकल के मुसल्मान मुबारक अय्याम खुसूस़न माहे सि़याम (या'नी र-मज़ान शरीफ़) में दुन्या की ज़लील दौलत कमाने की नई नई तरकीबें सोचते हैं। ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों पर महरबान हो कर नेकियों का अज्रो स़वाब खूब बढ़ा देता है। लेकिन बद नस़ीब लोग र-मज़ानुल मुबारक में अपनी अश्या का भाव बढ़ा कर अपने ही मुसल्मान भाइयों में लूट मार मचा देते हैं। आह ! आह ! आह !

ऐ ख़ास़ए ख़ास़ाने रुसूल वक़्ते दुआ़ है उम्मत पे तेरी आ के अ़जब वक़्त पड़ा है
फ़रयाद है ऐ किश्तीये उम्मत के निगेहबां बेड़ा येह तबाही के क़रीब आन लगा है

ता'ज़ीमे र-मज़ान के लिये शा'बान के रोज़े :

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, स़ाहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है, "र-मज़ान के बा'द सब से अफ़्ज़ल ***शा'बान*** के रोज़े हैं, ता'ज़ीमे र-मज़ान के लिये।"

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:377, ह़दीस़:3819)

शा'बान के अक्स़र रोज़े रखना सुन्नत है :

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सि़द्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत फ़रमाती हैं : हु़ज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले ***मोह़्तशम,*** शाफ़ेए़ उमम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

को मैं ने ***शा'बान*** से ज़ियादा किसी महीने में रोज़े ***रखते*** न देखा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सिवाए चन्द दिन के पूरे ही माह के रोज़े रखा करते थे। (तिरमिज़ी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:182, ह़दीस़:736)

मरनेवालों की फ़ेहरिस बनाई जाती है : ***उम्मुल मुअमिनीन*** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : "हुज़ूरे अन्वर, ***शाफ़ेए़ मह़शर,*** मदीने के ताजवर, बि इज़्ने रब्बे अक्बर ग़ैबों से बा ख़बर, मह़बूबे दावर عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पूरे शा'बान के रोजे रखा करते थे।" फ़रमाती हैं : मैं ने अ़र्ज़ की, ***"या रसूलल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या सब महीनों में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नज़्दीक ज़ियादा पसन्दीदा ***शा'बान के रोज़े*** रखना है ?" तो शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ इस साल मरने वाली हर जान को लिख देता है और मुझे येह पसन्द है कि मेरा वक़्ते रुख़्सत आए और मैं ***रोज़ादार*** हूं।"

(मुस्नदे अबू या'ला, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:277, ह़दीस़:4890)

पसन्दीदा महीना : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़ैस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को फ़रमाते हुए सुना, ***रसूलुल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

का पसन्दीदा महीना ***शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म*** था कि इस में ***रोज़े*** रखा करते फिर उसे ***र-मज़ान*** से मिला देते।

(अबू दावूद, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:476, ह़दीस़:2431)

लोग शा'बान की अहम्मिय्यत से ग़ाफ़िल हैं :

ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं, मैं ने अ़र्ज़ की, ***या रसूलल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمْ मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ***शा'बान*** के रोज़े रखते हुए देखता हूं कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी भी महीने में इस त़रह़ रोज़े नहीं रखते। फ़रमाया : "***रजब*** और ***र-मज़ान*** के बीच में येह महीना है, लोग इस से ग़ाफ़िल हैं। इस में लोगों के आ'माल ***अल्लाह रब्बुल आ़-लमीन*** (عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ उठाए जाते हैं। और मुझे येह मह़बूब है कि मेरा अ़मल इस ह़ाल में उठाया जाए कि मैं ***रोज़ादार*** हूं।"

(सु-नने नसाई, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:200)

ताक़त के मुत़ाबिक़ अ़मल कीजिये : ***उम्मुल मुअमिनीन*** ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : रसूलुल्लाह (عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمْ) ***शा'बान*** से ज़ियादा किसी महीने में रोज़े न रखा करते थे कि पूरे ***शा'बान*** के ही रोज़े रखा करते थे और फ़रमाया करते कि अपनी इस्तित़ाअ़त के मुत़ाबिक़ अ़मल करो कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त तक अपना फ़ज़्ल नहीं रोकता जब तक तुम उक्ता न जाओ। बेशक उस के नज़्दीक पसन्दीदा

(नफ़्ल) नमाज़ वोह है जिस पर हमेशगी इख़्तियार की जाए अगर्चे कम हो । तो पस जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कोई नमाज़ (नफ़्ल) पढ़ते तो इस पर हमेशगी इख़्तियार फ़रमाते ।

(सह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स-फ़ह़ा:648, ह़दीस़:1970)

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْوَالِى फ़रमाते हैं : मज़्कूरा ह़दीसे पाक में पूरे माहे शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के रोज़ों से मुराद अक्सर ***शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म*** के रोज़े हैं। (मुका-श-फ़तुल कुलूब, स-फ़ह़ा:303) अगर कोई पूरे शाबानुल मुअ़ज़्ज़म के रोज़े रखना चाहे तो उस को मुमा-नअ़त भी नहीं । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के कई इस्लामी भाई और इस्लामी बहनों में र-जबुल मुरज्जब और शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म दोनों महीनों में रोज़े रखने की तरकीब होती और मुसल्सल रोज़े रखते हुए येह ह़ज़रात र-मज़ानुल मुबारक से मिल जाते हैं । आप भी रोज़ों और सुन्नतों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ौल से हर दम वाबस्ता रहिये । तरग़ीब के लिये एक मुश्कबार म-दनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे

मैं पतंग बाज़ी का शौक़ीन था : ***बाबुल मदीना*** कराची के एक इस्लामी भाई की तह़रीर ***बित्तसर्रुफ़*** पेश करता हूं : अफ़्सोस ! मेरी पिछली ज़िन्दगी सख़्त गुनाहों में गुज़री, मैं ***पतंग बाज़ी का***

शौक़ीन था नीज़ विडियो गेम्ज़ और गोलियां खेलना वग़ैरा मेरे मशाग़िल में शामिल था । हर एक के मुआ़-मले में टांग अड़ाना, ख़्वाह मख़्वाह लोगों से लड़ाई मोल लेना, बात बात पर मार धाड़ पर उतर आना वग़ैरा मेरे मा'मूलात थे । ख़ुश क़िस्मती से एक इस्लामी भाई की ***इन्फ़िरादी कोशिश*** पर मैं र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़-शरे में अ़लाक़े की मस्जिद में ***मो'तकिफ़*** हो गया । मुझे बहुत अच्छे अच्छे ख़्वाब नज़र आए और ख़ूब सुकून मिला । मैं ने मज़ीद दो[2] साल ***ए'तिकाफ़*** की सआ़दत ह़ासिल की । एक बार हमारी मस्जिद के मुअज़्ज़िन साह़िब ***इन्फ़िरादी कोशिश*** कर के मुझे तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में हफ़्तावार ***सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़*** में ले आए । एक मुबल्लिग़ बयान कर रहे थे, सफ़ेद लिबास और कथ्थई चादर में मल्बूस, चेहरे पर एक मुश्त दाढ़ी और सर पर इमामा शरीफ़ के ताज वाला ऐसा बा रौनक़ चेहरा मैं ने ज़िन्दगी में पहली बार ही देखा था । मुबल्लिग़ के चेहरे की कशिश और नूरानिय्यत ने मेरा दिल मोह लिया और मैं दा'वते इस्लामी के ***म-दनी माह़ौल*** में आ गया और अब दो[2] साल से आ़लमी म-दनी मर्कज़ ***फ़ैज़ाने मदीना*** (बाबुल मदीना) ही में ए'तिकाफ़ करता हूं । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने एक मुट्ठी दाढ़ी भी सजा ली है ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उसने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की।

मस्त हर दम रहूं मैं दे दे उल्फ़त का जाम या अल्लाह
भीक दे दे ग़मे मदीना की बहरे शाहे अनाम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم *या अल्लाह*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

र-मज़ान के बा'द कौन सा महीना अफ़्ज़ल है ?

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, दो[2] आलम के मालिको मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार, महबूबे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में अ़र्ज़ की गई कि ***र-मज़ान*** के बा'द कौन सा रोज़ा अफ़्ज़ल है ? इर्शाद फ़रमाया : "ता'ज़ीमे ***र-मज़ान*** के लिये ***शा'बान*** का।" फिर अ़र्ज़ की गई, कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया : ***र-मज़ान*** के माह में ***स-दक़ा*** करना। (जामेए तिरमिज़ी, जिल्द:2, स-फ़हा:145, हदीस:663)

पन्दरहवीं शब में तजल्ली : ***उम्मुल मुअमिनीन*** हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, ताजदारे रिसालत, सरापा रहमत, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ शा'बान की पन्दरहवीं[15] शब में तजल्ली फ़रमाता है। इस्तिग़फ़ार (या'नी तौबा) करने वालों को बख़्श देता और तालिबे रहमत पर रहम फ़रमाता और अ़दावत वालों को जिस हाल पर हैं उसी पर छोड़ देता है।"

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स-फ़हा:382, हदीस:3835)

अ़दावत वाले की शामत : ***हज़रते*** सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन

जबल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, सुल्ताने मदीनए मुनव्वरा, शहन्शाहे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, ***"शा'बान की पन्दरहवीं15 शब में अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ तमाम मख़्लूक़ की त़रफ़ तजल्ली फ़रमाता है और सब को बख़्श देता है मगर काफ़िर और अ़दावत वाले को (नहीं बख़्शता)।" (स़ह़ीह़ इब्ने ह़ब्बान, जिल्द:7, स-फ़ह़ा:470, ह़दीस़:5636)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिन दो2 मुसल्मानों में कोई दुन्यवी अ़दावत हो तो उन्हें चाहिये कि ***शबे बराअत*** आने से पहले पहले मुआ़फ़ी तलाफ़ी कर लें ताकि मग़्फ़िरते इलाही عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी शामिल हो। इन्हीं अह़ादीसे़ मुबारका की बिना पर बि ह़म्दिही तआ़ला मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़ में मेरे आक़ा ***आ'ला ह़ज़रत*** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह त़रीक़ा मुक़र्रर फ़रमाया था कि ***14 शा'बानुल*** मुअ़ज़्ज़म को रात आने से पहले मुसल्मान आपस में मिलते और एक दूसरे से कु़सूर मुआ़फ़ करवाते थे। म-दनी इल्तिजा है कि हर जगह ***इस्लामी भाई*** ऐसा ही करें और ***इस्लामी बहनें*** भी फ़ोन वग़ैरा के ज़रीए़ आपस में मुआ़फ़ी तलाफ़ी कर लें।

पयामे इमामे अहले सुन्नत رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ **:** ***शबे बराअत*** क़रीब है, इस रात तमाम बन्दों के आ'माल ह़ज़रते इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ में पेश होते हैं। मौला عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले हु़ज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नूशूर, عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالسَّلَام मुसल्मानों के जु़नूब (गुनाह) मुआ़फ़ फ़रमाता है मगर चन्द इन में वोह दो मुसल्मान जो बाहम

दुन्यवी वजह से रन्जिश रखते हैं फ़रमाता है, इन को रहने दो । जब तक आपस में सुल्ह न कर लें । एक दूसरे के हुकूक़ अदा कर दें या मुआफ़ करा लें कि बि इज़्निही तआला हुकूकुल इबाद से सहाइफ़े आ'माल (या'नी आ'माल नामे) ख़ाली हो कर बारगाहे इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ में पेश हों । हुकूके मौला तआला के लिये तौबए सादिक़ा काफ़ी है । اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ (या'नी गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उसने गुनाह किया ही नहीं) ऐसी हालत में बि इज़्निही तआला ज़रूर इस शब में उम्मीदे मग़्फ़िरते ताम्मा है बशर्ते सिहहते अक़ीदा । وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۔ । येह सुन्नते मुसालहते इख़्वान (या'नी भाइयों में सुल्ह करवाना) व मुआफ़िये हुकूक़ बि हम्दिही तआला यहां सालहाए दराज़ से जारी है । उम्मीद है कि आप भी वहां के मुसल्मानों में इज्रा कर के

مَنْ سَنَّ فِى الْاِسْلَامِ سُنَّةً حَسَنَةً فَلَهٗ اَجْرُهَا وَاَجْرُمَنْ عَمِلَ بِهَا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا يَنْقُصُ مِنْ اُجُوْرِهِمْ شَىْءٌ

(या'नी जो इस्लाम में अच्छी राह निकाले उस के लिये इस का सवाब है और क़ियामत तक इस पर अमल करें उन सब का सवाब हमेशा उस के नामए आ'माल में लिखा जाए बिग़ैर इस के कि इन के सवाबों में कुछ कमी आए) के मिस्दाक़ । और इस फ़क़ीर के लिये अफ़्व व आफ़िय्यते दारैन की दुआ फ़रमाएं । फ़क़ीर आप के लिये दुआ करता है और करेगा । (اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ) सब मुसल्मानों को समझा दिया जाए कि वहां न ख़ाली ज़बान देखी जाती है न निफ़ाक़ पसन्द है । सुल्ह व मुआफ़ी सब सच्चे दिल से हो । वस्सलाम ।

फ़क़ीर अहमद रज़ा क़ादिरी अज़ बरेली

शबे बराअत में मह़रूम रहने वाले अफ़राद :

सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, हुज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़े ***गंजूर,*** शाहे ग़यूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, मेरे पास ***जिब्रील*** (عَلَیْہِ السَّلَام) आए और कहा येह ***शा'बान की पन्दरहवीं***15 रात है इस में अल्लाह तआला ***जहन्नम*** से इतनों को आज़ाद फ़रमाता है जितने ***बनी कल्ब*** की बकरियों के बाल हैं मगर काफ़िर और अ़दावत वाले और रिश्ता काटने वाले और (तकब्बुर के साथ टख़्नों से नीचे) कपड़ा लटकाने वाले और वालिदैन की ना फ़रमानी करने वाले और शराब के आ़दी की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाता ।

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:383, ह़दीस़:3837)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर इब्ने ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से जो रिवायत की उस में क़ातिल का भी ज़िक्र है ।

(मुस्नदे इमाम अह़मद , जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:589, ह़दीस़:6653)

सब की मग़्फ़िरत सिवाए.....: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना कस़ीर बिन मुर्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, ताजदारे रिसालत, सरापा रह़मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ शा'बान की पन्दरहवीं15 शब में तमाम ज़मीन वालों को बख़्श देता है सिवाए काफ़िर और अ़दावत वाले के ।

(अत मुतजरुर्रबेह़, स़-फ़ह़ा:376, ह़दीस़:769)

शबे बराअत में जो चाहो मांग लो ! : ***अमीरुल मुअमिनीन*** ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है, "नबिय्ये पाक, स़ाह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जब ***शा'बान की पन्दरहवीं***[15] रात आ जाए तो उस रात को क़ियाम करो और ***दिन में रोज़ा रखो*** कि ***रब*** तबा–रक व तआ़ला ग़ुरूबे आफ़्ताब से आस्माने दुन्या पर ख़ास़ ***तजल्ली*** फ़रमाता और केहता है, ***है*** कोई मुझ से मग़िफ़रत त़लब करने वाला कि उसे बख़्श दूं ! ***है*** कोई रोज़ी त़लब करने वाला कि उसे रोज़ी दूं, ***है*** कोई मुस़ीबत ज़दा कि उसे आ़फ़िय्यत बख़्शूं ! ***है*** कोई ऐसा ! ***है*** कोई ऐसा ! और येह तुलूए फ़ज्र तक फ़रमाता है।"

(सु–नने इब्ने माजह, जिल्द:2, स़–फ़ह़ा:160, ह़दीस़:1388)

ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ़ : ***अमीरुल मुअमिनीन*** ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ***शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म*** की पन्दरहवीं[15] रात अक्स़र बाहर तश्रीफ़ लाते। एक बार इसी त़रह़ ***शबे बराअत*** में बाहर तश्रीफ़ लाए और आस्मान की त़रफ़ नज़र उठा कर फ़रमाया, "एक मरतबा ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने शा'बान की पन्दरहवीं रात आस्मान की त़रफ़ निगाह उठाई और फ़रमाया,

येह वोह वक़्त है कि इस वक़्त में जिस शख़्स ने ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ से जो दुआ़ मांगी उस की दुआ़ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ने क़बूल फ़रमाई और जिस ने मग़्फ़िरत त़लब की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दी बशर्ते़ कि दुआ़ करने वाला उ़श्शार (ज़ुल्मन टेक्स लेने वाला), जादूगर, काहिन, नुजूमी, (ज़ालिम) पोलीस वाला, ह़ाकिम के सामने चुग़ली खाने वाला, गवय्या और बाजा बजाने वाला न हो, फिर येह दुआ की : اَللّٰهُمَّ رَبَّ دَاوٗدَ اغْفِرْ لِمَنْ دَعَاكَ فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ اَوِاسْتَغْفَرَكَ فِيْهَا या'नी ऐ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) के रब عَزَّوَجَلَّ जो कोई इस रात में तुझ से दुआ़ करे या मग़्फ़िरत त़लब करे तू उस को बख़्श दे ।"

(मा स़-ब-त बिस्सुन्नह, स़-फ़ह़ा:354)

शबे बराअत की ता'ज़ीम : ***शामी*** ताबिई़न عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان शबे बराअत की बहुत ता'ज़ीम करते थे और इस में ख़ूब इ़बादत बजा लाते, उन्ही से दीगर मुसल्मानों ने इस रात की ता'ज़ीम सीखी । बा'ज़ उ़-लमाए शाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने फ़रमाया, शबे बराअत में मस्जिद के अन्दर इज्तिमाई़ इ़बादत करना मुस्तह़ब है ह़ज़रते सय्यिदाना ख़ालिद व लुक़्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا और दीगर ताबिई़ने किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इस रात (की ता'ज़ीम के लिये) बेह़तरीन कपड़े ज़ैबे तन फ़रमाते, सुरमा और ख़ुश्बू लगाते, मस्जिद में (नफ़्ल) नमाज़ें अदा फ़रमाते ।

(लत़ाइफ़ुल मआ़रिफ़, स़-फ़ह़ा:263)

भलाइयों वाली रातें : ***उम्मुल मुअमिनीन*** ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : मैं ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسليم को फ़रमाते हुए सुना, ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ (ख़ास़ त़ौर पर) चार4 रातों में भलाइयों के दरवाज़े खोल देता है (1) बक़र ईद की रात (2) ईदुल फ़ित्र की रात (3) शा'बान की पन्दरवीं15 रात के इस रात में मरने वालों के नाम और लोगों का रिज़्क़ और (इस साल) ह़ज करने वालों के नाम लिखे जाते हैं (4) अ़-रफ़ा (नौ ज़ुल ह़िज्जा) की रात। अज़ाने (फ़ज्र) तक। (अद दुर्रुल मन्सूर, जिल्द:7, स़-फ़ह़ा:402)

दूल्हा का नाम मुर्दों की फ़ेहरिस में : ***सरकारे*** मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, स़ाह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़्मत निशान है : "(लोगों की) ज़िन्दगियां एक शा'बान से दूसरे शा'बान में ***मुन्क़तेअ़*** होती हैं ह़त्ता कि एक आदमी निकाह़ करता है और उस की औलाद होती है ह़ालां कि उस का नाम मुर्दों में लिखा होता है।"

(कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:15, स़-फ़ह़ा:292, ह़दीस़:42773)

मकान बनाने वाला मुर्दों की फ़ेहरिस में : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना इमाम इब्ने अबिद्दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन यसार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत करते हैं कि जब निस्फ़ शा'बान की रात (या'नी शबे बराअत) आती है तो म-लकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को एक ***स़ह़ीफ़ा***

दिया जाता है और कहा जाता है : इस सहीफ़े को पकड़ लो, एक बन्दा बिस्तर पर लेटा होगा और औरतों से निकाह करेगा और घर बनाएगा जब कि उस का नाम मुर्दों में लिखा जा चुका होगा। (अद दुर्रुल मन्सूर, जिल्द:7, स़-फ़ह़ा:402)

साल भर के मुआ-मलात की तक़्सीम : ***हज़रते*** सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "एक आदमी लोगों के दरमियान चल रहा होता है हालां कि वोह मुर्दों में उठाया हुवा होता है।" फिर आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने पारह : 25 सूरतुद्दुख़ान की आयत नम्बर 3 और 4 तिलावत की।

إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ فِى لَيْلَةٍ مُّبَٰرَكَةٍ ۚ إِنَّا كُنَّا مُنذِرِينَ ۝ فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ۝

(***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान:*** बेशक हमने इसे ब-र-कत वाली रात में उतारा, बेशक हम डर सुनाने वाले हैं। इस में बांट दिया जाता है हर हिक्मत वाला काम।) फिर फ़रमाया : "इस रात में एक साल से दूसरे साल तक दुन्या के मुआमलात की तक़्सीम की जाती है।" (तफ़्सीरे तबरी, जिल्द:11, स़-फ़ह़ा:223) ***मुफ़स्सिरे*** शहीर, ***हकीमुल उम्मत*** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان मज़्कूरा आयते मुबा-रका के तहत फ़रमाते हैं : "इस रात से मुराद या शबे क़द्र है सताईस्वीं27 रात, या शबे मे'राज या ***शबे बराअत पन्दरहवीं15 शा'बान,*** इस रात में पूरा कुरआन लौहे महफ़ूज़ से दुन्यवी आस्मान की तरफ़ उतारा गया फिर वहां से तेईस23 साल के अरसे में थोड़ा थोड़ा हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर उतरा।" इस आयत से मा'लूम हुवा कि जिस रात में कुरआन उतरा वोह मुबारक है, तो जिस रात में साहिबे कुरआन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए वोह भी मुबारक है। इस

रात में साल भर के रिज़्क़, मौत, ज़िन्दगी, इ़ज़्ज़त व ज़िल्लत ग़रज़ तमाम इन्तिज़ामी उमूर लौहे़ महफ़ूज़ फ़िरिश्तों के ***स़ह़ीफ़ों*** में नक़्ल कर के हर ***स़ह़ीफ़ा*** उस मह़कमे के फ़िरिश्तों को दे दिया जाता है जैसे म-लकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام के तमाम मरने वालों की फ़ेहरिस्त वग़ैरा ।

(नूरुल इरफ़ान, स़-फ़ह़ा:790)

नाज़ुक फ़ैस़ले : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म*** की **15**वीं रात कितनी नाज़ुक है ! न जाने क़िस्मत में क्या लिख दिया जाए । आह ! बा'ज़ अवक़ात बन्दा ग़फ़्लत में पड़ा रह जाता है और उस के बारे में कुछ का कुछ हो चुका होता है । चुनान्चे "गुन्यतुत्त़ालिबीन" में है : "बहुत से लोगों के ***कफ़न*** धुल कर तैयार होते हैं मगर ***कफ़न*** पहनने वाले बाज़ारों में घूम फिर रहे होते हैं, ***मुतअ़द्दद*** अफ़राद ऐसे होते हैं कि उन ***क़ब्रें*** खुदी हुई तैयार होती हैं मगर उन में दफ़्न होने वाले ख़ुशियों में मस्त होते हैं, कई लोग हंस रहे होते हैं ह़ालां कि उन की ***हलाकत*** का वक़्त क़रीब आ चुका होता है, न जाने कितने ही मकानात की ता'मीरात मुकम्मल होने वाली होती है मगर मालिके मकान की ***मौत का वक़्त*** भी क़रीब आ चुका होता है ।"

(गुन्यतुत्त़ालिबीन, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:251)

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं सामान सौ[100] बरस का पल की ख़बर नहीं

क़ाबिले तवज्जोह : ***शबे बराअत*** में आ'माल उठाए जाते हैं लिहाज़ा मुम्किन हो तो ***चौदहवीं[14] शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म*** को भी ***रोज़ा*** रख लिया जाए और उस दिन अ़स्र की नमाज़ पढ़ कर मस्जिद में नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत से ठहरा जाए

ताकि ***आ'माल*** उठाए जाने वाली रात आने से पहले के लम्ह़ात में रोज़ा, मस्जिद की ह़ाज़िरी और ए'तिकाफ़ वग़ैरा लिखा जाए और ***शबे बराअत*** का आग़ाज़ मस्जिद की रह़मत भरी फ़ज़ाओं में हो।

मग़रिब के छे[6] नवाफ़िल : ***मग़रिब*** के फ़र्ज़ व सुन्नत वग़ैरा के बा'द ***छे रक्अ़त ख़ुसूसी नवाफ़िल*** अदा करना मा'मूलाते औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی से है। मग़रिब के फ़र्ज़ व सुन्नत वग़ैरा अदा कर के ***छे रक्अ़त नफ़्ल*** दो[2] दो[2] रक्अ़त कर के अदा कीजिये। ***पहली*** दो[2] रक्अ़तें शुरूअ़ करने से क़ब्ल येह अ़र्ज़ कीजिये : ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ! इन दो[2] रक्अ़तों की ब-र-कत से मुझे दराज़ीए उ़म्र बिल ख़ैर अ़ता फ़रमा। ***दूसरी[2]*** रक्अ़तें शुरूअ़ करने से क़ब्ल अ़र्ज़ कीजिये : ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ! इन दो[2] रक्अ़तों की ब-र-कत से बलाओं से मेरी ह़िफ़ाज़त फ़रमा। ***तीसरी*** दो[2] रक्अ़तें शुरूअ़ करने से क़ब्ल इस त़रह़ अ़र्ज़ कीजिये : ***या अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ! इन दो[2] रक्अ़तों की ब-र-कत से मुझे सिर्फ़ अपना मोहताज रख और ग़ैरों की मोहताजी से बचा। हर दो[2] रक्अ़त के बा'द इक्कीस[21] बार قُلْ هُوَاللّٰه या एक बार सूरए यासीन पढ़िये बल्कि हो सके तो दोनों[2] ही पढ़ लीजिये, येह भी हो सकता है कि एक इस्लामी भाई ***यासीन शरीफ़*** बुलन्द आवाज़ से पढ़े और दूसरे ख़ामोशी से सुनें, इस में येह ख़याल रखिये कि दूसरा इस दौरान ज़बान से ***यासीन शरीफ़*** न पढ़ें। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ रात शुरूअ़ होते ही स़वाब का अम्बार लग जाएगा। हर बार ***यासीन शरीफ़*** के बा'द ***दुआ़ए***

निस्फ़े शा'बान भी पढ़िये :

दुआए निस्फ़े शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म :

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَللّٰھُمَّ یَا ذَا الْمَنِّ وَلَا یُمَنُّ عَلَیْہِ یَا ذَا الْجَلَالِ وَ
الْاِکْرَامِ یَا ذَا الطَّوْلِ وَالْاِنْعَامِ لَآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ ظَھْرُ
اللَّاجِیْنَ وَجَارُ الْمُسْتَجِیْرِیْنَ وَاَمَانُ الْخَآئِفِیْنَ
اَللّٰھُمَّ اِنْ کُنْتَ کَتَبْتَنِیْ عِنْدَکَ فِیْ اُمِّ الْکِتٰبِ
شَقِیًّا اَوْ مَحْرُوْمًا اَوْ مَطْرُوْدًا اَوْ مُقَتَّرًا عَلَیَّ فِی الرِّزْقِ
فَامْحُ اللّٰھُمَّ بِفَضْلِکَ شَقَاوَتِیْ وَحِرْمَانِیْ وَطَرْدِیْ وَاِقْتَارَ
رِزْقِیْ وَاَثْبِتْنِیْ عِنْدَکَ فِیْ اُمِّ الْکِتٰبِ سَعِیْدًا مَّرْزُوْقًا
مُّوَفَّقًا لِّلْخَیْرَاتِ فَاِنَّکَ قُلْتَ وَقَوْلُکَ الْحَقُّ فِیْ کِتَابِکَ
الْمُنَزَّلِ عَلٰی لِسَانِ نَبِیِّکَ الْمُرْسَلِ یَمْحُو اللّٰہُ مَا یَشَآءُ
وَیُثْبِتُ وَعِنْدَہٗ اُمُّ الْکِتٰبِ ۝ اِلٰھِیْ بِالتَّجَلِّی الْاَعْظَمِ فِیْ
لَیْلَۃِ النِّصْفِ مِنْ شَھْرِ شَعْبَانَ الْمُکَرَّمِ الَّتِیْ یُفْرَقُ فِیْھَا
کُلُّ اَمْرٍ حَکِیْمٍ وَّیُبْرَمُ اَنْ تَکْشِفَ عَنَّا مِنَ الْبَلَآءِ وَالْبَلْوَآءِ
مَا نَعْلَمُ وَاَنْتَ بِہٖ اَعْلَمُ اِنَّکَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَکْرَمُ وَصَلَّی
اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ وَسَلَّمَ
وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝

तर्जमा : ***अल्लाह*** (عَزَّوَجَلَّ) के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला ***ऐ अल्लाह*** (عَزَّوَجَلَّ) ! ऐ एह़सान करने वाले कि जिस पर एह़सान नहीं किया जाता ! ऐ बड़ी शानो शौकत वाले ! ऐ फ़ज़्लो ईन्आ़म वाले ! तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं । तू परेशान ह़ालों का मददगार, पनाह मांगने वालों को पनाह और ख़ौफ़ज़दों को अमान देने वाला है । ऐ ***अल्लाह*** (عَزَّوَجَلَّ) ! अगर तू अपने यहां ***उम्मुल किताब*** (लौहे़ मह़फ़ूज़) में मुझे शक़ी (बदबख़्त, मह़रूम, धुत्कारा हुवा और रिज़्क़ में तंगी दिया हुवा लिख चुका हो तो ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ! अपने फ़ज़्ल से मेरी बदबख़्ती, मह़रूमी, ज़िल्लत और रिज़्क़ की तंगी को मिटा दे और अपने पास उम्मुल किताब में मुझे ख़ुश बख़्त रिज़्क़ दिया हुवा और भलाइयों की तौफ़ीक़ दिया हुवा सब्त (तह़रीर) फ़रमा दे । कि तू ने ही तेरी नाज़िल की हुई किताब में तेरे ही भेजे हुए नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बान पर फ़रमाया और तेरा (येह) फ़रमाना ह़क़ है कि, "अल्लाह जो चाहे मिटाता है और साबित करता (लिखता) है और अस्ल लिखा हुवा उसी के पास है ।" (कन्ज़ुल ईमान, पारह:13, अर्रअ़द:39) ख़ुदाया ! ***तजल्लिये आ'ज़म*** के वसीले से जो निस्फ़े ***शा'बानुल मुकर्रम*** की रात में है कि जिस में बांट दिया जाता है जो ह़िक्मत वाला काम और अटल कर दिया जाता है । (या अल्लाह !) मुसीबतों और रन्जिशों को हम से दूर फ़रमा कि जिन्हें हम जानते और नहीं भी जानते जब कि तू इन्हें सब से ज़ियादा जानने वाला है । बेशक तू सब से बढ़ कर अ़ज़ीज़ और इ़ज़्ज़त वाला है । अल्लाह तआला हमारे सरदार मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आलो अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم पर दुरूदो सलाम भेजे । सब ख़ूबियां सब जहानों के पालने वाले ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं ।

सगे मदीना की म-दनी इल्तिजा : اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ***सगे मदीना*** (राक़िमुल हुरूफ़) का सालहा साल से ***शबे बराअत*** में ***छे नवाफ़िल*** अदा करने का मा'मूल है। मग़रिब के बा'द की जाने वाली येह इबादत नफ़्ली है फ़र्ज़ व वाजिब नहीं और मग़रिब के बा'द नवाफ़िल व तिलावत की शरीअ़त में कहीं मुमानअ़त भी नहीं लिहाज़ा मुम्किन हो तो तमाम ***इस्लामी भाई*** अपनी अपनी मसाजिद में लोगों को तरग़ीब दिला कर इन नवाफ़िल का एहतिमाम फ़रमाए और ढेरों स़वाब कमाएं। ***इस्लामी बहनें*** अपने अपने घरों में येह नवाफ़िल अदा करें।

साल भर जादू से ह़िफ़ाज़त : ***शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म*** की पन्दरहवीं[15] रात बेरी (या'नी बेरी के दरख़्त) के ***सात पत्ते*** पानी में जोश दे कर (ह़स्बे ज़रूरत सादा पानी मिला कर) ग़ुस्ल करें اِنْ شَآءَ اللهُ الْعَزِيْز عَزَّوَجَلَّ तमाम साल ***जादू*** के अस़र से मह़फ़ूज़ रहेंगे।

(इस्लामी ज़िन्दगी, स़-फ़ह़ा:113)

शबे बराअत और क़ब्रों की ज़ियारत : ***उम्मुल मुअमिनीन*** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं, मैं ने एक रात सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को न देखा तो बक़ीए़ पाक में मुझे मिल गए। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से

फ़रमाया, क्या तुम्हें इस बात का डर था कि ***अल्लाह*** और उस का रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम्हारी ह़क़ त-लफ़ी करेंगे। मैं ने अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने ख़याल किया था कि शायद आप अज़्वाजे मुत़ह्हरात में से किसी के पास तशरीफ़ ले गए होंगे। तो आक़ाए दो[2] जहांन, रह़मते आ़लमियान, मदीने के सुल्त़ान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "बेशक ***अल्लाह*** तआ़ला शा'बान की पन्दरहवीं[15] रात आस्माने दुन्या पर तजल्ली फ़रमाता है पस क़बीलए बनी कल्ब की बकरियों के बालों से भी ज़ियादा गुनहगारों को बख़्श देता है।" (तिरमिज़ी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:183, ह़दीस़:739)

क़ब्र पर मोमबत्तियां जलाना : ***शबे बराअत*** में इस्लामी भाइयों का क़ब्रिस्तान जाना सुन्नत है (इस्लामी बहनों को शर-अ़न इजाज़त नहीं) क़ब्र पर मोम बत्तियां नहीं जला सकते हां अगर ***तिलावत*** वगै़रा करना हो तो ज़रूरतन उजाला ह़ासि़ल करने के लिये क़ब्र से हट कर ***मोमबत्ती*** जला सकते हैं। इसी त़रह़ ह़ाज़िरीन को ख़ुश्बू पहुंचाने की निय्यत से क़ब्र से हट कर अगरबत्तियां जलाने में ह़रज नहीं। ***मज़ाराते औलिया*** رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی पर चादर चढ़ाना और इस के पास ***चराग़*** जलाना जाइज़ है कि इस त़रह़ लोग मुतवज्जेह होते और उन के दिलों में अ़ज़्मत पैदा होती और वोह ह़ाज़िर हो कर इक्तिसाबे फै़ज़ करते हैं। अगर औलिया और अ़वाम की क़ब्रें यक्सां रखी जाए तो बहुत सारे दीनी फ़वाइद कम हो कर रह जाएं।

सब्ज़ रुक़्आ़ : ***शबे बराअत*** या'नी अ़ज़ाब वग़ैरा से छुटकारा पाने की रात । इस ज़िम्न में एक ***ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत*** सुनिये और झूमिये, चुनान्चे अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना ***उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़*** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक मरतबा शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की ***पन्दरहवीं[15] शब*** को नवाफ़िल में मश्ग़ूल थे । सर उठाया तो एक ***सब्ज़ रुक़्आ़*** मिला जिस का नूर आस्मान तक फैला हुआ था । उस पर लिखा था :- **هٰذَا بَرَاءَةٌ مِّنَ الْمَلِكِ الْعَزِيْزِ لِعَبْدِهٖ عُمَرَبْنِ عَبْدِ الْعَزِيْزِ** या'नी ख़ुदाए मालिक व ग़ालिब, ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से "बराअत नामा" है जो उस के बन्दे उ़मर अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ को अ़त़ा हुवा है ।

(तफ़्सीरे रूहुल बयान, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:402)

आतशबाज़ी का मूजिद कौन : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ***शबे बराअत*** जहन्नम की आग से बराअत या'नी छुटकारा पाने की रात है । मगर आजकल के मुसल्मानों को न जाने क्या हो गया है कि वोह ***आग*** से छुटकारा ह़ासिल करने के बजाए पैसे ख़र्च कर के ख़ुद अपने लिये ***आग*** या'नी ***आतशबाज़ी का सामान*** ख़रीदते हैं और इस त़रह़ ख़ूब ख़ूब ***आतशबाज़ी*** चला कर इस मुक़द्दस रात का तक़द्दुस पामाल करते हैं । मुफ़स्सिरे शहीर ***ह़कीमुल उम्मत*** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं :

"***आतशबाज़ी*** नमरूद बादशाह ने ईजाद की जबकि उस ने ह़ज़रते ***इब्राहीम*** ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को आग में डाला और आग ***गुलज़ार*** हो गई तो उस के आदमियों ने आग के अनार भर कर उन में आग लगा कर ह़ज़रते ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ फेंके ।" (इस्लामी ज़िन्दगी, स़-फ़ह़ा:63)

आतशबाज़ी ह़राम है : ***अफ़्सोस !*** आतशबाज़ी की नापाक रस्म अब मुसल्मानों में ज़ोर पकड़ती जा रही है, मुसल्मानों का करोड़ हा करोड़ रूपिया हर साल ***आतशबाज़ी*** की नज़्र हो जाता है । और आए दिन येह ख़बरें आती हैं कि फ़ुलां जगह ***आतशबाज़ी*** से इतने घर जल गए और इतने आदमी झुलस कर मर गए वग़ैरा वग़ैरा । इस में जान का ख़त़रा, माल की बरबादी और मकान में आग लगने का अन्देशा है, फिर येह काम ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी भी है । ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं, ***"आतशबाज़ी बनाना, बेचना, ख़रीदना और ख़रीदवाना, चलाना और चलवाना सब ह़राम है ।"***

(इस्लामी ज़िन्दगी, स़-फ़ह़ा:63)

तुझ को शा'बाने मुअ़ज़्ज़म का ख़ुदाया* عَزَّوَجَلَّ *वासिता
बख़्श दे रब्बे मुह़म्मद* صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم *तू मेरी हर इक ख़त़ा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े ।

आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ने सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजा रखा था :** ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शा'बानुल मुअज़्ज़म*** में इबादत करने, रोज़े रखने और आतशबाज़ी वग़ैरा के गुनाहों से बाज़ रहने का ज़ेह्न बनाने के लिये ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी क़ाफ़िलों में ***आशिक़ाने रसूल*** के हमराह खूब सुन्नतों भरे सफ़र कीजिये और र-मज़ानुल मुबारक में दा'वते इस्लामी के ***इज्तिमाई ए'तिकाफ़*** की ब-र-कतें लूटिये। आप की ज़ौक़ अफ़्ज़ाई के लिये एक ऐसी मुश्कबार म-दनी बहार पेश करता हूं कि اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ आप का दिल सीने में झूमने, मदीने की गलियों में घूमने और गुम्बदे ख़ज़्रा को चूमने लगेगा। चुनान्चे ***वाहकेन्ट*** (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : मैं कॉलिज में पढ़ता थां, और दिगर स्टूडन्ट्स की तरह फेशन का मतवाला था, क्रिकेट का मेच देखने और खेलने का जुनून की ह़द तक शौक़ और रात गए तक आवारागर्दी का मा'मूल था । नमाज़ और मस्जिद की ह़ाज़िरी का जहां तक तअ़ल्लुक़ था तो वोह फ़क़त ***ईदैन की नमाज़*** तक मह़दूद थी। र-मज़ानुल मुबारक (सिने 1422 हिजरी, सिने 2001 इस्वी) मैं वालिदैन के इस़्रार पर नमाज़ अदा करने मस्जिद में गया। अ़स्र की नमाज़ के बा'द सफ़ेद लिबास में मल्बूस सर पर सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए एक बा रीश इस्लामी भाई ने नमाज़ियों को क़रीब करने के बा'द ***फ़ैज़ाने सुन्नत*** का दर्स दिया, मैं दूर बैठ कर सुनता रहा, दर्स के बा'द फ़ौरन मस्जिद से

बाहर निकल गया, दो[2] तीन[3] दिन तक येही तरकीब रही । एक दिन मैं मिलने के लिये रुक गया, एक इस्लामी भाई ने पुर तपाक अन्दाज़ से मुलाक़ात कर के नाम व पता पूछने के बा'द तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माह़ौल में होने वाले ***इज्तिमाई़ ए'तिकाफ़*** में बैठने की तरग़ीब दिलाते हुए ए'तिकाफ़ के फ़ज़ाइल बयान किये । अव्वलन मेरा ज़ेह्न न बना लेकिन वोह इस्लामी भाई ماشاءالله बहुत जज़्बे वाले थे, मायूस न हुए बल्कि मेरे घर आ पहुंचे और बार बार इस्रार करने लगे । उन की मुसल्सल ***इन्फ़िरादी कोशिश*** के नतीजे में मैं ने ***ए'तिकाफ़*** से एक दिन क़ब्ल नाम लिखवा कर ***स-ह़री*** व इफ़्त़ार के अख़ाजात जम्अ़ करवा दिये । और आख़िरी अ़-श-रए र-मज़ानुल मुबारक सिने 1422 हिजरी जामेअ़ मस्जिद नईमिया (लाल रुख़, वाहकेन्ट) के अन्दर ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ ***मो'तकिफ़*** हो गया । ***इज्तिमाई़ ए'तिकाफ़*** के पुर सोज़ माहौल और ***आ़शिक़ाने रसूल*** की सोह़बत ने मेरी दिली कैफ़िय्यत को बदल डाला । वहां की जाने वाली तहज्जुद, इश्राक़, चाश्त और अव्वाबीन के नवाफ़िल की पाबन्दी ने गुज़श्ता ज़िन्दगी में फ़र्ज़ नमाज़ें न पढ़ने पर मुझे सख़्त शर्मिन्दा किया, आंखों से नदामत के आंसू जारी हो गए और मैं ने दिल ही दिल में नमाज़ों की पाबन्दी की निय्यत कर ली । ***पच्चीस्वीं[25] शब*** दुआ़ में मुझ पर इस क़दर रिक़्क़त त़ारी थी कि मैं फूट फूट कर रो रहा था । इसी आ़लम में मुझ पर ग़ुनूदगी त़ारी हो गई और मैं ख़्वाब की दुन्या में पहुंच गया, क्या देखता हूं कि एक पुर वक़ार व नूर बार चेहरेवाली

शख़्सिय्यत मौजूद है और उन के इर्द गिर्द काफ़ी हुजूम है। मैं ने किसी से पूछा तो उन्हों ने बताया कि येह ***आक़ाए मदीना*** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं। ***मैं ने देखा तो सरकारे मदीना*** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ***ने सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजा रखा था।*** कुछ देर तक मैं दीदार से आंखें ठन्डी करता रहा, जब बेदार हुवा तो ***सलातो सलाम*** पढ़ा जा रहा था। मेरी कैफ़िय्यत बहुत अजीबो ग़रीब थी, जिस्म पर लर्ज़ा तारी था, मैं हिचकियां बांध कर रोए जा रहा था और आंसू थे कि थम नहीं रहे थे। सलातो सलाम के बा'द ***मजलिस बराए ए'तिकाफ़*** के निगरान के सामने इमामे का ताज सजाने वालों की क़ितार बंधी हुई थी और सरकारे ***आ'ला हज़रत*** इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के लिखे हुए इस ना'तिया शे'र की तकरार जारी थी।

ताज वाले देख कर तेरा इमामा नूर का
सर झुकाते हैं इलाही बोलबाला नूर का

मैं अपने क़रीबी इस्लामी भाइयों को ब मुश्किल तमाम सिर्फ़ इतना केह पाया, "मैं ने भी इमामा बांधना है।" थोड़ी ही देर में रोते रोते मैं भी इमामे का ताज सजा चुका था। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ***ए'तिकाफ़*** ही में ***30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र की निय्यत भी की। और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र भी किया, सफ़र के दौरान बहुत कुछ सीखने के साथ साथ दर्सो बयान भी सीख कर करने लगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه नमाज़ों की पाबन्दी के साथ साथ ***दा'वते इस्लामी*** के

म-दनी कामों में हिस्सा लेने लगा। आज येह बयान देते वक़्त ***ज़ैली मुशा-वरत के निगरान*** के तौर पर ***म-दनी कामों*** की धूमें मचाने की कोशिश कर रहा हूं।

गर तमन्ना है आक़ा ﷺ के दीदार की, म-दनी माहौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
होगी मीठी नज़र तुम पे सरकार ﷺ की, म-दनी माहौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"ईद" के तीन[3] हुरूफ़ की निस्बत से शश ईद के रोज़ों के तीन[3] फ़ज़ाइल

नौ मौलूद की त़रह़ गुनाहों से पाक

मदीना 1: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस ने ***र-मज़ान*** के रोज़े रखे फिर ***छे दिन शव्वाल*** में रखे तो गुनाहों से ऐसे निकल गया जैसे आज ही मां के पेट से पैदा हुवा है।"

(मज्मउज़्ज़वाइद, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:425, ह़दीस़:5102)

गोया उ़म्र भर का रोज़ा रखा

मदीना 2: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : "जिस ने ***र-मज़ान*** के रोज़े रखे फिर इन के बा'द ***छे शव्वाल*** में रखे । तो ऐसा है जैसे दह्र का (या'नी उ़म्र भर के लिये) रोज़ा रखा ।"

(स़ह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:592, ह़दीस़:1164)

साल भर रोज़े रखे

मदीना 3: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना स़ौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عنہ से रिवायत है, रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने ईदुल फ़ित्र के बा'द (शव्वाल में) ***छे रोज़े*** रख लिये तो उस ने पूरे साल के रोज़े रखे कि जो एक नेकी लाएगा उसे दस[10] मिलेंगी ।

(सु-नने इब्ने माजह, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:333, ह़दीस़:1715)

एक नेकी का दस[10] गुना स़वाब : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के करम और उस के ह़बीबे मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के स़दक़े साल भर के रोज़ों का स़वाब लूटना किस क़दर आसान कर दिया गया । हर एक मुसल्मान को येह सआ़दत

हा़सिल कर लेनी चाहिये। एक साल के रोज़ों के स़वाब की हि़क्मत येह हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हम कमज़ोर बन्दों के लिये मह़ूज़ अपने फ़ज़्ल से एक नेकी का स़वाब दस10 गुना रखा है। चुनान्चे ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ब-र-कत निशान है :

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: जो एक नेकी लाए तो उस के लिये उस जैसी दस10 हैं।

(पारह:8, अल अन्आ़म:160)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ यूं माहे र-मज़ान के रोज़े दस10 महीनों के बराबर हुए और ***छे रोज़े*** साठ60 रोज़ों (दो2 माह) के बराबर इस त़रह़ पूरे साल का रोज़ों का स़वाब हा़सिल हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِهٖ

शश ईद के रोज़े कब रखे जाएं ? : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** स़द्रुश्शरीआ़ बदरुत्त़रीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद अम्जद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی बहारे शरीअ़त के ह़ाशिये में फ़रमाते हैं : "बेहतर येह है कि येह रोज़े मु-तफ़र्रक़ (या'नी नाग़ा कर कर के) रखे जाएं और ***ईद*** के बा'द लगातार ***छे दिन*** में एक साथ रख लिये, जब भी ह़रज नहीं।" (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा:5, स-फ़ह़ा:140)

ख़लीले मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद ख़लील ख़ान क़ादिरी बरकाती عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْهَادِی फ़रमाते हैं : येह रोज़े ***ईद*** के बा'द लगातार रखे जाएं तब भी मुज़ा-यक़ा नहीं और बेहतर

येह है कि मु-तफ़र्रक़ (या'नी नाग़ा कर कर के) रखे जाएं या'नी हर हफ़्ते में दो[2] रोज़े और ***ईदुल फ़ित्र*** के दूसरे रोज़ एक रोज़ा रख ले और पूरे माह में रखे तो और भी मुनासिब मा'लूम होता है । (सुन्नी बहिश्ती ज़ेवर, स़-फ़ह़ा:347) अल ग़रज़ ***ईदुल फ़ित्र*** का दिन छोड़ कर सारे महीने में जब चाहें ***शश ईद के रोज़े*** रख सकते हैं ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ज़ुल ह़िज्जति ह़राम के इब्तिदाई दस[10] दिन के फ़ज़ाइल : ***बा'ज़*** अह़ादीसे मुबा-रका के मुत़ाबिक़ ***ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम*** का पहला अ़-शरह (या'नी इब्तिदाई दस[10] दिन) र-मज़ानुल मुबारक के बा'द सब दिनों से अफ़्ज़ल है ।

"अल्लाह" के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से अ़-श-रए ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम के मु-तअ़ल्लिक़ चार रिवायात

नेकियां करने के पसन्दीदा तरीन अय्याम

मदीना 1: ***सरकारे*** नामदार, मदीने के ताजदार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नूर बार है : "इन ***दस[10] दिनों*** से ज़ियादा किसी दिन का नेक अ़मल ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ को मह़बूब नहीं ।" स़ह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की, ***"या रसूलल्लाह*** ! عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और न राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद ? फ़रमाया, "और न राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद,

मगर वोह कि अपने जानो माल ले कर निकले फिर उन में से कुछ वापस न लाए (या'नी सिर्फ़ वोह मुजाहिद अफ़्ज़ल होगा जो जानो माल कुरबान करने में काम्यिाब हो गया)

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:333, ह़दीस़:969)

शबे क़द्र के बराबर फ़ज़ीलत

मदीना 2: ***ह़दीस़े*** पाक में है, ***"अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ को अ़-श-रए ज़ुल ह़िज्जा से ज़ियादा किसी दिन में अपनी इ़बादत किया जाना पसन्दीदा नहीं इस के हर दिन का रोज़ा एक साल के रोज़ों और हर शब का क़ियाम ***शबे क़द्र*** के बराबर है ।"

(जामेए़ तिरमिज़ी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:192, ह़दीस़:758)

अ़-रफ़ा का रोज़ा

मदीना 3: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सुल्त़ाने मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, स़ाह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "मुझे ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ पर गुमान है कि ***अ़-रफ़ा*** (या'नी 9 ***ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम***) ***का रोज़ा*** एक साल क़ब्ल और एक साल बा'द के गुनाह मिटा देता है ।" (स़ह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:590, ह़दीस़:196)

एक रोज़ा हज़ार रोज़ों के बराबर

मदीना 4: ***उम्मुल मुअमिनीन*** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, रसूलुल्लाह

عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अ़-रफ़ा (या'नी 9 ज़ुल हि़ज्जतुल ह़राम) ***का रोज़ा*** हज़ार रोज़ों के बराबर है ।" (शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:357, ह़दीस़:3764) मगर ह़ज करने वाले पर जो ***अ़-रफ़ात*** में है उसे ***अ़-रफ़ा*** (या'नी 9 ज़ुल हि़ज्जतुल ह़राम) के दिन रोज़ा मकरूह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रावी कि हुज़ूर पुर नूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ***अ़-रफ़े*** के दिन (या'नी 9 ज़ुल हि़ज्जतुल ह़राम के रोज़ ह़ाजी को) ***अ़-रफ़ात*** में रोज़ा रखने से मन्अ़ फ़रमाया ।

(स़ह़ीह़ इब्ने ख़ुज़ैमा, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:292, ह़दीस़:2101)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अय्यामे बीज़ के रोज़े : ***हर*** म-दनी माह (या'नी सिने हिजरी के महीने) में कम अज़ कम तीन[3] रोज़े हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को रख ही लेने चाहिये । इस के बे शुमार दुन्यवी और उख़्रवी फ़वाइद व फ़ज़ाइल हैं । बेहतर येह है कि येह रोज़े "अय्यामे बीज़" या'नी चांद की 13, 14 और 15 तारीख़ को रखे जाएं ।

"या रब्बे मुह़म्मद عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم" के आठ हुरूफ़ की निस्बत

अय्यामे बीज़ के रोज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ 8 रिवायात

मदीना 1: ***उम्मुल मुअमिनीन*** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है, ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चार[4] चीज़ों को नहीं छोड़ते थे (1) आ़शूरह और (2) अ़-श-रए ***ज़ुल ह़िज्जा*** और (3) हर महीने में ***तीन[3] दिन के रोज़े*** और (4) फ़ज्र (के फ़र्ज़) से पहले दो[2] रक्अतें (या'नी दो सुन्नतें) ।

(सु-नने नसाई, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:220)

मदीना 2: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि त़बीबों के त़बीब, ***अल्लाह*** के ह़बीब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अय्याम बीज़ में बिग़ैर रोज़े के न होते न सफ़र में न ह़ज़र (या'नी क़ियाम) में ।

(सु-नने नसाई, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:198)

तीन[3] रोज़ों के दिन

मदीना 3: ***उम्मुल मुअमिनीन*** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : "मेरे सरताज, स़ाह़िबे मे'राज صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक महीने में ***हफ़्ता, इतवार*** और ***पीर*** का जब कि दूसरे माह मंगल, ***बुध*** और ***जुमा'रात*** का रोज़ा रखा करते ।"

(जामेए़ तिरमिज़ी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:186, ह़दीस़:746)

जहन्नम से बचाव की ढाल

मदीना 4: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबू आ़स़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "मैं ने सरकारे दो[2] आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना, "जिस त़रह़ तुम में से किसी के पास लड़ाई में बचाव के लिये ढाल होती है उसी त़रह़ रोज़ा जहन्नम से तुम्हारी ढाल हें और हर माह तीन[3] दिन रोज़े रखना बेह्तरीन रोज़े हैं ।"

(इब्ने ख़ुज़ैमा, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:301, ह़दीस़:2125)

मदीना 5: ***हर*** महीने में ***तीन[3] दिन के रोज़े*** ऐसे हैं जैसे दह्र या'नी (हमेशा) का रोज़ा ।

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:649, ह़दीस़:1975)

मदीना 6: ***र-मज़ान*** के रोज़े और हर महीने में तीन दिन के रोज़े ***सीने की ख़राबी*** को दूर करते हैं ।

(मुस्नदे इमाम अह़मद, जिल्द:9, स़-फ़ह़ा:36, ह़दीस़:23132)

मदीना 7: ***जिस*** से हो सके हर महीने में ***तीन[3] रोज़े*** रखे कि हर रोज़ा दस गुनाह मिटाता और गुनाह से ऐसा पाक कर देता है जैसा पानी कपड़े को ।

(त़-बरानी फ़िल मो'जमुल कबीर, जिल्द:25, स़-फ़ह़ा:35, ह़दीस़:60)

मदीना 8: ***जब*** महीने में ***तीन[3] रोज़े*** रखने हों तो 13, 14 और 15 को रखो । (सु-नने नसाई, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:221)'

मेरे मरने की दुआ़एं मांगते थे : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** अय्यामे बीज़ के रोज़ों में नेकियों और सुन्नतों का ज़ेह्न बनाने के लिये तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" का ***म-दनी माह़ौल*** अपना लीजिये, सिर्फ़ दूर दूर से देखने से बात नहीं बनेगी, सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, र-मज़ानुल मुबारक का ***इज्तिमाई़ ए'तिकाफ़*** भी फ़रमाइये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप को वोह रूह़ानी सुकून मुयस्सर आएगा कि आप ह़ैरान रह जाएंगे । ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माह़ौल में आ कर कैसे कैसे बिगड़े हुए लोग राहे रास्त पर आ जाते हैं इस की एक झलक मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे तह़सील ठुल (बाबुल इस्लाम सिन्ध म-दनी) के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है कि मैं इन्तिहाई फ़सादी और शरीर था, लड़ाई झगड़ा मेरा पसन्दीदा मश्ग़ला था, मेरी शर अंगेज़ियों से सारा मह़ल्ला तंग था और घर वाले तो इस क़दर बेज़ार थे कि ***मेरे मरने की दुआ़एं मांगते थे ।*** खुश क़िस्मती से कुछ इस्लामी भाइयों ने मुझ पर ***इन्फ़िरादी कोशिश*** करते हुए मुझे र-मज़ानुल मुबारक के ***इज्तिमाई़ ए'तिकाफ़*** की दा'वत पेश की मैं ने मुरुव्वत में हां कर दी । जज़्बा तो था नहीं फ़क़त टाइम पास करने की ग़रज़ से मैं र-मज़ानुल मुबारक (सिने 1420 हिजरी 1999)

में ***मेमन मस्जिद*** अ़त्तारआबाद के अन्दर आ़शिक़ाने रसूल के साथ मो'तकिफ़ हो गया। दौराने ए'तिकाफ़ वुज़ू, गुस्ल, नमाज़ का त़रीक़ा नीज़ हुक़ूक़ुल्लाह व हुक़ूक़ुल इ़बाद और एह़तिरामे मुस्लिम के अह़काम सीखने को मिले, सुन्नतों भरे पुर सोज़ बयानों और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं ने मुझे हिला कर रख दिया ! बस़द नदामत मैं ने साबेक़ा गुनाहों से ***तौबा*** की, नेकियां करने की दिल में उमंग पैदा हुई। اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निशानी दाढ़ी शरीफ़ सजा ली, सर को सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ के ताज से सरसब्ज़ किया और लड़ाई झगड़ों की जगह ***नेकी की दा'वत*** का शैदाई बन गया।

आओ आ कर गुनाहों से तौबा करो, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रह़मते ह़क़ से दामन तुम आ कर भरो, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"मुस्त़फ़ा" के पांच5 हुरूफ़ की निस्बत से पीर शरीफ़ और जुमा'रात के रोज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ 5 अह़ादीसे मुबा-रका

मदीना 1: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ***पीर*** और ***जुमा'रात*** को आ'माल पेश होते हैं तो मैं पसन्द करता हूं कि मेरा अ़मल उस वक़्त पेश हो कि मैं रोज़ादार हूं।

(सुनने तिरमिज़ी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:747)

मदीना 2: ***अल्लाह*** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पीर शरीफ़ और जुमा'रात को रोज़े रखा करते थे इस के बारे में अ़र्ज़ की गई तो फ़रमाया, इन दोनों[2] दिनों में अल्लाह तआ़ला हर मुसल्मान की मग़्फ़िरत फ़रमाता है मगर वोह दो[2] शख़्स़ जिन्हों ने बाहम जुदाई कर ली है उन की निस्बत मलाइका से फ़रमाता है इन्हें छोड़ दो यहां तक कि सुल्ह़ कर लें।

(सु-नने इब्ने माजह, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:344, ह़दीस़:1740)

मदीना 3: ***उम्मुल मुअमिनीन*** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सि़द्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं: मेरे सरताज स़ाह़िबे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ***पीर*** और जुमा'रात को ख़याल कर के ***रोज़ा*** रखते थे।

(तिरमिज़ी शरीफ़, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:186, ह़दीस़:745)

मदीना 4: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं, सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ***पीर शरीफ़*** के रोज़े का सबब दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया, इसी में मेरी विलादत हुई, इसी में मुझ पर (पहली) वह़्य नाज़िल हुई। (स़ह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:591, ह़दीस़:1162)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ पर दुरूदे पाक की कस्रत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तहारत है।

सुन्नत से महब्बत

मदीना 5: ***हज़रते*** सय्यिदुना ***उसामा*** बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के गुलाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, फ़रमाते हैं कि सय्यिदुना ***उसामा*** बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ सफ़र में भी ***पीर*** और ***जुमा'रात*** का रोज़ा तर्क नहीं फ़रमाते थे। मैं ने उन की बारगाह में अ़र्ज़ की कि क्या वजह है कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ इस बड़ी उ़म्र में भी ***पीर*** और ***जुमा'रात*** का रोज़ा रखते हैं ? फ़रमाया, रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पीर और जुमा'रात का रोज़ा रखा करते थे। मैं ने अ़र्ज़ की, ***या रसूलल्लाह*** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या वजह है कि आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ***पीर*** और ***जुमा'रात*** का रोज़ा रखते हैं ? तो इर्शाद फ़रमाया : लोगों के आ'माल ***पीर*** और ***जुमा'रात*** को पेश किये जाते हैं।

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स-फ़हा:392, हदीस:3859)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन अहादीसे मुबा-रका से मा'लूम हुवा कि ***पीर शरीफ़*** और ***जुमा'रात*** को बारगाहे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में बन्दों के आ'माल पेश किये जाते हैं और ईन दोनों[2] अय्याम में ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ अपनी रहमत से मुसल्मानों

की ***मग़्फ़िरत*** फ़रमा देता है। मगर आपस में किसी दुन्यवी सबब से जुदाई कर डालने वालों को नहीं बख़्शा जाता। वाक़ेई येह बेहद तश्वीश की बात है। आज के दौर में शायद ही कोई ***कीने*** से मह़फ़ूज़ हो। दिल की छुपी हुई दुश्मनी को कीना केहते हैं लिहाज़ा हमें ग़ौर कर के जिस जिस मुसल्मान का दिल में ***कीना*** बैठ गया हो उस को दूर करना चाहिये। खुसूसन ***ख़ानदानी झगड़ें*** हों तो खुद आगे बढ़ कर सुल्ह़ की तरकीब बनानी चाहिये, ***इख़्लास*** के साथ कामिल कोशिश के बा वुजूद भी अगर जुदाई ख़त्म करने में ना कामी हुई तो पहल करने वाला اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ बरी हो जाएगा। बहर ह़ाल ***पीर शरीफ़*** और ***जुमा'रात*** को हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रोज़ा रखा करते थे। ***पीर शरीफ़ के रोज़े का एक सबब अपनी विलादत भी बताया, गोया सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर पीर शरीफ़ को रोज़ा रख कर अपना यौमे विलादत मनाया करते थे।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"जन्नत" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से बुध और जुमा'रात के रोज़ों के 3 फ़ज़ाइल

मदीना 1: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है ***अल्लाह*** के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदह आमेना के गुलशन के महक्ते फूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बिशारत निशान है,

जो ***बुध*** और ***जुमा'रात*** को रोज़े रखे उस के लिये जहन्नम से आज़ादी लिख दी जाती है।

(अबू या'ला, जिल्द:5, स़-फ़ह़ा:115, ह़दीस़:5610)

मदीना 2: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना मुस्लिम बिन ***उ़बैदुल्लाह*** क़ु-रशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिदे मुकर्रम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में या तो ख़ुद अ़र्ज़ की या किसी और ने दरयाफ़्त किया, या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم! मैं ***हमेशा रोज़ा*** रखूं ? सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे। फिर दूसरी[2] मरतबा अ़र्ज़ की, फिर ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई। तीसरी[3] बार पूछने पर इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि रोज़े के मु-तअ़ल्लिक़ किस ने सुवाल किया ? अ़र्ज़ की, मैं ने या नबिय्यल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! तो जवाबन इर्शाद फ़रमाया, बेशक तुझ पर तेरे घर वालों का ह़क़ है तो ***र-मज़ान*** और उस से मुत्तसिल महीने (शव्वाल) और हर ***बुध*** और ***जुमा'रात*** को रोज़ा रख कि अगर तू ऐसा करेगा तो गोया तूने हमेशा के रोज़े रखे।

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:395, ह़दीस़:3868)

मदीना 3: "***जिस*** ने ***र-मज़ान, शव्वाल, बुध*** और ***जुमा'रात*** का रोज़ा रखा तो वोह दाख़िले जन्नत होगा।"

(अस्सुननुल कुब्रा लिन्नसाई, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:147, ह़दीस़:2778)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"करम" के तीन[3] हुरूफ़ की निस्बत से बुध, जुमा'रात और जुमुआ़ के रोज़ों के 3 फ़ज़ाइल

मदीना 1: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, सुल्त़ाने दो[2] जहान, रह़मते आ़लमियान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है, जिस ने ***बुध, जुमा'रात व जुमुआ़*** को रोज़े रखे अल्लाह तआ़ला उस के लिये जन्नत में एक मकान बनाएगा जिस का बाहर का ह़िस्सा अन्दर से दिखाई देगा और अन्दर का बाहर से।

(मज्मउ़ज़्ज़वाइद, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:452, ह़दीस़:5204)

मदीना 2: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये (या'नी ***बुध, जुमा'रात*** व ***जुमुआ़*** के रोज़े रखने वाले के लिये जन्नत में) मोती और याक़ूत व ज़बर्जद का मह़ल बनाएगा। और उस के लिये दोज़ख़ से बराअत (या'नी आज़ादी) लिख दी जाएगी।

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:397, ह़दीस़:3873)

मदीना 3: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की रिवायत में है, जो इन तीन[3] दिनों के रोज़े रखे फिर जुमुआ़ को थोड़ा या ज़ियादा तसद्दुक़ (या'नी ख़ैरात) करे तो जो गुनाह किये हैं बख़्श दिये जाएंगे और ऐसा हो जाएगा जैसे उस दिन कि अपनी मां के पेट से पैदा हुवा था।

(त़-बरानी कबीर, जिल्द:12, स़-फ़ह़ा:266, ह़दीस़:13308)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

''या नूर'' के पांच हुरूफ़ की निस्बत से जुमुआ़ के रोज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ 5 फ़ज़ाइल

मदीना 1: ***सरकारे*** मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : ''जिस ने जुमुआ़ का रोज़ा रखा तो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ उसे आख़िरत के दस[10] दिनों के बराबर अज्र अ़ता फ़रमाएगा और उन की ता'दाद अय्यामे दुन्या की त़रह़ नहीं है।''

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:393, ह़दीस़:3862)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आख़िरत का एक दिन दुन्या के ***एक हज़ार बरस*** के बराबर है। या'नी ***जुमुआ़*** को रोज़ा रखने वाले को ***दस हज़ार[10000] साल*** के रोज़ों का स़वाब मिलता है मगर तन्हा ***जुमुआ़*** का रोज़ा न रखा जाए ईस के साथ ***जुमा'रात या हफ़्ता*** मिला लेना चाहिये। (तन्हा जुमुआ़ का रोज़ा रखने की मुमा-न-अ़त की रिवायत आगे आ रही है)

मदीना 2: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू उमामा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि मदीने के ताजवर, शफ़ीए रोज़े मह़शर, मह़बूबे रब्बे अक्बर عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है, ''जिस ने ***जुमुआ़*** अदा किया (या'नी नमाज़े जुमुआ़ अदा की) और इस दिन का ***रोज़ा*** रखा और मरीज़ की इ़यादत की, और जनाज़े के साथ गया और निकाह़ की गवाही दी तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई।''

(त़-बरानी कबीर, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:97, ह़दीस़:7484)

मदीना 3: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने रोज़े की ह़ालत में यौमे जुमुआ़ की सुब्ह़ की और मरीज़ की इ़यादत की और जनाज़े के साथ गया और स़-दक़ा किया उस ने अपने लिये जन्नत वाजिब कर ली ।"

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:394, ह़दीस़:3864)

मदीना 4: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने बरोज़े जुमुआ़ रोज़ा रखा और मरीज़ की इ़यादत की और मिस्कीन को खाना खिलाया और जनाज़े के हमराह चला तो उसे चालीस40 साल के गुनाह लाह़िक़ न होंगे । (शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:394, ह़दीस़:3865)

मदीना 5: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बहुत कम ***जुमुआ़*** का रोज़ा तर्क फ़रमाते थे ।

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:394, ह़दीस़:3865)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ ***आ़शूरा*** के रोज़े के पहले या बा'द में एक रोज़ा रखना है इसी त़रह़ ***जुमुआ़*** में भी करना है क्यूंकि ख़ुसूसिय्यत के साथ तन्हा ***जुमुआ़*** या सिर्फ़ हफ़्ता का रोज़ा रखना मक्रूहे तन्ज़ीही (या'नी ना पसन्दीदा) है ।

हां अगर किसी मख़्सूस़ तारीख़ को ***जुमुअ़ा*** या हफ़्ता आ गया तो तन्हा ***जुमुअ़ा*** या हफ़्ता का रोज़ा रखने में कराहत नहीं । म-स़लन 15 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म, 27 र-जबुल मुरज्जब वग़ैरा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"फ़ज़्ल" के तीन[3] हुरूफ़ की निस्बत से तन्हा जुमुअ़ा का रोज़ा रखने की मुमा-न-अ़त की 3 रिवायात

मदीना 1: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ रिवायत करते हैं, मैं ने ताजदारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "तुम में से कोई हरगिज़ ***जुमुअ़ा*** का रोज़ा न रखे मगर येह कि इस के पहले या बा'द में एक दिन मिला लें ।"

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:653, ह़दीस़:1985)

मदीना 2: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيۡهِ اَفۡضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسۡلِيۡم से रिवायत करते हुए फ़रमाते हैं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : रातों में से शबे ***जुमुअ़ा*** को क़ियाम के लिये ख़ास न करो और न ही दिनों के दौरान ***यौमे जुमुअ़ा*** को रोज़े के साथ ख़ास करो मगर येह कि तुम ऐसे रोज़े में हो जो तुम्हें रखना हो ।

(स़ह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:576, ह़दीस़:1144)

मदीना 3: ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना आ़मिर बिन लुदैन अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "जुमुआ़ का दिन तुम्हारे लिये ***ईद*** है इस दिन रोज़ा मत रखो मगर येह कि इस से पहले या बा'द में भी रोज़ा रखो।"

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:2, स-फ़ह़ा:81, ह़दीस़:11)

इन तीनों[3] अह़ादीस़ से मा'लूम हुवा कि तन्हा जुमुआ़ का रोज़ा न रखना चाहिये। हां अगर कोई ख़ास़ वजह हो म-स़लन 27 र-जबुल मुरज्जब जब जुमुआ़ को हो गई तो अब रखने में ह़रज नहीं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हफ़्ता और इतवार के रोज़े : ***ह़ज़रते*** सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ***हफ़्ता*** और ***इतवार*** का रोज़ा रखा करते और फ़रमाते, "येह दोनों[2] ***हफ़्ता*** और ***इतवार*** मुश्रिकीन की ईद के दिन हैं और मैं चाहता हूं कि इन की मुख़ा-ल-फ़त करूं।" (इब्ने ख़ुज़ैमा, जिल्द:3, स-फ़ह़ा:318, ह़दीस़:2167)

तन्हा ***हफ़्ता*** का रोज़ा रखना मन्अ़ है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन बुसर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी बहन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ने इर्शाद फ़रमाया : "हफ़्ते के दिन का रोज़ा फ़र्ज़ रोज़ों के इलावा मत रखो ।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ई़सा ***तिरमिज़ी*** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि येह ह़दीस़ ह़सन है और यहां मुमा-न-अ़त से मुराद किसी शख़्स़ का हफ़्ते के रोज़ को ख़ास़ कर लेना है कि यहूदी इस दिन की ता'ज़ीम करते हैं ।

(जामेए़ तिरमिज़ी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:186, ह़दीस़:744)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह" عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के 12 ह़ुरूफ़ की निस्बत से रोज़ए नफ़्ल के 12 म-दनी फूल

मदीना 1: ***मां*** बाप अगर बेटे को ***नफ़्ल रोज़े*** से इस लिये मन्अ़ करें कि बीमारी का अन्देशा है तो वालिदैन की इत़ाअ़त करे ।

(रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:416)

मदीना 2: ***शौहर*** की इजाज़त के बिग़ैर बीवी ***नफ़्ल रोज़ा*** नहीं रख सकती । (दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुह़तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:415)

मदीना 3: ***नफ़्ल रोज़ा*** क़स्दन शुरूअ़ करने से पूरा करना वाजिब हो जाता है अगर तोड़ेगा तो क़ज़ा वाजिब होगी ।

(दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:411)

मदीना 4: ***नफ़्ल रोज़ा*** जान बूझ कर नहीं तोड़ा बल्कि बिला इख़्तियार टूट गया म-स़लन औरत को रोज़े के दौरान ह़ैज़ आ गया तो रोज़ा टूट गया मगर क़ज़ा वाजिब है ।

(दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:412)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

मदीना 5: ***नफ़्ल रोज़ा*** बिला उज़्र तोड़ना ना जाइज़ है । मेहमान के साथ अगर मेज़बान न खाएगा तो उसे या'नी मेहमान को ना गवार गुज़रेगा । या मेहमान अगर खाना न खाए तो मेज़बान को अज़िय्यत होगी तो ***नफ़्ल रोज़ा*** तोड़ने के लिये येह उज़्र है बशर्ते कि येह भरोसा हो कि इस की क़ज़ा रख लेगा और येह भी शर्त है कि ज़ह्वए कुब्रा से पहले तोड़े बा'द को नहीं ।

(दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:413)

मदीना 6: ***वालिदैन*** की नाराज़गी के सबब अ़स्र से पहले तक ***नफ़्ल रोज़ा*** तोड़ सकता है । बा'दे अ़स्र नहीं ।

(दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुह़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:414)

मदीना 7: ***अगर*** किसी इस्लामी भाई ने दा'वत की तो ज़ह्वए कुब्रा से क़ब्ल ***रोज़ए नफ़्ल*** तोड़ सकता है मगर क़ज़ा वाजिब है । (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:414)

मदीना 8: ***इस*** त़रह़ निय्यत की कि "कहीं दा'वत हुई तो रोज़ा नहीं और न हुई तो है ।" येह निय्यत स़ह़ीह़ नहीं, बहर ह़ाल रोज़ादार नहीं । (आ़लमगीर, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:195)

मदीना 9: ***मुलाज़िम*** या मज़्दूर अगर ***नफ़्ली रोज़ा*** रखें तो काम पूरा नहीं कर सकते तो "मुस्ताजिर" (या'नी जिस ने मुलाज़मत या मज़्दूरी पर रखा है) की इजाज़त ज़रूरी है । और अगर काम पूरा कर सकते हैं तो इजाज़त की ज़रूरत नहीं ।[1] (दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:416)

1. मुला-ज़मत के मु-तअ़ल्लिक़ बेहतरीन मा'लूमात के लिये मक्त-बतुल मदीना का शाएअ़ कर्दा 16 स़-फ़ह़ात का रिसाला "मुलाज़िमीन के 21 म-दनी फूल" का ज़रूर मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये ।

मदीना 10: ***हज़रते*** सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام एक दिन छोड़ कर एक दिन रोज़ा रखते थे । इस त़रह़ रोज़े रखना "स़ौमे दावूदी" केहलाता है और हमारे लिये येह अफ़्ज़ल है । जैसा कि ***रसूलुल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अफ़्ज़ल रोज़ा मेरे भाई ***दावूद*** (عَلَیْہِ السَّلَام) का रोज़ा है कि वोह एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन न रखते और दुश्मन के मुक़ाबले से फ़िरार न होते थे ।"

(जामेए तिरमिज़ी, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:197, ह़दीस़:770)

मदीना 11: ***हज़रते*** सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तीन3 दिन महीने के शुरूअ़ में, तीन3 दिन वस्त़ में और तीन3 दिन आख़िर में रोज़ा रखा करते थे और इस त़रह़ महीने के अवाइल, अवासित़ और अवाख़िर में रोज़ादार रहते थे ।

(कन्ज़ुल उ़म्माल, जिल्द:8, स़-फ़ह़ा:304, ह़दीस:24624)

मदीना 12: ***सारा*** साल रोज़े रखना मक्रूहे तन्ज़ीही है ।

(दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:337)

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमें ज़िन्दगी, सिह़्ह़त और फ़ुरस़त को ग़नीमत जानते हुए ख़ूब ख़ूब ***नफ़्ली रोज़े*** रखने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमा, उन्हें क़बूल भी कर और हमारी और

हमारे मीठे मीठे मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रोज़ी का एक सबब

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी के दौरे अक़्दस में दो[2] भाई थे, जिन में एक आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में (इल्मे दीन सीखने के लिये) ह़ाज़िर होता, (एक रोज़) कारीगर भाई ने सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपने भाई की शिकायत की (या'नी इस ने सारा बोझ मुझ पर डाल दिया है, इस को मेरे काम काज में हाथ बटाना चाहिये) तो मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमियान, सरवरे ज़ी शान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **لَعَلَّكَ تُرْزَقُ بِهٖ** या'नी शायद ! "तुझे इस की ब-र-कत से रोज़ी मिल रही है।"

(सु-ननुत्तिरमिज़ी, ह़दीस़:2345, स़-फ़ह़ा:1887, व अशि-अ़तुल्लम्आ़त, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:262)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ط وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

"र-मज़ानुल मुबारक" के बारह[12] हुरूफ़ की निस्बत से रोज़ादारों की 12 ह़िकायात

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :-

لَقَدْ كَانَ فِیْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: बेशक उन की ख़बरों (ह़िकायात) से अ़क्लमन्दों की आंखें खुलती हैं।

(पारह:13, यूसुफ़:111)

सरकारे दो[2] जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है, जो मेरी मह़ब्बत और मेरी त़रफ़ शौक़ की वजह से मुझ पर हर दिन और हर रात को ***तीन[3] तीन[3] बार*** दुरूद शरीफ़ पढ़े तो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि वोह इस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे।

(अल मो'जमुल कबीर, जिल्द:18, स़-फ़ह़ा:361, ह़दीस़:928)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(1) गर्मियों का रोज़ा

हज्जाज बिन यूसुफ़ एक मरतबा दौराने सफ़रे हज मक्कए मुअ़ज़्ज़मा व मदीनए मुनव्वरा زَادَهُمَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعْظِيْمًا के दरमियान एक मन्ज़िल में उतरा और दो पहर का खाना तैयार करवाया और अपने हाजिब (या'नी चौबदार) से कहा कि किसी मेहमान को ले आओ। हाजिब ख़ैमे से बाहर निकला तो उसे एक ***आ'अ़राबी*** लेटा हुवा नज़र आया, इस ने उसे जगाया और कहा, चलो तुम्हें अमीर हज्जाज बुला रहे हैं। अ'अ़राबी आया तो हज्जाज ने कहा, मेरी दा'वत क़बूल करो और हाथ धो कर मेरे साथ खाना खाने बैठ जाओ। ***अअ़राबी*** बोला : मुआ़फ़ फ़रमाइये ! आप की दा'वत से पहले मैं आप से बेहतर एक ***करीम*** की दा'वत क़बूल कर चुका हूं। हज्जाज ने कहा, वोह किस की ? वोह बोला : ***अल्लाह*** तआ़ला की जिस ने मुझे ***रोज़ा*** रखने की दा'वत दी और मैं ***रोज़ा*** रख चुका हूं। हज्जाज ने कहा, इतनी सख़्त गरमी में ***रोज़ा***? आ'अ़राबी ने कहा, हां क़ियामत की सख़्त तरीन गरमी से बचने के लिये। हज्जाज ने कहा, आज खाना खा लो और येह ***रोज़ा*** कल रख लेना। ***आ'अ़राबी*** बोला, क्या आप इस बात की ज़मानत देते हैं कि मैं कल तक ज़िन्दा रहूंगा ! हज्जाज ने कहा येह बात तो नहीं। ***आ'अ़राबी*** बोला, तो फिर वोह बात भी नहीं। येह कहा और चल दिया। (रौज़ुर्रियाहीन, स-फ़हा:212) ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे किसी दुन्यवी ह़ाकिम के रो'ब में नहीं आते और येह भी मा'लूम हुवा कि जो लोग यहां कि गरमी बरदाश्त कर के ***रोज़ा*** रखते हैं वोह कल क़ियामत की हौलनाक गरमी से मह़फ़ूज़ रहेंगे । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

(2) शैत़ान की परेशानी

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मस्जिद के दरवाज़े पर शैत़ान को ह़ैरान व परेशान खड़े हुए देख कर पूछा, क्या बात है ? शैत़ान ने कहा, अन्दर देखिये । उन्हों ने अन्दर देखा तो एक शख़्स ***नमाज़*** पढ़ रहा था और एक आदमी मस्जिद के दरवाज़े के पास सो रहा था । शैत़ान ने बताया कि वोह जो अन्दर नमाज़ पढ़ रहा है उस के दिल में वस्वसा डालने के लिये मैं अन्दर जाना चाहता हूं लेकिन जो दरवाज़े के क़रीब सो रहा है, येह ***रोज़ादार*** है, येह सोया हुवा रोज़ादार जब सांस बाहर निकालता है तो उस की वोह सांस मेरे लिये शो'ला बन कर मुझे अन्दर जाने से रोक देती है ।

(अरौंज़ुल फ़ाइक़ मिस्री, स़-फ़ह़ा:39)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैतान के वार से बचने के लिये ***रोज़ा*** एक ज़बरदस्त ढाल है । रोज़ादार अगर्चे सो रहा है मगर उस की सांस शैतान के लिये गोया तल्वार है । मा'लूम हुवा रोज़ादार से शैतान बड़ा घबराता है, शैतान चूंकि माहे र-मज़ानुल मुबारक में क़ैद कर लिया जाता है इस लिये वोह जहां भी और जब भी रोज़ादार को देखता है परेशान हो जाता है ।

(3) निराला कफ़्फ़ारा :

एक सहाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ बारगाहे न-बवी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने र-मज़ान के रोज़े की हालत में (क़स्दन) अपनी औ़रत से "क़ुरबत" की, मैं हलाक हो गया, फ़रमाइये अब मैं क्या करूं ? सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : गुलाम आज़ाद कर सकते हो ? अ़र्ज़ की, नहीं या ***रसूलल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! फ़रमाया, क्या मु-तवातर दो[2] माह के (या'नी लगातार साठ[60]) रोज़े रख सकते हो ? अ़र्ज़ की, नहीं या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! फ़रमाया, साठ[60] मिस्कीनों को खाना खिला सकते हो ? अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह भी नहीं कर सकता । इतने में बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में किसी ने कुछ

खजूरें हदिय्यतन ह़ाज़िर कीं। सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह सारी खजूरें उस स़ह़ाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को अ़त़ा फ़रमा दीं और फ़रमाया, इन्हें ख़ैरात कर दो, तुम्हारा ***कफ़्फ़ारा*** अदा हो जाएगा। वोह बोले, या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ***मदीने*** भर में मुझ से बढ़ कर कोई मोह़ताज नहीं। ***सरकारे नामदार*** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुन कर हंसे यहां तक कि दन्दाने मुबारक चमकने लगे और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए या'नी फ़रमाया, **فَاَطْعِمْهُ اَهْلَكَ** या'नी पस अपने घर वालों को ही खिला दे। (तेरा कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा) (स़ह़ीहुल बुख़ारी, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:341, ह़दीस़:6822)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी स़ह़ाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से ब तक़ाज़ाए बशरिय्यत अगर कोई लग़्ज़िश वाक़ेअ़ हो भी जाती तो वोह फ़ौरन उस का तदारुक फ़रमाते। और मुआ़फ़ी के लिये बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो जाते। इस लिये कि उन का ईमान था कि रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ इसी दरे पाक से ह़ासिल हो सकती है। येह भी मा'लूम हुवा कि स़ह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का येह अ़क़ीदा था कि सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मालिको मुख़्तार हैं और शरीअ़त इन्हीं के इर्शादात का नाम है। इसी लिये तो सरकारे आबरूदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस्तिफ़्सार पर कि गुलाम आज़ाद कर सकते हो ? साठ60 दिन के लगातार रोज़े रख सकते हो ? साठ60 मिस्कीनों को खाना खिला सकते हो ? वोह स़ह़ाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ येही केहते रहे कि नहीं या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! गोया उन का ईमान था कि सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ***कफ़्फ़ारे*** की इन तीनों कि़स्मों के सिवा अगर चाहें तो मेरे लिये कोई चौथी4 कि़स्म का कफ्फ़ारा इर्शाद फ़रमा सकते हैं। चुनान्चे सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी अपने मुख़्तार होने पर अपनी मोहरे तस्दीक़ यूं स़ब्त फ़रमा दी कि गोया जाओ तुम्हारे लिये हम ***कफ़्फ़ारा*** येह मुक़र्रर फ़रमाते हैं कि बजाए कुछ देने के ले जाओ। जैसा कि उस स़ह़ाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह अ़र्ज़ की कि ***मदीना*** भर में मेरे बराबर कोई मोह़ताज नहीं। तो फ़रमा दिया कि अच्छा जाओ अपने घरवालों ही को खिला दो। तुम्हारा ***कफ़्फ़ारा*** अदा हो जाएगा। गोया जहां सारे मुसलमानों के लिये जानबूझ कर र-मज़ानुल मुबारक का रोज़ा तोड़ने का ***कफ़्फ़ारा*** (जब के कफ़्फ़ारे की शराइत पाई जाएं) येह है कि गुलाम आज़ाद करे इस की इस्तित़ाअ़त न हो तो मु-तवातर साठ60 रोज़े रखे अगर येह भी मुम्किन न हो तो साठ60 मिस्कीनों को खाना खिलाए। वहां उस स़ह़ाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के लिये सरवरे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ***कफ़्फ़ारा*** येह मुक़र्रर फ़रमाया कि तुम बजाए कुछ देने के

हमारी जनाब से ले जाओ और बजाए किसी पर ख़र्च करने के अपने अहले ख़ाना पर ही स़र्फ़ कर दो । येह है सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह ।

येह वोही हैं जो बख़्श देते हैं
कौन इन जुर्मों पर सज़ा न करे

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

(4) सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सख़ावत

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا बे ह़द सख़ी थीं । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़रवा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने देखा कि उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ***सत्तर 70000 हज़ार दराहिम*** राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में तक़्सीम कर दिये ह़ालांकि उन की क़मीस़ मुबारक में पैवन्द लगा हुवा था और एक दफ़्आ़ हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने उन की ख़िदमत में ***एक लाख दराहिम*** भेजे तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने वोह सब दिरहम एक ही रोज़ में राहे ख़ुदा में तक़्सीम कर दिये और उस रोज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ख़ुद रोज़े से थीं । शाम के वक़्त बांदी ने अ़र्ज़ की, क्या ही अच्छा होता कि एक दिरहम रोटी के लिये रख लेतीं । तो फ़रमाया, मुझे याद नहीं रहा, याद रहता तो बचा लेती । (मदारिजुन्नुबुव्वत, जिल्द:2, स़-फ़ह़ा:473) ***अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।***

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने वुस्अ़त के बा वुजूद अपनी ज़िन्दगी निहायत सादा और ज़ाहिदाना गुज़ार दी और जो दौलत ह़ाज़िर भी हुई आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में तक़्सीम फ़रमा दी यहां तक कि ***लाख दराहिम*** आए वोह भी लुटा दिये और ***रोज़ा*** इफ़्तार करने के लिये भी कोई एहतिमाम न फ़रमाया और एक हम हैं कि अगर कभी ***नफ़्ल रोज़ा*** रख भी लें तो हमें ***इफ़्तार*** के वक़्त हमा अक़्साम के फल, कबाब, समोसे, ठन्डा ठन्डा शरबत और न जाने क्या क्या चाहिये। बहर ह़ाल हमें उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के नक़्शे क़दम पर चलना चाहिये और दौलत से इस क़दर मह़ब्बत न रखनी चाहिये कि राहे खुदा में ख़र्च के मुआ़-मले में दिल तंग हो। हुब्बे दुन्या से पीछा छुड़ाने और आख़िरत बेहतर बनाने के लिये ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माह़ौल से वाबस्ता रहना बेह़द मुफ़ीद है। जब भी आप के अ़लाक़े में दा'वते इस्लामी के ***आ़शिक़ाने रसूल*** का म-दनी क़ाफ़िला तशरीफ़ लाए उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर ज़रूर फ़ैज़याब हों कि अच्छी निय्यत के साथ राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ के मुसाफ़िरों की ज़ियारत कारे स़वाबे आख़िरत है और उन की स़ोह़बत बाइसे़ हुसूले जन्नत है। आप को एक बिगड़े हुए नौ जवान का वाक़ेआ़ सुनाता हूं जो म-दनी क़ाफ़िले के

आ़शिक़ाने रसूल की ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुआ तो उस की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया ! चुनान्चे

आ़शिक़ाने रसूल से मुलाक़ात की ब-रकात :

शहर क़ुसूर (पंजाब, पाकिस्तान) के एक नौ जवान इस्लामी भाई की तह़रीर बित्तसर्रुफ़ पेश करता हूं : मैं उन दिनों मेट्रिक का त़ालिबे इ़ल्म था, बुरी सोह़बत के बाइ़स गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहा था, मिज़ाज बेह़द गुसीला था और बद तमीज़ी की नौबत इस ह़द तक पहुंच चुकी थी कि वालिद कुजा दादा और दादी के सामने भी क़ैंची की त़रह़ ज़बान चलाता था। एक रोज़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक ***दा'वते इस्लामी*** का एक म-दनी क़ाफ़िला हमारे मह़ल्ले की मस्जिद में ह़ाज़िर हुवा, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का करना ऐसा हुवा कि मैं ***आ़शिक़ाने रसूल से*** मुलाक़ात के लिये पहोंच गया। एक बा इ़मामा इस्लामी भाई ने ***इन्फ़िरादी कोशिश*** करते हुए मुझे ***दर्स*** में शिर्कत की दा'वत पेश की, मैं उन के साथ बैठ गया। उन्हों ने ***दर्स*** के बा'द मुझे बताया कि चन्द ही रोज़ बा'द मदीनतुल औलिया मुल्तान शरीफ़ में ***दा'वते इस्लामी का तीन[3] रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़*** हो रहा है आप भी शिर्कत कर लीजिये। उन के ***दर्स*** ने मुझ पर बहुत अच्छा असर किया था लिहाज़ा मैं इन्कार न कर सका। यहां तक कि मैं इज्तिमाअ़ (मुल्तान) में

हाज़िर हो गया। वहां की रौनक़ें और ब-र-कतें देख कर मैं हैरान रह गया, वहां होने वाले आख़िरी बयान ***"गाने बाजे की हौलनाकियां"*** सुन कर थर्रा उठा और आंखों से आंसू जारी हो गए। मैं गुनाहों से तौबा कर के उठा और दा'वते इस्लामी के ***म-दनी माहौल*** से वाबस्ता हो गया। मेरी ***म-दनी माहौल*** से वाबस्तगी से हमारे घर वालों ने इत़्मीनान का सांस लिया, दा'वते इस्लामी के ***म-दनी माहौल*** की ब-र-कत से मुझ जैसे बिगड़े हुए बद अख़्लाक़ नौ जवान में म-दनी इन्क़िलाब की वजह से मु-तअस्सिर हो कर मेरे बड़े भाई ने भी दाढ़ी रखने के साथ साथ इमामा शरीफ़ का ताज भी सजा लिया। मेरी एक ही बहन है। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस ने भी ***म-दनी बुर्क़अ़*** पहन लिया, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ घर का हर फ़र्द सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم का मुरीद हो गया। और मुझ पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ऐसा करम फ़रमाया कि मैं ने कुरआने पाक हिफ़्ज़ करने की सआ़दत हासिल कर ली और दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) में दाख़िला ले लिया और येह बयान देते वक़्त ***द-र-जए सा़लिसा*** या'नी तीसरी क्लास में पहुंच चुका हूं। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी कामों के तअ़ल्लुक़ से ***अ़लाक़ाई क़ाफिला ज़िम्मादार*** हूं। मेरी निय्यत है कि اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सिने 1427 हिजरी से यक मुश्त ***12 माह के लिये म-दनी क़ाफ़िलों*** में सफ़र करूंगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ पर दुरूदे पाक की कस्रत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तहारत है।

दिल पे गर ज़ंग हो, सारा घर तंग हो, होगा सब का भला, क़ाफ़िले में चलो
ऐसा फ़ैज़ान हो, हिफ़्ज़ कुरआन हो, कर के हिम्मत ज़रा, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(5) ठन्डा पानी

हज़रते सय्यिदुना सरी स-कती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का रोज़ा था। ताक़ में पानी ठन्डा होने के लिये आबख़ोरा (या'नी कूज़ा) रख दिया था, नमाज़े अ़स्र के बा'द मुराक़बे में थे, हूराने बहिश्त ने यके बा'द दीगरे सामने से गुज़रना शुरूअ़ किया। जो सामने आती उस से दरयाफ़्त फ़रमाते, तू किस के लिये है ? वोह किसी एक बन्दए ख़ुदा का नाम लेती। एक आई, उस से भी येही पूछा तो उस ने कहा : "उस के लिये हूं जो ***रोज़े*** में पानी ठन्डा होने को न रखे।" फ़रमाया : "अगर तू सच केहती है तो इस कूज़े को गिरा दे।" उस ने गिरा दिया। इस की आवाज़ से आंख खुल गई। देखा तो वोह आबख़ोरा (कूज़ा) टूटा पड़ा था। (अल मल्फ़ूज़, हिस्सा अव्वल, स-फ़हा:124) ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

اٰمين بِجاهِ النَّبِىِّ الْاَمين صلى الله تعالىٰ عليه واٰله وسلّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा आख़िरत की अ-बदी राहतें और ने'मतें पाने के लिये अपने नफ़्स को क़ाबू कर के दुन्या की लज़्ज़तों को ठोकर मारनी पड़ती है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ वाले अपने नफ़्स को बहुत मारते थे। चुनान्चे एक ***बुज़ुर्ग*** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने सख़्त गरमी के दिनों में दो पहर के वक़्त एक शख़्स को देखा कि ***बर्फ़*** लिये जा रहा है, दिल में ह़सरत हुई, काश ! मेरे पास भी पैसे होते और मैं भी बर्फ़ ख़रीद कर ठन्डा पानी पीता। फिर फ़ौरन नदामत हुई कि मैं नफ़्स की चाल में क्यूं आ गया ! उन्हों ने अ़ह्द किया कि कभी ठन्डा पानी न पियूंगा। लिहाज़ा सख़्त गरमी के मौसिम में भी पानी को गर्म कर के पिया करते थे।

निहंगो[1] अज़्दहा व शेरे नर मारा तो क्या मारा
बड़े मूज़ी को मारा नफ़्से अम्मारा को गर मारा

(6) इन्आमे मुस्तफ़ा صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم

र-मज़ानुल मुबारक की आमद आमद थी और मश्हूर मुअर्रिख़ ह़ज़रते ***वाक़िदी*** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास कुछ न था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने एक अ़लवी दोस्त की त़रफ़ येह रुक़्आ़ भेजा, ''र-मज़ान शरीफ़ का महीना आने वाला हे और मेरे पास ख़र्च के लिये कुछ नहीं, मुझे क़र्ज़े ह़-सना के त़ौर पर एक ***हज़ार***1000 ***दिरहम*** भेजिये।'' चुनान्चे उस अ़लवी ने एक हज़ार दिरहम की थेली भेज दी। थोड़ी देर के बा'द ह़ज़रते ***वाक़िदी*** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

1. या'नी मगर मच्छ

के एक दोस्त का रुक्आ़ हज़रते ***वाक़िदी*** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की त़रफ़ आ गया, "र-मज़ान शरीफ़ के महीने में ख़र्च के लिये मुझे ***एक हज़ार दिरहम*** की ज़रूरत है।" ह़ज़रते ***वाक़िदी*** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने वोही थेली वहां भेज दी । दूसरे रोज़ वोही अ़लवी दोस्त जिन से ह़ज़रते ***वाक़िदी*** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने क़र्ज़ लिया था और वोह दूसरे दोस्त जिन्हों ने ह़ज़रते ***वाक़िदी*** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से क़र्ज़ लिया था। दोनों[2] ह़ज़रते ***वाक़िदी*** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के घर आए। अ़लवी केहने लगे, र-मज़ानुल मुबारक का महीना आ रहा है और मेरे पास इन हज़ार दिरहमों के सिवा और कुछ न था। मगर जब आप का रुक्आ़ आया तो मैं ने येह हज़ार दिरहम आप को भेज दिये और अपनी ज़रूरत के लिये अपने इन दोस्त को रुक्आ़ लिखा कि मुझे एक हज़ार दिरहम बत़ौरे क़र्ज़ भेज दीजिये। उन्हों ने वोही थेली जो मैं ने आप को भेजी थी मुझे भेज दी। तो पता चला कि आप ने मुझ से क़र्ज़ मांगा मैं ने अपने इन दोस्त से क़र्ज़ मांगा और उन्हों ने आप से मांगा। और जो थेली मैं ने आप को भेजी थी वोह आपने इसे भेज दी और इस ने वोही थेली मुझे भेज दी। फिर इन तीनों[3] ह़ज़रात ने इत्तिफ़ाक़े राय से इस रक़म के तीन[3] हि़स्से कर के आपस में तक़्सीम कर लिये। इसी रात ह़ज़रते सय्यिदुना ***वाक़िदी*** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़्वाब में ***जनाबे रिसालते मआब*** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई और फ़रमाया,

اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कल तुम्हें बहुत कुछ मिल जाएगा। चुनान्चे दूसरे रोज़ अमीर यहूया बरमकी ने सय्यिदुना ***वाक़िदी*** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को बुला कर पूछा, "मैं ने रात ख़्वाब में आप को परेशान देखा है, क्या बात है? हज़रते ***सय्यिदुना वाक़ेदी*** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सारा क़िस्सा सुनाया। तो यहूया बरमकी ने कहा, मैं येह नहीं केह सकता कि आप तीनों[3] में से कौन ज़ियादा सख़ी है। आप तीनों[3] ही सख़ी और वाजिबुल एह्तिराम हैं। फिर उस ने तीस हज़ार[30000] दिरहम ***हज़रते वाक़िदी*** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को और बीस[20] बीस[20] हज़ार उन दोनों[2] को दिये। और ***हज़रते वाक़िदी*** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को क़ाज़ी भी मुक़र्रर कर दिया। (हुज्जतुल्लाहि अ़लल आ-लमीन, स़-फ़हा:577) ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सच्चे मुसल्मान सख़ी और पैकरे ईसा़र होते हैं। और अपने इस्लामी भाई की तक्लीफ़ दूर करने की ख़ात़िर अपनी मुश्किलात की ज़र्रा बराबर परवाह़ नहीं करते। और येह भी मा'लूम हुवा कि ***सख़ावत*** से हमेशा फ़ाइदा ही होता है, माल घटता नहीं बल्कि बढ़ता है। और येह भी मा'लूम हुवा कि ***अल्लाह*** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उम्मत के ह़ालात से बा ख़बर हैं

और ***सख़ावत*** करने वालों पर नज़रे रह़मत फ़रमाते हैं । यक़ीनन ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ की राह में ***ईसार*** की बहुत फ़ज़ीलत है । चुनान्चे सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है, "जो शख़्स़ उस चीज़ को जिस की ख़ुद उसे ह़ाजत हो दूसरे को दे दे तो ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ इसे बख़्श देता है ।

(इत्तिह़ाफ़ुस्सादतुल मुत्तक़ीन, जिल्द:9, स़-फ़ह़ा:779)

(7) रोज़े की ख़ुश्बू

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़तादा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ वग़ैरा के उस्ताज़े ह़दीस़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ग़ालिब ह़द्दानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِى शहीद कर दिये गए । तदफ़ीन के बा'द उन की क़ब्र शरीफ़ की मिट्टी से मुश्क की ख़ुश्बू आती थी किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा, مَاصُنِعْتَ ؟ या'नी आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया गया ? कहा, "अच्छा मुआ़-मला फ़रमाया गया ।" पूछा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को कहां ले जाया गया ? कहा, "जन्नत में ।" पूछा, "कौन से अ़मल के बाइस़ ?" फ़रमाया, ईमाने कामिल, तहज्जुद और ***गर्मियों के रोज़ों*** के सबब" फिर पूछा, "आप की क़ब्र से मुश्क की ख़ुश्बू क्यूं आ रही है ?" तो जवाब दिया, ***"येह मेरी तिलावत और रोज़ों में प्यास की ख़ुश्बू है ।"***

(ह़िल्यतुल औलिया, जिल्द:6, स़-फ़ह़ा:266, ह़दीस़:8553) ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की क़ब्रे अन्वर की मिट्टी से भी मुश्क की ख़ुश्बू आती थी। बार बार क़ब्र पर मिट्टी डाली जाती थी मगर लोग ख़ुश्बू की वजह से तबर्रुकन उठा ले जाते थे।

(मुक़द्दमा स़ह़ीह़ बुख़ारी, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:3)

स़ाह़िबे दलाइलुल ख़ैरात ह़ज़रत शैख़ सय्यिद मुहम्मद बिन सुलैमान जज़ूली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की क़ब्रे मुनव्वर भी मुअ़त्त़र थी और उस से ***कस्तूरी की ख़ुश्बू*** की लपटें आती थीं क्यूंकि आप ज़िन्दगी में कस़रत से दुरूद शरीफ़ पढ़ा करते थे। इन्तिक़ाल के सतत्तर बरस (77) के बा'द किसी सबब से "सोस" से "मराकिश" में मुन्तक़िल करने के लिये जब क़ब्र कुशाई की गई तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का जिस्मे मुबारक बिल्कुल स़ह़ीह़ व सालिम था ह़त्ता कि कफ़न तक बोसीदा नहीं हुवा था। वफ़ात से क़ब्ल आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दाढ़ी मुबारक का ख़त़ बनवाया था वोह ऐसे ही था जैसे आज ही बनवाया है, यहां तक कि किसीने इम्तिह़ानन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के रुख़्सारे मुबारक पर उंगली रख कर दबाया तो उस जगह से ख़ून हट गया और जहां दबाया था वोह जगह सफ़ेद सी हो गई या'नी ज़िन्दा इन्सानों की त़रह़ ख़ून भी जिस्म में रवां दवां था। (मुत़ालिउ़ल मसर्रात, स़-फ़ह़ा:4)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब तुम मुर्सलीन عَلَيْهِمُ السَّلَام पर दुरूदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं।

(8) र-मज़ान व शश ईद के रोज़ों की ब-र-कत

हज़रते सय्यिदुना सुफ़ियान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, एक बार मैं तीन3 साल तक मक्कतुल मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً में मुक़ीम रहा। एक मक्की शख़्स रोज़ाना दोपहर के वक़्त त़वाफ़े का'बा करता, दो2 गाना अदा करता फिर मुझे सलाम करता और अपने घर चला जाता। मुझे उस नेक बन्दे से महब्बत हो गई। वोह सख़्त बीमार हो गया मैं इयादत के लिये हाज़िर हुवा तो उस ने मुझे वसिय्यत की, "जब मैं फ़ौत हो जाऊं तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने हाथों से गुस्ल दे कर मेरी नमाज़े जनाज़ा अदा फ़रमाइये, मुझे तन्हा न छोड़िये बल्कि सारी रात मेरी क़ब्र के पास तशरीफ़ फ़रमा रहिये नीज़ मुन्कर नकीर की आमद के वक़्त मुझे तल्क़ीन फ़रमाइयेगा।" मैं ने हामी भर ली। चुनान्चे उस के इन्तिक़ाल के बा'द मैं ने हस्बे वसिय्यत अमल किया। क़ब्र के पास हाज़िर था कि मुझे ऊंघ आ गई। मैं ने ***हातिफ़े ग़ैबी*** की आवाज़ सुनी, "***ऐ सुफ़ियान*** (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه)! इस को तेरी तल्क़ीन व क़ुर्बत की कोई हाजत नहीं, इस लिये कि हम ने ख़ुद ही इस को उन्स दिया और तल्क़ीन की।" मैं ने कहा, इस को किस अमल के सबब येह रुत्बा मिला ? आवाज़ आई, ***"र-मज़ानुल मुबारक और उस के बा'द शव्वालुल मुकर्रम के छें***

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा।

रोज़े रखने की ब-र-कत से।'' ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़ियान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं, इस एक रात में येही ख़्वाब मैंने तीन[3] बार देखा। मैं ने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की, या अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ मुझे भी अपने फ़ज़्लो करम से इन रोज़ों की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। (क़ल्यूबी, स़-फ़ह़ा:14) ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(9) र-मज़ान का चांद

एक मरतबा र-मज़ान शरीफ़ के ***चांद*** के बारे में कुछ इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया, बा'ज़ लोग केहते थे कि रात को चांद हो गया। बा'ज़ केहते थे नहीं हुवा। ***ह़ुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म*** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की वालिदए माजिदा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरा येह बच्चा (या'नी ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم) जब से पैदा हुवा है र-मज़ान शरीफ़ के दिनों में सारा दिन दूध नहीं पीता और आज भी चूंकि अ़ब्दुल क़ादिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الظَّاهِر ने दूध नहीं पिया। इस लिये ग़ालिबन रात को चांद हो गया है। चुनान्चे फिर तह़क़ीक़ करने पर स़ाबित हुवा कि ***चांद*** हो गया है। (बहजतुल अस्रार, स़-फ़ह़ा:172) ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।***

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم

ग़ौसे आ'ज़म मुत्तक़ी हर आन में

छोड़ा मां का दूध भी र-मज़ान में

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जिगर का केन्सर ठीक हो गया : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** गौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की महब्बत और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की चाहत दिल में बढ़ाने के लिये तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माहौल से हर दम वाबस्ता रहिये और खूब खूब रह़मतें और ब-र-कतें लूटिये । आइये आप की तरग़ीब व तह़रीस़ के लिये एक ईमान अफरोज़ खुश गवार ***म-दनी बहार*** आप के गोश गुज़ार करता हूं । चुनान्चे ***गुलिस्ताने मुस्तफ़ा*** (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा़ है, मैं ने एक ऐसे इस्लामी भाई को तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के मदीनतुल औलिया मुल्तान शरीफ़ में होने वाले ***बैनल अक़्वामी तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़*** की दा'वत पेश की जिन की बेटी को ***जिगर का केन्सर*** था । वोह दुआ़ए शिफ़ा का जज़्बा लिये सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक हो गए । उन का केहना है मैं ने इज्तिमाए़ पाक में खूब दुआ़ की । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ***वापसी के बा'द जब अपनी बेटी का***

चेक अप करवाया तो डॉक्टर हैरान रह गए क्यूंकि उस के जिगर का केन्सर ख़त्म हो चुका था। डॉक्टरों की पूरी टीम हैरत ज़दा थी कि आख़िर केन्सर गया कहां !, जब कि हालत इस क़दर ख़राब थी कि इज्तिमाए पाक में जाने से पहले उस लड़की के जिगर से रोज़ाना कम अज़ कम एक सिरिंज भर कर मवाद निकाला जाता था ! اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाए पाक (मुल्तान) में शिर्कत की ब-र-कत से अब उस लड़की के जिगर में ***केन्सर*** का नामो निशान तक न रहा था, اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे बयान वोह लड़की अब न सिर्फ़ रू ब सिह्हत है बल्कि उस की शादी भी हो चुकी है।

अगर दर्दे सर हो, या केन्सर हो, दिलाएगा तुम को शिफ़ा म-दनी माहौल
शिफ़ाएं मिलेंगी, बलाएं टलेंगी, यक़ीनन है ब-र-कत भरा म-दनी माहौल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(10) अहले बैत رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के तीन[3] रोज़े

हज़राते ह-सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا बचपन में एक बार बीमार हो गए तो अमीरुल मुअमिनीन हज़रते मौलाए काइनात, अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم व हज़रते सय्यि-दतुना बीबी फ़ातिमा और ख़ादिमा हज़रते सय्यि-दतुना फ़िज़्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने इन शहज़ादों رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की सिह्हतयाबी के लिये ***तीन[3] रोज़ों*** की मन्नत मानी।

अल्लाह तआला ने दोनों[2] शहज़ादों رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को शिफ़ा अ़ता फ़रमाई । चुनान्चे तीन[3] रोज़े रख लिये गए । ***हज़रते मौला अ़ली*** كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ***तीन[3] साअ़*** जव लाए । एक एक साअ़ (या'नी तक़रीबन चार[4] किलो, सौ[100] ग्राम) तीनों[3] दिन पकाया । जब इफ़्तार का वक़्त आया और तीनों[3] रोज़ादारों के सामने रोटियां रखी गईं तो एक दिन ***मिस्कीन,*** एक दिन ***यतीम*** और एक दिन ***क़ैदी*** दरवाज़े पर हाज़िर हो गए और रोटियों का सुवाल किया तो तीनों[3] दिन सब रोटियां इन साइलों को दे दी और सिर्फ़ पानी से इफ़्तार कर के अगला रोज़ा रख लिया । (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स-फ़हा:926)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।***

भूके रह के ख़ुद औरों को खिला देते थे
कैसे स़ाबिर थे मुह़म्मद ﷺ ***के घराने वाले***

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ुरआने मजीद में अल्लाह तआला ने अपने प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी शहज़ादी के घराने के इस ईमान अफ़रोज़ ईसार को पारा 29 सू-रतुद्दह्र आयत नम्बर 8 में इस त़रह़ बयान फ़रमाया है :-

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّ اَسِيْرًا ۝۸ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ۝۹

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: और खाना खिलाते हैं उस की मह़ब्बत पर मिस्कीन और यतीम और असीर (या'नी क़ैदी) को । उन से केहते हैं हम तुम्हें ख़ास अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये खाना देते हैं, तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं मांगते ।

(पारह:29, अद्दह्र:8)

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **!** इस ईमान अफ़रोज़ ***ह़िकायत*** में अहले बैते अत़्हार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के जज़्बए ईस़ार का क्या ख़ूब इज़्हार है ! वाक़ेई तीन[3] दिन तक सिर्फ़ पानी पी कर ***रोज़ा*** रख लेना कोई मा'मूली बात नहीं । हम अगर ***एक रोज़ा*** रखें तो इफ़्त़ार में ठन्डा ठन्डा शरबत, कबाब, समोसे, मीठे मीठे फल, गर्मा गर्म बिरयानी और न जाने क्या क्या चाहिये ! इस क़दर तंगदस्ती के आ़लम में इतना शानदार ईस़ार येह उन्हीं का हिस़्स़ा था ।

ईस़ार की एक फ़ज़ीलत जो "रोज़ादारों की 12 ह़िकायात" की ह़िकायत नम्बर 6 के ज़िम्न में भी गुज़री, दोबारा पेश की जाती है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है, "जो शख़्स़ उस चीज़ को जिस की ख़ुद इसे ह़ाजत हो दूसरे को दे दे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसे बख़्श देता है।" (इत्तिह़ाफ़ुस्सादतुल मुत्तक़ीन, जिल्द:9, स़-फ़ह़ा:779)

अहले बैते अत्हार رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُم की शाने अज़्मत निशान में नाज़िल शुदा आयते करीमा के इस हिस़्स़े पर भी तवज्जोह फ़रमाइये जिस में उन का क़ौल बयान किया गया है । ''हम तुम्हें ख़ास़ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के लिये खाना देते हैं तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं मांगते ।'' इस क़ौल में ***इख़्लास़*** का अज़ीमुश्शान द-रजा बयान किया गया है । काश ! हम भी अपना हर अ़मल महूज़ ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ के लिये करना सीख जाएं । किसी पर एह़सान कर के उस का बदला चाहना या उस की त़रफ़ से शुक्रिया की त़लब रखना येह सब ख़्वाहिशात ख़त्म हो जाएं । बेहतर तो येही है कि किसी पर एह़सान कर के या फ़क़ीर को खाना या ख़ैरात दे कर येह भी न कहा जाए कि ''दुआ़ में याद रखना ।'' कहीं ऐसा तो नहीं कि हम ने उस से बदला त़लब कर लिया ! अब वोह दुआ़ करे या न करे हमारे ह़क़ में क़बूल हो या न हो हमारे नस़ीब ।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास़ ऐसा अ़त़ा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

(11) मुसल्सल चालीस[40] साल तक रोज़े

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه ***मुसल्सल चालीस[40] साल तक रोज़े रखते रहे*** मगर आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه के ***इख़्लास़*** का येह आ़लम था कि अपने घर वालों तक को ख़बर न होने दी । काम पर जाते हुए दो पहर का खाना साथ ले लेते

और रास्ते में किसी को दे देते, मग़रिब के बा'द घर आ कर खाना खा लिया करते।

(मांअ्दने अख़्लाक़, हिस्सा अव्वल, स़-फ़हा:182)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सय्यिदुना दावूद त़ाई के नफ़्स कुशी के वाक़ेआत :

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! इख़्लास़ हो तो ऐसा ! ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को अपने नफ़्स पर ज़बरदस्त क़ाबू था। तज़्किरतुल औलिया में है, एक बार गरमी के मौसिम में ***धूप*** में बैठे हुए मश्ग़ूले इबादत थे कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की वालिदए मोह़्तरमा رَحْمَةُ اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهَا ने फ़रमाया : बेटा ! साए में आ जाते तो बेहतर था। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाब दिया, अम्मी जान ! "मुझे शर्म आती है कि अपने नफ़्स की ख़्वाहिश के लिये कोई इक्दाम करूं।"

एक बार आप का पानी का घड़ा ***धूप*** में देख कर किसी ने अ़र्ज़ की, या सय्यिदी ! इस को छांव में रखा होता तो अच्छा था। फ़रमाया : जब मैं ने रखा तो उस वक़्त यहां छांव थी लेकिन अब ***धूप*** में से उठाते हुए नदामत मह़सूस हो रही है कि मैं सिर्फ़ अपने नफ़्स की राह़त की ख़ात़िर घड़ा हटाने में वक़्त स़र्फ़ करूं और इतनी देर ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल हो जाऊं !

एक मरतबा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **धूप** में कुरआने पाक की तिलावत कर रहे थे । किसी ने साए में आने की दरख़्वास्त की तो फ़रमाया, "मुझे इत्तिबाए़ नफ़्स ना पसन्द है ।" या'नी नफ़्स भी येही मश्वरा दे रहा है कि छांव में आ जाओ मगर मैं इस की पैरवी नहीं कर सकता । इसी रात आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का विसा़ल हो गया । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इन्तिक़ाल के बा'द ग़ैब से आवाज़ सुनी गई । "दावूद ता़ई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी मुराद को पहुंचा क्यूंकि उस का परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ उस से खु़श है ।" (तज़्किरतुल औलिया, हि़स्सा अव्वल, स़-फ़ह़ा: 201 ता 202) ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ ***की उन पर रह़मत हो और उन के स़दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।***

अपनी नेकियों का ए'लान : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** हि़कायत नम्बर ग्यारह से उन लोगों को ज़रूर इब्रत ह़ासि़ल करनी चाहिये जो वक़्तन फ़ वक़्तन बिला ज़रूरते शर-ई मह़ज़ दिखावे की ख़ाति़र ***अपनी नेकियों का ए'लान*** कर के रियाकारी की तबाहकारी में जा पड़ते हैं, म-स़लन कोई केहता है, मैं हर साल ***रजब, शा'बान*** और ***र-मज़ान*** के रोजे़ रखता हूं । (ह़ालांकि माहे र-मज़ानुल मुबारक के रोजे़ तो फ़र्ज़ है फिर भी वोह रियाकार जोकि ***दो[2] माह के नफ़्ली रोजे़*** रखता है अपनी रियाकारी का वज़्न बढ़ाने के लिये केहता है मैं हर साल तीन[3] माह या'नी रजब, शा'बान और र-मज़ान के रोजे़ रखता हूं । وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ ـ

कोई बोलता है, मैं इतने साल से हर माह ***अय्यामे बीज़*** के रोज़े रख रहा हूं, कोई अपने ***ह़ज*** की ता'दाद का तो कोई ***उ़म्रेह की*** गिनती का ए'लान करता है। कोई केहता है, मैं रोज़ाना इतने ***दुरूद शरीफ़*** पढ़ता हूं, इतने अ़रसे से ***दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़*** का विर्द कर रहा हूं। इतनी तिलावत करता हूं, हर माह फुलां मद्रसे को इतना चन्दा पेश करता हूं। अल गरज़ ख़्वाह म ख़्वाह अपने नवाफ़िल, तहज्जुद, नफ़्ली रोज़ों और इबादतों का खूब चर्चा किया जाता है। ***आह !*** इख़्लास़ का दूर दूर तक कोई पता नहीं। ***याद रखिये !*** रियाकारी का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा। सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब्बुल हुज़्न से अल्लाह की पनाह त़लब करो। स़ह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की, जब्बुल हुज़्न क्या है ? इर्शाद फ़रमाया, "दोज़ख़ में एक कुंवां है जिस की सख़्ती से दोज़ख़ भी रोज़ाना ***चार सौ[400] बार*** पनाह मांगता है। उस में रियाकारों को डाला जाएगा।"

(सु-नने इब्ने माजह, जिल्द:1, स़-फ़ह़ा:167, ह़दीस़:256)

हि़फ़्ज़ की खुशी में तक़रीब : ***आज*** कल बच्चा बच्ची अगर हि़फ़्ज़े कु़रआन मुकम्मल कर ले तो उस के लिये शानदार तक़रीब की जाती है। जिस में उस को गुल पोशी व गुल पाशी और तहाइफ़ व ता'रीफ़ी कलिमात से खूब नवाज़ा जाता है। घरवाले शायद समझते होंगे हम हौस़ला अफ़्ज़ाई कर रहे हैं।

मगर मा'ज़िरत के साथ अ़र्ज़ है कि बच्चा "बुलन्द ह़ौसला" था जभी तो ह़ाफ़िज़ बना। हां ह़िफ़्ज़ शुरूअ़ करवाते वक़्त ह़ौसला अफ़्ज़ाई की वाक़ेई ज़रूरत होती है कि किसी त़रह़ येह पढ़ ले। बहर ह़ाल ह़ाफ़िज़ म-दनी मुन्ने, मुन्नी के ह़िफ़्ज़ की तक़रीब में ह़ौसला अफ़्ज़ाई हो रही है या वोह ख़ुद "फूल कर कुप्पा" हुवा जा रहा है इस पर ग़ौर कर लिया जाए। कहीं ऐसा तो नहीं कि हमारी येह "तक़रीबे सई़द" इस बेचारे सादा लोह़ भोले भाले ह़ाफ़िज़ म-दनी मुन्ने की रियाकारी की तरबिय्यत का सबब बन रही हो !

मैं ने इख़्लास को बहुत तलाशा : ***मैं*** ने इस त़रह़ की तक़ारीब में इख़्लास को बहुत तलाशा, मुझे न मिल सका। सिर्फ़ नुमूदो नुमाइश ही नज़र आई। यहां तक कि बा'ज़ अवक़ात مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ तस़ावीर भी खींची जाती हैं। इसी त़रह़ अक्स़र कमसिन म-दनी मुन्ने, मुन्नी की "रोज़ा कुशाई" की तक़रीब में भी तस़ावीर के गुनाह का सिल्सिला होता है। वरना सादगी के साथ ***रोज़ा कुशाई*** की रस्म अदा की जाए। या ह़ाफ़िज़ म-दनी मुन्ने की दीनी तरक़्क़ी के लिये सब को इकठ्ठा करने के बजाए बुज़ुर्गों की बारगाहों में पेश कर के उ़म्र भर क़ुरआने पाक याद रहने और इस पर अ़मल करने की दुआ़एं ली जाएं तो اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इस में ब-र-कतें ज़ियादा होंगी। وَاللہُ تَعَالٰی اَعْلَمُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

अच्छी त़रह़ ग़ौर फ़रमा लीजिये ! : ***अल ह़ासिल*** अच्छी त़रह़ ग़ौर कर लेना चाहिये कि हम जो तक्रीब करने जा रहे हैं इस में हमारी आख़िरत का कितना फ़ाइदा है। अगर आप का दिल वाक़ेई मुत़्मइन है कि ह़िफ़्ज़े क़ुरआन की ख़ुशी की तक़्रीब से मक़्सूद नुमाइश नहीं। और येह भी यक़ीन है कि म-दनी मुन्ने का रियाकारी भरा ज़ेहन बनने का कोई ख़त़रा नहीं। या'नी आप इस को ***इख़्लास*** की आ'ला तरबिय्यत दे चुके हैं तो बेशक तक़्रीब कीजिये। ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ क़बूल फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

ह़िफ़्ज़ करना आसान है मगर ह़ाफ़िज़ रहना मुश्किल है : ***येह*** बात निहायत ही तश्वीशनाक है कि जिन हुफ़्फ़ाज और ह़ाफ़िज़ात की शानदार तक़्रीबात होती हैं, उन की एक ता'दाद आगे चल कर क़ुरआने पाक भुला देती है। ऐसा लगता है कि बा'ज़ ख़ानदानों में एक रवाज सा हो गया है कि बच्चे या बच्ची को क़ुरआने करीम ह़िफ़्ज़ करवा लिया जाए। बेशक येह बहुत बड़ा नेक काम है, मगर ***येह याद रखिये कि ह़िफ़्ज़ करना आसान है मगर उ़म्र भर ह़ाफ़िज़ रहना मुश्किल है।*** लिहाज़ा जो भी अपनी औलाद को ह़िफ़्ज़ करवाए उस की ख़िदमत में दर्द भरी म-दनी इल्तिजा है कि उ़म्र भर अपनी ह़ाफ़िज़ औलाद पर कड़ी निगरानी भी रखे और ताकीद करे कि अगर ज़ियादा नहीं तो कम अज़ कम

एक पारह रोज़ाना तिलावत जारी रहे ताकि ह़िफ़्ज़ बाक़ी रहे। नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमियान, सरदारे दो[2] जहान मह़बूबे रह़मान عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : कुरआन को हमेशा पढ़ते रहो, सो क़सम है उस की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है अलबत्ता कुरआन ज़ियादा छूटने पर आमादा है उन ऊंटों से जो अपनी रस्सियों से बंधे हों। (स़ह़ीहुल बुख़ारी, जिल्द:3, स़-फ़ह़ा:412, ह़दीस़:5033) या'नी जिस त़रह़ बंधे हुए ऊंट छूटना चाहते हैं और उन की मुह़ा-फ़ज़त व एह़तियात़ न की जाए तो रिहा हो जाएं उस से ज़ियादा कुरआन की कैफ़िय्यत है अगर उसे याद न करते रहोगे तो वोह तुम्हारे सीनों से निकल जाएगा पस तुम्हें चाहिये कि हर वक़्त इस का ख़याल रखो और याद करते रहो इस दौलते बे निहायत को हाथ से न जाने दो।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:23, स़-फ़ह़ा:745)

ह़िफ़्ज़ भुला देने का अ़ज़ाब : ***जो*** हुफ़्फ़ाज़ हर साल र-मज़ानुल मुबारक की आमद से थोड़ा अ़रसा क़ब्ल फ़क़त़ मुस़ल्ला सुनाने के लिये मन्ज़िल पक्की करते हैं और इस के इलावा مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सारा साल ग़फ़्लत के सबब कई आयात भुलाए रहते हैं, वोह बार बार पढ़ें और ***ख़ौफ़े ख़ुदा*** عَزَّوَجَلَّ से लर्ज़ें। नीज़ जिस ने एक आयत भी भुलाई है वोह दोबारा याद कर ले और भुलाने का जो ***गुनाह*** हुआ उस से सच्ची तौबा करे। ''जो कुरआनी आयात याद करने के बा'द

भुला देगा बरोज़े क़ियामत अन्धा उठाया जाएगा ।''

(मआख़ज़: पारह 16, ताहा 125,126)

तीन[3] फ़रामीने मुस्तफ़ा ﷺ

मदीना 1: मेरी उम्मत के सवाब मेरे हुज़ूर पेश किये गए यहां तक कि मैं ने उन में वोह ***तिन्का*** भी पाया जिसे आदमी मस्जिद से निकालता है। और मेरी उम्मत के गुनाह मेरे हुज़ूर पेश किये गए मैं ने इस से बड़ा ***गुनाह*** न देखा कि किसी आदमी को कुरआन की एक ***सूरत*** या एक ***आयत*** याद हो फिर वोह उसे भुला दे ।

(जामेए तिरमिज़ी, जिल्द:4, स-फ़हा:420, हदीस:2925)

मदीना 2: ***जो*** शख़्स कुरआन पढ़े फिर उसे भुला दे तो क़ियामत के दिन अल्लाह तआला से ***कोढ़ी*** हो कर मिले ।

(अबू दावूद, जिल्द:2, स-फ़हा:107, हदीस:1474)

मदीना 3: ***क़ियामत*** के दिन मेरी उम्मत को जिस ***गुनाह*** का पूरा बदला दिया जाएगा वोह येह है कि उन में से किसी को कुरआने पाक की कोई सूरत याद थी फिर उस ने इसे भुला दिया। (कन्जुल उम्माल, जिल्द:1, स-फ़हा:306, हदीस:2843)

फ़रमाने र-ज़वी : ***आ'ला हज़रत,*** इमामे अहले सुन्नत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं, ''इस से ज़ियादा नादान कौन है जिसे खुदा عَزَّوَجَلَّ ऐसी हिम्मत बख़्शे और वोह उसे अपन हाथ से

खो दे अगर क़द्र इस (हिफ़्ज़े कुरआने पाक) की जानता और जो स़वाब और द-रजात इस पर मौऊ़द हैं (या'नी जिन का वा'दा किया गया है) उन से वाक़िफ़ होता तो उसे जानो दिल से ज़ियादा अ़ज़ीज़ रखता ।" मज़ीद फ़रमाते हैं, "जहां तक हो सके उस के पढ़ाने और हिफ़्ज़ कराने और खुद याद रखने में कोशिश करे ताकि वोह जो स़वाब इस पर मौऊ़द (या'नी वा'दा किये गए) हैं ह़ासिल हों और बरोज़े क़ियामत अन्धा कोढ़ी उठने से नजात पाए ।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:23, स़-फ़हा:645,647)

नेकी के इज़्हार की कब इजाज़त है ? :

तह़दीसे ने'मत (या'नी ने'मत का चर्चा करने) की निय्यत से नेक अ़मल का इज़्हार किया जा सकता है । इसी त़रह़ कोई पेश्वा है और वोह अपना अ़मल इस निय्यत से ज़ाहिर करता है कि मा तह़्त अफ़्राद को इस से अ़मल की रग़्बत मिलेगी तो अब रियाकारी नहीं, मगर हर एक को अपना अ़मल ज़ाहिर करते वक़्त एक सौ एक बार अपने दिल की कैफ़िय्यत पर ग़ौर कर लेना चाहिये, क्यूं कि शैत़ान बड़ा मक्कार है, हो सकता है कि इस त़रह़ से उभार कर भी वोह रियाकारी में मुब्तला कर दे, म-स़लन दिल में वस्वसा डाले कि लोगों से केह दे, "मैं तो सिर्फ़ तह़दीसे ने'मत के लिये अपना अ़मल बता रहा हूं ।" ह़ालांकि दिल में लड्डू फूट रहे होंगे कि इस त़रह़ बताने से लोगों के दिलों में मेरी इ़ज़्ज़त

बढ़ जाएगी। येह यक़ीनन रियाकारी है और साथ में तह़दीसे ने'मत का केहना रियाकारी और रियाकारी के साथ ही झूट के गुनाह की तबाहकारी भी है। तफ़्सी़ली मा'लूमात के लिये हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْوَالِی की कुतुबे तस़व्वुफ़ ***एह़याउल उ़लूम*** या ***कीमियाए सआ़दत*** से निय्यत, इख़्लास़ और रिया के अब्वाब का मुत़ा-लआ़ कीजिये। काश! इन्हें पढ़ने से शैत़ान मह़रूम न करे, क्यूंकि ये मर्दूद कभी न चाहेगा कि मुसल्मान का अ़मल ख़ालिस़ हो कर मक़्बूल हो जाए।

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمْ हमें ***इख़्लास़*** के साथ इ़बादत और नफ़्ली रोज़ों की कस़रत की सआ़दत नस़ीब फ़रमा और हमें शैत़ान के उन ही़ले बहानों की पहचान अ़त़ा फ़रमा जिन के ज़रीए़ वोह हमारे आ'माल बरबाद कर दिया करता है।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

रियाकारियों से बचा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

मुझे अ़ब्दे मुख़्लिस़ बना या इलाही عَزَّوَجَلَّ

रोज़ेदारों का मह़ल्ला : ***ह़ज़रते*** सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار ने ***चालीस[40] साल*** के दौरान कभी ***खजूर*** नहीं खाई। चालीस[40] बरस बा'द आप को जब ***खजूर*** खाने की खूब

ख़्वाहिश हुई तो नफ़्सकुशी के लिये मुसल्सल आठ दिन रोज़े रखे । फिर ***खजूरें*** ख़रीद कर दिन के वक़्त ***बस़रा*** शरीफ़ के एक मह़ल्ले की मस्जिद में दाख़िल हुए अभी खाने के लिये ***खजूरें*** निकाली ही थीं कि एक बच्चा चिल्ला उठा, ***अब्बा जान !*** मस्जिद में यहूदी आ गया है ! उस के वालिद स़ाह़िब यहूदी का नाम सुन कर हाथ में डन्डा लिये चढ़ दौड़े मगर आते ही आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को पहचान लिया और मा'ज़िरत करते हुए अ़र्ज़ की, ***हुज़ूर !*** बात दर अस्ल येह है कि हमारे ***मह़ल्ले*** में सारे मुसल्मान ***रोज़ा*** रखते हैं यहूदियों के इलावा दिन के वक़्त यहां कोई नहीं खाता, इसी लिये बच्चे को आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के यहूदी होने का शुबा गुज़रा । बराए करम ! आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस की ख़त़ा मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने आ़लमे जोश में फ़रमाया, बच्चों की ज़बान "गै़बी ज़बान" होती है । फिर क़सम खाई कि अब कभी ***खजूर*** खाने का नाम न लूंगा ।

(तज़्किरतुल औलिया, हिस्स़ए अव्वल, स़-फ़ह़ा:52)

गोश्त की ख़ुश्बू से ही गुज़ारा कर लिया : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** देखा आपने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين अपने नफ़्स को किस त़रह़ मारते थे । सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين की नफ़्सकुशी के क्या केहने ! आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار बरसों तक

कोई लज़ीज़ चीज़ नहीं खाते थे । उ़मूमन दिन को रोज़ादार रह कर रूखी रोटी से इफ़्त़ार का मा'मूल था । एक बार नफ़्स की ख़्वाहिश पर ***गोश्त*** ख़रीदा और ले कर चले, रास्ते में सूंघा और फ़रमाया, ऐ नफ़्स ! गोश्त की ख़ुश्बू सूंघने में भी तो लुत़्फ़ है ! बस इस से ज़ियादा इस में तेरा ह़िस्सा नहीं । येह केह कर वोह गोश्त एक फ़क़ीर को दे दिया । फिर फ़रमाया, ***ऐ नफ़्स*** ! मैं किसी अ़दावत के बाइस़ तुझे अज़िय्यत नहीं देता मैं तो सिर्फ़ इस लिये तुझे स़ब्र का आ़दी बना रहा हूं कि रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ला ज़वाल दौलत नस़ीब हो जाए । (तज़्किरतुल औलिया, ह़िस्स़ः1, स़-फ़ह़ाः52) येह भी मा'लूम हुवा कि पहले के मुसल्मान नफ़्ली रोज़ों से बहुत मह़ब्बत किया करते थे कि बस़रा शरीफ़ के एक पूरे मह़ल्ले का हर मुसल्मान ***रोज़ा*** ही रोज़ा रखा करता था !

नादान बच्चों की त़रफ़ से नेकी की दा'वत :

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْغَفَّار का येह फ़रमाना कि, बच्चों की ज़बान ''ग़ैबी ज़बान'' होती है । निहायत ही पुर मग़्ज़ इर्शाद है । वाक़ेई नादान बच्चों की बातों और ह़-र-कतों में अक्स़र ***इ़ब्रत के म-दनी फूल*** पाए जाते हैं । इत्तिफ़ाक़ से बयान कर्दा ह़िकायत नम्बर 12 सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ (या'नी राक़िमुल ह़ुरूफ़) ने बाबुल मदीना कराची में एक इस्लामी भाई के घर पर 9 शव्वालुल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم जब तुम मुर्सलीन علیہم السلام पर दुरूदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं।

मुकर्रम सिने 1422 हिजरी को तह़रीर करने की सआ़दत ह़ासिल की। तआ़म के वक़्त साहिबे ख़ाना का मुन्ना और छोटी मुन्नी भी खाने में शरीक हो गए। इन दोनों[2] ने खाने के दौरान ***ह़िर्स व त़म्अ़, बे जा लड़ाई, आबरूरेज़ी, बे सब्री, चुग़ली, ह़सद, ह़ुब्बे जाह, रियाकारी, मुसीबत का बे ज़रूरत तज़्किरा*** और ***फ़ुज़ूल गोई*** वग़ैरा से मु-तअ़ल्लिक़ मुझे ***ख़ूब दर्स*** दिया !! आप शायद सोच में पड़ गए होंगे कि ना समझ बच्चे इतने सारे उ़न्वानात पर किस त़रह़ ***दर्स*** दे सकते हैं ! इन दुरूस का राज़ येह है कि वोह इस त़रह़ की ह़-र-कतें करने लगे जिस से म-दनी ज़ेह्न रखने वाला इन्सान बहुत कुछ सीख सकता है। म-सलन उन्हों ने ज़रूरत से कहीं ज़ियादा खाना निकाला, कुछ खाया, कुछ गिराया और कुछ रिकाबी ही में छोड़ दिया। उन की इस ह़-र-कत से येह सीखने को मिला कि अपनी प्लेट में ज़रूरत से ज़ियादा खाना डाल लेना येह ***ह़िर्स व त़मअ़*** की अ़लामत और नादान लोगों का काम है, समझदार आदमी ऐसा नहीं कर सकता। गिरा हुवा खाना यूं ही छोड़ देना कि फेंक दिया जाए येह इस्राफ़ है, खा कर बरतन चाट लेना सुन्नत है, इस्राफ़ का इर्तिकाब और सुन्नत के ख़िलाफ़ करना अ़क़्लमन्दों का काम नहीं नादानों का शेवा है क्यूं कि बच्चे नादान ही होते हैं। मुन्ने ने 7up की डेढ़ लीटर की बोतल में से अपने लिये पूरा गिलास भर लिया तो इस पर मुन्नी एह़तिजाज करने लगी यहां तक कि पहले बोतल उठा

कर मेरे क़रीब रखी मगर फिर भी इत़्मीनान न हुवा तो वहां से भी उठा कर कमरे के बाहर किसी और की तह़वील में दे आई । इस "जंग" के ज़रीए़ गोया मुन्ने ने ह़िर्स़ पर दर्स दिया मुन्नी ने ह़सद पर। चूंकि दोनों[2] में ठन गई थी लिहाज़ा अब एक दूसरे के "उ़यूब" उछालने लगे । और गोया यूं समझा रहे थे कि देखिये ! हम नादान हैं इस लिये फ़ुज़ूल गोई, ह़सद, आबरू रेज़ी, बेजा लड़ाई और बे स़ब्री का मुज़ा-हरा करते और एक दूसरे के पोल खोलते हैं अगर दाना केहलाने वाला शख़्स़ भी ऐसी ह़-रकात का इर्तिकाब करे तो वोह बे वुक़ूफ़ हुवा या नहीं ? ठीक है हम अपने मुंह मियां मिट्ठू भी बन रहे हैं, अपनी ही ज़बान से अपने फ़ज़ाइल भी बयान कर रहे हैं, एक दूसरे की छोटी छोटी बातों को भी उछाल रहे हैं मगर हम तो छोटे हो कर छूट जाएंगे, इन मुआ़-मलात में हमारी आख़िरत में भी कोई पकड़ नहीं क्यूंकि हम अभी ना बालिग़ हैं । अगर आप भी हमारी त़रह़ की ग़-लति़यां करते हुए ***आबरू रेज़ी, रियाकारी, झूट और ह़सद*** वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों में पड़ेंगे तो हो सकता है कि बरोज़े क़ियामत फ़र्दे जुर्म आ़इद कर के जहन्नम का हुक्म सुना दिया जाए । अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता ऐसा हुवा तो आप को वोह स़दमा होगा कि दुन्या में ख़ुद स़दमे ने भी कभी ऐसा स़दमा न देखा होगा !

म-दनी मुन्नी ने महेंदी वाले हाथ क्यूं दिखाए ? :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सच्ची बात येह है कि उन म-दनी मुन्नों और ला शुऊ़र मुबल्लिग़ों की ह़-र-कतों में से मैं ने फ़क़त मा'दूदे चन्द ही का बयान किया है । अगर बच्चों की दिन भर की ह़-र-कतों का जाइज़ा लें तो ऐसा मह़सूस होता है कि इन की हर ह़-र-कत व हर स-कनत में हमारे लिये इ़ब्रत के बे शुमार ***म-दनी फूल*** होते हैं । एक बार शबे ई़दे मीलादुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक इस्लामी भाई अपनी नन्नही सी म-दनी मुन्नी को उठा कर लाए । वोह अपने महेंदी से रंगे हुए हाथ दिखा कर मेरी तवज्जोह चाह रही थी । इस से मैं ने येही "म-दनी फूल" ह़ासिल किया गोया वोह केहना चाहती है, ह़ाजते शर-ई़ के बिग़ैर बिला वासित़ा या बिल वासित़ा (IN DIRECT) अपनी ख़ूबियों का इज़्हार भी ***हुब्बे जाह*** या'नी वाह वाह की चाहत की अ़लामत है जो कि हम जैसे नादानों ही का ह़िस्सा है । ज़ाहिर है बच्चियां अपने महेंदीसे रंगे हुए हाथ दिखा कर या बच्चे अपने नए कपड़ों वग़ैरा की त़रफ़ मु-तवज्जेह कर के ***वाह वाह*** और दादो ***तह़सीन*** ही के त़लबगार होते हैं मगर इस में ज़िम्नन बड़ों के लिये बहुत कुछ सामाने इ़ब्रत होता है । आजकल लोगों की अक्सरिय्यत ***हुब्बे जाह*** में मुब्तला नज़र आ रही है । अपनी इ़ज़्ज़त बनाने, शोहरत बढ़ाने और वाह वाह पसन्दी का मरज़ आजकल आ़म है । ह़द तो येह है कि

मसाजिद व मदारिस की ता'मीर और दीगर नेक कामों में भी अपनी नेक नामी या'नी शोहरत ही की तलाश रहती है, येह बेह़द मोहलिक मरज़ है मगर अब इस की त़रफ़ लोगों की तवज्जोह ही नहीं । अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है, "दो² भूके भेड़िये जिन्हें बकरियों में छोड़ दिया जाए वोह इतना नुक़्स़ान नहीं पहोंचाते जितना कि हुब्बे मालो जाह या'नी माल व मरतबे का लालच इन्सान के दीन को नुक़्स़ान पहुंचाता है ।"

(जामेए़ तिरमिज़ी शरीफ़, जिल्द:4, स़-फ़ह़ा:166, ह़दीस़:2383)

मैं नमाज़े जुमुआ़ तक से मह़रूम था : ***मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !*** हुब्बे जाहो माल दिल से मिटाने की कुढ़न पैदा करन के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगी ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ौल*** से हर दम वाबस्ता रहिये और दा'वते इस्लामी के ***म-दनी क़ाफ़िलों*** में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये । ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माह़ौल की भी क्या ख़ूब बहारें हैं ! चुनान्चे ***गुजरानवाला*** (सूबए पंजाब) के मुक़ीम एक इस्लामी भाई ने कुछ इस त़रह़ तह़रीर दी कि मैं फ़िरंगी फ़ैशन में लिथड़ी हुई गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहा था और बुरी स़ोह़बत के बाइस़ مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ शराब पीने

का भी आ़दी हो चुका था । ह़ालत यहां तक पहुंच चुकी थी कि नमाज़े जुमुआ़ तक न पढ़ता, मैं कुरआने पाक का ***ह़ाफ़िज़*** था मगर कमो बेश 12 साल से कुरआने पाक खोल कर नहीं देखा था, जिस के बाइस तक़्रीबन कुर्आ ने पाक मुझे भुला दिया गया था । बहर ह़ाल ज़िन्दगी के दिन ग़फ़्लत में गुज़र रहे थे कि इतने में नस़ीब जागे और एक बा इ़मामा इस्लामी भाई से मेरी मुलाक़ात हो गई । उन के हुस्ने अख़्लाक़ और शफ़्क़त भरे अन्दाज़ से मैं बड़ा मु-तअस्सिर हुवा, उन्हों ने मुझे मदीनतुल औलिया मुल्तान शरीफ़ में होने वाले तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी के बैनल अक़्वामी तीन3 रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़*** की दा'वत पेश की मैं ने मा'ज़िरत करते हुए बताया कि मैं बे रूज़गार हूं, मुआ़शी त़ौर पर ह़ालात जाने की इजाज़त नहीं दे रहे । उन्हों ने निहायत ही अपनाइय्यत के साथ हौस़ला दिया और मेरे टिकट का इन्तिज़ाम कर दिया । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ मेरी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी हो गई । वहां के रूह़ परवर मन्ज़र और सुन्नतों भरे बयानात और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरी ज़िन्दगी को यक्सर बदल कर रख दिया । जब मैं इज्तिमाए़ पाक से लौटा तो मेरे क़ल्ब में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो चुका था । फिर मैं ने ***आ़शिक़ाने रसूल*** के हमराह ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की जिस ने मेरे

ज़ाहिरी वुजूद को भी सुन्नतों के सांचे में ढाल दिया । اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ***म-दनी माह़ौल*** से वाबस्तगी की ब-र-कतों से मैं ने भुलाया हुवा कुरआने पाक भी ह़िफ़्ज़ कर लिया बल्कि सात[7] साल तक इमामत की सआ़दत भी पाता रहा । اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर ***दा'वते इस्लामी*** की तन्ज़ीमी तरकीब के ह़िसाब से मुझे "पंजाब मक्की" की मजलिस में एक ज़िम्मेदार की हैसि़य्यत से ख़िदमत की सआ़दत ह़ासि़ल है ।

गुनहगारो आओ, सियहकारो आओ — गुनाहों को देगा छुड़ा म-दनी माह़ौल
पिला कर मए इ़श्क़ देगा बना येह — तुम्हें आ़शिक़े मुस्त़फ़ा म-दनी माह़ौल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمْ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ौल में इस्तिक़ामत नसी़ब फ़रमा । या ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हमें म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र का जज़्बा अ़त़ा फ़रमा । या ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हमें इख़्लास़ की ला ज़वाल दौलत से मालामाल कर, हुब्बे जाहो माल और रियाकारी के वबाल से मह़फ़ूज़ फ़रमा । हमें फ़र्ज़ के साथ साथ ख़ूब ख़ूब नफ़्ली रोज़ों की भी सआ़दत बख़्श और इन को क़बूल फ़रमा । या ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ हम को और सारी उम्मते मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बख़्श दे ।

اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلى الله تعالىٰ عليه واله وسلم

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मो 'तकिफ़ीन की 41 म-दनी बहारें

दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में जुदा जुदा शहरों के अन्दर तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक, **दा 'वते इस्लामी** की जानिब से होने वाले **इज्तिमाई ए 'तिकाफ़** में की जाने वाली मो 'तकिफ़ीन की तरबिय्यत से हर साल मुआ़शरे के न जाने कितने ही बिगड़े हुए अफ़राद गुनाहों से ताइब हो कर येह म-दनी जज़्बा "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है**" ले कर उठते और फीर अपनी और दूसरों की इस्लाह़ की कोशिशों में मशगूल हो जाते हैं, इन ताइबीन के म-दनी जज़्बात की **झलकियां** आइन्दा स़-फ़ह़ात पर नज़र आएंगी । इस्लामी भाईयों ने अपने अपने अन्दाज़ में लिखा था, सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ (राक़िमुल हुरूफ़) ने ज़रूरतन तसर्रुफ़ कर के पढ़ने वालों के लिए दिलचस्पी का सामान मुहय्या करने की ह़क़ीर सी कोशिश की है ।"

(वरक़ उलटिये.......)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुश्कबार है, जिस ने मुझ पर सौ100 मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस की दोनों2 आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शो-हदा के साथ रखेगा ।

(मज्मउ़ज़्ज़वाइद, जिल्द:10, स़-फ़ह़ा:253, ह़दीस़:172998)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(1) शिकारी ख़ुद शिकार हो गया !

अ़त्तारआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलास़ा है कि मैं ने जिस घराने में आंख खोली उस घराने में जहालत का घुप अंधेरा था مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ स़ह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को बुरा भला केहना कारे स़वाब समझा जाता था । मैं भी इस ज़लालत में पूरी त़रह़ फंसा हुवा था मगर क़ुदरत को कुछ और ही मन्ज़ूर था, हुवा कुछ यूं कि तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी**

के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (अ़त्त़ारआबाद) में बड़ी धूमधाम से र-मज़ानुल मुबारक (1426 हि. 2005) के आख़िरी अ़-शरह के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** का एहतिमाम किया गया था, हमारे मह़ल्ले के चन्द लड़के भी इसी **फ़ैज़ाने मदीना** में मो'तकिफ़ थे। उन्हें तंग करने की ग़रज़ से मैं म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना चला गया। वहां सुन्नतें सिखाने के ह़ल्क़े लगे हुए थे, मैं ताक में बैठ गया कि मौक़अ़ मिले तो शरारत शुरूअ़ करूं कि इतने में एक **आ़शिक़े रसूल** ने मुझे बड़े ही प्यारे और दिल नशीन अन्दाज़ में ह़ल्क़े में बैठने के लिए कहा, उस की नरमी और आ़जिज़ी के बाइ़स मैं इन्कार न कर सका और ह़ल्क़े में बैठ गया और मुबल्लिग़ का बयान ध्यान से सुनने लगा। उस के बयान में अ़जीब कशिश थी मैं आहिस्ता आहिस्ता बयान के म-दनी फूलों के सेहूर में गरिफ़्तार होता चला गया। आ़शिक़ाने रसूल ने मुझे बक़िय्या दिनों के **ए'तिकाफ़** की दा'वत दी, मैंने ह़ामी भर ली और मैं ए'तिकाफ़ की बहारें समेटने में शामिल हो गया। "लो आप अपने दाम में सय्याद आ गया" के मिस्दाक़ ख़ुद ही शिकार हो कर रह गया। मेरे लिये **ए'तिकाफ़** में सभी कुछ नया था। दौराने **ए'तिकाफ़** मुझे मा'लूम हुआ कि मैं तो भटका हुआ था। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने बात़िल अ़क़ाइद से तौबा की, कलिमए त़य्यिबा पढ़ा और दा'वते इस्लामी के **सफ़ीनए अह्ले सुन्नत** में सुवार हो कर जानिबे

मदीना रवां दवां हो गया। मैं ने चेहरे को म-दनी निशानी या'नी दाढ़ी मुबारक से और सर को सब्ज़ इमामा शरीफ़ से सर सब्ज़ व शादाब कर लिया है। **63 दिन का म-दनी तरबिय्यती कोर्स** कर के दा'वते इस्लामी की तन्ज़ीमी तरकीब के मुताबिक़ ह़ल्क़ा ज़िम्मेदारी पर फ़ाइज़ हूं। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अब नई उमंग और जदीद तरंग के साथ अपनी इस्लाह़ करने के साथ साथ दूसरे लोगों की इस्लाह़ की भी कोशिश कर रहा हूं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे म-दनी माह़ौल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमाए और भटके हुओं को ह़क़ व सदाक़त की राह दिखाए।

اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلى الله تعالى عليه واله وسلم

ख़त्म होगी शरारत की आ़दत चलो, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़
दूर होगी गुनाहों की शामत चलो, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम एअ़्तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) मैं ने कई बार ख़ुदकुशी की कोशिश की थी

तह़सील शुजाअ़आबाद ज़िलअ़ मुल्तान (ह़ाल मुक़ीम बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है, ''मैं वालिदैन का مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन्तिहाई द-रजे का गुस्ताख़ था, क्रिकेट और ब्लियर्ड खेलने में दिन बरबाद करता और रात विडियो सेन्टर की ज़ीनत बनता। माहे र-मज़ानुल मुबारक

मां बाप से मैं ने बहुत ज़ियादा लड़ाई की यहां तक कि घर में तोड़फोड़ मचा दी ! अपनी गुनाहों भरी ज़िन्दगी से खुद भी बेज़ार था, ग़ज़ब का जज़्बाती था इसी लिये مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **कई बार खुदकुशी करने की सअ्य की** मगर اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ नाकामी हुई । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम से मुझ गुनहगार को र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़-शरह में **ए'तिकाफ़** का शौक़ पैदा हुआ, अपने घर की क़रीबी मस्जिद ही में ए'तिकाफ़ का इरादा था कि एक इस्लामी भाई से मुलाक़ात हो गई । उन की **इन्फ़िरादी कोशिश** के नतीजे में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में आ़शिक़ाने रसूल के साथ मो'तकिफ़ हो गया । اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की बर-कतों के क्या केहने!, मैं गुनहगार क्लीन शेव और पेन्ट शर्ट में कसा कसाया गया था, मगर **तरबिय्यती ह़ल्क़ों**, सुन्नतों भरे बयानों और **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बतों ने वो म-दनी रंग चढ़ाया कि हाथों हाथ दाढ़ी बढ़ानी शुरूअ़ कर दी, **इमामा शरीफ़** का ताज सर पर सजा लिया और चांद रात को खूब रो रो कर गुनाहों से तौबा करने के बा'द घर जाने के बजाए हाथों हाथ सुन्नतों की तरबिय्यत के तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र पर रवाना हो गया । मैं ने **ईद** के तीनों दिन राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ

में **आशिक़ाने रसूल** के साथ गुज़ारे। **ख़ुदा की क़सम!** येह मेरी ज़िन्दगी की सब से पहली ईद थी जो बहुत अच्छी गुज़री। वापसी पर घर आ कर अम्मी जान के क़दमों से लिपट गया और इस क़दर रोया कि हिचकियां बंध गईं और मैं बेहोश हो गया। कमो बेश आधे घन्टे के बा'द जब होश आया तो सारे घर वाले मुझे घेरे हुए थे और तस्वीरे ह़ैरत बने एक दूसरे का मुंह तक रहे थे कि इसे क्या हो गया है! اَلحَمدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ घर में बहुत अच्छी तरकीब बन गई। ता दमे तह़रीर तन्ज़ीमी त़ौर पर अ़लाक़ाई मुशा वरत का निगरान हूं। اَلحَمدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह अल्फ़ाज़ लिखते वक़्त आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में **तरबिय्यती कोर्स** करने की सआ़दत ह़ासिल कर लेने के बा'द मज़ीद 126 दिन के "इमामत कोर्स" का सिल्सिला जारी है। दुआ़ए इस्तिक़ामत का मुल्तजी हूं।

बिगड़े अख़्लाक़ सारे संवर जाएंगे, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
बस मज़ा क्या मज़ा को मज़े आएंगे, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3) मैं ने ईद के इ़लावा कभी नमाज़ ही नहीं पढ़ी थी!

मियानवाली कोलोनी मंघूपीर रोड बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है। मेरे जैसे गुनहगार इन्सान कम ही होंगे, मैं ने कई "गर्ल फ्रेन्डज़" बना रखी

थीं, गन्दी ज़ेहनिय्यत का आलम येह था कि रोज़ाना ही नंगी फ़िल्में देखने का मा'मूल था, आप मानें या न मानें **मैं ने ज़िन्दगी में ईद के इलावा कभी नमाज़ ही नहीं पढ़ी थी** और मुझे बिल्कुल भी मा'लूम नहीं था कि नमाज़ किस त़रह़ पढ़ी जाती है!!! मेरी क़िस्मत का सितारा चमका और मुझे तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे का **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** नसीब हो गया, फ़ैज़ाने मदीना के म-दनी माहौल की भी क्या बात है! मेरी आंखें खुल गईं, ग़फ़्लत का पर्दा चाक हुआ और मेरे दिल में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने नमाज़ सीख ली और पांचों वक़्त बा जमाअ़त नमाज़ का पाबन्द हो गया। मैं ने दो मसाजिद में **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स शुरूअ़ कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ इस्लामी भाईयों ने मुझे एक मस्जिद की मुशा-वरत का ज़ैली निगरान बना दिया। और तह़दीसे ने'मत के लिए अ़र्ज़ करता हूं कि दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ौल की ब-रकत से मुझ बदकार इन्सान पर करम बालाए करम येह हुआ कि **सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर्द गार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़्वाब में दीदार हो गया।**

जिसे चाहा जल्वा दिखा दिया, उसे जामे इ़श्क़ पिला दिया
जिसे चाहा नेक बना दिया, येह मेरे ह़बीब की बात है
जिसे चाहा अपना बना लिया जिसे चाहा दर पे बुला लिया
येह बड़े करम के हैं फ़ैसले येह बड़े नसीब की बात है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) ए 'तिकाफ की ब-र-कत से सारा ख़ानदान मुसल्मान हो गया

एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है कि कल्यान (महाराश्ट्र, अल हिन्द) की **मेमन मस्जिद** में तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक, **दअ़वते इस्लामी** की जानिब से र-मज़ानुल मुबारक (1426 हि. 2005 इस्वी) में होने वाले **इज्तिमाई ए 'तिकाफ़** में एक नौ मुस्लिम ने (जो कि कुछ अ़रसा क़ब्ल एक मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी के हाथों मुसलमान हुए थे) ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल की । सुन्नतों भरे बयानात, केसेट इज्तिमाआ़त और सुन्नतों भरे ह़ल्क़ों ने उन पर खूब म-दनी रंग चढ़ाया ए'तिकाफ़ की ब-रकत से दीन की तब्लीग़ के अ़ज़ीम जज़्बे का रौशन चराग़ उन के हाथों में आ गया चूंकि उन के घर के दीगर अफ़राद अभी तक कुफ़्र की अंधेरी वादियों में भटक रहे थे चुनान्चे ए'तिकाफ़ से फ़ारिग़ होते ही उन्हों ने अपने घरवालों पर कोशिश शुरूअ़ कर दी दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ीन को अपने घर बुलवा कर **दा 'वते इस्लाम** पेश करवाई । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वालिदैन, दो बहनों एक भाई पर मुश्तमिल सारा ख़ानदान मुसलमान हो कर सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाखि़ल हो कर हुज़ूरे गौ़से पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मुरीद हो गया ।

वल्वला दीं की तब्लीग़ का पाओगे, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़,
फ़ज़्ले रब से ज़माने पे छा जाओगे, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहोंचता है।

(5) मैं पक्का दुन्यादार था

सखखर शहर (बाबुल इस्लाम सिंध) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : मैं पक्का दुन्यादार था और मुझ पर हर वक़्त दुन्या का धन कमाने की धुन सुवार रहती थी, अ़-मली दुन्या से बहुत दूर गुनाहों की अंधेरी वादियों में भटक रहा था। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बा'ज़ **आ़शिक़ाने रसूल** की मुझ पर मीठी नज़र पड़ गई वो र-मज़ानुल मुबारक में बार बार मेरे पास तशरीफ़ लाते और मुझे **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की दा'वत देते मगर मैं टाल दिया करता। वो बहुत मंझे हुए थे, गोया मायूस होना नहीं जानते थे, उन्हों ने मुझे मेरे ह़ाल पर छोड़ना गवारा नहीं किया, मुझे **नेकी की दा'वत** दे कर अपना सवाब खरा करते रहे! उन की पैहम इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में मुझ पापी व बदकार पक्के दुन्यादार का दिल भी आख़िरे कार पसीज ही गया और मैं आख़िरी अ़-श-रए र-मज़ानुल मुबारक (ग़ालिबन 1410 हि. 1990 इस्वी) में उन के साथ **मो'तकिफ़** हो गया। मुझ दुन्यादार को क्या मा'लूम था कि आ़शिक़ों की दुन्या ही कोई और होती है! वाके़ई **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ने मुझ पर रंग चढ़ा दिया, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं **नमाज़ी** बन गया, मैं ने **दाढ़ी** रख ली और **इमामा शरीफ़** का ताज सजा लिया। **तह़दीसे ने'मत** के लिए एक बात अ़र्ज़ करता हूं : मुझे वहां येह मस्अला भी सीखने को मिला कि क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ या पीठ किए पेशाब वग़ैरा

करना **ह़राम** है। सूए इत्तिफ़ाक़ से ए'तिकाफ़ वाली मस्जिद के **इस्तिन्जाख़ानो** का रुख़ ग़लत़ था। मैं ने रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर हाथों हाथ कारीगरों को बुलवा कर अपनी जेब से इख़्राजात पेश कर के इस्तिन्जाख़ानो के रुख़ दुरुस्त करवा लिए। اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ए'तिकाफ़ के बा'द से अब तक कई **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दतें मिल चुकी हैं।

हुब्बे दुन्या से दिल पाक हो जाएगा, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
जामे इ़श्क़े नबी हाथ में आएगा, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(6) मुझे अपने जैसा बना लीजिए

रावलपिंडी (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है, मैं उस वक़्त दसवीं क्लास का स्टूडन्ट था। अपने मह़ल्ले की बिलाल मस्जिद में र-मज़ानुल मुबारक (1421 हि. 2000 इस्वी) के आख़िरी अ़-श-रह का ए'तिकाफ़ किया वहां हम 14, 15 अफ़राद मो'तकिफ़ थे ग़ालिबन 28 र-मज़ानुल मुबारक को बा'दे नमाज़े ज़ोहर मेरे बचपन के एक क्लास फे़लो (जो बेचारे शराफ़त की वजह से हमारी शरारत का निशाना बना करते थे) तशरीफ़ लाए। उन्हों ने अपने सर पर सब्ज़ इमामा शरीफ़ सजाया हुआ था। सलाम दुआ़

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है ।

के बा'द उन्हों ने हम पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए पूछा : आप में से बराए मेहरबानी कोई **नमाज़े ईद** का त़रीक़ा सुना दे । हम सब एक दूसरे का मुंह देखने लगे । इस पर उन्हों ने कहा : अच्छा चलिए **नमाज़े जनाज़ा** का त़रीक़ा ही बता दीजिए । अफ़्सोस! हम में से कोई भी न बता सका । फिर उन्हों ने हमें ***नमाज़*** की मश्क़ (practical) करवाई । इस से हमारी बहुत सारी ग़-लत़ियां सामने आईं । इस के बा'द निहायत ही अह़सन अन्दाज़ में उन्हों ने हमें **नमाज़े ईद** और **नमाज़े जनाज़ा** का त़रीक़ा सिखाया । हमारा दिल बहुत ख़ूश हुआ । सच पूछो तो हमारे लिए ह़ासिले ए'तिकाफ़ येही था कि हमें मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की ब-रकत से मुख़्तलिफ़ नमाज़ों के अहम्म अह़काम सीखने को मिल गए । **ईद की नमाज़** में मुझे मस्जिद की छत पर जगह मिली । जब इमाम साहि़ब ने दूसरी तक्बीर कही तो मेरे इ़लावा तक़रीबन सभी रुकूअ़ में चले गए! ह़ालां कि येह रुकूअ़ का मौक़अ़ नहीं था बल्कि इस में हाथ कानों तक उठा कर लटकाने थे । ख़ैर वरना मैं भी अ़वाम के साथ रुकूअ़ ही में होता मगर क़ुरबान जाऊं मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी पर कि उन्हों ने ए'तिकाफ़ में ***नमाज़े ईद*** का त़रीक़ा सिखा दिया था । इस मौक़अ़ पर मेरा दिल चोट खा गया और दा'वते इस्लामी की अहम्मिय्यत मुझ पर ख़ूब वाज़ेह़ हो गई । मैं ने उन मुबल्लिग़ से ईद की मुलाक़ात पर अ़र्ज़ की, **मुझे भी अपने जैसा बना लीजिए** । उन्हों ने निहायत ही **मह़ब्बत** के साथ मेरी

हौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई । उन की **इन्फ़िरादी कोशिश** से आहिस्ता आहिस्ता اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माहौल** में आ गया । येह बयान देते वक़्त मैं दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के लिहाज़ से तन्ज़ीमी तौर पर **शो'बए ता'लीम का अलाक़ाई ज़िम्मादार** हूं ।

हां जनाज़ा व ईद इस को सीखें मज़ीद, आएं मस्जिद चलें कीजिए ए'तिकाफ़
क़ल्ब में इन्क़िलाब आएगा आं जनाब, आप हिम्मत करें कीजिए ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(7) मेरी आंखों में आंसू आ गए!

जिनाहआबाद (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई की तहरीर का ख़ुलासा है : मैं ने र-मज़ानुल मुबारक (ग़ालिबन 1425 हि. 2004 इस्वी) के आख़िरी अ-शरह में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** के आलमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की ब-रकतें लूटने की सआदत हासिल की, मेरे अन्दर बहुत सारी बुराईयां थीं जिन से मैं ने तौबा की और काफ़ी हद तक बुराईयों में कमी आई, मुझे सुन्नत के मुताबिक़ खाने का ढंग तक नहीं आता था, **ए'तिकाफ़** में दीगर सुन्नतों के इलावा खाने पीने की सुन्नतें भी सिखाई गई ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है ।

बिलखुसूस एक मुबल्लिग़ को सादगी के साथ सुन्नत के मुताबिक़ खाना तनावुल करता देख कर न जाने क्यूं **मेरी आंखों में आंसू आ गए!** इस बात को ता दमे तहरीर लगभग तीन साल हो चुके हैं मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज तक सुन्नत के मुताबिक़ खाना खाता हूं। बि फ़ज़्लिही तआ़ला मैं दा'वते इस्लामी के **म-दनी माहौल** से वाबस्ता हूं।

सुन्नतें खाना खाने की तुम जान लो, म-दनी माहौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मान लो बात अब तो मेरी मान लो, म-दनी माहौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(8) आ़शिक़ाने रसूल की शफ़्क़तों ने लाज रख ली

इन्दौर शहर (M.P. अल हिन्द) के एक फ़ैशनेबल नौ जवान आवारा और मोडर्न दोस्तों की सोहबत में रह कर गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे। र-मज़ानुल मुबारक (1425 हि. 2004 इस्वी) के आख़िरी अ़-शरह में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में बैठ गए। **आ़शिक़ाने रसूल** की **शफ़्क़तों ने लाज रख ली**, गुनाहों से **तौबा** की सआ़दत मिल गई, चेहरे पर **दाढ़ी** जगमगाने और सर पर **इ़मामा शरीफ़** की बहारें मुस्कराने लगीं। सुन्नतों की ख़िदमत का खूब जज़्बा मिला ह़त्ता कि **मुबल्लिग़** बन गए। येह लिखते वक़्त **अ़लाक़ाई मुशा-वरत के निगरान** की हैसिय्यत

से सुन्नतों की ब-र-कतें लूट और लुटा रहे हैं।

लेने ख़ैरात तुम रह़मतों की चलो, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

लूटने ब-रकतें सुन्नतों की चलो, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(9) कम्यूनिस्टों की तौबा

सख्खर शहर (बाबुल मदीना सिंध) के एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है कि यूं तो सख्खर के क़रीबी शहर **अ़त्त़ारआबाद** (जेकोबआबाद) में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** का म-दनी पैग़ाम पहुंच चुका था, मगर **म-दनी काम** बहुत कम हो रहा था, अ़त्त़ारआबाद के इस्लामी भाई तन्ज़ीमी त़ौर पर बेह़द कमज़ोर थे। सख्खर से मुबल्लिग़ीन का मुत़ा-लबा करते रहते थे। इस मुत़ा-लबे के पेशे नज़र र-मज़ानुल मुबारक (1410 हि. 1990 इस्वी) में अ़त्त़ारआबाद के अंदर खूब **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए हम ने वहां के इस्लामी भाईयों को **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** के लिए **सख्खर** आने की दा'वत दी, जिस की ब-रकत से अ़त्त़ारआबाद के कसीर इस्लामी भाईयों ने **मुनव्वरा मस्जिद स्टेशन रोड सख्खर** में एअ़्तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल की। क़ब्ल अज़ीं अ़त्त़ारआबाद के किसी इस्लामी भाई को **फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स**

देना भी न आता था! اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस इज्तिमाई एअ्तिकाफ़ में **आशिक़ाने रसूल** की सोहबत की ब-रकत से 17 इस्लामी भाई मुअ़ल्लिम व मुबल्लिग़ बने, चेहरों को दाढ़ी शरीफ़ से और सरों को सब्ज़ इमामा शरीफ़ से सजाया । दअ्वते इस्लामी के **मदनी कामों** के ज़िम्मादार बने । बा'ज़ **कम्यूनिस्ट** (ला दीन) भी किसी त़रह़ से खिंच कर आ गए थे اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने अपने कुफ़्री नज़रियात से पक्की तौबा की, कलिमा शरीफ़ पढ़ कर मुसलमान हुए और बक़िय्या ज़िन्दगी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दअ्वते इस्लामी** के मदनी माह़ौल में गुज़ारने की निय्यत की । اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस वक़्त उस शहर के इस्लामी भाई जो कि र-मज़ानुल मुबारक (1410 हि.) में **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की ब-रकतों से मालामाल हुए थे वोह और लादीनिय्यत से तौबा करने वाले अब बेहतरीन मुबल्लिग़ बन चुके हैं ह़त्ता कि बड़े बड़े इज्तिमाआ़त बल्कि **बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़** में भी सुन्नतों भरे बयानात फ़रमाते हैं और मुख़्तलिफ़ सूबाई मजालिस के अहम्म ज़िम्मादार बन कर अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश कर रहे हैं । **अल्लाह** तआ़ला हमें और उन्हें दअ्वते इस्लामी के **मदनी माह़ौल** में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमाए ।

اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلى الله تعالى عليه واله وسلم

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह तआला तुम पर रहमत भेजेगा ।

प्यारे इस्लामी भाईयो चले आओ तुम, मदनी माहौल में कर लो तुम एअ़तिकाफ़
ख़ाली दामन मुरादों से भर जाओ तुम, मदनी माहौल में कर लो तुम एअ़तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(10) अब गरदन तो कट सकती है मगर...

कोरंगी नम्बर 6 बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है, मैं ने **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के अपने बे नमाज़ी और क्लीन शेव 26 साला छोटे भाई को तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दअ़्वते इस्लामी** के आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में आख़िरी अ़शरए र-मज़ानुल मुबारक (1421 हि. 2000 इस्वी) के **इज्तिमाई एअ़्तिकाफ़** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ बिठा दिया। बे नमाज़ी और सुन्नतों से कोसों दूर रहने वाले मेरे भाई पर एअ़्तिकाफ़ में **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बते बा ब-र-कत से वो मदनी रंग चढ़ा कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह पंज वक़्ता नमाज़ी बन गए और दाढ़ी मुबारक सजा ली। यहां तक उन का मदनी ज़ेह्न बन गया कि **अब गरदन तो कट सकती है मगर** दाढ़ी नहीं कट सकती।

मीठे आक़ा की उल्फ़त का जज़्बा मिले, मदनी माहौल में कर लो तुम एअ़तिकाफ़
दाढ़ी रखने की सुन्नत का जज़्बा मिले, मदनी माहौल में कर लो तुम एअ़तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم जब तुम मुर्सलीन علیہم السلام पर दुरूदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं।

(11) मिर्गी का मरज़ दूर हो गया

एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है बम्बई की तह़सील कुरला (अल हिन्द) में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दअ़वते इस्लामी** की जानिब से र-मज़ानुल मुबारक (1426 हि.) में होने वाले **इज्तिमाई एअ़तिकाफ़** में एक ऐसे इस्लामी भाई मोअ़तकिफ़ हो गए जिन को हर दूसरे दिन मिर्गी का दौरा पड़ता था। اَلحَمدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ एअ़तिकाफ़ के दौरान उन्हें एक बार भी दौरा न पड़ा बल्कि اَلحَمدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर आज तक फिर उन्हें मिर्गी की तकलीफ़ नहीं हुई।

اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ *हर काम होगा भला, मदनी माह़ौल में कर लो तुम एअ़तिकाफ़,*
दूर होगी ब फ़ज़्ले ख़ुदा हर बला, मदनी माह़ौल कर लो तुम एअ़तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो! देखा आपने! **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **एअ़तिकाफ़** करने की ब-रकत से اَلحَمدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आफ़तें और बलाएं दूर होती हैं। اَلحَمدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मिर्गी का मरज़ भी ठीक हो गया कि उस को मस्जिद में दौरा ही न पड़ा यक़ीनन येह उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ुसूसी करम हो गया। ताहम येह मस्अला ज़ेह्न में रखिए कि **मिर्गी** वग़ैरा का ऐसा मरीज़ जो बेहोश हो जाता हो उस को मस्जिद में एअ़तिकाफ़ नहीं करना चाहिए।

क्यूंकि किसी वक़्त भी दौरा पड़ सकता है म-सलन दौराने नमाज़ ही दौरा पड़ जाए तो दूसरों के लिए सख़्त आज़्माइश होती है। बिल्खुसूस **आसेब ज़दा** को भी एअ्तिकाफ़ न करवाया जाए कि उस की वक़्त बे वक़्त की उछल कूद और शोरो गुल की वजह से नमाज़ियों वग़ैरा को ईज़ा होती है।

(12) मैं क्लीन शेव था

नसीरआबाद (बाबुल इस्लाम सिंध) के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है कि मैं **क्लीन शेव था**, ज़िन्दगी के दिन ग़फ़्लतों में बसर हो रहे थे, इस्लामी भाईयों के तरग़ीब दिलाने और खूब **इन्फ़िरादी कोशिश** फ़रमाने पर मैं ने र-मज़ानुल मुबारक (1425 हि. 2004 इस्वी) में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दअ्वते इस्लामी** के मदनी माह़ौल में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **इज्तिमाई एअ्तिकाफ़** में बैठने की सआ़दत ह़ासिल की। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **एअ्तिकाफ़** में मेरा दिल चोट खा गया, पशेमां हो कर बहुत रोया और आइन्दा हमेशा हमेशा के लिए गुनाहों से बचने का अ़ज़्मे मुसम्मम किया, इमामा शरीफ़ का ताज सर पर सजाया, दाढ़ी मुबारक सजा कर अपने चेहरे को मदनी रंग चढ़ाया। और येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दअ्वते इस्लामी** के तन्ज़ीमी डिवीज़न नसीरआबाद की एक तह़सील का ख़ादिमे मुशा-वरत (निगरान) हूं।

सीखने को मिलेंगी तुम्हें सुन्नतें, मदनी माहौल में कर लो तुम एअ्तिकाफ़
लूट लो आ कर अल्लाह की रहमतें, मदनी माहौल में कर लो तुम एअ्तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

(13) मेरी फ़िल्मी गीत गुनगुनाने की आ़दत थी

डर्गरोड (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई (उ़म्र:25 बरस) की तह़रीर कुछ इस त़रह़ है : मैं ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दअ्वते इस्लामी** के आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह आख़िरी अ़श-रए र-मज़ानुल मुबारक के **एअ्तिकाफ़** की सआ़दत ह़ासिल की। मुझे एअ्तिकाफ़ की बहुत सी ब-रकतें ह़ासिल हुईं। मिनजुम्ला राह चलते हुए बाज़ारी लड़कों की त़रह़ फ़िल्मी गीत गाने की जो आ़दत थी वो निकल गई और اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की जगह ना'त शरीफ़ गुनगुनाने की आ़दत पड़ गई। नीज़ **ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना** लगाने (या'नी बुरी तो बुरी ग़ैर ज़रूरी बातों से भी बचने) का ज़ेह्न बना और अब ह़ाल येह है कि जूं ही मुंह से फ़ुज़ूल बात सरज़द होती है बत़ौरे कफ़्फ़ारा झट ज़बान पर दुरूद शरीफ़ जारी हो जाता है।

गीत गाने की आ़दत निकल जाएगी, मदनी माहौल में कर लो तुम एअ्तिकाफ़
बे जा बक बक की ख़स्लत भी टल जाएगी, मदनी माहौल में कर लो तुम एअ्तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया।

(14) मॉडर्न नौ जवान तरक़्क़ी करते करते...

भाईकला (बम्बई, अल हिन्द) में तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ? गै़र सियासी तह़रीक, **दअ़्वते इस्लामी** की त़रफ़ से आख़िरी अ़-श-रए र-मज़ा़नुल मुबारक (1419 हि. 1998 इस्वी) में होने वाले **इज्तिमाई एअ़्तिकाफ़** में एक मॉडर्न नौ जवान ने (जो कि इलेक्ट्रोनिक एन्जीनियर हैं) शिर्कत की। दस दिन तक **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत का ख़ूब फै़ज़ उठाया, **म-दनी आक़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की निशानी दाढ़ी मुबारक का नूर चेहरे पर छाया, सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाया, एअ़्तिकाफ़ की ब-र-कतों ने उन को सुन्नतों का अ़ज़ीम मुबल्लिग़ बनाया। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह दीन की ख़िदमतों में तरक़्क़ी करते करते ता दमे **तह़रीर हिन्द मक्की काबीना** के रुक्न की हैसिय्यत से सुन्नतों की बहारें लुटाने में कोशां हैं।

सारी फै़शन की मस्ती उतर जाएगी, मदनी माह़ौल में कर लो तुम एअ़्तिकाफ़
ज़िन्दगी सुन्नतों से निखर जाएगी, मदनी माह़ौल में कर लो तुम एअ़्तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(15) मैं ने नशे बाज़ी कैसे छोड़ी!

हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिंध पाकिस्तान) के एक इस्लामी

भाई के बयान का खुलासा है : मैं बे नमाज़ी और नशे बाज़ी का आ़दी था, घर वाले मेरी वजह से परेशान थे । खुश क़िस्मती से तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दअ़वते इस्लामी** के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (सह़राए मदीना मदीनतुल औलिया मुल्तान) (1426 हि. 2005 इस्वी) में ह़ाज़िरी की सआ़दत ह़ासिल हो गई, वहीं निय्यत की कि दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ **फै़ज़ाने मदीना** (बाबुल मदीना कराची) में एअ़्तिकाफ़ करूंगा । चुनान्चे बाबुल मदीना पहुंच कर आ़लमी मदनी मर्कज़ फै़ज़ाने मदीना के अन्दर आख़िरी अ़-श-रए र-मज़ानुल मुबारक (1426 हि. 2005 इस्वी) का **एअ़्तिकाफ़** करने की सआ़दत ह़ासिल की । तीन रोज़ा इज्तिमाअ़ (मुल्तान शरीफ़) में अगरचें काफ़ी ज़ेह्न बना था मगर **इज्तिमाई एअ़्तिकाफ़** की तो क्या बात है! सच केहता हूं मेरे दिल की दुन्या ही बदल गई । गुनाहों से पक्की तौबा की, दाढ़ी मुबारक बढ़ानी शुरूअ़ कर दी, हाथों हाथ सब्ज़ इमामा शरीफ़ भी सजा लिया । एअ़्तिकाफ़ के बा'द जब **हैदरआबाद** आया तो मुझे दाढ़ी और इमामा शरीफ़ में देख कर घर वाले और पड़ौसी वग़ैरा सब ह़ैरत ज़दा रह गए! اَلحَمدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरी **नशे** की आ़दत भी बिल्कुल छूट गई । अपनी बिसात़ भर **दअ़वते इस्लामी** का मदनी काम भी करता हूं, मेरी बेटी **दअ़वते इस्लामी** के जामिअ़तुल मदीना में **शरीअ़त कोर्स** कर रही है जब कि मेरे दो मदनी मुन्ने मद्रसतुल मदीना में

कु़रआने पाक हि़फ़्ज़ कर रहे हैं।

गर मदीने का ग़म चश्मे नम चाहिए, मदनी माह़ौल में कर लो तुम एअ्तिकाफ़

मदनी आक़ा की नज़रे करम चाहिए, मदनी माह़ौल में कर लो तुम एअ्तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(16) येह एअ्तिकाफ़ क्या होता है!

डेरा अल्लाहयार (बलूचिस्तान, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मुझे तो न ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का पता था न इश्क़े मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का। बस गुनाहों भरी ज़िन्दगी में बदमस्त रहते हुए ज़िन्दगी के दिन गुज़ार रहा था। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के करोड़हा करोड़ एह़सान के हमारे शहर में तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दअ्वते इस्लामी** का मदनी काम शुरूअ़ हुआ और पहली बार **दअ्वते इस्लामी** की त़रफ़ से (1416 हि. 1995 इस्वी) **शबे बराअत** का सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ हुआ। मैं ने उस में शिर्कत की। इज्तिमाअ़ में **आ़शिक़ाने रसूल** के दाढ़ी और इमामे वाले नूरानी चेहरों और उन की मह़ब्बत भरी मुलाक़ातों ने मुझे दअ्वते इस्लामी से काफ़ी मु-तअस्सिर किया। मगर मैं दूर ही दूर रहा। हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में भी कभी शिर्कत की तौफ़ीक़ न मिली ह़त्ता कि ***र-मज़ानुल मुबारक*** (1416 हि. 1995 इस्वी) की

सताईस्वीं शब आ पहुंची, मैं ने इज्तिमाअ़ वाली मस्जिद में होने वाली **इज्तिमाई दुआ़** में ह़ाज़िरी दी, इख़्तिताम पर इस्लामी भाईयों से मुलाक़ात हुई और किसी ने बताया यहां कुछ इस्लामी भाई एअ्तिकाफ़ में बैठे हैं । मेरे लिए येह लफ़्ज़ नया था । इस लिए मैं ने तजस्सुस के साथ पूछा, **येह एअ्तिकाफ़ क्या होता है ?** इस्लामी भाईयों ने बड़ी मह़ब्बत के साथ मुझे **एअ्तिकाफ़** के बारे में मा'लूमात फ़राहम करते हुए बा'ज़ **एअ्तिकाफ़ की मदनी बहारें** बयान कीं । दअ्वते इस्लामी के **मदनी माह़ौल** में किए जाने वाले **एअ्तिकाफ़** के अह़वाल सुन कर मैं ने दिल में पक्की निय्यत कर ली कि اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आइन्दा साल **एअ्तिकाफ़** में ज़रूर बैठूंगा । चुनान्चे दिन गुज़रते गए और जब र-मज़ानुल मुबारक (1417 हि. 1996 इस्वी) की फिर आमद हुई तो **आख़िरी अ़-शरह** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ मैं **मो 'तकिफ़** हो गया । दस शबाना रोज़ आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में वो कुछ सीखने को मिला जो बयान से बाहर है ।

न पूछो हम कहां पहुंचे और इन आंखों ने क्या देखा
जहां पहुंचे वहां पहुंचे जो देखा दिल के अन्दर है

एअ्तिकाफ़ में किसी ने दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) करने का ज़ेहन दिया, मेरी समझ में आ गया चुनान्चे बाबुल मदीना कराची

आ कर जामिअ़तुल मदीना में दाख़िला ले लिया, ह़त्ता कि दौरए ह़दीस के बा'द दअ़्वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ **फै़ज़ाने मदीना** (बाबुल मदीना) में (1425 हि. 2004 इस्वी) मेरी दस्तार बन्दी की गई। और ता दमे तह़रीर मैं दअ़्वते इस्लामी के एक जामिअ़तुल मदीना (है़दरआबाद) में तदरीस की ख़िदमात अंजाम दे रहा हूं।

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो! देखा आपने! एक ऐसा लड़का जिस को कल तक येह भी नहीं पता था कि **एअ़्तिकाफ़ क्या होता है!** आज वोह **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ एअ़्तिकाफ़ करने की ब-रकत से न सिर्फ आ़लिम बल्कि ''आ़लिम गर'' बन गया या'नी आ़लिम बनने के बा'द **दअ़्वते इस्लामी** के जामिअ़तुल मदीना में ब है़सिय्यते मुदर्रिस दर्से निज़ामी के अस्बाक़ पढ़ा कर दूसरों को आ़लिम बनाने वाला बन गया।

सुन्नतें सीख लो रह़मतें लूट लो, मदनी माह़ौल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

इ़ल्म ह़ासिल करो बरकतें लूट लो, मदनी माह़ौल में कर लो तुम एअ़्तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

(17) मैं किस किस गुनाह का तज़्किरा करूं

बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई के बयान का

ख़ुलासा है: **किस गुनाह का तज़्किरा करूं !** مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ नमाज़ों में सुस्ती, विडियो गेम्ज़ का शौक़, T.V. पर रोज़ाना उल्टे सीधे प्रोग्राम देखना, झूट की आ़दत यहां तक कि मैं चोरियां भी किया करता था। ख़ुश क़िस्मती से आख़िरी अ़-श-रए र-मज़ानुल मुबारक (1421 हि. 2000 इस्वी) में ***जामेअ़ मस्जिद आमेना*** (शकील गार्डन ओखाई कोम्पलेक्स, बाबुल मदीना कराची) में **दअ़वते इस्लामी** के आ़शिक़ाने रसूल के साथ मुझे **इज्तिमाई एअ़तिकाफ़** की सआ़दत मिल गई। मैं ने आमेना मस्जिद की दूसरी मन्ज़िल पर दअ़वते इस्लामी के क़ाइम कर्दा मद्रसतुल मदीना में दाख़िला लिया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत करता रहा और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरी कोशिशों से हमारी घर में भी **म-दनी माहौल** बन गया । मैं घर के अन्दर मक्तबतुल मदीना की त़रफ़ से जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयानात की केसेटें चलाया करता हूं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक हि़फ़्ज़ कर लेने के बा'द ता दमे तह़रीर जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी कर रहा हूं। मद्रसतुल मदीना में तदरीस की भी तरकीब है और अपने ज़ैली मुशा-वरत के निगरान के मा तह़त रह कर तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दअ़वते इस्लामी** के मदनी कामों की धूमें मचाने की भी कोशिश करता हूं।

तुम गुनाहों से अपने जो बेज़ार हो, मदनी माह़ौल में कर लो तुम एअ़्तिकाफ़
तुम पे फ़ज़्ले खुदा عزوجل, लुत्फ़े सरकार ﷺ हो, मदनी माह़ौल में कर लो तुम एअ़्तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

(18) ए'तिकाफ़ की ब-र-कत से शहर के लिये मर्कज़ मिल गया

हिन्द के एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि चितरादुर्गा (सूबा करर्नाटक, अल हिन्द) की ''मस्जिदे आ'ज़म'' के मु-तवल्लियान और कुछ मक़ामी मुसलमान तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दअ़्वते इस्लामी** के बारे में बा'ज़ ग़लत़ फ़ह्मियों का शिकार थे । बहुत मुश्किल से वहां र-मज़ानुल मुबारक में ***इज्तिमाई एअ़्तिकाफ़*** की इजाज़त मिली । दो मु-तवल्लियों के साह़िब ज़ादगान भी साथ ही मो'तकिफ़ हो गए । म-दनी मर्कज़ के अ़त़ा कर्दा जद्वल के मुत़ाबिक़ सुन्नतों भरे ह़ल्के़, सुन्नतों भरे बयानात, ना'तों की धूमधाम, रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़एं और कसीर मो'तकिफ़ीन का ह़ुस्ने इन्तिज़ाम देख कर मु-तवल्ली साहिबान ह़ैरान रह गए और इस क़दर मु-तअस्सिर हुए कि आख़िरी दिन तमाम मो'तकिफ़ीन को तह़ाइफ़ व गुलपोशी से नवाज़ा । **दअ़्वते इस्लामी** इन सब की समझ में आ गई और इन ह़ज़रात ने अपने ज़ेरे तोलिय्यत अ़ज़ीमुश्शान ''मस्जिदे आ'ज़म'' में दअ़्वते इस्लामी के मदनी कामों की मुकम्मल तौ़र पर छूट दे दी और اَلْحَمْدُلِلّٰہ عزوجل

मस्जिदे आ 'ज़म उस शहर का मदनी मर्कज़ बन गई। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों[2] **मु-तवल्लियों** के साहि़ब ज़ादगान ने अपने चेहरों को दाढ़ी मुबारक से आरास्ता कर लिया और **दअ़्वते इस्लामी** के **मदनी माहौल** से वाबस्ता हो गए।

ज़िक्र करना ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का यहां सुब्ह़ो शाम, मदनी माहौल में कर लो तुम एअ़्तिकाफ़

पाओगे ना 'ते मह़बूब صلى الله عليه وسلم की धूमधाम, मदनी माहौल में कर लो तुम एअ़्तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلّى اللّٰهُ تعالٰى علٰى محمّد

(19) एअ़्तिकाफ़ का फ़ैज़ इंग्लेन्ड पहुंचा

सख्खर शहर (बाबुल इस्लाम सिंध) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : र-मज़ानुल मुबारक (1410 हि. 1990 इस्वी) में मेरे बहनोई की **इंग्लेन्ड** से सख्खर (बाबुल इस्लाम सिंध पाकिस्तान) आमद हुई। इस्लामी भाईयों के तवज्जोह दिलाने पर मैं ने उन पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हें **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **इज्तिमाई एअ़्तिकाफ़** की बरकतें लूटने की दअ़्वत दी। उन्हों ने हाथों हाथ ह़ामी भर ली और اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **मो 'तकिफ़** हो गए। एक ख़ालिस इंग्रेज़ी माहौल में रहने वाला जब एअ़्तिकाफ़ में बैठा और उसने आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नतें और ज़रूरी अह़काम सीखे, क़ब्रो आख़िरत के अह़वाल सुने

तो मुसलमान होने के नाते उस का दिल चोट खा कर रह गया। اَلحَمدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ***इज्तिमाई एअ़्तिकाफ़*** की ब-र-कत से उन्हें गुनाहों से तौबा का तोह़फ़ा मिला और तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दअ़्वते इस्लामी** के **मदनी माह़ौल** में आ गए। चेहरे पर **दाढ़ी** सजा ली, **इमामा शरीफ़** से सर सब्ज़ कर लिया, **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स और बयान सीख कर दौराने एअ़्तिकाफ़ ही **सुन्नतों भरा बयान** करने लगे! **इंग्लेन्ड** में जा कर तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दअ़्वते इस्लामी** के मदनी कामों की धूमें मचाने की निय्यत की। اَلحَمدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर वो **इंग्लेन्ड** में मुबल्लिग़े दअ़्वते इस्लामी हैं, **बारह मदनी कामों** के ज़िम्मादार हैं, उन के बच्चों की अम्मी (या'नी मेरी बहन) भी मदनी माह़ौल से वाबस्ता हो कर **इंग्लेन्ड** जैसे ह़या सोज़ माह़ौल में रहते हुए भी **मदनी बुर्क़अ़** ओढ़ती हैं, ख़ुद दुरुस्त **क़ुरआने पाक** सीख कर अब मद्रसतुल मदीना बालिग़ात में इस्लामी बहनों को पढ़ाती हैं और इस्लामी बहनों के मदनी कामों की **तन्ज़ीमी ज़िम्मादार** हैं।

कर के हिम्मत मुसलमानो आ जाओ तुम, मदनी माह़ौल में कर लो तुम एअ़्तिकाफ़
उख़रवी दौलत आओ कमा जाओ तुम, मदनी माह़ौल में कर लो तुम एअ़्तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلى الله تعالى على محمد

(20) मैं छोड़ के फ़ैज़ाने मदीना नहीं जाता

तह़सील कमालिया दारुस्लाम (पंजाब) के एक इस्लामी भाई की तह़रीर का खुलासा है : उन दिनों में नवीं जमाअ़त में पढ़ता था। क्लास में हमारा एक फ्रेन्ड सर्कल था, हम सब स्कूल से भाग जाते, खूब आवारा गर्दी करते, रात गए तक क्रिकेट खेलते, इन्टरनेट क्लब में ठीक ठाक वक़्त बरबाद करते, सारा सारा दिन मिलजुल कर केबल पर फ़िल्में देखते। गाने सुनने का तो इस क़दर चस्का था कि रात गाने सुनते सुनते सोना और सुब्ह़ जागते ही सब से पहला काम مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ येही मन्ह़ूस गानों को सुनना, फ़ेन्सी लिबास पहन कर हम मिलजुल कर مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ ثُمَّ مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ लड़कियों को छेड़ते और खूब बद निगाहियां करते। मैं ने मां की बात तो कभी मानी ही नहीं, समझाती तो उल्टा बेचारी के गले पड़ जाता। वालिद साहिब नमाज़ का हुक्म फ़रमाते तो उन को भी चुक्मा दे देता। **आह !** किस किस गुनाह का तज़्किरा किया जाए सच पूछो तो इस्लाह़ की दूर दूर तक कोई सूरत नज़र नहीं आती थी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे बड़े भाई जान का भला करे उन्हों ने मेरी दस्तगीरी की और मुझे र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़-शरह के अन्दर **एअ़्तिकाफ़** में बैठने के लिये कहा। यक़ीन मानिये मुझ आवारा और नाकारा को सह़ीह़ मा'नों में येह भी पता नहीं था कि ***एअ़्तिकाफ़*** क्या होता है! मैं ने साफ़ इन्कार कर दिया। मगर उन्होंने किसी त़रह़

भी बहला फुसला कर तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दअ़्वते इस्लामी** के मदनी मर्कज़ फै़ज़ाने मदीना (सरदारआबाद) में होने वाले **इज्तिमाई एअ़्तिकाफ़** में बिठा दिया । चार या पांच दिन तक बिल्कुल भी दिल न लगा और मैं भागने की कोशिश करता रहा मगर काम्यिाब न हो सका । इस के बा'द सुरूर आना शुरूअ़ हुवा, और फिर तो वोह् **रूहानी सुकून** मिला कि चांद रात को मैं केह रहा था कि मुझे घर नहीं जाना है मैं आज की रात भी यहीं **फै़ज़ाने मदीना** में गुज़ारना चाहता हूं ।

तुम घर न खींचो नहीं जाता नहीं जाता
मैं छोड़ के फै़ज़ाने मदीना नहीं जाता

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب !　　　صلّى اللّٰهُ تعالٰى علٰى محمَّد

(21) एअ़्तिकाफ़ की बरकत से घुटनों का दर्द चला गया

जामिअ़तुल मदीना (बाबुल मदीना, कराची) के एक ता़लिबे इ़ल्म का कुछ इस त़रह़ बयान है : आखि़री अ़-श-रए र-मज़ानुल मुबारक (1426 हि. 2005) में मुझे तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दअ़्वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ **फै़ज़ाने मदीना** (बाबुल मदीना कराची) में **एअ़्तिकाफ़** की सआ़दत ह़ासिल हुई । वहां मेरी मुलाक़ात एक **बाबाजी** से हुई, उन्हों ने बताया : कई साल से मेरे

घुटनों में दर्द था, जब मैं आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** (बाबुल मदीना कराची) में **एअ़्तिकाफ़** के लिये आया । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस की ब-र-कत से मुझ पर करम हुवा कि **मेरे घुटनों का दर्द दूर हो गया ।**

दर्द टांगों में हो, दर्द घुटनों में हो, मदनी माह़ौल में कर लो तुम एअ़्तिकाफ़
पेट में दर्द हो या कि टख़्नों में हो, मदनी माह़ौल में कर लो तुम एअ़्तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(22) दाढ़ी सजी, ''सर सब्ज़'' हो गया

एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है कि नवसारी (सूबा गुजरात, अल हिन्द) के एक मॉडर्न इस्लामी भाई तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से आख़िरी अ़शरए र-मज़ानुल मुबारक (1423 हि. 2002 इस्वी) में होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** (सूरत, गुजरात) में मो'तकिफ़ हुए । म-दनी मर्कज़ के दिये हुए ***तरबिय्यती जद्वल*** के मुत़ाबिक़ लगने वाले सुन्नतों भरे ह़ल्क़ों, रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं और ज़िक्रो ना'त की पुर सोज़ स़दाओं ने उन का दिल मोह लिया, ***आ़शिक़ाने रसूल*** की सोह़बत से वोह फ़ैज़ मिला कि न पूछो बात । दाढ़ी मुबारक सजी इमामा शरीफ़ से सर सब्ज़ हुवा और तरक़्क़ी के मनाज़िल तै़ करते हुए ता दमे तह़रीर

अपने शहर की मुशावरत के निगरान की हैसिय्यत से म-दनी कामों की धूमें मचा रहे हैं।

सुन्नतों की तुम आ कर के सौग़ात लो, म-दनी माहौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
आओ बटती है रह़मत की ख़ैरात लो, म-दनी माहौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(23) जैसे मेरे सरकार है ऐसा नहीं कोई

हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ अ़त्तारी जो कि टन्डो जाम एग्रिकल्चरल यूनिवर्सिटी के लेब इनचार्ज थे, उन के दो[2] बच्चे ***दा'वते इस्लामी*** के म-दनी माहौल से वाबस्ता थे मगर वोह ख़ुद नमाज़ों और सुन्नतों से दूर थे और ज़ेहन मुकम्मल त़ौर पर दुन्यादारों वाला था। र-मज़ानुल मुबारक में ***इन्फ़िरादी कोशिश*** करते हुए इन्हें ***इज्तिमाई़ ए'तिकाफ़*** में शिर्कत की दा'वत पेश की गई, तो फ़रमाने लगे, मेरे बच्चों की अम्मी नाराज़ हो कर मयके जा बैठी हैं अगर मैं एअ्तिकाफ़ करूंगा तो क्या वोह आ जाएंगी ? उन्हें बताया गया, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आ जाएंगी। चुनान्चे वो आख़िरी अ़शरए र-मज़ानुल मुबारक (ग़ालिबन 1416 हि. 1995 इस्वी) में **फ़ैज़ाने मदीना** (हैदरआबाद) के अन्दर **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ मो'तकिफ़ हो

गए । सीखने सिखाने के ह़ल्क़ों, सुन्नतों भरे बयानों, रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं और पुर सोज़ नअ़्तों ने उन के क़ल्ब में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा कर दिया ! उन्हों ने गुनाहों से तौबा कर ली । नमाज़ों की पाबन्दी का अ़हद किया । दाढ़ी मुबारक व इ़मामा शरीफ़ से आरास्ता हो गए और ना'तें भी पढ़ने लगे । **ए'तिकाफ़** के दौरान ही रूठी हुई बच्चों की अम्मी भी वापस आ गईं और घरेलू शकर रंजियां भी ख़त्म हो गईं । ए'तिकाफ़ की बरकत से वोह **मदनी माह़ौल** से वाबस्ता हो गए । दाढ़ी ज़ुल्फ़ों, इ़मामा शरीफ़ और म-दनी लिबास में नज़र आने लगे । मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र भी किये । और म-दनी माह़ौल में रहते हुए उसी साल या'नी बरोज़ जुमा'रात 27 **रबीउ़न्नूर शरीफ़** ग़ालिबन 1416 हि. 1995 इस्वी को उन का इन्तिक़ाल हो गया । إِنَّا لِلّٰهِ وَ إِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْن उन की ख़ुश बख़्ती तो देखिये कि ब वक़्ते वफ़ात उन के लब पर ना'त शरीफ़ का येह मिस्रअ़ था : **"जैसे मेरे सरकार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **हैं ऐसा नहीं कोई" अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

गोरे तीरह को तुम जगमगाने चलो, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम एअ़्तिकाफ़
राह़तें रोज़े मह़शर की पाने चलो, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह तआला तुम पर रह़मत भेजेगा ।

इब्रतनाक रिवायत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! येह वाक़ेआ़ वाक़ेई अपने अन्दर इब्रत के कई म-दनी फूल लिये हुए हें। मर्ह़ूम अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ अ़त्त़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى खुशनसीब थे कि वफ़ात से थोड़े ही अ़रसा क़ब्ल म-दनी माह़ौल मुयस्सर आ गया और यक़ीनन वोह बन्दा मुक़द्दर वाला है जो मरने से पहले पहले तौबा कर के राहे रास्त पर आ जाए और सुन्नतों की शाहराह पर चल पड़े और बड़ा ही बदनसीब है वो शख़्स जो अच्छा भला नेकियां करने वाला और सुन्नतों के रास्ते पर चलने वाला हो कर मरने से थोड़े ही अ़रसा क़ब्ल مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ मॉडर्न हो जाए और गुनाहों में पड़ कर **म-दनी माह़ौल** से दूर जा पड़े। जब भी आप को शैत़ान किसी ज़िम्मादार फ़र्द से नाराज़ करवा कर या यूं ही सुस्ती दिला कर या दुन्यवी कारोबार में ख़ूब फंसा कर या शादी वग़ैरा का जोश दिला कर म-दनी माह़ौल से दूर होने का मश्वरा दे तो इस ह़दीसे पाक पर (जो اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ अभी बयान की जाएगी) ग़ौर फ़रमा लिया करे क्यूं कि मुशा-हदा येही है कि एक बार **म-दनी माह़ौल** में रचबस जाने के बा'द दूर होने से مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ नेक आ'माल पर क़ाइम रहना बहुत मुश्किल हो जाता है। उम्मुल मुअ्मिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना **आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से रिवायत है : जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे के साथ **भलाई** का इरादा फ़रमाता है तो

उस के मरने से **एक साल पहले** एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देता है जो उस को राहे रास्त पर लगाता रहता है ह़त्ता कि वो ख़ैर (या'नी भलाई) पर मर जाता है और लोग केहते हैं : ''फ़ुलां शख़्स अच्छी ह़ालत पर मरा है'' जब ऐसा (ख़ूश नसीब और नेक) शख़्स मरने लगता है तो उस की जान निकलने में जल्दी करती है, वोह उस वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात को पसन्द करता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की मुलाक़ात को। जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी के साथ **बुराई** का इरादा फ़रमाता है तो मरने से **एक साल क़ब्ल** उस पर एक शैत़ान मुसल्लत़ कर देता है जो उसे बहकाता रहता है ह़त्ता कि वोह अपने बद-तरीन वक़्त में मर जाता है। उस केपास जब मौत आती है तो उस की जान अटकने लगती है (और येह शख़्स) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलने को पसन्द नहीं करता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से मिलने को।

(मुलख्खस अज़् शर्हुस्सुदूर, स. 27 मर्कज़े अह्लेसुन्नत बरकाते रज़ा हिन्द)

(24) मुझे घर वाले घर से निकाल देते थे

मुज़फ़्फ़र गढ़ (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ केहना है : मैं बहुत ज़ियादा बिगड़ा हुवा लड़का था, रात को जब तक गानों की तीन चार केसेटें न सुन लेता नींद न आती, सारी सारी रात आवारा गर्दियों और गुनाहों में बसर हो जाती, बात बात पर घर में झगड़ता, **घर वाले बेज़ार हो कर घर से**

निकाल देते। दो एक दिन इधर उधर भटकता फिरता इस के बा'द तरकीब बन जाती। अल ग़रज़ ज़िन्दगी के दिन इन्तिहाई ग़लत़ अन्दाज़ पर बरबाद हो रहे थे। मेरे कज़ीन ता दमे तह़रीर तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के अ़लाक़ाई मुशा-वरत के निगरान हैं, उन्हों ने मुझ पर **इन्फ़िरादी कोशिश** की और आख़िरी अ़-श-रए र-मज़ानुल मुबारक (1425 हि. 2004 इ़स्वी) में अड्डे वाली मस्जिद (मुज़फ़्फ़र गढ़) में मुझे **दा'वते इस्लामी** के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में ला बिठाया। बाबुल मदीना से आए हुए एक मुबल्लिग़ के ह़ुस्ने अख़्लाक़ से मु-तअस्सिर हो कर मैं ने साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली और उन्हीं के हाथों सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ से अपना सर सब्ज़ करवा लिया। **27वीं शब** सुन्नतों भरे बयान के बा'द होने वाली रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने दिल पर बहुत ज़ियादा असर किया, मुझ पर गिर्या त़ारी हो गया और मैं सुब्ह़ तक रोता रहा। **ई़द** के दूसरे रोज़ फ़ज्र के वक़्त अभी आंख न खुली थी कि एक बुज़ुर्ग ख़्वाब में नज़र आए और उन्हों ने मेरा नाम ले कर पुकारा, ''फ़ज्र का वक़्त हो गया है और आप अभी तक सोए हुए हैं!'' मैं ने फ़ौरन नींद ही में दोनों हाथ क़ियाम की त़रह़ बांध लिये और आंख खुल गई तो हाथ उसी त़रह़ बंधे हुए थे। इस से दिल पर बड़ा असर पड़ा और मैं ने मस्जिद में जा कर बा जमाअ़त नमाज़े फ़ज्र अदा की। अपने शहर के हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से

ह़ाज़िरी देता रहा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ऐसा करम बालाए करम फ़रमाया कि ता दमे तह़रीर जामिअ़तुल मदीना (बाबुल मदीना कराची) में दर्से निज़ामी करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा हूं। अपने द-रजे में म-दनी इन्आ़मात का तन्ज़ीमी त़ौर पर ज़िम्मादार हूं और तह़दीसे ने'मत के त़ौर पर अ़र्ज़ करता हूं कि मुझ जैसे सख़्त गुनहगार पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ास इन्आ़म येह है कि **त-लबा के जो 92 म-दनी इन्आ़मात हैं उन सभी पर अ़मल की सआ़दत ह़ासिल है।** सब इस्लामी भाईयों से दुआ़ए इस्तिक़ामत की म-दनी इल्तिजा है।

छूट जाएगी फ़िल्मो डिरामों की लत, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
ख़ुश ख़ुदा होगा बन जाएगी आख़िरत, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(25) मस्जिद का ख़त़ीब बना दिया

सईदआबाद बलदिया टाऊन बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : मैं ने اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **मद्रसतुल मदीना** ही में क़ुरआने पाक की ता'लीम ह़ासिल की मगर अफ़्सोस कि फिर भी पक्का नमाज़ी न बन सका। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ जब र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो शख़्स़ मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।

अ़-शरे के **ए 'तिकाफ़** की सआ़दत मिली तो दिल पर **म-दनी चोट** लगी, ग़फ़्लत की नींद उड़ी, ह़क़ीक़ी मा'नों में आंख खुली और मैं नमाज़ों का पाबन्द हो गया । **ए 'तिकाफ़** के सबब **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र का ज़ेह्न बना । मैं बेरोज़गार था, जिस दिन म-दनी क़ाफ़िले की निय्यत की हमारी यहां की मुशा-वरत के निगरान ने फ़रमाया, اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ आप का काम हो गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले की ब-रकत यूं ज़ाहिर हुई कि जिस मस्जिद में हमारा **म-दनी क़ाफ़िला** गया वहां की इन्तिज़ामिया को मुझ गुनहगार का बयान और अन्दाज़े दुआ़ भा गया और उन्हों ने **मुझे उस मस्जिद का ख़त़ीब बना दिया** और यूं मेरे रोज़गार की भी सबील बनी । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे **दा 'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ौल में इस्तिक़ामत नसीब फ़रमाए ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

फ़ाक़ा मस्ती का ह़ल भी निकल आएगा, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़
रोज़गार اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ मिल जाएगा, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(26) उ़म्र ग़फ़्लतों में गुज़र रही थी

मोड़ासा (गुजरात, अल हिन्द) के एक मोडर्न नौ जवान थे, उ़म्र ग़फ़्लतों में गुज़र रही थी गुनाहों का सिल्सिला था, ऐसे में करम हो गया, सबबे करम यूं हुवा कि माहे र-मज़ानुल

मुबारक (1423 हि. 2002 इस्वी) के आख़िरी अ़-शरह में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **इज्तिमाई़ ए'तिकाफ़** में बैठना नसीब हो गया आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बते बा ब-रकत के क्या केहने! सुन्नतों भरे बयानात और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं और पुर कैफ़ ना'तों के फ़ैज़ान से उन की काया पलट गई और वोह म-दनी जज़्बा अ़ता हुवा कि **ए'तिकाफ़** ही के अन्दर उन को दर्सो बयान करने की सआ़दत मिल गई! **दाढ़ी मुबारक** और **इमामा शरीफ़** सजाने की निय्यत की **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ 30 दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िर बन गए। चूंकि काफ़ी बा सलाह़िय्यत थे लिहाज़ा इस्लामी भाईयों ने मु-तअस्सिर हो कर उन को **अमीरे क़ाफ़िला** बना दिया!

आ़शिक़ाने रसूल आओ देंगे बयान, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
दूर होंगी इ़बादात की खामियां, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(27) اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं तहज्जुद गुज़ार बन गया

सख्खर (बाबुल इस्लाम सिंध) के एक उ़म्र रसीदा इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : आख़िरी अ़-श-रहए र-मज़ानुल मुबारक (1425 हि. 2004 इस्वी) में तब्लीग़े

कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक, **दा 'वते इस्लामी** की त़रफ़ से होने वाले **इज्तिमाई ए 'तिकाफ़** में शिर्कत की सआ़दत मिली। सीखने सिखाने के ह़ल्क़ों का बा काइ़दा जद्वल बना हुवा था। जिन में नमाज़ के अह़काम और रोज़ मर्रह की सुन्नतें वगै़रा सीखने को मिलीं, सिर्फ़ दस10 दिन में वोह वोह सीखने को मिला जो अब तक ज़िन्दगी में न सीख पाया था। सुन्नतों भरे बयानात की समाअ़त और **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत की ब-र-कत से फ़िक्रे आख़िरत नसीब हुई और क़ल्ब में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हो गया। ***दा 'वते इस्लामी*** के ***म-दनी इन्आ़मात*** पर अ़मल का जज़्बा मिला। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दूसरा "म-दनी इन्आ़म" बिलखु़सूस मज़्बूत़ी से थाम लिया और उस की बरकत से اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पांचों नमाज़ें पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा करने की आ़दत बना ली, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तहज्जुद पर भी इस्तिक़ामत ह़ासिल है। **म-दनी इन्आ़मात *का कार्ड*** हर माह अपने ज़िम्मादार को जम्अ़ करवा देता हूं। हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में भी अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा शिर्कत की सआ़दत पाता हूं।

बा जमाअ़त नमाज़ों का जज़्बा मिले, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए 'काफ़
दिल का पज़ मुर्दा गुन्या खुशी से खिले, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(28) आक़ा अपना दीदार करा दीजिए

मिठ्ठियां (खारियां, ज़िल्अ़ पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है : मैं आ़म नौ जवानों की त़रह़ माडर्न और फ़िल्में डिरामे देखने का शौक़ीन था । खुश नसीबी से आख़िरी अ़शरए र-मज़ानुल मुबारक में आ़शिक़ाने रसूल के साथ **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में बैठने की सआ़दत मिल गई । **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत की भी क्या बात है! मैं ने ज़िन्दगी में पहली बार ऐसा **म-दनी माह़ौल** देखा था, दिलो जान से दा'वते इस्लामी का शैदाई हो गया । मुझे सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार का बड़ा अरमान था, **ए'तिकाफ़** में रोज़ाना दीदार के लिये दुआ़ मांगता था । **27 वीं शब** आ गई, इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त हुवा, ज़िक्रुल्लाह में मुझ पर बे खुदी की सी कैफ़िय्यत त़ारी हो गई फिर जब रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ हुई तो मैं ने आंखें बन्द किए रो रो कर बस एक येही तक़रार की, "**आक़ा अपना दीदार करा दीजिए!**" यकायक आंखों में एक बिजली सी कूंदी और एक नूरानी चेहरे की ज़ियारत हुई और मुझे यक़ीन हो गया कि येह तो मेरे **आक़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं ! आह! आह! फिर चेह्रए मुबारक निगाहों से ओझल हो गया । आह !

शरबते दीद ने इक आग लगाई दिल में
तपिशे दिल को बढ़ाया है बुझाने न दिया
अब कहां जाएगा नक़्शा तेरा मेरे दिल से
तेह में रख्खा है इसे दिल ने गुमाने न दिया

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरे क़ल्ब में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो चुका था, मैं ने गुनाहों से तौबा की, दाढ़ी बढ़ानी शुरूअ़ कर दी और इमामा शरीफ़ सजाने की भी निय्यत कर ली। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **ईद** के दिन **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ हाथों हाथ तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बन गया। ता दमे तह़रीर बाबुल मदीना कराची ह़ाज़िर हो कर जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी शुरूअ़ कर दिया है, ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या का भी कोर्स कर लिया है और **मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** की त़रफ़ से सोंपी हुई ज़िम्मादारी के मुत़ाबिक़ ता'वीज़ात का बस्ता भी लगाता हूं नीज़ जामिअ़तुल मदीना के अन्दर अपने द-रजे में ***म-दनी क़ाफ़िला ज़िम्मादार*** भी हूं।

गर तमन्ना है आक़ा के दीदार की, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
होगी मीठी नज़र तुम पे सरकार की, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(29) हैरत है मैं ने डब्बोस्नूकर कैसे छोड़ दिया!

लियाक़तआबाद (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है : मैं बे तह़ाशा फ़िल्में डिरामे देखा करता, डब्बो स्नूकर खेलने का जुनून की ह़द तक शौक़ था ह़त्ता कि किसी के डांटने बल्कि मारने तक से भी येह लत नहीं छूट सकती थी।

गुनाहों की नहूसत का आ़लम येह था कि مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नमाज़ पढ़ने से दिल घबराता था! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से हमारे अ़लाके़ की **फुरक़ानिया मस्जिद** (लियाक़तआबाद, बाबुल मदीना कराची) में तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से होने वाले आखि़री अ़-श-रए र-मज़ानुल मुबारक (1425 हि. 2004 इस्वी) के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** के अन्दर मैं गुनहगार भी **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **मो'तकिफ़** हो गया। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ "म-दनी इन्आ़मात" की ब-र-कत से आखि़रत बनाने की सोच बनी, गुनाहों से कुछ बे रग़्बती पैदा हुई। फिर क़ादिरिय्या रज़विय्या सिल्सिले में मुरीद बना तो नमाज़ की पाबन्दी नसीब हुई, मैं ने **डब्बो स्नूकर** खेलना तर्क कर दिया। मुझे हैरत है मैं ने येह कैसे छोड़ दिया! इस के बा'द दा'वते इस्लामी के बैनल अक़्वामी **तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** के आखि़री दिन सह़राए मदीना (बाबुल मदीना) में ह़ाज़िरी हुई, वहां "T.V. की तबाहकारियां" के मौज़ूअ़ पर बयान हुवा। उस को सुन कर मैं अ़ज़ाबे क़ब्रो ह़श्र के ख़ौफ़ से लरज़ उठा और मैं ने अ़ह्द कर लिया कि कभी भी T.V. नहीं देखूंगा। मैं ने अपनी प्यारी अम्मी जान को "T.V. की तबाहकारियां" केसेट सुनाई तो उन्हों ने भी T.V. देखना बिल्कुल बन्द कर दिया और सरकारे ग़ौसुल आ'ज़म की मुरीदनी बनने का जज़्बा पैदा हुवा चुनान्चे उन को भी बैअ़त

करवा दिया । इस की ब-र-कत से अम्मीजान फ़र्ज़ नमाज़ों के साथ तहज्जुद, इशराक़ और चाश्त भी पाबन्दी से पढ़ने लगीं । खुदाए रहमान عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़्मतो शान पर मेरी जान कु़रबान! थोड़े ही अ़रसे में अम्मी जान को **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّ تَعظِيماً का बुलावा आ गया । इस पर अम्मी ने खुद फ़रमाया कि येह सब बैअ़त होने का फ़ैज़ है । येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं अपने यहां ज़ैली क़ाफ़िला ज़िम्मादार की हैसिय्यत से मेरी प्यारी प्यारी म-दनी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** की खि़दमत करने की कोशिश कर रहा हूं ।

सीखने ज़िन्दगी का क़रीना चलो, म-दनी माहौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
देखना है जो मीठा मदीना चलो, म-दनी माहौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(30) कोमेडियन मुबल्लिग़ बन गया

बालासिनोर (गुजरात, अल हिन्द) के एक नौ जवान जो कोमेडियन (मस्ख़रा) थे । उल्टे सीधे चुटकुले सुना कर लोगों को हंसाना उन का मशग़ला था, शादियों में मिमिक्री फंक्शन के लिये उन को बुलवाया जाता था । आखि़री अ़-श-रए र-मज़ानुल मुबारक में उन्हें आ़शिक़ाने रसूल के साथ **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में बैठने की सआ़दत हा़सिल हुई । अब

तक धन कमाने ही की धुन थी। ए'तिकाफ़ के **म-दनी माहौल** में आख़िरत बनाने की लगन पैदा हुई, साबिक़ा गुनाहों से ताइब हो कर सुन्नतों के मुबल्लिग़ बन गए, अपने आप को दा'वते इस्लामी के लिये पेश कर दिया। ता दमे तह़रीर तन्ज़ीमी त़ौर पर तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की एक **डीविज़नल मुशा-वरत के निगरान** की है़सिय्यत से दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों की धूमें मचा रहे हैं, दीन के लिये उन की कु़रबानियों का ह़ाल येह है कि माहाना 25 दिन म-दनी कामों के लिये वक़्फ़ हैं।

إِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ भाई सुधर जाओगे, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मरज़े इस्यां से छुटकारा तुम पाओगे, म-दनी मह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(31) मैं ने ह़-जरे अस्वद चूम लिया

टन्डोअल्लाहयार (बाबुल इस्लाम सिंध) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा येह है कि बुरे माह़ौल और आवारा दोस्तों की सोह़बत ने मुझे गुनाहों पर दिलीर कर दिया था। शराब के अड्डो पर जाना मेरे लिये मा'मूली बात थी, लोगों से ख़्वाह म ख़्वाह लड़ाई मोल लेना, बिला वजह झगड़ना और मारपीट करना मेरी आ़दत बन चुकी थी। मेरे इन

करतूतों की वजह से घर का हर फ़र्द मुझ से बेज़ार था में इसी त़रह़ गुनाहों की वादियों में भटक रहा था कि मेरी क़िस्मत का सितारा चमका और मैं एक आ़शिक़े रसूल की **इन्फ़िरादी कोशिश** की ब-र-कत से तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** टन्डो अल्लाहयार की **नूरानी मस्जिद** में होने वाले माहे र-मज़ानुल मुबारक (1426 हि. 2005 इस्वी) के आख़िरी अ़-शरे के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की बहारें समेटने में शामिल हो गया। दौराने **ए'तिकाफ़** आ़शिक़ाने रसूल के दाढ़ियों और इमामों वाले नूरानी चेहरों और इन की मह़ब्बतों और शफ़्क़तों ने मुझे **दा'वते इस्लामी** से काफ़ी **मु-तअस्सिर** किया। दस शबाना रोज़ **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत में वोह कुछ सीखने को मिला जो बयान से बाहर है। 25वीं शब में ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ में मशग़ूल था कि मुझ पर ग़ुनूदगी त़ारी हुई और मैं ने खुद को **का'बतुल्लाह** शरीफ़ के रू बरू पाया **मैं ने बे साख़्ता ह़-जरे अस्वद को चूम लिया। 27** वीं शब भी मुझ पर करम हुवा और ग़ुनूदगी के आ़लम में मदीनए मुनव्वरा की नूर बार गलियों और सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के नूरानी नज़्ज़ारों की सआ़दत पाई। इन ईमान अफ़रोज़ सिलिसलों ने मेरे दिल की दुन्या बदल डाली। मैं ने निय्यत की कि इस **म-दनी माहौल** को ज़िन्दगी भर नहीं छोडूंगा। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर रब्बे अकरम عَزَّوَجَلَّ के लुत़्फ़ो करम से दा'वते इस्लामी

के जामिअ़तुल मदीना (हैदरआबाद) में दर्से निज़ामी करने की सआदत ह़ासिल कर रहा हूं ।

दिल में बस जाएं आक़ा ﷺ के जल्वे मुदाम, मदनी माह़ौल में कर लो तुम एअ़्तिकाफ़

देखो मक्के मदीने के तुम सुब्ह़ो शाम, मदीना माह़ौल में कर लो तुम एअ़्तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

(32) बुरी सोह़बत में रहने का गुनाह छूट गया

ओरंगी टाऊन (बालुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : मैं मोॅडर्न और बुरे दोस्तों की सोह़बत की वजह से ख़ुद भी मोॅडर्न और बुरा बन्दा था । ख़ूश क़िस्मती से हमारे अ़लाके़ की **अक़्सा मस्जिद**, ओरंगी टाऊन, अल फ़त्ह़ कोॅलोनी (बाबुल मदीना) के अन्दर होने वाले माहे र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़-शरह के **इज्तिमाई़ ए 'तिकाफ** में बैठने की ब-रकत से मैं तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक, **दा 'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ौल** से वाबस्ता हो गया, पाबन्दे सलातो सुन्नत भी बन गया, हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी की आ़दत पड़ गई, फ़िल्में डिरामे देखने की ख़स्लते बद निकल गई और एक बहुत बड़ा फ़ाइदा येह हुवा कि **बुरी सोह़बत** में रहना जो कि एक बहुत बड़ा गुनाह बल्कि गुनाहों की जड़ था اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस से भी मेरी जान छूट गई ।

सोहबते बद में रहने की आदत छुटे, म-दनी माहौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
ख़स्लते जुर्मो इस्यां तुम्हारी मिटे, म-दनी महौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلّى اللهُ تعالٰى علٰى محمّد

(33) जज़्बे को मदीने के 12 चांद लग गए

मलाका (इलाहआबाद, यूपी, अल हिन्द) के एक इस्लामी भाई का वाक़िआ कुछ यूं है कि उन्होंने मदीनतुल औलिया अहमदआबाद शरीफ़ में हिन्द सत्ह के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत फ़रमाई, दीन की ख़िदमत का काफ़ी जज़्बा मिला । उसी साल तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** की तरफ़ से आख़िरी अ-श-रए माहे र-मज़ानुल मुबारक (1418 हि. 1996 इस्वी) में नागोरी वाड़ की मस्जिद (अहमदआबाद शरीफ़) के अन्दर होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में **मो'तकिफ़** हुए **आशिक़ाने रसूल** की सोहबत उन्हें ख़ूब मुवाफ़िक़ आई, उन के दीनी जज़्बे को मीठे मदीने के 12 चांद लग गए । ए'तिकाफ़ के बा'द अपने आबाई गांव **मलाका** (यू.पी.) में जा कर उन्हों ने म-दनी कामों की ख़ूब धूमें मचाईं । दूसरे साल म-दनी मर्कज़ की जानिब से मुख़्तलिफ़ शहरों में जा कर सैंकड़ों इस्लामी भाईयों को ए'तिकाफ़ करवाया । ता दमे तहरीर अहमदआबाद शरीफ़ में मुक़ीम हैं और **दा'वते इस्लामी** की तन्ज़ीमी तरकीब के मुताबिक़ **तहसील मालियात** के ज़िम्मादार हैं ।

आओ इश्क़े मुहम्मद صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के पीने को जाम, मदनी माहौल में कर लो तुम एअ्तिकाफ़
मस्त हो कर करो ख़ूब तुम मदनी काम, मदनी माहौल में कर लो तुम एअ्तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(34) 70 साला इस्लामी भाई के तअस्सुरात

गार्डन वेस्ट (बाबुल मदीना कराची) के एक सिन रसीदा इस्लामी भाई (उ़म्र 70 साल) के बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं बुढ़ापे के बा वुजूद مَعَاذَاللّٰه नमाज़ की पाबन्दी नहीं करता था, फ़िल्में डिरामे का शौक़ीन था, दाढ़ी मुंडवाया करता था और इंग्रेज़ी लिबास पहनता था, तक़रीबन 10 साल क़ब्ल या'नी तक़रीबन 60 बरस की उ़म्र में **कौसर मस्जिद** मूसा लीन, लियारी (बाबुल मदीना) के अन्दर पहली बार आख़िरी अ़-श-रए र-मज़ानुल मुबारक (ग़ालिबन 1417 हि. 1996 इस्वी) में मुझे **ए'तिकाफ़** की सआ़दत ह़ासिल हुई । वहां **दा'वते इस्लामी** के आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत मुयस्सर आई । **गुजराती ज़बान में क़ुरआने करीम** पढ़ता देख कर एक इस्लामी भाई ने मुझे समझाया कि क़ुरआने पाक अ़-रबी में पढ़ना ज़रूरी है क्यूं कि गुजराती ज़बान में अ़-रबी हुरूफ़ को दुरुस्त मख़ारिज के साथ अदा करना मुम्किन नहीं । मेरी समझ में बात आ गई । बहरह़ाल ए'तिकाफ़ में **आ़शिक़ाने रसूल** से मुझे बहुत फ़ैज़ ह़ासिल हुवा । मैं ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी**

के **मद्रसतुल मदीना** (बराए बालिग़ान) में पढ़ना शुरूअ़ कर दिया । डेढ़ साल की जिद्दो जहद से मेरे कुछ न कुछ हुरूफ़ दुरुस्त हुए । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अब अ़-रबी में देख कर क़ुरआने पाक पढ़ना नसीब हो रहा है । हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में सारी रात गुज़ारने का शरफ ह़ासिल होता है, हफ़्ते में एक बार अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत की सआ़दत भी मिल जाती है । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने एक मुठ्ठी दाढ़ी भी सजा ली है । ज़ाहिरी अस्बाब न होने के बा वुजूद करम बालाए करम हो गया और मुझे उ़म्रह शरीफ़ और मीठे मदीने की ह़ाज़िरी का शरफ़ मिल गया । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हर माह तीन[3] दिन **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल करता हूं । **72 म-दनी इन्आ़मात** में से 40 से जाइद म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल की कोशिश है । एक प्राईवेट फ़र्म में एकाउनटन्ट हूं, सुब्ह़ो शाम आते जाते बस के अन्दर **नेकी की दा'वत** देने की चार[4] साल से सआ़दत ह़ासिल है, एक बार **ख़्वाब** में बस के अन्दर मैं ने **नेकी की दा'वत** पेश की, फ़ारिग़ होने के बा'द देखा कि एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी जिन से मैं बहुत **मह़ब्बत** करता हूं, वोह मेरे सामने अपना चांद सा चेहरा चमकाते मुस्कराते तशरीफ़ फ़रमा हैं । येह रूह़ परवर मन्ज़र देख कर मैं रो पड़ा और आंख खुल गई । येह ख़्वाब देखने के बा'द **नेकी की दा'वत** देने में मुझे मज़ीद इस्तिक़ामत नसीब हुई ।

सीख लो आओ कुरआन पढ़ना सभी, मदनी माहौल में कर लो तुम एअ़तिकाफ़

तुम तरक़्क़ी के ज़ीनों पे चढ़ना सभी, मदनी माहौल में कर लो तुम एअ़तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़ैरे अ़-रबी में आयाते कुरआनी लिखना जाइज़ नहीं!

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! देखा आपने! जब तक अच्छी सोह़बत नहीं मिलती उस वक़्त तक बसा अवक़ात इस्लाह़ की सूरत नहीं बनती। आजकल अक्सर बूढ़े लोग भी त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में मुब्तला नज़र आते हैं। ह़त्ता कि बेचारे बिस्तरे मर्ग पर पडे हों तब भी उन्हें दाढ़ी रखने की तौफ़ीक़ नहीं मिलती और इस ह़ालत में भी T.V. सिरहाने रख्खा रहता है, सिह़्ह़त पा कर दुन्या के काम धन्दे ही करने का जज़्बा होता है। येह **मुअ़म्मर** इस्लामी भाई खुश नसीब थे, जिन्हें ए'अ़तिकाफ़ में म-दनी माह़ौल मुयस्सर आ गया और ग़फ़्लतों में गुज़रने वाली ज़िन्दगी यकायक म-दनी अदाओं में ढल गई। आपने देखा कि बेचारे कुरआने पाक भी पढ़े हुए नहीं थे इस लिये गुजराती ज़बान में कुरआन शरीफ़ पढ़ रहे थे, जिस पर एक **आ़शिक़े रसूल** ने तफ़्हीम की (या'नी समझाया) तो दा'वते इस्लामी के **मद्रसतुल मदीना** (बालिग़ान) में रात के वक़्त सीख कर अ़-रबी में पढ़ने के कुछ न कुछ क़ाबिल हुए।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह तआला तुम पर रहमत भेजेगा ।

याद रखिये! अ-रबी ज़बान के इलावा दूसरी किसी ज़बान म-सलन गुजराती, हिन्दी, इंग्लिश के रस्मुल ख़त में कुरआने पाक लिखना जाइज़ नहीं । गुजराती, हिन्दी, इंग्रेज़ी वग़ैरा ज़बानों के माहनामों और दीगर कुतुबो रसाइल में आयात और मासूर दुआएं वग़ैरा अ-रबी रस्मुल ख़त ही में लिखनी चाहिये । मुफ़स्सिर शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان अपने एक तफ़्सीली फ़तावा में येह भी फ़रमाते हैं : हिन्दी या इंग्रज़ी रस्मुल ख़त में कुरआन लिखना तो सरीह तहरीफ़ है (और कुरआने पाक की तहरीफ़ हराम है) कि अव्वलन तो ऊपर ज़िक्र की हुई पाबन्दियों के ख़िलाफ़ है दुवुम सीन, साद और सा, में, इसी तरह ق और ك में, ز-ذ-ظ । में फ़र्क़ बिल्कुल न हो सकेगा । मसलन ظاہر के मा'नी हैं ज़ाहिर और زاہر के मअ़ना है चमकदार या तरोताज़ा । अब अगर आपने इंग्रेज़ी में **ZAHIR** लिखा तो कैसे मा'लूम हो कि ظاہر है या زاہر । इसी तरह تاہر और طاہر, قدیر और قادِر, سامِع और سمیع, عالم और علیم में किस तरह फ़र्क़ रहेगा ? ग़रज़ येह कि औसाफ़ व अल्फ़ाज़ तो दर कनार ख़ुद हुरूफ़ ही मुन्क़लिब (या'नी तब्दील) हो जाएंगे और मा'ना ही ख़त्म । (फ़तावा नईमिय्या, स-फहा:116, मक्तबए इस्लामिय्या, उर्दू बाज़ार मर्कजुल औलिया लाहौर)

(35) घर में भी म-दनी माहौल बना लिया

एक इस्लामी भाई का कुछ इस तरह बयान है कि र-मज़ानुल मुबारक (1426 हि. 2005 इस्वी) में ए'तिकाफ़ के दिन बिल्कुल

क़रीब थे, ***राजौरी,*** (जम्मू कश्मीर, अल हिन्द) के एक इस्लामी भाई (उ़म्र तक़्रीबन 40 बरस) से मुलाक़ात होने पर उन को सरसरी तौ़र पर **इज्तमाई ए'तिकाफ़** की दा'वत पेश की गई । और वोह तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से मस्जिद रेल्वे स्टेशन (राजौरी, जम्मु कश्मीर) में होने वाले आख़िरी अ़शरए र-मज़ानुल मुबारक (1426 हि. 2005 इस्वी) के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में मो'तकिफ़ हो गए । **आ़शिक़ाने रसूल** का **म-दनी माह़ौल** देख कर ह़ैरान रह गए, दाढ़ी मुबारक सजा ली, इमामा शरीफ़ से सर सब्ज़ हो गया, दर्सो बयान का सिल्सिला शुरूअ़ कर दिया, **अपने घर में भी म-दनी माह़ौल बना लिया** , घर की इस्लामी बहनों पर पर्दा नाफ़िज़ किया और ता दमे तह़रीर **अपने शहर राजौरी की मुशा-वर-त के निगरान हैं ।**

ज़िन्दगी का क़रीना मिलेगा तुम्हें, मदनी माह़ौल में कर लो तुम एअ़्तिकाफ़
आओ दर्दे मदीना मिलेगा तुम्हें, मदनी माह़ौल में कर लो तुम एअ़्तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(36) मैं नेक कैसे बना ?

तह़सील भिलवाल ज़िल्अ़ (सरगोधा गुलज़ारे त़यबा, पंजाब पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मैं बे नमाज़ी और फै़शन परस्त नौ जवान था । फ़िल्में डिरामे देखने और गाने बाजे सुनने का इन्तिहाई शौक़ीन था र-मज़ानुल मुबारक में रोज़े भी مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ बहुत कम ही रखता, अगर कोई समझाता भी तो टाल देता । एक दिन मैं किसी

मु-आ़मले के सबब परेशानी के आ़लम में जा रहा था कि एक बा इ़मामा दोस्त से मुलाक़ात हो गई जो तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा 'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ौल** से वाबस्ता थे। वोह मुझे इन्फ़िरादी कोशिश कर के जामेअ़ मस्जिद में होने वाले **दा 'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ले गए मगर मैं शैत़ानी वस्वसों के बाइ़स कुछ ही देर में उठ कर चल दिया। दो दिन बा'द मेरा एक दुन्यादार दोस्त मुझे फ़िल्म बीनी के लिए ले गया मगर किसी बात पर अनबन होने के बाइ़स मैं उस से अलग हो गया और यूं मेरी क़िस्मत का सितारा चमका, हुआ यूं कि माहे र-मज़ानुल मुबारक में मेरे बड़े भाई जान दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में **मो 'तकिफ** थे, मैं भाई जान से मिलने जा पहुंचा, वहां सब सब्ज़ इ़मामे सजाए आ़शिक़ाने रसूल मुझे बहुत भले लगे। चांद रात एक इस्लामी भाई ने बड़े भाई जान को **फ़ैज़ाने सुन्नत** और ना'तों की केसेट तोह़फ़े में दी, मैं ने फ़ैज़ाने सुन्नत का बाब **बे नमाज़ी की सज़ाएं** पढ़ा तो लरज़ उठा और केसेट में येह मुनाजात

गुनाहों की आ़दत छुड़ा मेरे मौला عزوجل

मुझे नेक इन्सां बना मेरे मौला عزوجل

सुनी तो दिल चोट खा गया। اَلْحَمْدُلِلّٰه عزوجل मैं ने गानेबाजे सुनना छोड़ दिये मगर नमाज़ की पाबन्दी न कर सका। एक आ़शिक़े रसूल की दा'वत पर **दा 'वते इस्लामी** के

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में दोबारा जा पहुंचा और आख़िर तक रुका रहा इख़्तिताम पर आ़शिक़ाने रसूल की मुलाक़ात के दिल नशीन अन्दाज़ ने मुझे **दा'वते इस्लामी** का शैदाई बना दिया। मैं ने चेहरे को म-दनी निशानी या'नी दाढ़ी मुबारक से और सर को सब्ज़ इमामा शरीफ़ से सर सब्ज़ व शादाब कर लिया। पांचों वक़्त बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने लगा और सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْاَكْرَم का मुरीद भी बन गया। येह बयान देते वक़्त मैं **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों के लिहाज़ से तन्ज़ीमी तौ़र पर ज़ैली मुशा-वरत का ज़िम्मादार हूं और पाबन्दी से दर्स देने के साथ साथ दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना में ह़िफ़्ज़ करने की सआ़दत भी पा रहा हूं।

आओ फ़ैज़ाने सुन्नत को पाओगे तुम, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ जन्नत में जाओगे तुम, म-दनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(37) रीढ़ की हड्डी के दर्द से नजात

एक मुबल्लिग़े दावते इस्लामी का कुछ इस त़रह़ बयान है : बाबुल मदीना कराची के अ़लाके़ डीफे़न्स व्यू के मुक़ीम मेरे मामूंज़ाद भाई जो कि मिल ओनर हैं, **इन्फ़िरादी कोशिश** की ब-रकत से माहे र-मज़ानुल मुबारक (1425 हि.) में **दा'वते इस्लामी** के तह़्त होने वाले सुन्नतों भरे **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में बैठने

के लिये तैयार हो गए । उन का केहना है कि मैं अ़रसए दराज़ से रीढ़ की हड्डी के शदीद दर्द में मुब्तला था, कई डॉक्टरों को दिखाया और उनकी तज्वीज़ कर्दा अदविय्यात भी इस्ते'माल कीं मगर ख़ात़िर ख़्वाह फ़ाइदा न हुवा । मैं तश्वीश में था कि दस[10] दिन ए'तिकाफ़ में कैसे रहूंगा! ख़ैर मैं दौराने ए'तिकाफ़ कोशिश करता कि दीवार से टेक लगा कर बैठूं, फ़ोम के गद्दे पर सोने की आ़दत थी यहां चटाई या दरी बिछा कर ज़मीन पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ सोने की तरग़ीब दिलाई जाती थी येह मेरे लिये इन्तिहाई दुश्वार था मगर इस के सिवा कोई चारा न था اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ चन्द ही दिन सुन्नत के मुत़ाबिक़ सोने की ब-र-कत से मुझे मह़सूस हुवा कि मेरी कमर के दर्द में काफ़ी कमी है । वोह दर्द मेरी जान छोड़ गया । मेरी रीढ़ की हड्डी का वोह दर्द जो बड़े बड़े डॉक्टरों के इ़लाज के बा वुजूद दूर न हो सका था اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के तह़त होने वाले सुन्नतों भरे **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में आख़िर तक बैठने की बरकत से मेरी जान छूट गई ।

तुम को तड़पा के रख दे गो दर्दे कमर, मदनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
पाओगे तुम सुकूं, होगा ठन्डा जिगर, मदनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े ।

(38) हेप्पी न्यू यर का चस्का

दा'वते इस्लामी के एक मुबल्लिग़ का कुछ इस त़रह़ बयान है कि **जोधपूर** राजस्थान, अल हिन्द के एक फ़ोटोग्राफ़र (उ़म्र तक़रीबन 28 साल) जिन को 31 दिसम्बर को ''हेप्पी न्यू यर'' (**HAPPY NEW YEAR**) की बे ह़याई से भरपूर पार्टियों में शिर्कत का जुनून की ह़द तक चस्का था और वोह इस के लिये बम्बई पहुंच जाते थे । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम हो गया कि तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की जानिब से बीच वाली मस्जिद (उदयपूर, राजस्थान, अल हिन्द) के अन्दर आख़िरी अ़शरए माहे र-मज़ानुल मुबारक (1426 हि. 2005 इ़स्वी) में होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ मो'तकिफ़ होने की उन्हें सआ़दत मिल गई । वहां लगने वाले सुन्नतों भरे ह़ल्क़ों, पुर सोज़ बयानों और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं ने उन्हें झंझोड़ कर रख दिया । अपने साबेक़ा गुनाहों से तौबा की, फ़ोटो ग्राफ़ी का काम तर्क कर दिया और पाबन्दी से **सदाए मदीना** लगाने लगे या'नी मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने लगे ।

रंग रलियां मनाने का चस्का मिटे, मदनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रक़्स की मह़फ़िलों की नुह़ूसत छुटे, मदनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगो में से कंजूस तरीन शख़्स़ है।

मुसलमानों का नया साल, म-दनी साल

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो! ऐ काश! अंग्रेज़ों के नए साल के इस्तिक्बाल के बजाए मुसलमानों के म-दनी नए साल या'नी हिजरी सिन के नए साल के इस्तिक्बाल का जज़्बा नसीब हो जाए। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुसलमानों का नया साल *यकुम मुहर्रमुल ह़राम* से शुरूअ़ होता है। हो सके तो हर साल यकुम *मुहर्रमुल ह़राम* को आपस में नए म-दनी साल की मुबारकबाद देने का रवाज डालना चाहिये।

(39) आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बरकत

तहसील भिलवाल ज़िल्अ़ गुलज़ारे त़यबा (सरगोधा पंजाब पाकिस्तान) के इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है कि मैं "क्लीन शेव" था, सुन्नतों भरी ज़िन्दगी से दूर ग़फ़्लतों की वादियों में भटक रहा था। र-मज़ानुल मुबारक का बा ब-र-कत महीना था, मैं एक दिन अपने कमरे में बैठा था कि वालिद साह़िब मेरे छोटे भाई से फ़रमाने लगे, "जामेअ़ मस्जिद ख्वाजगान" में तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के तह़त र-मज़ानुल मुबारक के आखि़री अ़-शरे का **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** हो रहा है। लिहाज़ा जल्दी चलो वरना पहली सफ़ में जगह नहीं मिलेगी। मैं चौंका और दिल में शौक़ पैदा हुवा कि मैं भी **आ़शिक़ाने रसूल** की ज़ियारत को जाऊं उस दिन नमाज़े इ़शा मअ़

तरावीह़ उसी मस्जिद में अदा की। बा'दे तरावीह़ केसेट के ज़रीए ह़ाजी मुश्ताक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की आवाज़ में येह ना'त शरीफ़ चलाई गई,

"सानी न कोई मेरे सोहने नबी ﷺ लजपाल दा"

मुझे इन्तिहाई सुरूर ह़ासिल हुवा। मैं दूसरे दिन फिर जा पहुंचा तो चूंकि जुमा'रात थी लिहाज़ा वहां हफ़्तावार सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ शुरूअ़ हो गया। मैं पहली बार शिर्कत कर रहा था, दिल को अ़जीब सुकून व राह़त मुयस्सर हुई। दूसरे दिन जब मैं दोबारा पहुंचा तो केसेट इज्तिमाअ़ में मक्तबतुल मदीना से जारी कर्दा सुन्नतों भरा बयान **गाने बाजे की हौलनाकियां** सुनाया गया, बयान सुन कर मैं कांप उठा क्यूं कि इस में अ़ाम बोले जाने वाले गानों के कुफ़्रिय्या अश्अ़ार की निशानदही की गई थी। मैं भी कुफ़्रिय्या अश्अ़ार बोलने की आफ़त में गरिफ़्तार था लिहाज़ा मैं ने तौबा की और तज्दीदे ईमान भी किया, चूंकि दिल एक दम चोट खा चुका था लिहाज़ा बक़िय्या दिनों के लिए मोअ्तकिफ़ हो गया। **फ़ैज़ाने सुन्नत** में ज़ुल्फ़ें (गेसू) रखने की सुन्नतें और आदाब पढ़े तो ज़ुल्फ़ें रखने की निय्यत कर ली और 26 र-मज़ानुल मुबारक होने वाले इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में दाढ़ी रखने की भी निय्यत कर ली और सिल्सिलए अ़ालिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم का मुरीद बन गया। सलातो सलाम के सीग़े भी मैंने वहीं याद किये और ए'तिकाफ़ से

वापसी पर गानों की 100 से ज़ाइद केसेटों और T.V. को घर से निकाल बाहर किया। येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों के लिहाज़ से तन्ज़ीमी तौर पर डिविज़्नल क़ाफ़िला ज़िम्मादार हूं।

गाने बाजों को सुनने से तौबा करो, म-दनी माहौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
और गीत तुम कभी भी न गाया करो, म-दनी माहौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(40) मिलावट वाले मसालहे का कारोबार बन्द कर दिया

रनछोड़पूरी रोड **भीमपूरा** (मदनीपूरा) बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मैं ऐसा बे नमाज़ी था कि ***जुमुआ*** की नमाज़ भी न पढ़ता था, ख़ुश क़िस्मती से मैं ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** के तहत गुलज़ारे मदीना मस्जिद आग्रा ताज में **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह आख़िरी अ़-श-रए र-मज़ानुल मुबारक (1425 हि. 2004 इस्वी) के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में बैठने की सआ़दत ह़ासिल की दस10 दिन में **आ़शिक़ान रसूल** की सोहबत ने मेरी क़ल्बी कैफ़िय्यत को बदल कर रख दिया। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने कुछ न कुछ नमाज़ सीख ली और पांचों वक़्त की नमाज़े बा जमाअ़त का पाबन्द बन गया। सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या रज़विय्या में दाख़िल हो कर हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْاَكْرَم का मुरीद भी बन गया। रब्बे لَمْ يَزَلْ وَلَا يَزَال عَزَّوَجَلَّ के

फ़ज़्लो करम से नेक आ'माल का ऐसा जे़ह्न मिला कि कमो बेश 63 से ज़ाइद **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल की कोशिश जारी है। मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ रसाइल कसरत से पढ़ने की आ़दत बन गई और ए'तिकाफ़ का एक बड़ा इन्आ़म येह भी मिला कि मैं जो मिलावट वाले मिर्च मसा-लहे की सप्लाई का सिंध भर में गुनाहों भरा काम करता था वोह तर्क कर दिया। मेरे मसा-लहे के कारख़ाने में तक़रीबन 44 मुलाज़िम काम करते थे मैं ने वोह कारख़ाना ही **ख़त्म** कर दिया। क्यूंकि दौर बड़ा नाज़ुक है बड़े पैमाने पर ख़ालिस मसा-लहे के कारोबार में बाज़ार में खड़ा होना निहायत ही दुश्वार है। आजकल मुसलमानों की सिह़्ह़त की किस को पड़ी है। बस यार लोगों को दौलत चाहिये ख़्वाह वो ह़लाल हो या مَعَاذَالله عَزَّوَجَلَّ ह़राम। बहर ह़ाल आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की ब-र-कत से मैं रिज़्क़े हलाल के ह़ुसूल में मश्गूल हो गया। اَلحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ौल की ब-र-कत से इशराक़ो चाश्त और अव्वाबीन, तहज्जुद के नवाफ़िल के साथ पहली सफ़ में नमाज़ की भी आ़दत बन गई।

छोड़ दो छोड़ दो भाई रिज़्क़े ह़राम, मदनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
आओ करने लगोगे बहुत नेक काम, मदनी माह़ौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(41) जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ियारत

दा 'वते इस्लामी की तन्ज़ीमी तहसील जन्नतुल बक़ीअ़ (बाबुल मदीना न्यू कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है कि आम नौ जवानों की तरह मैं भी फ़ैशन की अंधेरी वादियों में भटक रहा था, ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुनाहों में बसर हो रहे थे, اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरी तक्दीर का सितारा चमका और मैं ने माहे र-मज़ानुल मुबारक (1426 हि. 2005 इस्वी) में तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा 'वते इस्लामी** के **म-दनी माहौल** में आशिक़ाने रसूल के साथ **इज्तिमाई ए 'तिकाफ़** में बैठने की सआदत हासिल की। **आशिक़ाने रसूल** की सोहबत में दस[10] दिन में जो कुछ सीखा उस को लफ़्ज़ों में बयान करना मुश्किल है आइन्दा हमेशा के लिये गुनाहों से बचने का अ़ज़्मे मुसम्मम किया, इमामा शरीफ़ का ताज सर पर सजाया और दाढ़ी मुबारक के ज़रीए अपने चेहरे को म-दनी रंग चढ़ाया। 29 र-मज़ानुल मुबारक की शब **मो 'तकिफ़ीन** ने मिल कर मस्जिद की सफ़ाई वग़ैरा की तरकीब बनाई फिर इबादत में मशगूल हुवा इस दौरान मैं ने देखा कि एक बुज़ुर्ग हस्ती जिन का चेहरा रौशन था वोह क़रीब आए और उन्हों ने बढ़ कर मुझ गुनहगार से **मुसा-फ़हा** फ़रमाया जिस की ठन्डक मैं ने दिल में महसूस की, मेरे दिल में ख़याल आया कि येह हज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं और हो सकता है कि आज शबे क़द्र हो क्यूं कि हदीसे पाक में है कि शबे क़द्र में जिब्रील عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ज़मीन पर तशरीफ़ लाते और इबादत गुज़ारों से मुसा-फ़हा फ़रमाते हैं।

फ़ज़्ले रब से हो दीदारे रसूले अमीं, म-दनी माहौल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
राहतो चैन पाएगा क़ल्बे हज़ीं, म-दनी माहौल में कर लो तुम एअ्तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हर मुसलमान के ए'तिकाफ़ को क़बूल फ़रमा। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ *मो'तकिफ़ीने मुख़्लिसीन* के तुफ़ैल हमारी बे हि़साब मग्फ़िरत कर। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माहौल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ उम्मते महबूब (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم



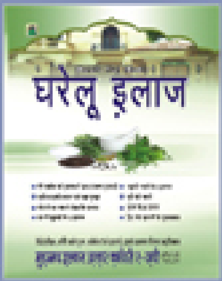
ता़लिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे हि़साब
जन्नतुल फ़िरदौस
में आक़ा का पड़ोस

786
एक चुप सौ100 सुख

लोगों से सुवाल न करने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, कि हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोहतशम, शाफ़ेए उमम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जो शख़्स मुझे इस बात की ज़मानत दे कि ***लोगों से कोई चीज़ न मांगे,*** मैं उसे ***जन्नत की ज़मानत देता हूं*** ।'' हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अ़र्ज़ गुज़ार हुए कि मैं इस बात की ज़मानत देता हूं। चुनान्चे वोह किसी से कुछ नहीं मांगा करते थे।

(सुनने अबी दावूद, जिल्द:2, स-फ़हा:170, हदीस:1643)











اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आमात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फूलाह़ी वाले मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुधोल कोम्प्लेक्स, A.J. मुधोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
مكتبة المدينة
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net